"अंग सज्जा में गोदना कला"

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

निर्देशिका
श्रीमति संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा0)

शोधार्थी
कोमल शर्मा
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

Estd. 1968

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्ड़ा)

2022–2023

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कोमल शर्मा, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''अंग सज्जा में गोदना कला''** शीषर्क पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

दिनांक :

एसो. प्रोफेसर
श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं कोमल शर्मा यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध **''अंग सज्जा में गोदना कला''** मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। यह अप्रकाशित कृति है। लेखन के क्रम में प्रस्तुत आवश्यक सामग्री निदर्ष्टि कर दी गई है।

निर्देशिका **कोमल शर्मा**

श्रीमती संतोष **शोधकर्त्री**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

कुरूक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कोमल शर्मा, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''अंग सज्जा में गोदना कला''** शीषर्क पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

दिनांकः

प्राचार्या

डॉ श्रीमती आरती त्रेहान

प्राक्कथन

अंग सज्जा में गोदना कला का संक्षिप्त वर्णन किया है। इस कला को मुख्यता ग्रामीण जनता से संबंधित किया है।

कला इतिहास में प्राचीन लोक कला के रूप में प्रचलित ''गोदना कला'' के अध्ययन को मैंने आवश्यक समझा ताकि हमारी युवा पीढ़ी को इसके लाभ तथा हानियों के बारे में कुछ जानकारी मिल सके तथा सुरक्षा का विशेष ध्यान रख सके। क्योंकि आज इसमें कला तो है परंतु विषय नहीं है।

इस लघु शोध कार्य को मैंने ''अंग सज्जा में गोदना कला'' का संक्षिप्त वर्णन किया है तथा इसके लिए सामग्री एकत्रित करना उसको नियोजित करना मेरे लिए उत्साह का कार्य रहा है। इस लघु शोध को मैंने 7 अध्यायों में विभाजित किया है।

- प्रथम अध्याय में ''अंग सज्जा'' का वर्णन किया है। पहले भाग में ''गोदना कला का इतिहास'' का वर्णन किया गया है। दूसरे भाग में ''गोदना कला परंपरा का विकास'' का वर्णन किया है।

- द्वितीय अध्याय में ''गोदना कला की विधि एवं सामग्री'' का वर्णन किया गया है। पहले भाग में ''गोदना संबंधित सामाजिक मान्यताओं'' का वर्णन किया है।

- तृतीय अध्याय में ''धार्मिक आस्था का प्रतीक गोदना'' का वर्णन किया है। पहले भाग में ''शरीर के अंगों पर गोदना चित्रण'' का वर्णन किया है।

- चतुर्थ अध्याय में ''गोदना कला के प्रभाव'' का वर्णन किया है। पहले भाग में ''गोदना कला के दुष्प्रभाव'' का वर्णन किया है।

- पंचम अध्याय में ''हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में गोदना कला'' का वर्णन किया है।

- षष्टम अध्याय में ''चित्रों का अध्ययन'' किया गया है।

और अन्त में उपसंहार प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध प्रबन्ध में मैंने गोदना कला की महत्वता को समझाने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को बड़ी सावधानी पूर्वक करने की कोशिश की गई है। फिर भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक आलश्य करने की कृपा करें। इस शोध संबंध में जो त्रुटियां रह गई हैं, उसके लिए मैं दोषी हूँ। इसलिए मैं विद्वानों से क्षमा प्रार्थी हूं।

कोमल

शोधार्थी

आभार

कला एक माध्यम है, कला एक क्रिया है, इसमें सचेतना है जोकि कलाकार को अपनी और आकर्षित करती है। कला एक ऐसा सूक्ष्म साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों की अभिव्यक्ति सरलता से कर सकते हैं तथा उन्हें चित्र द्वारा नया रूप दे सकते हैं। यह एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा आनंद की प्राप्ति होती है। भगवान की कृपा से मुझे यह विषय पढ़ने का सौभाग्य मिला। इसके लिए मैं अपने गुरुजनों व अपने माता पिता की सच्चे मन से धन्यवादी हूँ , जिनकी वजह से यह संभव हो पाया है।

इस लघु शोध कार्य को करने के लिए जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरा यह शोध कार्य संपूर्ण नहीं हो सकता। मैं सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन व सहयोग से मैंने इस कार्य को पूर्ण किया है।

अंत में मैं प्राचार्य महोदया डॉ0. श्रीमती आरती त्रेहान जी का आभार प्रकट करना चाहती हूं कि उन्होंने महाविद्यालय में ललित कला विषय में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ कर हमारे चिरलम्बित लंबित स्वपन को साकार रखने का मौका प्रदान किया।

सर्वप्रथम मैं ''कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय'' के अंतर्गत ''आर्य कन्या महाविद्यालय'' शाहबाद मारकंडा के ललित कला विभाग की अध्यक्षा ''श्रीमती संतोष जी'' के प्रति तहदिल से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके आशीर्वाद और मेहनत स्वरूप हम इस मुकाम तक पहुंच सके। साथ ही मैं श्रीमान महेश धीमान जी, श्रीमती किरण खेवरिया जी का भी धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने शोध कार्य को करने में मेरी सहायता की है। मैं ''श्रीमती सुषमा जी'' की आभारी हूं जिन्होंने मुझे विभाग के पुस्तकालय से शोध कार्य से संबंधित पुस्तकें प्राप्त करने में सहयोग दिया।

इन सभी अध्यापकों की कृपा के फलस्वरूप मुझे ''गोदना कला'' के बारे में जानकारी पाई और मेरा शोध कार्य सफल हुआ। सर्वप्रथम में कलाकार जॉर्ज टैटू (अमृतसर) की तहदिल से आभारी हूं जिनसे साक्षात्कार कर मुझे गोदना कला के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। मैं अपनी सहयोगी मित्र श्वेता शर्मा, वर्षा शर्मा, रीना, नेहा, शिवम शर्मा, मुस्कान शर्मा का भी धन्यवाद करती हूं।

मैं सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धेय भाव से प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से ही वह लघु शोध सम्पन्न हो सका है। यदि इस शोध संबंध में पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं इसे अपना सफल प्रयास समझूंगी।

कोमल

शोधार्थी

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	पृष्ठ संख्या
आभार	
प्रथम अध्यायः परिचय	01 – 14
– अंग सज्जा	
– गोदना कला का इतिहास	
– गोदना कला परंपरा का विकास	
द्वितीय अध्याय :	15 – 23
– गोदना कला की विधि एवं सामग्री	
– गोदना सम्बन्धी समाजिक मान्यताये	
तृतीय अध्यायः	24 – 31
– धार्मिक आस्था का प्रतीक गोदना	
– शरीर के अंगो पर गोदना चित्रण	
चतुर्थ अध्यायः	32 – 42
– गोदना कला के प्रभाव	
– गोदना कला के दुष्प्रभाव	
पंचम अध्याय :	43 – 47
– हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में गोदना कला	
षष्टम अध्याय :	48 – 55
– चित्रों का अध्ययन	
– उपसंहार	56 – 56
– संदर्भ ग्रंथ सूची	57 – 57
– चित्र संग्रह सूची	58 – 58
– चित्र सूची	59 – 82

प्रथम अध्याय

- अंग सज्जा
- गोदना कला का इतिहास
- गोदना कला परंपरा का विकास

अंग सज्जा

कला (आर्ट) का अर्थ :–

कला (आर्ट) शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक विशेष पक्ष को छूकर रह जाती हैं। कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है, यद्यपि इसकी हजारों परिभाषाएं की गई हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिनमें कौशल अपेक्षित हो। यूरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है। कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है।

कला का इतिहास :–

कला शब्द का प्रयोग शायद सबसे पहले भरत के ''नाटयशास्त्र'' में ही मिलता है। पीछे वात्स्यायन और उरानस् ने क्रमशः अपने ग्रंथ ''कामसूत्र'' और ''शुक्रनीति'' में इसका वर्णन किया। ''कामसूत्र'', ''शुक्रनीति'', जैन ग्रंथ ''प्रबंधकोश'', ''कलाविलास'', ''ललित विस्तार'' इत्यादि सभी भारतीय ग्रंथों में कला का वर्णन प्राप्त होता है। अधिकतर ग्रंथों में कलाओं की संख्या 64 मानी गई है। ''प्रबंधकोश'' इत्यादि में 72 कलाओं की सूची मिलती है। ''ललित विस्तार'' में 86 कलाओं के नाम गिनाए गए हैं। प्रसिद्ध कश्मीरी पंडित क्षेमेंद्र ने अपने ग्रंथ ''कलाविलास'' में सबसे अधिक संख्या में कलाओं का वर्णन किया है। उसमें 64 जनोपयोगी, 32 धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, संबंधी, 32 मात्सर्य शील – प्रभावमान संबंधी, 64 स्वच्छकारिता संबंधी, 64 वेश्याओं संबंधी, 10 भेषज, 16 कायस्थ तथा 100 सार कलाओं की चर्चा है। सबसे अधिक प्रमाणित सूची ''कामसूत्र'' की है।

यूरोपीय साहित्य में भी कला शब्द का प्रयोग शारीरिक या मानसिक कौशल के लिए ही अधिकतर हुआ है। वहां प्रकृति से कला का कार्य भिन्न माना गया है। कला का अर्थ है– रचना करना अर्थात वह कृत्रिम है। प्राकृतिक सृष्टि और कला दोनों भिन्न वस्तुएं हैं। कला उस कार्य में है जो मनुष्य करता है। कला और विज्ञान में भी अंतर माना जाता है। विज्ञान में ज्ञान का प्राधान्य है, कला में कौशल का कौशल पूर्ण मानवीय कार्य को कला की संज्ञा दी जाती है। कौशलविहीन वहीं या बेढंग से किए गए कार्यों को कला में स्थान नहीं दिया जाता।

कला का महत्व :–

जीवन ऊर्जा का महासागर है। जब अंतरचेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है। कला जीवन को ''सत्यम् शिवम् सुंदरम्'' से समन्वित करती है। इसके द्वारा ही बुद्धि

आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है। कला उस क्षितिज की भांति है जिसका कोई छोर नहीं, इतनी विशाल, इतनी विस्तृत, अनेक विद्याओं को अपने में समेटे, तभी तो कवि मन कहे उठा –

''साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः ।।

रविंद्रनाथ ठाकुर के मुख से निकला ''कला में मनुष्य अपने भाषण भावों की अभिव्यक्ति करता है, तो ''प्लेटो ने कहा – ''कला सत्य की अनुकृति के अनुकृति है''।

टालस्टाय के शब्दों में अपने भावों की क्रिया, रेखा, रंग, ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्ति अभिव्यक्ति करना कि उसे देखने और सुनने में भी वही भाव उत्पन्न हो जाए, कला है। ह्रदय की गहराइयों से निकली अनुभूति जब कला का रूप लेती हैं, कालांतर का अंतर्मन मानव मूर्त ल उठता है यदि लेखनी उसका माध्यम हो गया रंगों से भीगी तूलिका या सुरों की पुकार या वाघों की झंकार। कला ही आत्मिक शांति का माध्यम है। यह कठिन तपस्या है, साधना है। इसी के माध्यम से कलाकार सुनहरी और इंद्रधनुषी आत्मा से र्स्वाप्रल विचारों को साकार रूप देता है।

अंग सज्जा :–

मानव का सिगांर (श्रृंगार) करने का तरीका बहुत अलग है। वह प्राचीन काल से अपने शरीर को आकर्षक (सुंदर) बनाने के लिए प्रयास करता है। मानव के सहज सुंदरता की अपेक्षा जो प्राकृतिक न हो वही सुंदरता को अपनी नजरों से आकर्षित करती है। सुंदरता ही मानव के अहंकार का कारण बनती है, तभी तो मानव ने आकर्षित बनने की नई सिगांर (श्रृंगार) सजावटों की खोज की और उसने अपनी सुंदरता को बढ़ाने के लिए सामग्री का चयन किया। आदिमानव सर्वप्रथम पहले फूल–पत्तियों को आवश्यकतानुसार वस्त्र और आभूषण के रूप में प्रयोग में लाया। श्रृंगार मानव शरीर के सौंदर्य को बढ़ाने या सुगंधित करने के काम आते हैं।

पूर्व काल से ही शरीर (देह) चित्रण किया जाता रहा है। बाणभट्ट कृत 'हर्ष चरित' में इसका उल्लेख किया गया है। शरीर (देह) चित्र द्वारा फूलों की पंखुड़ियों तथा पत्तियों को शरीर पर चिपका लेते थे। जिससे पत्र रचना, पत्र छेद तथा पत्र भंगिमा कहा जाता था। बिहारी ने नायिका की सजावट (सज्जा) का वर्णन करते हुए कहा है कि गात्र (शरीर) से चिपकी हुई गुलाब की पंखुरी भिन्न लगती। क्योंकि वह रंग, सुगंधित तथा सुकुमारता में नायिका से मिल रही है।

''बरन बास, सुकुमारता, सब विधि रही समाइ,
पखँरी लगी गुलाब की गात न जानी जाए।।

भारतीय लोक कला, नीलिमा गुप्ता, सैन्ट्रल मार्किट, अशोक बिहार, सन् 2010, पेज न0. 120, 122

सिगांर व्यक्ति की विशेष रूचि और सौंदर्य को पहचान देता है। सिगांर देश, काल, पात्र, वातावरण और स्थितियों – परिस्थितियों पर निर्भर करता है। व्यक्ति अपने लिए व दूसरों के लिए संवरता है। इस संदर्भ में एक कहावत प्रसिद्ध है :–

"आप रुचि भोजन, पर रुचि सिगार "।।

सिगांर (श्रृंगार) शब्द के अर्थवन्ता विस्तृत होती है। बहु आयामी होती है। (अनेक पक्षों वाला) केवल तन सज्जा को ही श्रृंगार नहीं कहते। तन सज्जा और मन सज्जा के साथ–साथ वस्तु–वस्तु सज्जा को भी श्रृंगार कहते हैं। मनुष्य की यह प्राकृतिक तौर पर प्रवृत्ति है कि वह समूह के मध्य अपना उच्चारण तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रकट करना चाहता है। उसकी यह विशेष कला के द्वारा साज – श्रृंगार में प्रकाशित होती है। श्रृंगार द्वारा उनके मन को शांति मिलती है। वहां उसकी दूसरों से भिन्न (अलग) दिखने की चाह भी पूरी हो जाती है। अतः ग्रामीण, नगरीय अथवा किसी भी जनजाति का मानव सदैव प्रयत्नशील रहता है कि किस प्रकार वह स्वयं को सौंदर्य की अभिवृद्धि (आकार, लंबाई, चौड़ाई) कर सकता है।

उत्खनन (खुदाई, चीरना और विस्फोट करना) में प्राप्त प्राचीन सामग्री मानव के कलापूर्ण विकास की साक्षी है।

आदिवासियों का प्रतिदिन जीवन अस्त–व्यस्त, कठिन, कठिनाई व संघर्ष पूर्ण होता है। इसलिए अपना जीवन सदैव साज – श्रृंगार से पूर्ण नहीं रख सकते। अतः सिर्फ विवाह, पर्व, मेला अथवा बाजार के अवसर पर ही उनके लिए श्रृंगार के क्षण (समय) हैं। इन अवसरों पर लोक जीवन में नारी तथा पुरुष दोनों के द्वारा ही प्राकृतिक उत्पादनों (सजावट) से स्वयं को संवारने की प्रथा रही है। जिसका वर्णन निम्न प्रकार से है :–

➢ केश – विन्यास :–

पुराने युग से ही नारी को सजना सवँरना बहुत अच्छा लगता है। शुरू से ही स्त्री की सुंदरता उसके केश (बालों) से रही है।

भारत वर्ष की संस्कृति अनेक जनजातियों में केश विन्यास (बाल) की समृद्ध परंपरा दिखाई देती है। बाजार, मेले आदि स्थानों पर जाने के लिए युवतियों द्वारा आकर्षक केश–विन्यास किया जाता है। किशोर भी अपने बाल लंबे रखते हैं तथा उन्हें पीछे की और एकत्रित कर जुड़ा बांधते हैं। स्त्रियां अपने बालों को सुंदर दिखाने के लिए गजरे का प्रयोग करती थी। बस्तर के मुडियो में सजावट के लिए कौड़ी के गुच्छों का प्रयोग किया जाता है। घोटुल (कुटीर) की मोटियारिने (युक्तियां) अपने बाल बनाते समय जुड़ो में कौडी (जल में पाए जाने वाले जीव का खोल) लच्छे, नीली, सफेद तथा लाल रंग –

बिरंगी पौधों की मालाँए, शीब फूल जो मस्तक (माथे) की पट्टी को बहुत चाव से पहनती हैं। मोती की ये मालायें गोंड भाव भाषा में 'नेकुल' कहलाती हैं।

भील महिलाओं की रूचि बालों को सजाने में विशेष रुप से होती है। वे अपने बालों की लटों को रंगीन धागों से बांधकर बोरड़ो (बांस द्वारा निर्मित) धारण करते हैं। इसके अंतर्गत भी आडी पाटी तथा घोड़ा पाटी– दो प्रकार से बालों को गूंधा (बांधा) जाता है। विवाह के समय दुल्हन का माथा नौ फली का गूंधा जाता है। महिलाएं माथा गूंधने के साथ–साथ पट्टी में गोंद भी लगती है, जिससे आगे के बाल चिपक जाते हैं। तथा एा महीने तक बिल्कुल वैसे ही रहते हैं, खराब नहीं होते। पहले जब गोंद नहीं मिलता था, तो महिलाएं बबूल के पेड़ से गोंद निकाल कर लाती थी।

महिलायें सूती फुदरों से अपने बाल कसकर बनाती हैं, जिनमें लगा खिला चांद उनके सौंदर्य को दुगना करता है।

➢ बिन्दी एंव तिलक :–

भारतीय संस्कृति में सुहागिन के माथे की बिंदी भी उनके सुहाग चिह्न के रूप में स्वीकार की जाती है। नारी के श्रृंगार में बिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। रीतिकालीन कवि बिहार बिंदी के प्रयोग से दोगुना होने वाले सौंदर्य के विषय में कहते हैं :–

" कहत सबै बेदी दिए, आंक दसगुनों होत।
तिय लिलाए बेंदी दिए, अगनित बढ़तु उददोत"।।

अतः बिंदी के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सुंदरता के महत्व को स्वीकारते हुए भारत की लोकनारी अपने माथे पर बिंदिया धारण करती है। यहाँ के जीवन में गुदना आकृति के रूप में भी बिंदी का प्रचलन अधिकता से दिखाई देता है।

➢ मेहंदी :–

मेहंदी नारी के सजावट का प्रमुख अंग है। मेहंदी प्रेम, मित्रता, स्नेह व सौभाग्य का प्रतीक भी है। जीवन का शायद ही कोई ऐसा शुभ अवसर हो जिसमें स्त्रियां अपने कोमल हथेली पर मेहंदी न रचाती हों। मेहंदी सुहागिन नारी का पहला श्रृंगार है। विवाहित जीवन में प्रवेश करते समय मंडप में बैठने से लेकर जीवन की अंतिम यात्रा तक मेहंदी के श्रृंगार का प्रमुख अंग है। मेहंदी तीज, रक्षाबंधन तथा होली आदि त्योहारों पर लगाई जाती है।

https://him.wikipedia.org>wiki, Time – 01:11, Date – 10 March

3000 ई0. वर्ष पूर्व के प्राचीन सभ्यता से मिले अवशेष (टुकड़े) रूप में प्राप्त मोहनजोदड़ो के रंगे हुए मिट्टी के बर्तन और मिट्टी के खिलौने आदि पर त्रिकोण, चतुर्भुज, वृत्त, स्वास्तिक आदि की जो आकृतियां उपलब्ध हैं। वे सब आकृतियां आज की मेहंदी कला में पूर्ण रूप से चली आ रही हैं। अनेक प्रकार की रेखाएं, वृक्षों और फूल – पत्तियों की आकृतियां को भी ज्यों की त्यों मेहंदी में उतार दी गई हैं।

➢ गोदना :–

गोदना (टैटू) को पदोना या चित्रण भी कहते हैं। शरीर की त्वचा पर रंगीन आकृतियां छीलकर 'अंग विशेष' पर घाव करके, चीरा लगाकर अथवा ऊपरी छेद करके उनके अंदर लकड़ी के कोयले का चूर्ण, शंख या फिर रंगने के मसाले भर दिए जाते हैं। घाव भर जाने पर खाल के ऊपर सतह रंगीन आकृति विशेष बन जाती है। गोदना का रंग प्रायः गहरा नीला, काला या हल्का लाल रहता है। चित्रण की एक विधि और भी है। इसमें किसी एक स्थान की त्वचा को बार–बार काटते हैं। और घाव के ठीक हो जाने पर बाद ऊपर के स्थान पर सूजन या उभरा हुआ चकता बन जाता है। जो देखने में रेशेदार लगता है। पशुओं में गोदना पहचान या नाम के लिए उपयोग किया जाता है। पर मनुष्यों में गोदना का उद्देश्य सुंदरता के लिए किया जाता है।

गोदना (टैटू) खुदवाने की प्रथा है, परंतु कुछ ऐसे भी जातियां हैं जिनमें दोनों प्रकार के चित्र प्रचलित हैं। गुदवाने की प्रथा केवल स्त्रियों तक सीमित है या थी। अफ्रीका के अनेक आदिम कबीले क्षतचिन्हों को पसंद करते हैं। कुछ आदिम कबीले पूरे शरीर पर गुदवाना करवाते हैं।

सालामन द्वीप में लड़कियों का विवाह तब तक नहीं हो पाता जब तक कि उनके चेहरों और वृक्षस्थलों पर गुदने न गुदवा दिए जाएं। भारत में स्त्रियां ही गोदना की शौकीन होते हैं, लेकिन पुरुषों में वैष्णव लोग शंख, चक्र, गदा, पद्म, विष्णु के चार आयुधों के चित्र छुपाते हैं। और दक्षिण में शैव लोग त्रिशूल या शिवलिंग के रामानुज संप्रदाय के सदस्यों में इसका चलन अधिक है। इरिका इसके लिए प्रसिद्ध और बहुत सी स्त्रियां पति के नाम बाहों पर गुदवा लेती हैं।

➢ गोदना गुदवाने की प्रथा :–

कुछ जाति में आठ साल की लड़कियों को गोदना गोदने की प्रथा प्रचलित थी। गोदना के संबंध में ग्रामीण बुजुर्ग महिलाएं बताती हैं कि समाज में प्रचलित मान्यताओं और प्रथाओं से ही हमें गोदने की सूईओं के दर्द को सहने की शक्ति मिलती थी। और हम बचपन में ही खुशी खुशी शरीर के सभी अंगों में गोदना गोदवा लेते थे।

https://w.w.w.jagrush.com/fashion beauty 1d65941.html., Time- 02:40, Date- 14 March

➢ गोदना कला :–

ग्रामीण महिलाओं का श्रृंगार और पहचान, गोदना, शरीर में नुकीली सुई से तरह–तरह के आकार बनाने की प्रक्रिया है। खासकर आदिवासी औरतों में गोदना सबसे ज्यादा सभी जातियों हरियाणा में देखा जाता है। गोदना राजस्थान, तमिलनाडु, पंजाब, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड, त्रिपुरा और केरल में खास रूप में प्रचलित हैं।

➢ गोदना के प्रकार :–

1 एमेच्योर गोदना (टैटूज) :–

ये शुरुआती टैटूज है जो अपने नेचर में कच्चे होते हैं। क्योंकि ये ऐसे व्यक्ति द्वारा बनाए जाते हैं। जिसे खास एक्सपीरियंस नहीं होता। ये टैटूज एस्थेटिक नेचर में नहीं होते और अस्वच्छ दशाओं में ड्राइंग के लिए इस्तेमाल होने वाले असामान्य तत्वों द्वारा बनाए जाते हैं। इनसे खतरा काफी अधिक होता है, क्योंकि इन्हें बनाने वाले प्रोफेशनल नहीं होते।

2 धार्मिक गोदना (टैटूज) :–

कुछ जातीय गुप्स के टैटूज का छुपा हुआ अर्थ होता है। किसी ने नेटिव ग्रुप में रैंक और सफलता को सिविलाइज (प्रतीत) करते हैं। इनको बनाने की पारंपरिक विधियां काम में लाई जाती हैं।

3 प्रोफेशनल गोदना (टैटूज) :–

ये टैटूज लोगों द्वारा बनाए जाते हैं। जिनको बनाने वाले प्रोफेशनल गोदना में खास होते हैं। नीडिल्स वाली एक टैटू मशीन त्वचा को पंचर करती करती है और रंग को त्वचा की परत के अंदर डालती है।

4 कॉस्मेटिक गोदना (टैटूज) :–

टैटूज को मॅकअप के रूप में बालों की नकल फीचर्स को भरने में जैसे कि लिप्स या आँखें और यहां तक कि तिल के लिए भी किया जाता है। शरीर के धब्बे को टैटू बनाकर छिपाया जा सकता है।

5 मेडिकल्स गोदना (टैटूज) :–

ऐसा टैटू बनवाने वाले किसी इमरजेंसी के समय किसी खास मेडिकल कंडीशन या ब्लड ग्रुप की किस्म के संकेत के लिए इसे बनवाते हैं। स्तन के कुछ रूपों में टैटू का उपयोग एलोरा के लिए किया जा सकता है।

6 ट्रॉमाटिक गोदना (टैटूज) :–

ये टैटूज जान बूझकर नहीं बनाए जाते बल्कि किसी एक्सीडेंट के दौरान शरीर में कोई बाहरी चीज धंस जाने से बनते हैं। उदाहरण के लिए पेंसिल अनायास चुभने पर शरीर की परत के नीचे ग्रेफाइट रह सकती है। जो काले बिंदु के रूप में दिखती है।

गोदना कला का इतिहास

पुरातन गोदना कला :–

आदिकाल से ही मानव अपने सौंदर्य को बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहा। अपने आसपास के सुंदर वातावरण को देखकर उसमें भी अपने सौंदर्य को और अधिक बढ़ाने की इच्छा जागृत हुई। अपनी इस इच्छा को साकार करने के लिए मनुष्य शुरू से ही अलग–अलग तरह के परिधानों, आभूषणों तथा गोदने जैसी क्रियाओं का प्रयोग करता आ रहा है। जैसे देखा जाए तो परिधानों, आभूषणों के मुकाबले गोदने की परंपरा आदिम कला में तो सभी में थी। परंतु मध्यकाल तक आते–आते यह कुछ कबीलाई समूहों तक ही सीमित होकर रह गई। उस समय यह भी सौन्दर्य बढ़ाने का सबसे उत्तम साधन माना गया। अतः मनुष्य ने आभूषणों व परिधानों के साथ–साथ गोदना कला को भी सौंदर्य परिधानों में शामिल कर लिया और गोदना बनाने लगा।

प्राचीन काल में अर्थात आदिम काल में मनुष्य अपने शरीर पर टैटू बनवाने के लिए बांस की लकड़ी का प्रयोग करता था। वह बांस की लकड़ी लेकर उसे बिल्कुल पतला – पतला काटकर शरीर पर चलाते थे, जिससे शरीर से खून निकलता था। परंतु शरीर मगरमच्छ की खाल जैसा सख्त बन जाता था। उसका टैटू बनाने का यह तरीका बड़ा ही दर्दनाक होता था। शरीर पर ऐसे घाव बनाने का अर्थ होता है कि जिसके शरीर पर गोदना बनाया गया है, वह अब बड़ा हो गया है और बहादुर भी। अपनी बहादुरी का साक्ष्य देने के लिए उसे यह पीड़ा सहन करनी पड़ती थी। यह केवल 18 वर्ष की आयु तक ही जो युवक होते थे, उनके शरीर पर बनाए जाते थे। कहीं – कहीं पर तो आज भी यह दर्दनाक तरीके अपनाए जाते हैं। जैसे कलिंगा कबीले में टैटू बहादुरी के लिए ही दिया जाता है। जब भी कोई कबीला वासी कोई बहादुरी का काम जैसे किसी ऐसे आदमी को मारना जो कि उनको नुकसान पहुंचाता हो, तो उसे मारने की खुशी में टैटू बनाया जाता है।

उनका टैटू बनाने का तरीका ही कुछ अलग है और बनाने की यह परंपरा बहुत पुराने समय से चली आ रही है। टैटू बनाने के लिए वे किसी पेड़ के कांटे का प्रयोग करते हैं। कांटे को टहनी के साथ ही तोड़ लिया जाता है। फिर उसे पीछे से किसी सख्त लकड़ी से ठोका जाता है। यह कांटा एक बार में शरीर के अंदर जाता है, तो खून निकलता है। पूरा होने के बाद यह तीन दिन तक दर्द होता है। बनने के कई सालों बाद भी यह नया का नया ही लगता है, जैसे अभी अभी गुदवाया गया हो। ये लोग अधिकतर सांप और कानखजूरा ही अपने शरीर पर गुदवाते हैं। चाहे कितना भी बुड्ढा क्यों न हो उसे भी बहादुरी के बदले एक टैटू दिया जाता है और तो और औरतों के शरीर पर भी बनाए जाते हैं। जो कि गले के आसपास हार के जैसे बनाया जाता है।

आतुल : हरियाणा लोक सांस्कृतिक धरोहर, पेज न0. 149, 150

प्राचीन समय में गोदना कला का उद्देश्य व इसको बनाने के ढंग ही अलग थे। समय बदलने के साथ–साथ गोदने का ढंग भी बदला। लोग गोदना कला में धार्मिक चीजें जैसे ओह्म, स्वास्तिक, त्रिशूल, फूल – पत्तियां जैसे कमल का फूल और गुलाब के फूल, तथा ज्यामितीय आकारों जैसे त्रिभुज आदि का चित्रण करवाते थे। वे भी एक ही रंग के अर्थात वह कीकर के पेड़ का कांटा लेकर उसके साथ गोदना गोदते थे। पहले कांटे के साथ बाहरी रेखांकन किया जाता था। फिर उसमें राख भरी जाती थी। राख छेदों में भर दी जाती थी और गोदना काले व हरे रंग का हो जाता था। यह केवल बाह्मीय रेखा के रूप में प्रयुक्त होता था। अर्थात उसमें कोई भी छाया प्रकाश का प्रयोग नहीं किया जाता था।

यह भी माना जाता है कि गोदना का इतिहास बहुत ही पुराना है अर्थात इसका जन्म 3000 से 6001 ईसा पूर्व हुआ जो कि बर्फ में दबे एक आइसमैन ''ओटजी'' के शरीर पर पाए गए तो कि वह बिल्कुल ही गोदना या टैटू जैसे दिखते थे। इसकी शुरुआत मिस्र देश से मानी जाती है। जहां यह उच्च गरिमा का प्रतीक माना जाता था। यह बहुत ही दर्दनाक प्रणाली थी। इसके पश्चात यह यू.एस.ए., न्यूजीलैंड, न्यूजर्सी, अफ्रीका, एशिया और पैसीफिक द्वीप समूह पर फैला।

प्राचीन समय में यह एक मनोरंजन का साधन भी माना जाता था। पुरुष और स्त्रियां मेलों में जाकर इसे अपने बच्चों के हाथों पर, कलाइयों पर गुदवाते थे। ताकि वे भीड़ में एक दूसरे से बिछड़ न सके। खो जाने के डर से वे हाथों या कलाइयों पर माता–पिता का नाम, कोई निशान या फूल – पत्ते बनवाते थे। इस प्रकार वे स्वयं को सुरक्षित समझते थे यदि कहा जाए कि गोदना कला को बढ़ावा अधिकतर स्त्रियों ने दिया है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं होगा। क्योंकि पहले स्त्रियां अपने पति का नाम नहीं लेती थी। अतः वह नाम बताने व परिचय देने के लिए पति का नाम अपनी कलाई पर गुदवा लेती थी ताकि वह नाम लिए बिना दूसरों को बता सकें।

पहले यह एक लोक कला समझी जाती थी। लोग भगवान के प्रति अपनी आस्था दिखाने, विजय का प्रतीक, कुल का चिन्ह आदि से जुड़ा मानते थे। इसलिए वह अपने शरीर के अंगों पर कहीं राम या कृष्ण की मूर्ति या फिर ओह्म गुदवा लेते थे और पहलवान हनुमान को शक्ति का प्रतीक मानते थे, अतः हनुमान की प्रतिमा को अपनी छाती, बाहों या पीठ पर गुदवाने में गर्व महसूस करते थे। और औरतों द्वारा आंखों के ऊपर बिंदिया, पैरों या बाजू पर मोर, शेर तथा ठोडी पर तीन बिंदिया गुदवाना आम बात थी। कुछ लोग इसे जादुई शक्ति, मक्खी, बिच्छू , शंख, मकड़ा, व सांप, शरीर रक्षा, नक्षत्र, पौथी व चक्र, पहचान मात्र, चंद्र–बिंदु, सूर्य तथा मंगल, मत्स्य, कमल, त्रिकोण, मयूर व स्वास्तिक आदि से भी जुड़ा मानते थे। वे अलग–अलग आकृतियां भी बनवाते थे। इसी प्रकार कुछ आकृतियां ऐसे भी हैं जिनके विशेष अर्थ लगाए जाते थे जैसे पंच पांडव, मत्स्य, चंद्र–रोहिणी, अंगूठी, कमल, तिल आदि।

पहले खोदने वाले को ''ललेहरी'' तथा गुदवाने वाले को ''लनेहारी'' कहा जाता था। यह अधिकतर घुमंतू लोगों द्वारा बनाए जाते थे।

आधुनिक गोदना कला :–

मध्यकाल तक आते–आते गोदना कला कुछ कबीलों तक ही सीमित होकर रह गई थी। परंतु जैसे ही 21वीं शताब्दी की शुरुआत हुई तो एक बार फिर गोदने का चलन बढ़ने लगा, जिसे आधुनिक समय में टैटू कला का नाम दिया गया। आज इसका महत्व पूरी तरह से बदल गया है। आज लोग इसे फैशन के तौर पर शरीर के विभिन्न हिस्सों पर गुदवाने लगे हैं। अब टैटू एक ही रंग के नहीं बल्कि बहुत सारे रंगों से बनाया जाने लगा है। इसका प्रचार इतना अधिक बढ़ गया है कि लोगों को अपने शरीर पर होने वाली परेशानी में तकलीफ का भी आभास नहीं रहता। आज यह एक ऐसा फैशन बन गया है कि बड़े–बड़े तो इसे बनवाते ही हैं किंतु जो छोटे बच्चे हैं वे भी पूरी तरह से टैटू के दीवाने हो गए हैं। टीनएजर्स अर्थात कम उम्र के लोगों में भी टैटू का क्रेज तेजी से बढ़ रहा है।

बड़े–बड़े सितारों को टैटू बनवाता था देख युवक – युक्तियों में भी टैटू बनवाने की होड़ शुरू हो गई है। आज टैटू टीनएजर्स में इतना लोकप्रिय हो गया है कि सभी महानगरों में उनके शरीर पर बनवाए गए टैटू देखे जा सकते हैं। पहले यह पूरे शरीर पर नहीं बनवाए जाते थे। परंतु आज लोग इसे हाथों या कलाइयों पर ही नहीं, बल्कि अपने पूरे शरीर पर या भिन्न–भिन्न भागों पर बनवाने लगे हैं। आज पहले की तरह नाम तो लिखवाए जाते हैं, परंतु पहले की तरह निशान नहीं बनवाए जाते। लोग इसे अपने चेहरे, बाजू, टांगों, पैरों, पीठ, पेट आदि भागों पर बनवाने लगे हैं। अब तो शहरों में टैटू पार्लर भी खोले जा चुके हैं।

आजकल के युवक – युक्तियां अपने शरीर के विभिन्न भागों पर रंग–बिरंगी आकृतियां बनवाकर यह दिखाना चाहते हैं कि मानो वे बहुत प्रगतिशील और आधुनिक हों। पहले तो इसे केवल स्त्रियों द्वारा ही बढ़ावा दिया गया, परंतु आज स्त्री या पुरुष बच्चे सभी ने इसे बहुत अधिक प्रसिद्ध कर दिया है। आज अपने शरीर पर टैटू बनवा कर घूम–घूम के लोग कहीं भी देखे जा सकते हैं। आजकल तो टीवी में हर इतिहासकार में देखे जा सकते हैं। जिन मशीनों के साथ टैटू बनवाए जाते हैं, आधुनिक समय में ऐसे टैटू बनवाए जाते हैं जिनका कोई अर्थ ही नहीं है। युवा अपने शरीर पर भिन्न भिन्न प्रकार की आकृतियां बनवाने लगे हैं। बच्चे अपने शरीर पर कार्टून जैसे मिक्की माउस तथा युवा अपने शरीर पर परियाँ, महात्मा बुद्ध की प्रतिमा, प्रभु यीशु आदि की आकृतियां बनवाते हैं। कुछ लोग अपने किसी प्रियजन या प्रिय मित्र की याद में टैटू बनवाते हैं, ताकि वे उन्हें जिंदगी भर न भूल सके और हमेशा याद रखें।

Internet के आधार पर, 7अप्रैल 2023, समय – 11:30

आजकल तो गूंगे लोगों को भी इसका बहुत अधिक लाभ हुआ है। अब उन्हें अपना परिचय देने में कोई परेशानी नहीं होती, क्योंकि वे भी अपना परिचय देने के लिए अपने नाम टैटू बनवाते हैं। कुछ लोग अपनी बीमारी से लड़ने के लिए भी टैटू गुदवाते हैं और कुछ अपने शरीर पर लगे दाग – धब्बे छुपाने के लिए गुदवाते हैं। आजकल लोग अपने लाइफ स्टाइल के हिसाब से या अपने काम के हिसाब से भी बनवाते हैं ताकि बिना बोले अपनी पहचान दे सके। आज यह शरीर के विभिन्न अंगों पर तो गुदवाये ही जाते हैं परंतु लोग तो इसे अपने आंखों में दांतो पर भी बनवाते हैं। लोग **MRI** के द्वारा अपनी आंखों में परमानेंट आई लाइनर का प्रयोग कर टैटू बनवाते हैं। यह एक बहुत ही पतली सुई होती है, जिसके द्वारा यह काम किया जाता है। परंतु यह बहुत खतरनाक है। इससे टैटू के कण आंखों में रह सकते हैं तथा कई परेशानियां भी आ सकती हैं। यह बहुत ही हानिकारक भी सिद्ध हो सकता है। वे बहुत सारा पैसा खर्च करके यह सब करवाते हैं। परंतु यह घातक है।

इंग्लैंड के वर्मी बैज फ्रैक्स तो टैटू खुदवाने के मामले में सबसे आगे निकल गए हैं। उन्होंने अपने शरीर के किसी बाहरी हिस्से पर नहीं बल्कि मुंह के अंदर अपने दांतो पर प्रिंस विलियम्स तथा केट मिडल्टन के टैटू गुदवा लिए। जिनके वह बहुत बड़े फैन हैं। इस टैटू के लिए उन्होंने 1000 पौंड (1600 अमेरिकी डॉलर) का खर्चा करना पड़ा था। वैसे ये टैटू अस्थाई थे और इन्हें बैशरर टैटस कहा जाता है। इन्हें स्टैसिल्स तथा अल्ट्रा फाइन ब्रशेज़ से हटाया जाता है। फ्रैंक्स ने ये टैटू द विंडसर नॉट' द्वारा इंग्लैंड के शाही परिवार के सबसे बड़े फैन की खोज के अंतर्गत गुदवाये थे। फैशन के तौर पर लोग इन्हें बनवा तो लेते हैं परंतु फिर इसे जल्दी से जल्दी मिटाना चाहते हैं और उसके लिए अलग अलग तरीके अपनाए जाते हैं। परंतु बॉलीवुड कलाकारों के शरीर पर टैटू बनाने वाले मशहूर टैटू कलाकार विकास के लिए युवाओं को आगे आने को प्रेरित करते हैं। उन्होंने बताया कि गलियों में घूम घूम कर टैटू बनाने वालों से बचना चाहिए क्योंकि उससे शरीर पर दुष्प्रभाव हो सकता है। उन्होंने कहा है कि ऐसा मंच होना चाहिए जिस के बैनर तले युवा अपनी इस कला से जुड़ने को प्रेरित करना चाहिए। परंतु इसे बनवाने से पहले जो हिदायतें व सावधानियां बताई जाती हैं, उनका विशेष ध्यान रखना चाहिए। ताकि कोई भी बुरे परिणाम न हो।

गोदना कला परंपरा का विकास

गोदना के फूल गोदाव मोर गुइयाँ,
यही रे गोदनवां सइयां के निशनी,
मन में पिरितिया अखियन में पानी,
सगरो गहनंवा यही जति बरि जदूहैं,
पियवा निशानी सरग तक जइहै।।

गोदना गोदती हुई गोदाहारिन अपने मधुर स्वरों में गाती हुई। जब सुआ और रंग से शरीर के विभिन्न अंगों पर प्रिय के नाम का हवाला देती और उसके प्रेम की याद दिलाती तो सूइयों की चुभन की तीव्र पीड़ा न जाने उस हंसी ठिठोली में कहां लुप्त हो जाती थी।

तत्पश्चात प्रेम की तीव्रता और पवित्रता प्रमाणिकता से मन अद्भुत अनुभूतियों से भर उठता था। कहते हैं गोदना एक परंपरा है। भ्रांति से जन्मी किंतु पहचान व प्रेम की अद्भुत निशानी के रूप में न जाने कितने पूर्व से ही परंपरा के रूप में चली आ रही हैं। जब स्त्रियों में शिक्षा का अभाव था, तब एक दूसरे के प्रेम और निष्ठा से बंधें थे। ये प्रतीक अति लोकप्रिय थे। सावन आते ही लड़कियां ससुराल से मायके जाती और प्रियतम की याद में उनके प्रेम का प्रतीक गोदना गोदवाती थी। ससुराल आने पर उनके गोदने को बड़ी बूढ़ियों द्वारा देखा जाता तभी उनको पवित्र माना जाता था और उनके हाथ का पानी पिया जाता था। जो स्त्रियां गोदना नहीं गुदवाती थी उनके चरित्र को अच्छा नहीं समझा जाता था। परदा प्रथा और संयुक्त परिवारों की दुरूह व्यवस्था के चलते समयाभाव का विषमताओं के बीच यह प्रतीक चिन्ह एक दूसरे के प्रेम को जीवित रखने में सेतु का काम करते थे।

तरह–तरह की भ्रांतियां और मान्यताओं को जन्म देता हिंदू समाज के नर नारियों में गोदना अपनी पहचान और दृढ़ स्थान बनाए रहा। हमारे देश में तरह–तरह के आक्रमणकारी आते रहे। धनसंपदा के साथ उनकी कुदृष्टि स्त्रियों पर भी पढ़ती थी, क्योंकि गोदना विवाहित स्त्रियों को प्रमाणित गहना था। इसलिए यह सुरक्षा कवच का काम भी बखूबी निभाता रहा। बाद में लोगों ने सुरक्षा की दृष्टि से कुंवारी लड़कियों को भी गोदना गुदवाना शुरू कर दिया। बाद में इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ती गई कि लोगों ने इसे सौंदर्य सामग्री के रूप में शामिल कर कलात्मकता के विभिन्न रूपों में शरीर के विभिन्न अंगों पर बनवाना शुरू कर दिया।

चांद, सूरज, तारे, मोर, फूल – पत्तियां, प्रिय के नाम, न जाने क्या–क्या गोदना सौंदर्य की वो परिभाषा बन गया जिसे चरित्र की शुद्धता की कसौटी माना जाता रहा। यही कारण है कि अपने देश की महिलाओं का आकर्षण बना रहा। गोदना गोदने वाली महिलाएं होती थी। अछूत मानी जाने वाली

उन स्त्रियों से असह्य पीड़ा झेलते हुए भी पवित्रता के भाव से भरकर उसे अंगीकार कर अद्भुत आनंद से भर उठती थी। गोदने को लेकर एक बहुत बड़ी धारणा यह है कि मृत्यु उपरांत प्रेम व निष्ठा की यह निशानी साथ में ईश्वर के घर तक साक्षी बनकर जाती है। बाकी धन, दौलत, जेवर, कपड़े इत्यादि यहीं रह जाते हैं।

छत्तीसगढ़ में आज भी आदिवासी नट बंजारे इस कला को जीवित रखते हुए हैं। लेकिन समय परिवर्तन और बाजारवाद ने इसकी रोजी–रोटी पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया। जैसा की सर्वविदित है कि अपनी चीजों को मार्केट में लाने के पहले बाजार पुरानी परंपराओं को हितकारी नुकसानदायक और बीमारी का घर जैसा करार करने में पूर्ण सक्षम है। टिटनेस और स्किन कैंसर का भय लोगों में व्याप्त कर गोदने की परंपरा को धीरे–धीरे मिटाने में सफल रहा। जहां आधुनिक जीवन शैली रूढ़ियों को तोड़ने, भ्रांतियों को मिटाने, विज्ञान के नित नए आयाम तय कर प्रगति और विकास के पथ पर अग्रसर होता रहा है, वही बाजार ने गोदने को आधुनिक रूप देकर टैटू के रूप में स्थापित कर दिया। हाँ ये बात अलग है कि अब पवित्रता, निष्ठा और प्रेम का इससे कोई लेना–देना नहीं है। मात्र फैशन व ग्लैमर का प्रतीक बन कर भी गोदना आज भी अपनी कलात्मकता को समृद्ध रखने में पूर्ण सक्षम बना हुआ है।

ऊंची कीमत देकर आधुनिक और समृद्ध युवक युक्तियां टैटू पार्लर में जाकर कलात्मक कृतियां बनवाते हैं। मशीनों द्वारा कुशलतापूर्वक जटिल कलाकृतियां आज बाजार में अपना का स्थान बना चुकी है। बाजार की अपनी व्यवस्था होती है। किसी भी चीज को आधुनिकता का रूप देकर बेच देना बाजार खूब जानता है। इस तरह से गोदने की परंपरा और रिवाज को धीरे–धीरे समाप्ति के कगार पर लाकर कितने ही लोगों की रोजी–रोटी छीन ली और एक परंपरा एक विश्वास और एक निष्ठा अपनी स्वाभविकता की प्रथा खोता जा रहा है।

द्वितीय अध्याय

- गोदना कला की विधि एंव सामाग्री
- गोदना सम्बन्धी समाजिक मान्यतायें

गोदना कला की विधि व सामग्री

1876 ई. में थोमस एडिसन नामक व्यक्ति ने टैटू करने के लिए विद्युत मशीन का आविष्कार किया। जिसके द्वारा बिजली की सहायता से नीले प्रिंट में टैटू किया जाता था, जो कि एक क्रांतिकारी रूप ले गया। मशीन के अविष्कार के 10 साल बाद कई सुधार किए और इसको एकाधिकार दिया। सैम्युअल ओ. रेली को संसार में पहला विद्युत पैन बनाने का श्रेय प्राप्त है जोकि ऐडीसन की मशीन के ब्लूप्रिंट से ग्रहण किया गया था। ओ. रैली ने केवल एक बदलाव किया उसने पैन के अंदर स्याही रखने का स्थान बनाया। आज जो मशीन हम प्रयोग करते हैं, उसका पेटेंट चार्ली वैमर ने करवाया जिसको डबल कोचल मल्टी पर्पज खुदाई करने की मशीन है।

विद्युत पैन को टैटू मशीन का पूर्वज माना जाता है। यह पैन थॉमस अलवा एडीसन के द्वारा अधिकृत किया गया। न्ययार्कू , न्यूजर्सी और यूनाइटेड स्टेटस अमेरिका में 1876 के दौरान इन पैनों को स्टैस्लि पैन का नाम दिया गया था। 1891 में सॅम्युअलओ रेली ने इस पैन का बदलाव दिया तथा सुई और ट्यूब की सहायता से टैटू मशीन को तैयार किया गया। ओ. रेली की यह मशीन रोटरी तकनीक पर आधारित थी जो कि चुंबकीय विद्युत शक्ति के द्वारा चलती थी। सबसे पहली मशीन एक सिंगल घुमावदार मशीन थी अधिकतर आधुनिक टैटू मशीन सुई की गहराई, स्पीड और गति को नियंत्रित करने की क्षमता रखती है। नियंत्रण के इस प्रक्रिया को अमेरिका में डेरमापिगमैटेरांन या स्थायी कॉस्मेटिक का नाम दिया गया। 1820 से लेकर आज तक आधुनिक टैटू मशीन में बहुत कम बदलाव हुए। औरेटिड द्वारा अविष्कृत डोरबैल सर्किट वाली मशीनें सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हैं।

सामग्री :–

प्रत्येक वस्तु को बनाने के लिए किसी न किसी सामग्री की आवश्यकता होती है। जिससे उस वस्तु को एक सुंदर एवं आकर्षक रूप दिया जा सकता है। इसी प्रकार टैटू को सुंदर व आकर्षक बनाने के लिए जो सामग्री प्रयुक्त की जाती है, वह इस प्रकार है :–

- गन **(GUN)**
- इंक **(INK)**
- इंक कप **(INK CUP)**
- कलर **(COLOURS)**
- लींडर **(LINDER)**

- शेडर **(SHADER)**

GUN :–

यह एक मशीन होती है जिसके द्वारा टैटू बनाया जाता है। इसको बनाने के लिए मशीन में सुईयां इसके आगे डाली जाती हैं। ये कई प्रकार की होती हैं।

INK CUP :–

यह स्याही रखने के काम आता है। टैटू बनाने से पहले स्याही इसी काम में डाली जाती है और फिर मशीन में भरी जाती है।

COLOUR (रंग) :–

टैटू को रेखांकित करने के बाद उसमें रंग भरे जाते हैं। ये अलग–अलग रंग के होते हैं। ये 14 शैडस में आते हैं।

NEEDLES :–

टैटू बनवाने के लिए जितनी जरूरी गन मशीन है, उतने ही सुइयां भी आवश्यकता है। यह टैटू मशीन के आगे लगाई जाती हैं जो कि कम से कम और ज्यादा से ज्यादा 10 डाली जाती हैं।

LINER :–

यह कम काम करने के लिए अर्थात छोटा काम करने के लिए प्राप्त होती हैं। यह इच्छानुसार ही स्याही डालने के काम आती है।

SHADER :–

यह बड़े वह ज्यादा क्षेत्र वाले काम को करने के लिए प्रयोग की जाती है।

विधि :–

टैटू बनाने के लिए सभी यंत्र एक जैसे नहीं होते। इनके गुण, मूल्य तथा उद्देश्य अलग–अलग हैं। इसलिए टैटू बनाने से पहले हमें उचित क्षेत्रों का चुनाव चाहिए। टैटू मशीन में एक फ्रेम होता है। और टयूबें लगी होती हैं। इन टयूबों में सुइयां डाल दी जाती हैं और पीछे से इनको निकाला जाता है। टयूबों को हाथ से भी पकड़ा जाता है। ये स्टील तथा सख्त लोहे की या सख्त प्लास्टिक की भी हो सकती हैं। ये टयूबें कभी भी ग्राहक की त्वचा को नहीं छूती।

यही कारण है कि –

एक सुंदर तस्वीर बन जाती है। टयूबें कई प्रकार के आकारों की होती हैं और इनका आकार मशीन की नोक और सूईयों की नोक पर निर्भर करता है। टैटू मशीनें दो प्रकार की होती हैं। एक लाइनर और एक शेडर। अपने नाम के आधार पर ही ये दोनों सुंदर और अच्छा काम करने वाली होती हैं। दोनों में बहुत ही बारीक फर्क होता है। लाईनर में सीधे और छोटे घुमाव होते हैं। लाइनर मशीन के लिए लाईनर सूईयों का ही प्रयोग किया जाता है। जोकि टयूब के साथ लगने वाली छोटी सूईओं का समूह होता है। मशीन के तौर पर लाईनर मशीन सूईयों को त्वचा में अंदर–बाहर करती है। इन सूइयों की एक खासियत यह है कि इन की सहायता से एक सीमित मात्रा में ही स्याही त्वचा के अंदर प्रवेश करती है।

इन सूइयों का प्रयोग अधिकतर छोटे कामों और रेखांकित कामों के लिए किया जाता है। अधिकतर लाईनरम कम से कम एक या अधिक से अधिक दस सूईयों के द्वारा चलाई जाती है। शेडर का प्रयोग बड़े कामों के लिए अर्थात त्वचा के बड़े क्षेत्र में शेड करने के लिए किया जाता है। इसमें अधिक बिजली की भी आवश्यकता रहती है। मशीनों को चलाने के लिए पावर तार का प्रयोग किया जाता है। बिजली की तार को टैटू मशीन के साथ जोड़ा जाता है। टैटू मशीन और तार के मध्य में एडोप्टर लगा होता है जिससे विद्युत को कम या अधिक किया जाता है। कलाकार बड़े ध्यान से इसको प्रारंभ करता है। टैटू मशीन की बिजली बैटरी से भी प्राप्त की जा सकती है। टैटू की सुंदरता मशीन को मिलने वाली बिजली की सही मात्रा पर भी निर्भर करती है, सूईयों को स्याही में डूबोया जाता है और मनपसंद रंग किया जाता है। यह एक पेंट ब्रश की तरह काम करती है। जब रंग को बदलना होता है, तो सूईयों को पानी के एक कप में डुबाया जाता है और फिर नया रंग लिया जाता है।

गोदना संबंधी सामाजिक मान्यतायें

जब लड़कियां सात वर्ष की हो जाती हैं, गोदना छपवाने की उम्र आरंभ हो जाती है। गोदने की क्रिया कई वर्षों में ही पूरी होती है। गोदना छपवाने की दूसरी क्रिया उस समय आरंभ होती है जब लड़कियां किशोरावस्था की उम्र में कराती हैं। गोदने की अंतिम क्रिया जहां तक संभव हो सके विवाह के पूर्व कन्या के पिता के घर पर ही संपन्न हो जानी चाहिए परंतु यदि किसी कारणवश ऐसा नहीं हो सके तो विवाह के दौरान उस लड़की के ससुराल में भी इस कार्य को संपन्न किया जा सकता है।

फश एस. शरीर के अधिकतम भाग को गुदना गुदवाये जाने को लड़की के परिवार की संपन्नता एवं बेटी को अधिक चाहने का प्रकाश मानते हैं। स्त्री के शरीर पर गुदना न होने की दशा में उन्हें बुरी नजर से देखा जाता हैं। जीवन भर यह न मिटने वाली कलाकृतियां उनके आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं। अधिक गुदना गुदवाने वाली स्त्रियों को ससुराल में अधिक सम्मान प्राप्त होने के कारण भारत की 99 प्रतिशत महिलाओं के शरीर पर गुदना पाया जाता है।

सामाजिक महत्व :–

गुदना चिन्हों के सामाजिक महत्व के कारण कुछ चिन्हित आकृतियाँ प्रतीत रूप में जानी जाती है। भारतीय क्षेत्र में भील युक्तियों द्वारा विवाह के पूर्व आंखों के दोनों किनारों पर दो आड़ी लकीरों अथवा 'आड़े' गुदवाये जाते हैं। यह एक और आंखों को पैना (तेज) आभास देखकर लंबी आंखों का सौंदर्यबोध प्रदान करते हैं। साथ ही यह अनेक जातियों का चिह्न भी है। जाति विशेष में प्रचलित कुछ गुदना चिह्न शताब्दियों से अपने आदिम रूप में ही स्वीकृत पा रहे है। इसलिए एक जाति में प्रचलित विशेष चिह्न दूसरी जाति में नहीं पाए जाते।

आदिवासियों के विश्वास के अनुसार गुदना चिन्हों से अंकित स्त्री सौंदर्यपूर्ण लगती है। गोदनों के अंकन का आरंभ जादू एवं सर्वोच्च ऊर्जा में विश्वास के कारण हुआ होगा। कुछ अभिप्राय 'टोटके' से संबंधित हैं, जिनको अंकित करने का उद्देश्य भी प्रतिकूल अभिचार के प्रतिरोधक के रूप में किया जाता है। इन टोटेमिक अभिप्रायों का अंकन शरीर के विभिन्न अंगों पर करने का प्रचलन है। अनेक विद्वानों के अनुसार गोदना का आरंभ सजावट के उद्देश्य से नहीं हुआ है। बाद में अवश्य ही गोदना सजावट के विकास में सौंदर्य परक दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण हो गया।

गोदना के कुछ रूपाकार अनेकानेक जातियों में लगभग समान प्रचलित हैं। किंतु इन रूपाकारों के अर्थ प्रत्येक जाति में भिन्न–भिन्न पाए जाते हैं, जिन्हें जातीय गुण, स्वभाव तथा सामाजिक श्रेष्ठ के आधार पर स्वीकृति प्राप्त होती है। जिस समय इन जातियों का निर्माण हुआ तब उन जातियों में जो

भारतीय लोक कला, नीलिमा गुप्ता, सैन्ट्रल मार्किट, अशोक बिहार, सन् 2010, पेज न0. 130

जातीय समूह जितना अधिक संगठित, विस्तृत, प्रभावशाली तथा बुद्धिसंपन्न रहा होगा, उसने अपने इस संगठन शक्ति को अभिव्यक्त करने हेतु शरीर पर स्थाई रूप से चिन्हों को अंकित करना आरंभ किया होगा। जिससे उनकी पहचान दूर से ही संभव हो सके। मनुष्य के इसी संगठन के परिणाम स्वरुप मातृसत्तात्मक कबीलों के समूह में स्त्रियों की सुरक्षा हेतु गुदना चिह्नों का प्रचलन आरंभ हुआ।

गुदना संबंधित धार्मिक एवं सुरक्षात्मक धारणाएं :–

गोदना से जुड़ी भक्ति भावना एवं आराध्या के प्रति स्नेह निम्नलिखित फाग द्वारा स्पष्ट होता है, जिसमें भिन्न–भिन्न अंगों पर कृष्ण का नाम व रूप चित्रित करवाने की गुहार ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास का प्रतीक है :–

गोदो गुदनन की गुदनारी, सबरी देह हमारी।
माथे पै मधसूदन गोदौ, माँग में लिखौ मुरारी।।
बेईयन पै बनमाली भर देव, कर में कुजं बिहारी।
'ईसुर' करा घरौ कन्हैया, मुख में तो मनहारी।।

प्रोफेसर श्री चन्द जैन के अनुसार – गोदना सौंदर्यवृद्धि का तो एक विशिष्ट साधन माना ही गया है, लेकिन इसके साथ कई पुरानी मान्यताएँ, लोक विश्वास, मूढ़ाग्रह, कुल देवी, देवता प्रतीक आदि संबंधित हैं।

आदिम समाजों में यह धारणा है कि जो स्त्री अपने दाहिने कंधे व छाती में किसी देवी – देवता का प्रतीक गुदवाती हैं, उसे शत्रु कभी हानि नहीं पहुंचा सकता। क्योंकि गुदा हुआ देव, शत्रु से उसकी रक्षा करता है। आदिवासी स्त्रियां अपने शरीर पर 'टोटमा' (गोत्र चिह्न) भी गुदवाती हैं। उनकी धारणा है कि शरीर में गोत्र चिह्न गुदवाने से उनके पूर्वजों की आत्मायें संकट के समय उनकी रक्षा करती हैं। शरीर के भिन्न–भिन्न रंगों को गुदवाने के संदर्भ में अनेक लोग विश्वास जिनके आधार पर रसेल एवं हीरालाल विभिन्न देवी–देवताओं को गुदवाने के निश्चित अंग इस प्रकार बताते हैं। पद्मसेन देव– पाँव के देवता, गजकरन (हाथी) देव – पैर के देवता, कोड़ा (घोड़ा) सामने की ओर के पैरों के ऊपरी भागों के देवता, हनुमान – भुजाओं के देवता, भीमसेन – पीठ पर, झूलन देवी, कंटेश्वर माता – सीने पर अपने–अपने प्रतीक रूप में चित्रित किए गए हैं। चित्र 84, 85 व 86 हैं।

आदिम समाजों में यह मान्यता है कि जो स्त्री पैरों पर गुदना गुदवाती है उसे स्वर्ग की सीढ़ियां चढ़ने में तनिक भी कठिनाई नहीं होती। पैरों के तलवों में गुदवाने से उनमें पदम देव निवास करता है, जो उनके पैरों की पीड़ा हारता है। पाँव की एड़ी में गुदवाने से एड़ी में 'गजकरण देव' निवास करता है,

जो शरीर के भार से पैरों की रक्षा करता है। घुटनों के ऊपर सामने की ओर गुदना कराने से पैरों को घोड़ों की सी शक्ति प्राप्त होती है, जो स्त्रियां अपनी कलाइयों, हाथों एवं उंगलियों में अपने पति, भाई–बहन एवं सभी सहेलियों के नाम गुजराती हैं, उनकी मृत्यु के पश्चात उनसे स्वर्ग में भेंट होना संभव है। दोनों बांहों की ऊपरी भाग को गुदने से 'शक्ति देव' उनकी बाहों में निवास करता है, जो उन्हें जीवन में अनेक कार्यों के करने की शक्ति एवं प्रेरणा देता है। मुख के ऊपर गुदाने से मुख के आस–पास कोबरा माहुर (विष) नहीं दे सकता। इसी तरह से शरीर के अन्य भागों के संबंध में भी अनेक धारणाएं प्रचलित हैं।

प्रचलित मान्यता के अनुसार गुदने से स्वर्ग में नारी की पहचान बनती है। कुछ अंगों पर चिकित्सा हेतु दर्द निवारक गोदना गोदने के पश्चात उनमें जड़ी बूटियों के रस द्वारा भराई की जाती है।

गोदना सामाजिक एवं संस्कृति :–

गोदना एक प्राचीन कला है। विश्व भर में इसे आदिवासी संस्कृति का अंग माना जाता है। आधुनिक समय में इसका जो रूप और संदर्भ बन गया है, वह एक अलग कहानी है, परंतु हम यहां इसके प्रारंभिक चरित्र की ही चर्चा कर रहे हैं।

गोदना शब्द का अर्थ है किसी सतह को बार–बार छेड़ना अर्थात अनेक बार छिद्रित करना। इस प्रकार यह शब्द उस क्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी पुनरावृति से इसे संपादित किया जाता है।

भारत की भांति हरियाणा में भी गोदना, यहां की आदिवासी एवं ग्रामीण संस्कृति का अभिन्न अंग है। परिस्थितिवश गोदना को आदिवासी और अनेक जातियों के साथ जोड़कर देखा जाता है। इन्हें बनाने वाले और इन्हें बनवाने वाले इन्हीं पृष्ठभूमियों से आते हैं। गोदना करने के लिए मानव त्वचा को छेदना और उससे निकले रक्त को पोंछना होता है। यह कार्य उच्च समझी जाने वाली जातियों में पवित्र और देय माना जाता है जिसे चांडालों का कार्य समझा जाता है। इस कारण गोदना अथवा गुदना करने वाली जातियां भी समाज में निम्न स्थान रखती हैं। सामान्यतः गोदना करने का कार्य बादी जाति के लोग करते हैं। कहीं–कहीं ओझा और जोगी जाति के लोग भी करते हैं। आमतौर पर युवतियों द्वारा गोदना गोदवाने का काम किशोरावस्था में विवाह से पहले कराया जाता हैं। कुछ समुदायों में विवाह के दौरान भी गोदना करना आवश्यक माना जाता है।

गोदना स्त्रियों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आभूषण है। मृत्यु के बाद सारे आभूषण इसी संसार में रह जाते हैं, केवल गोदना ही देह के साथ परलोक तक जाता साथ जाएगा, इस विश्वास के चलते गोदना

https://w.w.w.sahapedia.org, Time – 08:38, Date– 19 March, Mustakh Khan published on 15 Oct - 2019

को स्थापन गहनों की भांति शरीर के उन अंगों पर बनवाया जाता है, जहां अन्य आभूषण पहने जाते हैं। कलाएं में स्थानीय परिस्थितियों एवं जागृति विश्वासों के चलते गोदना के साथ अनेक मान्यताएं जुड़ गई। अपनी जातियों में अंग विशेष पर एक विशिष्ट पर गोदना पैटर्न गुदवाया जाने लगा।

गोदने का चिकित्सीय उपयोग भी किया जाता है। बच्चों के अपंग होने पर उनके हाथ, पैर पर किसी विशेष स्थान पर गोदना कराया जाता है, जिससे वह अंग क्रियाशील हो सके। स्त्रियों के बच्चे न होने पर नाभि के नीचे गोदना करवा कर उनकी कोख खुलवाई जाती है। इस प्रकार की अनेक मान्यताएं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलन में हैं। इस सब के अतिरिक्त कई लोग अपना स्वयं का, अपने प्रिय का, अपने मित्र का, अपने इष्ट देवी – देवता का नाम अथवा चित्र गुदवाते हैं।

रामनामी समुदाय ने गोदना का प्रयोग एक सामाजिक प्रतिकार के रूप में आरंभ किया। दलित होने के कारण उन्हें मंदिर प्रवेश एवं शास्त्र पाठन की वर्जना थी। अतः उन्होंने इस वर्जना के विरोध स्वरूप अपने समूचे शरीर पर राम – राम शब्द का गोदना आरंभ कर दिया। यह समुदाय अपना भी इस परंपरा का पालन कर रहे हैं।

यहां लगभग 20–25 परिवार रहते हैं। इनकी स्त्रियां गांव–गांव घूमकर गोदना करते हैं।

गोदना का काम ओझा जाति के लोग करते हैं। इन्हें नाग भी कहा जाता है। कोंडागांव क्षेत्र के सोनवाल के पास स्थित कनैरा गांव में कुछ परिवार रहते हैं। यहां रहने वाले चंदन नाग की पत्नी लक्खमी नाग गोदना करने के लिए दूर–दूर तक प्रसिद्ध है।

लगभग 35 वर्षीय लक्खमी कहती है कि यहां के मैदानी इलाके से अलग बुंद किया गोदना अधिक लोकप्रिय है।

गोदना करने के लिए, दो, तीन या चार माध्यम मोटाई की सुईयों को आपस में बांध लिया जाता है। अब चिमनी जलाकर उसका धुआं इकट्ठा कर लिया जाता है। इकट्ठा किए गए काजल के पाउडर को पानी अथवा मिट्टी के तेल में घोलकर गाढ़ा घोल बना लिया जाता है। बंधी हुई सुइयों को इस घोल में डुबोया जाता है। वांछित आकृति बन जाने पर उस पर स्याही का गोल लगाया जाता है ताकि काला रंग त्वचा में समा जाए। इसके बाद गोदना की जगह को पानी से धोकर वहां तेल और हल्दी का लेप कर देते हैं।

गोदना करने हेतु आंतरिक गांव में आज भी इसी पारंपरिक तकनीक का प्रयोग किया जाता है। परंतु आजकल गोदना करने की छोटी सी मशीन भी बाजार में आ गई है।

भारत के ग्रामीण बाजारों में मशीन से गोदने का काम बहुत लोकप्रिय हो गया है। इस तकनीक से कम समय और पीड़ा कम होती है। यहां गोदना करने वाले विभिन्न पैटर्न के प्रिंट साथ रखते हैं। जिन्हें देखकर ग्राहक आसानी से तय कर लेता है कि उसे कहां और कौन सा स्टील चित्र गुदवाना है।

आस्था, विश्वास व प्रेम का प्रतीक गोदना :–

गोदना भारत की प्राचीन कला है। अविकसित, अर्द्व विकसित व आधुनिक समय में इसे नारी सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है। श्रृंगार के साथ गोदना का कुछ सामाजिक व धार्मिक महत्व भी था। गोदना का प्रचलन बहुत ज्यादा है। कुछ लोग गोदना को मृत्यु उपरांत यमराज के प्रकोप से बचने का साधन मानते हैं। कुछ लोग गोदना को ना चुरा सकने वाला 'जेवर' आनंद मानते हैं। कुछ लोग गोदना को शारीरिक कष्ट विपत्ति का दुख दूर करने वाला यंत्र मानते हैं। कुछ वर्ग के लोग गोदना को फैशन न होकर वास्तव में आस्था, विश्वास और पूर्वजों की धरोहर मानते हैं। आदिवासी समाज गोदना को अपने पूर्वजों की परंपरा मानती है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली एक अटूट परंपरा है। कुछ वर्ग के लोग कई पीढ़ियों से एक ही आकार के गोदना शरीर में गुदवाते चले आ रहे हैं। गोदने की प्रक्रिया में होने वाले असहनीय पीड़ा और खतरे को पार करना इस जाति में गर्व का प्रतीक माना जाता है।

तृतीय अध्याय

- धार्मिक आस्थ का प्रतीक गोदना
- शरीर के अंगों पर गोदना चित्रण

धार्मिक आस्था का प्रतीक गोदना

धर्म भारतीय जनता का मन एक आवश्यक अंग है, अतः भारतीय धर्म के अंतर्गत जैसे पहले कुछ 'पद् चिन्ह' आते थे जैसे –

रामदेव के पद् चिह्न, (पैरों के चिह्न) हनुमान या ओह्म जो कि हमारे धर्म में पूज्यनाम है, अक्षर आते हैं, जिनको लोग अपने हाथों, बाजूओं पर गुदवाते हैं।

लेकिन लोकप्रियता के हिसाब से सूर्य, चंद्रमा को ही अधिक गोदना करवाया जाता था, जिनका मतलब जीवन के उतार–चढ़ाव को दिखाता है। जिनका छपवाने का मतलब अदृश्य शक्ति अपने साथ रखना तथा उससे जुड़े रहना था।

- **पशु – पक्षी सूचक :–**

मानव समाज के विकास का द्वितीय चरण पशु पालन अवस्था मानी जाती है। उस दौर के भी कुछ अभिप्राय गोदना में प्रचलित हैं। गाय, बंदर, ऊंट, घोड़ा, मयूर, बिच्छू, सर्प, मीन आदि प्रचलित पशु पक्षियों के अभिप्राय हैं।

- **प्राकृतिक वस्तुए :–**

तृतीय श्रेणी में प्रकृति से संबंधित अभिप्राय सम्मिलित किए जाते हैं। इनमें ऐसे वृक्षों के मतलब का प्रयोग सम्मिलित है, जिनका प्रयोग करना मनुष्य ने पुराने समय से आरंभ कर दिया था। गुदना के बहुत से अभिप्राय कृषि व्यवस्था की उपलब्धियों के कीर्ति स्वरूप भी अपनाए गए। केले का पौधा, सुपारी का वृक्ष, ताड़ का वृक्ष, आम का वृक्ष तथा अनेक प्रकार के फूल, वृक्ष में बेलें आदि।

- **नाम :–**

पति, प्रेमी – प्रेमिका, भाई, भौजाई, यौन शरीर के अंगों, स्वयं तथा इष्टदेव के नाम इसके अंतर्गत आते हैं।

- **अन्य गुदना :–**

मानव द्वारा घर की विभिन्न वस्तुओं जिनका जल, अन्न तथा परिवारिक मूल्यों से संबंध होता है, प्रायः उन अभिप्राय ने गुदनों का रूप ले लिया। आभूषण, कुआ, बावड़ी, तीर – कुड़ी (कुई), दौरी, चावल, पानी का घड़ा रखने की गुड़ली, जल–पात्र, सीता की रसोई, राम का मुकुट आदि।

भारतीय लोक कला, नीलिमा गुप्ता, सैन्ट्रल मार्किट, अशोक बिहार, सन् 2010, पेज न0. 135

फैशनेबल टैटू पर भारी पारंपरिक गोदना की परंपरा :–

आधुनिक युग में फैशन के सिलसिले के बाद युवाओं में टैटू काफी लोकप्रिय है। विभिन्न डिजाइनों के टैटू के दीवानों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। लेकिन काफी कम लोग जानते हैं कि टैटू कोई नया फैशन नहीं है, बल्कि इसका प्रचलन सदियों से चलता आ रहा है। भारतीय संस्कृति में टैटू अर्थात का प्रचलन आदिवासी समाज में विशेष रूप से प्रचलित था। आदिवासी समाज गोदना को जादू – टोने, विपत्ति, प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए टोटके के तौर पर अगले जन्म में अपने प्रिय जनों से पुनः मिलने के लिए प्रतीक चिन्ह के रूप में किया करते थे। गोदना या टैटू बनाने की प्राचीन पद्धति बेहद पीड़ादायक हुआ करती थी, लेकिन इसके बावजूद शरीर में गोदना गोदवाने में न तो पुरुष पीछे रहते थे और न ही महिलाएं। यहां तक कि गोदना गोदने का काम एक विशेष जाति के लोग करते थे। समय के साथ तकनीकी विकास ने जहां एक ओर गोदना अर्थात टैटू प्रेमियों को पीड़ा रहित गोदना उपलब्ध कराया है, वहीं आजकल गोदने में ही हो रहे विभिन्न केमिकल के प्रयोग में शरीर में पड़ने वाले इस के असर पर एक नई बहस छेड़ दी है। बीते समय में गोदना के लिए सरसों के तेल के साथ काजल का प्रयोग किया जाता था, जिसका शरीर पर पर का कोई विपरीत असर नहीं होता था।

आधुनिक समय में शरीर में टैटू बनाने के लिए कई प्रकार के आधुनिक मशीनों का प्रयोग किया जाता था। इतिहासकार विजय रक्षित बताते हैं कि आदिवासी समाज में टैटू या गोदना के लिए 'फोपसा या चिमटी' का प्रयोग किया जाता है। यह विशेष यंत्र तीन विभिन्न आकार वाले सुई से बना होता था। इन सुवों को सरसों तेल से चिकना किया जाता था। इन सुवों में सरसों या जटंगी (रामतिल) से बनाए गए 'काजल' का प्रयोग किया जाता था। गोदने की प्रक्रिया में हाथ के कानी उंगली का विशेष महत्व होता था। गोदने के लिए सुई के साथ बांस की पतली सिंक का प्रयोग भी किया जाता था। आदिवासी समाज में गोदने के लिए जो पद्वति बेहद पीड़ादायक होती थी। इसके लिए पहले शरीर में सुई या सिंक को शरीर के चिन्हित स्थान पर चुभा कर आकृति उभारा भर जाता था। इस प्रक्रिया में गोदना करवाने वाले को असहनीय पीड़ा सहनी पड़ती थी। वही सुई या सिंक के चुभने से शरीर में इंफेक्शन का खतरा भी रहता था। इसके बावजूद प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक आदिवासी समाज गोदना प्रेमियों की संख्या कभी कम नहीं हुई है।

आकृतियों का विशेष महत्व :–

आदिवासी में प्रचलित गोदना प्रथा में आकृतियों का विशेष महत्व होता है। कुछ आकृतियां जातियों में पहचान के तौर पर गुदवाया जाता है। कुछ जाति के लोग कनपटी में तीन लकीरें वाली

https://w.w.w.haidunia.comJanpur, Time – 11:07, Date- 22 March

गोदना, कुछ वर्गों में विशेष आकृति वाले गोदना, विशेष नाम से जाना जाता है और इनका अपना विशेष महत्व भी होता है। माथे के बीच में बिंदी के आकार वाले गोदने को 'टप्पा या टिप्का' के नाम से जाना जाता है। इसे महिलाएं अपने सुहाग की निशानी के तौर पर गुदवाती हैं। विवाहित महिलाओं के लिए यह गोदना श्रृंगार मात्र ना होकर सौभाग्य का प्रतीक है। इस गोदने को महिलाएं अपने पति की रक्षा के लिए विशेष तौर से गुदवाती हैं। शरीर में गोत्र का नाम गुदवाने से संकट के समय में पूर्वजों की सहायता मिलने की मान्यता प्रचलित है। कुछ जातियां गोदना के जादू – टोना से बचाने वाले यंत्र के रूप में प्रयोग करती रही हैं। इस जाति में गोदने की प्रक्रिया से पहले कुछ विशेष प्रकार के टोटके करने की भी परंपरा रही है।

महिलाओं का परंपरागत पैशा :–

गोदना के पैशा में महिलाओं का बोलबाला पाया जाता है। यद्यपि इसे किसी जाति या लिंग विशेष के लिए आरक्षित नहीं किया गया। इसके बावजूद कुछ विशेष वर्ग के लोगों को गोदना में विशेष महारत हासिल रही है। गोदना के कार्य में महिलाओं की विशेष पकड़ देखी गई है। गोदना गोदने का पैशा करने वाली महिला को गोद नारी या गोदनहारी कहा जाता है। विरासत में मिली गोदना कला में महिलाएं माहिर होती हैं। औजार संचालन व आकृतियों को शरीर के किसी भी हिस्से में उकेरने की इनकी कला देखने लायक होती हैं। महिलाओं द्वारा उकेरी गई आकृतियां आधुनिक मशीनों से आकृतियों से कहीं अधिक बारीक व बेहतर कारीगरी का नमूना होती हैं।

इच्छा का प्रतीक गोदना :–

गोदना को केवल एक फैशन या एक कला मात्र ना होकर मनुष्य की एक प्रबल इच्छाशक्ति और दृढ़ निश्चय का प्रतीक है। गोदना से तमाम कष्ट और बाधाओं को पार करते हुए लक्ष्य की और पाने की दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रेरक तत्व माना गया है। प्राकृतिक औषधियों का प्रयोग किया जाता है। गोदना की प्रक्रिया बेहद संवेदनशील होती है। शरीर के अंगों में सुई या सिंक के चुभाए जाने के दौरान इंफेक्शन का खतरा रहता है। इन खतरों से बचने के लिए गोदना करने वाले वर्ग समाज के लोग प्राकृतिक औषधियों का प्रयोग करते हैं। इन्फेक्शन से बचने के लिए गोबर और दर्द के निवारण के लिए हल्दी का प्रयोग किया जाता है। गोधना के लिए रंग के लिए काजल का प्रयोग किया जा जाता है। काजल बनाने के लिए भी सरसों या जटंगी के तेल का उपयोग किया जाता है।

शरीर के अंगों पर गोदना चित्रण

हरियाणा की लोक चित्रकला में शरीर के अंगों पर चित्रकारी की प्राचीन परंपरा सुरक्षित है। इसमें मेहंदी गोदना, महावर तथा आंगिक चित्रण सम्मिलित है।

भोजपुरी क्षेत्र में मेहंदी अत्यंत लोकप्रिय अलंकरण है। सावन के मनभावन महीने में स्त्रियां अपने हाथों पर विभिन्न प्रकार के डिजाइन लगाते हैं। मेहंदी के पौधे के पत्तों को पीसकर उसमें थोड़ा तेल मिलाकर उसके रंग को पक्का किया जाता है। स्त्रियां सींक से अपने हाथों पर गोल, चांद, सूरज, स्वास्तिक, नाम, फूल, पत्तियां आदि बनाते हैं। सूख जाने पर यह मेहंदी हाथ पर बूटीदार छींट की डिजाइन की तरह सुंदर ढंग से लगाती हैं। गाँवों में प्रचलित लोक चित्रकला का यह सर्वाधिक सूक्ष्म जटिल और कठिन अलंकरण है। इस कला की शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी पीढ़ी दर पीढ़ी मिलती है। इन चित्रों में भारत की धार्मिक एवं सामाजिक परंपराएं विद्यमान हैं।

अंग आलेखन में 'गोदना' लोक चित्रकला :–

हिंदू स्त्रियों में विवाह के बाद लोक मान्यताओं के आधार पर चली आ रही परंपरा के अनुसार गोदना गोदवाना आवश्यक होता है। गोदना, शुभ, सुहाग और श्रृंगार के प्रतीक के रूप में गोदवाया जाता है। यह भी धारणा प्रचलित है कि विवाह के बाद गोदना न गोदवाने से अगला जन्म उनका हिंदू परिवार में नहीं होगा।

गोदना गोदवाने की प्रचलित प्राचीन परंपरा है। जनजातीय समाज में इस अलंकरण की विशेष लोकप्रियता है। वर्तमान परिवेश के कलात्मक साधनों के निर्माण के पूर्व भी पुरातन काल में गोदना सौंदर्य का एक महत्वपूर्ण उपाय था। आदिवासियों में अंग–आलेखन 'खोनण' के नाम से जाना जाता है। इस शब्द का अर्थ है 'खोदना' या गोदना। क्योंकि इसमें सुई की नोक से त्वचा को छेदकर या गोदकर उसमें सेम के पत्ते का रस, तेल और कालिख भरी जाती है, जो मानवीय भावनाओं व आकांक्षाओं के सौंदर्य प्रतीक स्वरूप हैं। इसके भिन्न–भिन्न नाम की किवंदन्तियों व लोकगीतों में सुने जा सकते हैं। यह कला अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए सृजनात्मक रही है। अंग आलेखन के प्रसंग साहित्य में भी प्राप्त हैं। सुंदरी तिलक में आए हुए गोदने के प्रसंग से ज्ञात होता है। गोदनहारियाँ इस कार्य को संपन्न करती थी। एक नायिका गोदने वाली से आग्रह करती है कि मेरे बाँहों में 'ब्रजरास' कपोलों में 'कुंजविहारी' तथा अंगों में 'सांवरे' रूप गोद दे। रीति कालीन कवियों ने भी गोदना जैसी ग्राम्य सौंदर्य प्रक्रिया का वर्णन किया है। गोदना के अनेक प्राचीन रूप समाजिकों द्वारा भी चित्रित किए जा रहे हैं।

पूर्वाच्चल की लोकचित्रकला डा0. (श्रमती) प्रीति विश्वकर्मा कला प्रकाशन बी. 33/33 ए– न्यू साकेत कालोनी, बी.एच.यू., वाराणसी, पेज न0. 37, 38, 39

डॉक्टर लल्लन राय ने अपने लेख 'भारत में गोदना' के अंतर्गत रीति काव्य चुन–चुनकर एकत्रित किए हैं, जिनमें 'गोदनार' का अथवा 'तिलकहारी' द्वारा नायिका के अंगों पर गोदना गोदने की चर्चा है।

भोजपुरी लोकगीतों में गोदना के महत्व तथा उसके परंपरा के संबंध में वर्णन मिलता है। एक लोकगीत में गोदनहरिन कहती है कि – ''गोदना ही एक ऐसा आभूषण है जो कि मृत्यु के बाद शरीर के साथ जाता है। बाकी गहने तो यहीं पर उतार लिए जाते हैं''।

गोदना के संबंध में यह भी ज्ञात होता है कि गोदना में देवी देवताओं की आकृतियां बनाई जाती हैं। इससे देवताओं को प्रसन्न करने का माध्यम समझना चाहिए। सूर्य, चंद्र तथा अन्य लोक देवताओं का अंकन इसलिए भी अनिवार्य किए जाते हैं कि इन आराध्य स्वरूप प्रतीकों को स्त्री शरीर पर अंगालेखन से, परपुरुष द्वारा स्त्री यौनाचार से सदैव विमुख रहेगी। कुछ समाजों में यह मान्यता है कि अंग आलेखन से रहित शरीर के मरने के बाद स्वर्ग में प्रवेश नहीं मिलेगा। कुछ समाजों में इसे दुर्भाग्य से बचाव का साधन माना गया है।

गुदने के अकारों अखिखित के साथ–साथ पूरे भारतीय संस्कृति की भी छाप मिलती है। आराध्य देवी–देवताओं के साथ प्रतीक चिन्ह यथा – कलश, ओम् , त्रिशूल, शंख, चक्र, पताका, सूर्य, चंद्र आदि चित्रों को शरीर पर धारण करने से शक्ति , शांति, सुख व आभूषण मण्डित वैभव की अनुभूति प्राचीन काल से मानव करता आ रहा है।

आधुनिक प्रचलन जहां एक और महिलाओं महिलाओं को अंग प्रत्यंग पर लगे महीन से महीन काले तिल व धब्बों को हटाने के लिए प्रेरित करता है। वही इस क्षेत्र की देहाती महिलाएं काली स्याही से गुदने से पति के नाम तक गुदवाकर भावनात्मक सादगी व पति के साथ मधुर संबंधों को प्रकट करती है। इस प्रकार गोदना की परंपरा साहित्य कला तथा लोक संस्कृति में प्राचीन कला से विद्यमान रही है। इसकी लोग प्रकृति आस्था और विश्वास के साथ देखी जा सकती है।

शरीर के अंगों के आलेखन में एक और भी महत्वपूर्ण पक्ष है कि विवाह के समय वधू के सौभाग्य की मंगलकामना के लिए उनके ललाट, कपोल और भैंहों आदि पर सफेद तथा लाल रंगों से अंकित बिंदु भी लोक चित्रकला के ही रूप हैं। धर्म से परे परिलक्षित और समाज के द्वारा समादृत यह लोग चित्रकला कलाप्रेमी मानव के लिए आनंदानुभूति का अनुपम साधन रही है। उसका एक आध्यात्मिक पक्ष भी है। इस आध्यात्मिक पक्ष के कारण ही वह लोक संपूजित होती है। इस प्रकार गोदना तथा अंग अलंकरण भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं की भांति है।

अंग–आलेखन की विद्या में लोक चित्रकला के अंतर्गत पैर रंगने की चित्रमयी पद्धति 'महावर' नाम विख्यात है। प्रायः व्रत एवं मांगलिक अवसरों पर स्त्रियाँ महावर लगाना आवश्यक मानती हैं। इसमें

भी पैरों की एड़ी, पंजे तथा ऊपरी भाग में मांगलिक चित्र बिंदु आदि बनाए जाते हैं। यह लोक शैली की देन है। विवाह, गवना, मुण्डन, जनेऊ, कथा, व्रत, त्योहारों पर नाइन द्वारा घरों में जाकर यह अलंकरण तैयार किया जाता है और उसके बदले में उसे नेग मिलता है। संस्कृत, हिंदी तथा भोजपुरी साहित्य में इसकी चर्चा है। इसमें केवल रेखीय आकृतियों की ही प्रधानता रहती है। इन रेखाओं का विशेष महत्व है। इनमें स्वभाव, सौभाग्य एवं सरलता की अभिव्यक्ति की ही प्रधानता रहती है।

महाकवि कालिदास ने रघुवंश में इसका सजीव चित्रण किया है। उध्वस्त अयोध्या का वर्णन करते हुए कहते हैं कि – "अट्‌लिकाओं के जिस सोपान मार्गों पर सुंदरियाँ अपने महावर लगे लाल–लाल पैर रखते हुए चलती हैं।" संस्कृत एवं भोजपुरी साहित्य ऐसे संदर्भों से भरा पड़ा है।

हिंदी साहित्य में महा कवि बिहारी ने लिखा है कि जब नाइन नायिका के पैरों में महावर लगाने के लिए उद्यत हुई तो उसके पैरों की लाली देखकर असमंजस में पड़ गई –

" गोड़वा महावरि लवले, पहिने सबुज रंग चुनरिया।।
देखें साँवरि अपनी सुरतिया, दरपनवा में।।

इस प्रकार अंग – अलंकरण या अंग चित्रण में भारतीय सांस्कृतिक बिम्ब उपस्थित होता है। भारतीय इन परंपराओं के लिए विख्यात रहा है। वन्य क्षेत्र होने के कारण लोग वृक्षों से रंग निकालना जानते हैं। इन चित्रण से प्राचीन संस्कृति की परंपरा और प्रकृति का पता चलता है।

इस प्रकार हरियाणा में चित्रकला के सूक्ष्म सर्वेक्षण तथा हरियाणा संस्कृति के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यहां दोनों ही विधायें प्राचीन, प्रवाहमय एवं पारंपरिक हैं। इस कला ने भारतीय कला एवं संस्कृति को समृद्ध किया है। गंगा – सरयू – सदानीरा का यह पुनीत क्षेत्र लोकचित्रों का क्षेत्र रहा है। चित्रकला की लोकशैली में भूमि, भित्त, पट, काष्ठ, मृदभांड, अंग आदि सभी क्षेत्रों में सांस्कृतिक परंपराओं के साथ समझने की है। इन सहज, सरल एवं स्थानीय बोधगम्य चित्रों के रंग, रेखा एवं संयोजन की मूल भावना को सांस्कृतिक परंपरा एवं प्रकृति को उपस्थित किया जा सके।

इन लोक चित्रों में लोक चितेरों के चित्र की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। लोकचित्रों की यह विशेषता है कि उसमें आकृति की रचना सर्वप्रथम की जाती है। उसके बाद बचे हुए स्थान में चित्र के मूल विषय से संबंधित आकृतियां भरी जाती हैं। लोक कलाकार शुन्यता या खालीपन को भरना चाहता है। वह खालीपन से दूर रहना चाहता है। इसलिए रेखाओं एवं रंगों के संयोजन की जटिलता उसे कभी भी परेशान नहीं करती है। यही लोकचित्रकला की प्रकृति है तथा उसकी दार्शनिकाता भी। लोकचित्र

तथा शास्त्रीय चित्रकला का दीर्घकालीन इतिहास बताता है कि कोसल, काशी, मिथिला एवं मगध के मध्य का पुनीत सांस्कृतिक क्षेत्र भारतीय ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक तथा दार्शनिक दृष्टि से अत्यंत प्राचीन दीर्घकालीन एवं पारंपरिक है। लोकचित्रकला की दीर्घकालीन परंपरा इसकी साक्षी एवं सहचरी है।

चतुर्थ अध्याय

- गोदना कला के प्रभाव
- गोदना कला के दुष्प्रभाव

गोदना कला के प्रभाव

प्रभाव :–

गोदने से कई तरह के स्वास्थ्य प्रभाव हो सकते हैं। क्योंकि त्वचा की बाधा को तोड़ने की आवश्यकता होती है। गोदने में संक्रमण और दात्विक सहित कई स्वास्थ्य जोखिम होते हैं। आधुनिक टैटू बनाने वाले सार्वभौमिक सावधानियों का पालन करके, एकल–उपयोग डिस्पोसिप्हर्स के साथ काम करके इस तरह से नौकरी करते हैं। कई न्यायक्षेत्रों में टैटू बनवाने वालों को समय–समय पर रक्त जनित रोग जनक प्रशिक्षण से भरा हुआ है जैसे कि रेड क्रॉस और यू.ए.सए ऑक्यूपेशनल ब्लाउज एंड हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन के माध्यम से प्रदान किया जाता है।

त्वचा निर्णय ने शरीर में टैटू वर्णक से दुर्लभ लेकिन गंभीर जटिलताओं को देखा है और यह ध्यान दिया जाता है कि टैटू प्राप्त करने वाले लोग शायद ही कभी अपने टैटू प्राप्त करने से पहले स्वास्थ्य संबंधित स्थिति की चिंता करते हैं। कुछ गलती में इस्तेमाल होने वाले वर्णक के अधिक योग हैं। वर्तमान में टैटू में उपयोग किए गए वर्णक की विस्तृत श्रृंखला अप्रत्याशित स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकती है।

संक्रमण :–

चूंकि टैटू उपकरण रक्त और भौतिक तरल पदार्थों के संपर्क में है, यदि डिवाइस एक से अधिक व्यक्तियों पर बिना किटाणु अनुपयोगी उपयोग किए जाते हैं, तो रोग प्रसारित हो सकते हैं। हालांकि स्वच्छ और आधुनिक टैटू स्टूडियो में सिंगल यूज सुई लगाने से संक्रमण दुर्लभ है। शौंकिया तौर पर किए गए व्यवहार के साथ जैसे की जेलों में तय किए गए, संक्रमण का एक उच्च जोखिम है। इस समस्या को हल करने के लिए कनाडा में 2005 की गर्मियों में एक कार्यक्रम शुरू किया गया, जो स्वास्थ्य सेवाओं का काम करने और बंदियों को विपणन योग्य सहायता प्रदान करने के लिए जेलों में कानूनी गोदना प्रदान करता है। छह पंजीकृत साझेदारों की टैटू पार्लर के कर्मचारियों और संचालन के लिए प्रशिक्षित किया गया था।

संयुक्त राज्य अमेरिका में रेडक्रॉस जैसे व्यक्ति को 12 महीने (एफडीए 2000) के लिए रक्तदान करने से रोकता है, जिसने एक टैटू प्राप्त किया है। जब तक कि बांझ तकनीक का उपयोग करके राज्य विनियमित और लाइसेंस प्राप्त स्टूडियो में प्रक्रिया नहीं की जाती।

सभी राज्यों में एक लाइसेंसिंग कार्यक्रम नहीं है, जिसका अर्थ है कि जो लोग उन राज्यों में टैटू प्राप्त करते हैं, वे स्टूडियो के स्वच्छ मानकों के बिना 12 महीने की मोहलत के बिना काम नहीं कर

सकते। इसी तरह यूके टैटू बनाने वालों के लिए सत्यापन प्रदान नहीं करता है, और टैटू के बाद 4 महीने तक बिना किसी अपवाद के रक्तदान प्रतिबंधित है।

संक्रमण जो पुरातन रूप से एस असंक्रमित उपकरण या क्षतिग्रस्त होने के उपयोग से प्रसारित हो सकते हैं, उनमें से त्वचा के सतही संक्रमण, हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी, तपेदिक और एचआईवी शामिल हैं। हालांकि संयुक्त राज्य अमेरिका में किसी भी व्यक्ति को व्यवसायिक रूप से गोदने की प्रक्रिया के माध्यम से एचआईवी के अनुबंध होने की सूचना नहीं है। वांशिगंटन राज्य के ओ.एस.एच. ने सुझाव दिया है कि क्योंकि गोदने में उपयोग की जाने वाली सुइयां खोखती नहीं होती हैं, सुई की छड़ी की चोट के मामले में संचालित पदार्थों की मात्रा इतनी कम हो सकती है कि एचआईवी को संचारित करना मुश्किल होगा।

धनुस्तंभटैटू बनवाने से पहले अप–टू डेट टेटनस रेटिंग से जोखिम कम हो जाता है। रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्रों के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में 1995 में हेपेटाइटिस के 13,387 मामलों में से 12 मामले (0.09 प्रतिशत) टैटू पार्लर से जुड़े थे, लापरवाही के रूप में 43, मामले (0.32 प्रतिशत) दाग के मामले से जुड़े थे।

2006 में सी.डी.सी. ने बिना लाइसेंस वाले टैटू वादियों को मेथिसिलिन कटिबंध किया, स्टैफ संक्रमण के 44 मामलों के साथ तीन समूहों की सूचना दी।

स्याही की प्रतिक्रिया :–

शायद तंत्र के कारण जिससे त्वचा की प्रतिरक्षा प्रणाली रेशेदार उत्तक में वर्णक कणों को समाहित कर लेती है, टैटू स्याही को ''उल्लेखनीय रूप से गैर प्रतिक्रियाशील उतकीय'' के रूप में वर्णित किया गया है। हालांकि कुछ एलर्जी प्रतिक्रियाओं को चिकित्सीय रूप से प्रलेखित किया गया है। टैटू पिगमेंट के लिए एलर्जी प्रतिक्रियाओं के समग्र घटना का कोई अनुमान मौजूद नहीं है। लेटेक्स से एलर्जी स्पष्ट रूप से स्याही की तुलना में अधिक आम है, अनुरोध किए जाने पर कई कलाकार गैर–लेटेक्स दस्ताने का उपयोग करेंगें। टैटू इसे मजबूत करके सकारात्मक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया भी ट्रिगर कर सकता है।

टैटू पिगमेंट के लिए एलर्जी की प्रतिक्रिया, जबकि असामान्य, अक्सर लाल – पीले और कभी–कभी सफेद रंग के साथ देखी जाती है। सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने से प्रतिक्रिया शुरू हो सकती है।

सीरम नामक स्पष्ट द्रव के रिसाव के साथ पिगमेंट पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं। हालांकि ऐसी प्रतिक्रियाएं काफी दुर्लभ हैं और कुछ कलाकार प्रशिक्षण पैच कराने की सलाह देंगे। क्योंकि पारा और

और अजी– लाल रंगों में रसायन अन्य पिगमेंट की तुलना में अधिक सामान्यतः एलर्जिक होते हैं। लाल टैटू में एलर्जी की प्रतिक्रिया सबसे अधिक देखी जाती है। काले, बैंगनी और हरे रंग की पिगमेंट के लिए कम लगातार एलर्जी की प्रतिक्रिया भी नोट की गई हैं।

मेंटल एलर्जन से दूषित टैटू स्याही को गंभीर प्रतिक्रियाओं का कारण माना जाता है। कभी–कभी वर्षों बाद, जब मूल मूल स्याही प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध नहीं होती, तो धातु एलर्जी देखें।

प्रमाणपत्र प्राप्त में पारंपरिक धार्मिक लवण प्रचलित हैं। एक 3 – पाय –5 इंच सीसा हो सकता है। लेकिन इस बात को समझने के लिए मजबूत सबूत है कि धातु के लवन इस पर खतरनाक हैं या नहीं। डोज और इस विधि के माध्यम से। हालांकि 2005 में गलती से हासिल की गई धातु विषत्ता की कोई रिपोर्ट नहीं मिलती थी। जैविक वर्णक भी स्वास्थय संबधी चिंता पैदा कर सकते है। एक यूरोपीय आयोग ने नोट किया कि यूरोप में उपयोग किए जाने वाले लगभग 40 प्रतिशत नामांकित रंगकारों को कॉस्मेटिक उपयोग के लिए नहीं चुना गया था, और 20 प्रतिशत रंगों के तहत एक कार्सिनोजेनिक एरोमैटिक अमाइन था।

एम.आर.आई. :–

एम.आर.आई स्कैन की वजह से टैटू पर दस्तावेज के तौर पर कुछ मामलों का दस्तावेजीकरण किया गया है। काले हासिल के बड़े क्षेत्रों के डिजाइन के साथ समस्याएं हैं, क्योंकि काले रंग में आमतौर पर आयरन का क्षरण होता है, एम.आर.आई. इलेक्ट्रॉनिक विद्युत प्रवाह या हिस्टैरिसीस को प्रेरित होकर गर्म करने का कारण बनता है। ''स्थाई मेकअप'' जैसे छोटे टैटू पर जलन हो सकती है लेकिन यह दुर्लभ है। गैर –लोह वर्णक भी एक गुप्त सूचना के कारण प्रकट हुए। इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए केवल टैटू बनवाना एम.आर.आई. के उपयोग का निषेध नहीं करता है।

त्वचीय स्थिति :–

गलती करने वालों की जगह केलॉयड बन जाता है।

अन्य निरोधात्मक प्रभाव :–

टैटू पिगमेंट के कारण होने वाली अन्य प्रलेखित परिस्थितियां आती हैं :–

- रक्त गुल्म :–

कभी–कभी, जब कभी–कभी जब गोदने की प्रक्रिया के दौरान रक्त वाहिका में छेद हो जाता है (खरोंच) प्रकट हो सकता है। ब्रूस आमतौर पर एक सतह के अंदर ठीक हो जाते हैं। क्रौंच एक टैटू के चारों और प्रभाव मंडल के रूप में प्रकट हो सकते हैं या, यदि रक्त जमा हो जाता है, तो एक बड़ा क्रौंच के रूप में प्रकट हो सकता है। यह नीला या गहरा धुंधला प्रभामंडल जो एक टैटू को घोरता है, कोश का प्रसार या 'ब्ली–आउट' के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। हेमेटोमा के लिए आमतौर पर गलती से, यह मलिनीकरण तब होता है जब टैटू वर्णक त्वचीय त्वचा की परत के नीचे उपचर्म के नीचे होता है। नीचे के ऊतक में फैले जाते हैं और छिपकर त्वचा में बहुत गहरा जमाव होने के कारण हो सकते हैं।

- लसीका तंत्र पर बोझ :–

कुछ विवरणक साइट से सिर्फ नोट्स नोट्स में चले जाते हैं, जहां बड़ा काला सागर हो सकता है।

लेजर टैटू हटाने के उपचार द्वारा बनाए गए छोटे छोटे हो सकते हैं कि वे लसीका तंत्र द्वारा हो जाते हैं और खाते में चले जाते हैं, लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता। हटाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली लेजर तकनीक और विशेषाधिकार जा रहे हैं, वर्णक की रचना अलग–अलग होती है।

- रक्त के प्रभाव :–

रक्त को कंकड़ करने वाली दवाओं का एक आहार गोदने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है, जिससे अत्यधिक रक्तस्राव हो सकता है। यह बड़ा हुआ रक्तस्त्राव त्वचा में पर्याप्त उपलब्धि हासिल करने की प्रक्रिया को धीमा कर सकता है। ऑफटरकेयर हीलिंग में भी अत्यधिक समय लग सकता है।

गोदना कला के दुष्प्रभाव

गोदना कला को आधुनिक समय में टैटू कहा जाता है। टैटू का आजकल के युवाओं में काफी ट्रेंड है। इसकी लोकप्रियता आजकल बहुत ज्यादा होती जा रही है। इसकी लोकप्रियता इतनी ज्यादा है कि आजकल महिलाएं और लड़कियां भी काफी टैटू बनवा रहे हैं, लेकिन इससे होने वाले नुकसान को भी ध्यान में रखे तो आप इससे होने वाली परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए आइए आपको हम टैटू से होने वाले नुकसान के बारे में विस्तार से बताएं :–

➢ त्वचा की समस्या :–

ये तो आपको भी पता है कि टैटू आजकल के युवाओं में एक तरह का स्टाइल स्टेटमेंट बनता जा रहा है। आजकल के युवा अपने शरीर पर तरह–तरह के टैटू बनवाने का चलन है जो युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय हो गया है। लेकिन आपको यह जानकर हैरानी हो सकती है कि टैटू से गंभीर बीमारियों की आशंका के अलावा त्वचा पर लालिमा, सूजन, मवाद आने के साथ दर्द होना, आदि तरह के त्वचा संक्रमण हो सकते हैं। इसके अलावा इससे बैक्टीरिया स्टाफ या स्ट्रैप के कारण जीवाणुओं का संक्रमण होने का भी डर रहता है। टैटू बनवाने में सावधानी बेहद आवश्यक है। यहां तक कि यदि आप नकली टैटू बनवाना चाहते हैं तो भी आपको सावधान रहने की जरूरत है, क्योंकि इससे आपकी त्वचा पर एलर्जी जैसी समस्या हो सकती है।

➢ चर्म रोग और कैंसर :–

टैटू बनवाने में और भी कई तरह के डर और समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जब कोई टैटू बनवाता है तब तो लोग ज्यादा विचार नहीं करते हैं। आपको जानकर हैरानी हो सकती है कि इससे सोराइसिस जैसी बीमारी होने का खतरा भी होता है।

दरअसल टैटू बनवाते समय जब एक व्यक्ति का नीडल दूसरे व्यक्ति पर इस्तेमाल किया जाता है तब चर्म रोग, हेपेटाइटिस और एचआईवी जैसी संक्रमित बीमारियों के होने का खतरा है। यहां तक कि टैटू बनवाने से त्वचा कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। लेकिन फिर भी शरीर पर तरह–तरह के टैटू बनवाने का चलन युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय हो रहा है ।

➢ विषैले तत्वों से खतरा :–

आपको यह भी जानना चाहिए कि टैटू बनाते समय प्रयोग की जाने वाली स्याही में कई तरह के विषैले तत्व मौजूद होते हैं, जिनसे त्वचा कैंसर का खतरा बना रहता है। आपको बता दें कि टैटू बनाने वालों द्वारा प्रयुक्त नीले रंग की स्याही में कोबाल्ट और एलमुनियम होता है, जबकि लाल रंग की स्याही में मरक्यूरियल सल्फाइड और दूसरे रंगों की स्याहियों में सीसा, कैडमियम, क्रोमियम, निकल, टाइटेनियम और कई तरह की दूसरी धातुएं मिली होती हैं। इन तत्वों से आपकी त्वचा पर एलर्जी उत्पन्न होने का खतरा रहता है।

- मांसपेशियों को नुकसान :–

टैटू बनाने बनाने से हमारे शरीर की त्वचा को होने वाले नुकसान को आज भी समझ नहीं पाते हैं। कुछ डिजाइन में टैटू उकेरने वाली सूईयों को शरीर में गहरा चुभाया जाता है, जिससे मांसपेशियों तक को नुकसान पहुंचता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि शरीर पर तिल वाले स्थान पर टैटू नहीं बनवाना चाहिए, यदि आप अपने शरीर की मांसपेशियों को टैटू बनाने से होने वाले नुकसान को बचाना चाहते हैं तो आपको इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- बरते सावधानी :–

यदि आपको टैटू बनवाना अच्छा लगता है तो आप इससे पहले हैपेटाइटिस बी का टीका लगवा लें, इसके अलावा आप टैटू बनवाने से पहले यह भी जरूर सुनिश्चित कर लें कि टैटू बनाने वाला इसका अच्छा जानकार है या उस और उसके पास आधुनिकरण उपकरण और साफ सफाई का पूरा ध्यान दिया जाता हो। उस जगह पर नियमित रूप से एंटीबायोटिक क्रीम लगाते रहें। इन सब उपयोगों को करने और इनके बारे में जानने के बाद आप टैटू बनवाएंगे तो आपको ज्यादा नुकसान नहीं होगा, बल्कि आप टैटू बनाने के बाद होने वाली परेशानियों से बच सकते हैं।

पेशेवर हासिल के घटक :–

टैटू हासिल में एक वाहक के साथ संयुक्त वर्ण होते हैं, जिसका उपयोग टैटू बनाने की प्रक्रिया में त्वचा में टैटू बनाने के लिए किया जाता है। इन हासिल का उपयोग स्थाई मेकअप, टैटू के एक रूप के लिए भी किया जाता है। पेशेवर टैटू कई अक्षरों में होते हैं और विभिन्न प्रकार के वर्णक का उपयोग करते हैं, जिसमें कार्बोनिक वर्णक, कार्बन ब्लैक जैसे विकल्प, और गैर भौतिक वर्णक, जैसे रंग एज़ो – केमिकल्स शामिल होते हैं। वाणिज्यिक निर्माता हासिल करने के लिए नैतिक परीक्षण या आसुत जल

जैसे वाहक के साथ वर्णक प्राप्त करते हैं। वे मिले हुए शेयर को समायोजित करने के लिए संदूषण और अन्य जॉइंट के जोखिम को कम करने के लिए परिरक्षकों को शामिल कर सकते हैं।

टैटू हासिल में रंजक और परिरक्षक त्वचा में एलर्जी का कारण बन सकते हैं। टैटू के अनुसार वर्णक शरीर के अन्य स्थानों जैसे का एक हिस्सा है लिम्फ नोडस में स्थानांतरित हो सकता है। कुछ सामान्य रसायनिक वर्णक रसायन होते हैं जो कैंसर का कारण बन सकते हैं, लेकिन यह निर्धारित करने के लिए कि क्या यह रसायन त्वचा में रहने से कैंसर के खतरे को प्रभावित करते हैं, लंबे समय की लंबे समय तक अध्ययन की आवश्यकता होगी।

यूरोपीय संघ ने सुरक्षा फर्जीवाड़े के कारण टैटू की हासिल में कुछ वर्णक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाना शुरू कर दिया है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, टैटू हासिल किया यूएस फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन लक्ष्य के बिना, जो आमतौर पर वाणिज्यिक लक्ष्य की जांच नहीं करता है जब तक कि विशिष्ट सुरक्षा मुद्दे, जैसे संदूषण के बारे में विज्ञापन प्राप्त नहीं होते हैं। एफडीए ने विशेष रूप से कॉस्मेटिक के लिए किसी भी रंजक को मंजूरी नहीं दी है।

गोदना एक प्राचीन परंपरा है और पुरातात्विक हजारों साल पहले कई महाद्वीपों में लोगों के बीच कालिक से बने टैटू के प्रमाण मिले हैं विशेष रूप से 1800 के दशक के अंत में इलेक्ट्रिक टैटू मशीन टैटू का आविष्कार करने के बाद, कलाकारों ने कुछ वर्णक की पहचान करने के लिए कई प्राप्तकर्ताओं के साथ प्रयोग किया, जो खराब प्रतिष्ठा के बिना रनों की एक श्रृंखला का उत्पादन करते थे, अक्सर अपनी त्वचा में हासिल का परीक्षण करते थे।

अधिकांश टैटू स्थाई होने का इरादा है, लेकिन अर्थ – स्थायी टैटू बनाने के लिए व्यवसायिक तरीके हैं। मेहंदी जैसे पिगमेंट का उपयोग करके त्वचा किस तरह पर अस्थाई टैटू लगाने की प्रथा भी है।

टैटू हासिल कई रंगों में उपलब्ध हैं उनमें से अन्य रंगों और रंगों का उत्पादन करने के लिए कंकड या मिश्रित किया जा सकता है। अधिकांश पेशेवर टैटू कलाकार पूर्व – निर्मित दस्तावेज हैं (जिन्हें पूर्व – प्रक्षेपित गुप्त हासिल के रूप में जाना जाता है), जबकि कुछ कलाकार निष्क्रिय वर्णक और वाहक का उपयोग करके स्वयं को मिलाते हैं।

संयुक्त राज्य में, टैटू दस्तावेज़ को अपनी सामग्री प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है, या यह साबित करने के लिए कि स्वैच्छिक से प्रकाशित सामग्री सूची नाम है। उनके व्यंजन मालिकाना हो सकते हैं। विभिन्न दस्तावेज के टैटू का निर्माण, गुणवत्ता और सुरक्षा में व्यापक रूप से भिन्न होते हैं।

रंजक :–

कई हासिल में मूल रूप से औद्योगिक उद्देश्यों के लिए निर्मित वर्ण होते हैं, जैसे रंगाई वस्त्र, आटोमोटिव पेंट या प्रिंटर की हासिल करने के लिए कई पेशेवर लहजे में ज्यादातर एलर्जी ठीक होते हैं, जैसे एज़ो डाई और और पिगमेंट। हासिल में भी अक्सर पिगमेंट के रूप में भारी वस्तुएं होती हैं, कभी–कभी रंग की छाया को समायोजित करने के लिए मिश्रित होते हैं। वर्णक ठोस या असतत के छोटे टुकड़े हो सकते हैं, जैसे कि टाइटेनियम डाइऑक्साइड या आयरन ऑक्साइड।

कुछ हासिल में ट्रेस मात्रा में पाए जाने वाले अन्य तत्वों में सुरमा, आर्सेनिक, बेरिलियम, सेलेनियम और एलमुनियम शामिल हैं। लिप्सा थोड़ा अपघर्षक है और निकल और क्रोमियम के अति सूक्ष्म टुकड़ों को फर्जी दिखावा और त्वचा में जाने का कारण बन सकते हैं।

आदत हासिल निर्माता अक्सर लागत को कम करने के लिए धातु रंजक मिश्रण करते हैं और / यह हल्के जुड़ाव (जैसे सीसा या जुड़ाव) का उपयोग करते हैं। धातु एलर्जी से दूषित टैटू स्याही को गंभीर एलर्जी प्रतिक्रियाओं इसका कारण माना जाता है, कभी–कभी वर्षों के बाद, जब मूल उपलब्धि के लिए उपलब्ध नहीं होता है।

ब्लैक लाइट हासिल :–

ब्लैकलाइट गलती की चमक में चमकना नहीं है, लेकिन गैर – दर्शकमानयूवी प्रकाश पर प्रतिक्रिया करती है, जिसे प्रतिदीप्ति एक दृश्य द्वारा चमक पैदा होती है। एक विशिष्ट ब्लैकलाइट पर तारों में पोलीमिथाइलमेथैक्रिलकट (पीएमएमए) के साथ चमक डाई माइक्रोस्फीयर शामिल हैं। यह प्राप्त जलन पैदा कर सकता है और कार्सिनोजेनिक हो सकता है और टैटू कलाकार इस बात पर विभाजित है कि वे इसका उपयोग करने के लिए सुरक्षित मानते हैं।

अंधेरी उपलब्धियों में चमक :–

ग्लो–इन–द डार्क टैटू स्याही प्रकाश को अवशोषित और बरकरार रखती है और फिर परफॉर्मेंस की प्रतिक्रिया अंधेरे में चमकती है। इस प्रकार की हासिल में फास्फोरस स्वचा पर रैश पैदा कर सकता है और कार्सिनोजेनिक हो सकता है, और कहीं नकली कलाकार इस उपलब्धि का उपयोग करने के लिए असुरक्षित मानते हैं।

वहक :–

एक वाहक वर्णक के लिए एक क्लिक के रूप में कार्य करता है, एपिडर्मिस के आसपास और कभी–कभी त्वचा में सुई सम्मेलन (जाने पर एक) टैटू मशीन का उपयोग करके, के बिंदु से वर्णक को ''ले'' कहा जाता है। वाहक हासिल को समान रूप से मिश्रित और रोगजन्मों से मुक्त रखते हैं, एप्लीकेशन और सहायता करते हैं।

सॉल्वैंट्स अक्सर एथिल अल्कोहल या आसुत जल होते हैं, मेंथनॉल, प्रोपिलीन ग्लाइकोल और ग्लिसरीन का भी उपयोग किया जाता है, विकृत एल्कोहल या आइसोप्रोपिल एल्कोहल के साथ। जब टैटू हासिल में वाहक आधार के हिस्से के रूप में शराब का उपयोग किया जाता है जिससे टैटू या निशान लगाने से पहले त्वचा को कीटाणु अनुपयोगी करने के लिए यह यह त्वचा की पारगम्यता को प्राप्त होता है, त्वचा में अधिक वर्णक परिवहन में मदद मिलती है।

एडिक्टिव :–

संदूषण को रोकने के लिए गलती हासिल में बेंजोइक एसिड जैसे संरक्षक जोड़े जा सकते हैं। कुछ हासिल एक परिरक्षक के रूप में फॉर्मलडिहाइड होता है जो एक कार्सिनोजेन है और त्वचा में जिल्द की सूजन पैदा कर सकता है। अन्य हासिल में बैंजोआइसोथियाजोलिनोन का उपयोग किया जा सकता है, जो त्वचा में जलन पैदा करता है।

वर्णक भेजने के लिए वाहक को एक वाहन के रूप में सेवा देने में मदद करने के लिए, व्यवसायिक योगों में गिला करने वाले एजेंट, पीएच–विनियम करने वाले रसायन, स्टेबलाइजर्स और गाढ़ा करने वाले एजेंट शामिल हो सकते हैं।

टैटू बनाने की प्रक्रिया के बाद त्वचा को ठीक करने में मदद करने के लिए स्याही निर्माता विच हेजल मिला सकते हैं।

शाकाहारी हासिलः–

कुछ हासिल किए निर्माता शाकाहारी – अनुकूल शाही का उत्पादन करते हैं जिनमें हड्डी चार, ग्लिसरीन, जिलेटिन और शैलैज जैसे पशु उप–उत्पाद नहीं होते हैं।

स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है :–

टैटू मिले के घटक लाल, हरे, पीले और नीले रंग के वर्णक सहित त्वचा में एलर्जी का कारण बन सकते हैं। रंगीन हासिल, जैसे कि लाल, काली, हासिल की तुलना में अधिक बार एलर्जी का कारण बनता है।

स्याही बैक्टीरियाक्षतिग्रस्त हो सकता है, जैसे माइक्रोबैक्टेरियम चेलोना, जो त्वचा में संक्रमण का कारण बन सकता है।

कई सामान्य रूप से उपयोग की जाने वाली सामग्री कार्सिनोजेन्स है – उदाहरण के लिए, अधिकांश काली हासिल में कार्बन ब्लैक होता है, जिसमें पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन हो सकते हैं। टैटू की हासिल में इस्तेमाल होने वाले कई 100 कॅनलिंकमीटर से कम व्यास के होते हैं, जिससे उनके लिए लिंक में प्रवेश करना आसान हो जाता है और एक्सॉक्स कैंसर का कारण बनता है।

चमक प्रकाश के तहत, एंजोव्यख्याप्राथमिक सुगंधित अमाइन (पास) में गिरावट कर सकते हैं, जो कर्सिनोजेनकि हो सकते हैं। हालांकि, 2012 में एकसमीक्षक लेख में कहा गया था ''छवि में होने वाले त्वचा के कैंसर की संख्या में कमी होती है, और इससे संयोग माना जाना चाहिए''।

एक टैटू के आवेदन के बाद, हासिल का एक हिस्सा रक्त वाहिकाओं और लसिका तंत्र द्वारा ले जाया जाता है और इसमें से कुछ को शरीर में कहीं और ले जाया जाता है उत्सर्जित यह संग्रहीत किया जा सकता है। टैटू वर्णकक्रोमियो जैसे जरूरी तत्वों में शामिल हैं। लिम्फि नोड्स में स्थानांतरित हो सकते हैं। यह निर्धारित करने के लिए कि लंबे समय तक अध्ययन की आवश्यकता होगी कि जो जिम्मेदार है वह खतरनाक प्रभाव दे रहे हैं।

मेडिकल इमेजिंग में, जैसे कि मैमोग्राफी, लिम्फवर्णक को गलती से असामान्य रूप से विकसित किया जा सकता है, जिससे कैंसर हो सकता है। गलत सकारात्मक परिणाम मिलते हैं। कैंसर के उपचार में प्रहरी लिम्फ नोड का पता लगाने के लिए शरीर में नीली डाई का उपयोग करना शामिल हो सकता है, इसलिए असाइन किए गए मौजूदा टैटू रंजक प्रहरी की पहचान करने और उनका इलाज करने में अधिक जोखिम पैदा कर सकते हैं।

दुर्लभ मामलों में, चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (लोबोआई) परीक्षा देने वाले व्यक्ति में लौह चिपचिपा वर्णक से व्यवहार के आसपास असंभव असुविधा या जलन महसूस कर सकता है। लूपिंग या सर्कुलर आक्षेप इस आशय में योगदान कर सकते हैं। त्वचा में बड़ी मात्रा में हासिल, जैसे ब्लैकआउट टैटू में, इसके प्रभाव के जोखिम भी बढ़ सकते हैं।

पंचम अध्याय

- हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में गोदना कला

हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में गोदना कला

हरियाणा राज्य भारत का छोटा सा प्रदेश है। पहले इसका प्रादेशिक नाम 'ब्रहमवर्त' था। मनुस्मृति में सरस्वती व हषद्वती नदियों के मध्य का क्षेत्र 'ब्रहमवर्त' था। महाभारत काल में राजा कुरू के नाम पर कुरुक्षेत्र कहा जाने लगा। छठी सदी से कुरुक्षेत्र श्रीकंठ जनपद कहा जाने लगा। बाण ने हर्षचरित्र में इस शब्द का प्रयोग किया है। नौवीं शती में प्रदेश की हरियाली के कारण हरियाल कहा जाने लगा। सोलवीं सदी में 10 वीं सदी में महापुराण के रचयिता पुष्पदंत ने इस प्रदेश के लिए हरियाणा शब्द का प्रयोग किया।

श्रीधर द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के काव्य प्रसाणा चरित्र में इसे हरियाणाए देसे असंख्या गांमें पद में हरियाणा शब्द का सीधा प्रयोग है। 1327 ई. में तोमर अभिषेक में हरियाणा शब्द का सीधा प्रयोग है। 1327 ई. के तोमर अभिलेख में हरियाणा शब्द का उल्लेख है। प्रारंभ में यहां तोमर आए और उसके पश्चात चौहान। इसके बाद यह भूमि मुस्लिम शासकों द्वारा शासित की जाती रही। नौवीं शती में हरियाणा घोड़ों का घर समझा जाता था।

हरियाणा शब्द की उत्पत्ति हरियाणंक शब्द से है। हरि शब्द का अर्थ है घोड़ों और यानम का अर्थ है सवारी। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ घोड़ों की सवारी। कुछ विद्वान हरि अर्थात कृष्ण से इसका संबंध जोड़ते हैं तो कोई हर अर्थात शंकर का क्षेत्र मानते हैं। कुछ विद्वान इसे आर्यों का आदि स्थान होने से हरियाणा का बिगड़ा हुआ रूप अर्यना – हरियाणा मानते हैं। कुछ विद्वान इसका संबंध परशुराम से जोड़ते हैं जिन्हें हरि के नाम से भी संबोधित किया जाता था। एक लेखक हरियाणा नाम इंद्र के नाम से जुड़ा कहते हैं। इंद्र वर्षा का देवता माना जाता है और इस शुष्क क्षेत्र के लोग जल के लिए इंद्र की विशेष उपासना करते थे। अतः आराध्य देव इंद्र के नाम से हरियाणा नाम पड़ा।

जानकारी के स्त्रोत :–

साहित्य स्रोतों के अनुसार वैदिक आर्यों का मुख्य स्थल हरियाणा था। अतः वैदिक साहित्य में हरियाणा के भौगोलिक एवं संस्कृत रूप की झलक मिलती है। ऋग्वेद में सरस्वती एवं वृषद्वती नदियों का वर्णन आया है ।

जैन साहित्य :–

संस्कृत एवं अपभ्रंश भाषा में रचित जैन संहिता में हरियाणा में विषय में कुछ सामग्री उपलब्ध है। भद्रभाहु चरित्र एवं कथाकोष में प्रथम शती से तीसरी शती तक की अनेक बातें लिखी गई हैं। जैन

काव्यों में रोहतक की समृद्धि का भी कई स्थानों पर उल्लेख है। कवि पुष्पदंत ने महापुराण तथा श्रीधर ने अपने णाह चरित्र में इस प्रदेश की चर्चा की है ।

हरियाणा भारत का वह महत्वपूर्ण राज्य है, जो न तो सागर तट को स्पर्श करता है और न ही किसी अंतरराष्ट्रीय सीमा को। इस राज्य का क्षेत्रफल 44212 वर्ग किलोमीटर है। और 2001 में की जनगणना के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या 2,11,44,564 व्यक्ति हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से हरियाणा देश का विस्वन राज्य तथा जनसंख्या की दृष्टि से देश का छठा राज्य है।

पंजाब के बाद हरियाणा भारत का दूसरा समाई राज्य है। हरियाणा में 21 जिले हैं। हरियाणा राज्य विशाल भारत के विभिन्न राज्यों के बीच में अपना एक स्थान एवं अस्तित्व बनाए हुए हैं। जिसमें अनेक जाति एवं धर्म के लोग निवास करते हैं। हरियाणा में निवास वाली कई जाति का सर्वेक्षण करने से जो जिले व स्थानों का परिचय मिलता है, वह इस प्रकार है :–

हरियाणा के विभिन्न जिलों में कुछ स्थानीय तीज – त्योहार मनाए जाते हैं, जो प्रदेश का वास्तविक परिचय प्रस्तुत करते हैं। कुछ मेले व उत्सव ऐसे होते हैं जो स्थानीय परंपराओं के आधार पर आयोजित किए जाते हैं। हरियाणा प्रदेश के कुछ मेले ऐसे हैं जिनकी प्रसिद्धि विश्व भर में फैली हुई है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में देश के कोने–कोने से श्रद्धालु एवं तीर्थयात्री इस पावन भूमि पर एकत्रित होते हैं। इस प्रदेश में जगह–जगह धार्मिक स्थल बनाए हुए हैं। सोमवती अमावस्या को महेंद्रगढ़ जिले में नारनौल के समीप ढोसी पहाड़ी पर जो मेला लगता है, इस क्षेत्र का सबसे बड़ा मेला माना जाता है।

गुड़गांव जिले में इस्लामपुर नामक स्थान पर गोगा नवमी का मेला भादों माह के नौवें दिन लगता है।

इन मेलों में अनेकों गोदने वाले लोग कलाकार बैठे होते हैं जो कि अपनी सेल से चलने वाली मशीन के द्वारा गोदने गोदते हैं। ये लोक कलाकार अपने पास अनेकों प्रकार की आकृतियां रखते होते हैं। इन आकृतियों में इष्ट देवता, अलंकरण युक्त, पशु पक्षी व अन्य प्रकार की कृतियां होती हैं। इन लगने वाले मेलों में गोदना प्रेमी युवक व युवतियां गोदना गोदवाते हैं और अपने आप को अलंकृत करते हैं।

श्रीमद भगवत गीता की जन्म स्थली कुरुक्षेत्र आर्य संस्कृति का सबसे प्रसिद्ध एवं पराधीन केंद्र है। विश्वास किया जाता है कि हिंदू समाज एवं धर्म ने एक निश्चित रूपरेखा यहां धारण की पवित्र सरस्वती नदी के इस क्षेत्र में बहती थी। इसी के तट पर महर्षि वेदव्यास ने अमर काव्य महाभारत की।

वेदों, पुराणों और उपनिषदों का प्रादुर्भाव यही हुआ। यहां श्री कृष्ण ने अर्जुन को प्रेरणादायक संदेश दिया। यही कारण है कि इसे भारत के प्रमुख तीर्थ में से माना जाता है। यही प्रख्यात ब्रह्मसरोवर है, जहां सूर्य ग्रहण के अवसर पर लाखों लोग आकर स्नान करते हैं। वर्तमान समय में यह हरियाणा के उत्तरी भाग में स्थित है।

इसके उत्तर में अंबाला उत्तर पूर्व में यमुनानगर, पश्चिम में कैथल व दक्षिण में करनाल जिले हैं। इस जिले की स्थापना 23 जनवरी 1963 ई. को हुई। इसका क्षेत्रफल 1530 किलोमीटर है। इसकी जनसंख्या 2001 के अनुसार 824454 है, जिसमें 442328 पुरुष व 383126 महिलाएं हैं। वहां के निवासियों के मुख्य उद्योग हथकरघा उद्योग, चीनी, कृषि उपकरण, खाद उत्पादन, जल भरण आदि हैं।

पानीपत एक ऐतिहासिक नगर के नामकरण के बारे में कहा जाता है कि महाभारत की लड़ाई के समय पांडवों ने जिन पंच 5 गांवों की दुर्योधन से मांग की थी, उनमें पनपथ भी था। बाद में यही पनपथ समय के थपेड़ों की मार सहते हुए पानीपत बन गया। दिल्ली से 10 किलोमीटर दूर पानीपत शेरशाह सूरी मार्ग पर बसे इस नगर का अपना महत्व है। यहां तीन प्रमुख लड़ाइयां लड़ी गई जिन्होंने भारतीय इतिहास को नया मोड़ दिया। पानीपत में सुल्तान इब्राहिम का मकबरा, मस्जिद के खंडहर, बाबर इब्राहिम काबली बाग में तलब, चबूतरा फतेह मुबारक, कलंदर आदि अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं।

पानीपत की सीमा तीन ओर से अन्य जिलों से घिरी हुई है, तो पूर्वी दिशा से यमुनापार उत्तर प्रदेश के साथ सटी हुई है। यहां के निवासियों के उद्योग धंधे सूती वस्त्र, विद्युत उपकरण, चीनी, पेट्रोल, रसायनिक पदार्थ एवं कालीन बनाना है। यहां की हैंडलूम व कालीन उद्योग विश्व विख्यात हैं। यहां विभिन्न जातियां निवास करती हैं। पानीपत उप–मंडल सम्हालखा के निकट करती है। सर्वेक्षण के समय पाया गया कि इन जातियों में गोदने धार्मिक परंपरा व शोंकिया तौर पर गुदवाए गए हैं।

ब्रह्मा मुहूर्त काल में युधिष्ठिर और दुर्योधन से जो पांच गांव मांगे गए थे, सोनीपत उनमें से एक है। यहां के पुराने खन्ध्रों से लगता है कि यहां बड़ा वैभवशाली नगर रहा होगा। नगर के समीप से खुदाई में सूर्य, यक्ष–यक्षिणी तथा आदिशिव तथा उनके वहां की नदी की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। कहा जाता है कि रामायण का पात्र श्रवण कुमार अपने माता पिता को तीर्थ स्थलों के दर्शनों के लिए ले जा रहा था, तो उसने वहां के सुंदर वातावरण को देखकर आगे जाने से मना कर दिया था।

इस समय सोनीपत एक प्रमुख औद्योगिक जिला है। जिसमें अनेक जातियों में विभिन्न वर्ग के व्यक्तियों ने अनेकों प्रकार के गोदान गुदवाए हुए हैं। (चित्र संख्या 38) ।

सर्वेक्षण के समय पाया गया है कि इन व्यक्तियों ने अपनी जिस भी भावना से गोदना गुदवाए थे वो एक भारतीय संस्कृति की पहचान का हिस्सा माने जाते हैं। आज के आधुनिक समय में यह राधीन

गोदने विलुप्त होते नजर आ रहे हैं। आज के आधुनिक युग में गुदवाये तो जाते हैं लेकिन यह आधुनिक युग के गोदने हमारे सामने एक न्यू रूप लेकर आए हैं। आगे आने वाले समय में यह आधुनिक युग के गोदने भी हमारी संस्कृति की पहचान बन सकते हैं।

षष्ठ्म अध्याय

- चित्रों का अध्ययन

चित्रों का अध्ययन

➢ टैटू संख्या 1 :–

इसमें मशीन को दिखाया गया है जिससें टैटू बनाए जाते हैं। इसके आगे की तरफ सूईयां लगाई जाती हैं, जो टैटू बनाने के लिए प्रयोग की जाती हैं। इसके पीछे की तरफ तार लगाई जाती है। जिसके द्वारा टैटू मशीन को बिजली देती है। यह मशीनें अधिकतर लोहे, स्टील तथा सख्त प्लास्टिक की होती हैं। टैटू बनाने के लिए इसी मशीन में स्याही तथा रंग भरे जाते हैं।

➢ टैटू संख्या 2 :–

इसमें टैटू बनाने वाली सुईयां दिखाई गई हैं। ये सुईयां टैटू मशीन के साथ लगाई जाती हैं। जिससें टैटू को बनाया जाता है। इनमें कुछ सुईयां शेडर हैं, तथा कुछ लाईनर हैं। लाईनर सूईयां तो कम क्षेत्र अर्थात बारीक काम करने के लिए प्रयोग की जाती हैं। जैसे यदि कोई चेहरा बनाया है और उसके बाल बनाने हैं तो ऐसे बारीक काम के लिए प्रयोग की जाती हैं। ऐसे बारीक काम के लिए लाईनर सुईयां प्रयुक्त होती हैं तथा शेडर सूईयां बड़े क्षेत्र में काम करने के लिए प्रयोग की जाती हैं, अर्थात जहां शेड देने का काम करना हो तो शेड सूईयों का प्रयोग किया जाता है। ये सूईयां कम से कम 1 तथा अधिक से अधिक 10 होती हैं। इन सूईयों की वजह से टैटू मशीन त्वचा को नहीं छूती और न ही खून लगता है। इससे मशीन साफ रहती है।

➢ टैटू संख्या 3 :–

ये टैटू बनाने वाली छोटी मशीनें हैं। इनमें दाएं तरफ वाली मशीन स्प्रे करने का काम तो आती ही है, साथ में इसके आगे शेडर सूईयां लगाई जाती हैं, जिनके द्वारा शेडिंग देने का काम किया जाता है। बाए तरफ वाली मशीन भी टैटू मशीन है। इस मशीन के आगे की तरफ लाईनर सूईयां लगाई जाती हैं जो कि कम काम अर्थात बारीक काम करने के लिए प्रयोग की जाती हैं। ये मशीनें भी बिजली के द्वारा चलती हैं। इनके पीछे भी तार लगी होती हैं जो इन मशीनों को बिजली पहुंचाती हैं।

➢ टैटू संख्या 4 :–

ये बहुत पुराना टैटू है, जिसे पहले गोदना कहा जाता था। इस गोदना में एक मोर बनाया गया है जो की पूरी तरह से डिजाइन के द्वारा भरा हुआ है। मोर की आकृति देखकर मधुबनी कला का प्रभाव अनुभव हो रहा है। यह टैटू बाजू पर बना है।

- टैटू संख्या 5 :–

माथे पर बना गोदना एक विवाहित स्त्री के श्रृंगार का एक अभिन्न हिस्सा है। यह अधिकतर विवाहित स्त्रियों के माथे पर ही पाया जाता है। ये टैटू जो लोग बनवाते हैं वो कभी एक जगह पर नहीं रहते। कुछ दिनों बाद यह एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते रहते हैं। इसलिए इन्हें सजने का वक्त, सामान व पैसे नहीं मिलते। अतः इन सब चीजों को बचाने के लिए ये लोग अपने माथे पर परमानेंट टैटू बनवा लेते हैं, ताकि इस साजो – सामान को इन्हें खरीदना ही न पड़े और वक्त तथा पैसे बचाएं। इस टैटू को बनवाने का एक और बड़ा कारण है कि जिस जगह यह टैटू बनाया गया है, वहां पर ठीक माथे के मध्य में तीन नाड़ियां मिलती हैं। यह ईडा, पिंगला और सुष्मना है। इस स्थान पर देखकर कुछ लोग भविष्य बताते हैं तथा इस जगह पर ध्यान केंद्रित होता है अर्थात एकाग्रता प्राप्त होती है। अतः एक ही पति के बारे में सोचने के लिए विवाहित स्त्रियों ने अपने माथे पर यह चांद बिंदु बनवाया था कि ध्यान न भटके। यह टैटू स्थाई रूप से बनाया गया है जो कि कभी मिट नहीं सकता, जिसके कारण ध्यान एक ही जगह पर अर्थात एक ही पति के लिए टिका रहेगा।

- टैटू संख्या 6 :–

इस गोदना में एक औरत ने अपने हाथ पर अपने पति व अपना नाम गुदवाया हुआ है। यह नाम खुदवाने की प्रथा प्राचीन समय से चली आ रही है। पहले औरतें अपने मुंह से अपने पति का नाम नहीं लेती थी और अपनी पहचान भी नहीं बता सकती थी। पहचान बताने के लिए इन्होंने यह रास्ता अपनाया। इन्होंने साथ में एक मोर को दिखाया है। मोर की आकृति को देखकर मधुबनी कला का प्रभाव अनुभव हो रहा है।

- टैटू संख्या 7 :–

इस गोदना में एक बच्ची की बाजू पर नाम गोदवाया है। बाजू पर नाम गुदवाने का सबसे बड़ा कारण मुख्य उद्देश्य था कि प्राचीन समय में जब लोग मेलों में जाते थे, जोकि उनके मनोरंजन का साधन होता था, तो लोग अपने बच्चों के हाथों पर उनका या फिर अपना नाम गुदवाते थे, ताकि वे

चाहे कितनी भी भीड़ क्यों न हो उन से बिछड़ना जाएं और यदि बिछड़ भी जाएं तो बाजू पर लिखे नाम द्वारा अपने बच्चों को पहचान कर सकें।

यह गोदना गोदने का तरीका वही पुराना ही है। कांटे द्वारा ताकि कोई नुकसान न हो। कांटे द्वारा छेद करने के बाद इसमें राख भर दी जाती थी, जिससे यह गोदना हरा या काले रंग के हो जाते थे।

- टैटू संख्या 8 :–

यह गोदना या टैटू पर बनाया गया है जो कि धार्मिक आस्था से जुड़ा हुआ है। इस गोदने में ओह्म गुदवाया गया है। यह टैटू भगवान के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करने का प्रतीक माना गया है। अपनी आस्था दिखाने के लिए कई बार कुछ लोग तो राम या कृष्ण की प्रतिमां भी बनवाते हैं, ताकि वह भगवान की भक्ति में लीन रहे और उनका ध्यान कहीं भी अनुचित कार्यों की तरफ ना भटके। ओह्म गुदवाने में लोगों का मानना है कि इस अक्षर में पूरा ब्रह्मांड तथा तीनों लोक समाएं हैं। वे यह सब इसलिए भी गुदवाते हैं ताकि वे भक्ति में एक आग्रह और परमात्मा की पूजा पाठ करें। इसलिए लोगों को इसमें बहुत अधिक आस्था व विश्वास है।

- टैटू नंबर 9 :–

यह गोदना बाजु पर एक पुरुष ने गुदवाया है जिस पर मोर की आकृति बनी हुई हैं। लोग अपनी खुशी के लिए या अपने शौक के लिए ऐसी आकृतियां बनवाते हैं। यह मोर मधुबनी के अनुसार बनाया गया है अर्थात मधुबनी कला का प्रभाव है, क्योंकि इसी कला में ऐसी आकृतियां बनाई जाती हैं। मोर को हर्ष तथा उल्लास के भावों में बनाया गया है, क्योंकि मोर जब खुश होता है तभी अपने पंख फैला कर नाचते हैं तथा इसे भी इस प्रकार दिखाया गया है। उन्होंने साथ में अपना नाम भी गुदवाया हुआ है। पहले लोग अपनी पहचान भी नहीं बता पाते थे, पहचान बताने के लिए भी इन्होंने यह रास्ता अपनाया।

- टैटू संख्या 10 :–

ये टैटू कोहनी पर बना हुआ है जिसमें कि दो मोर तथा फूल की आकृति गुदवाई गई है। साथ में ऊपर चांद और सितारों को दिखाया गया है। मोर की आकृति कुछ अलग ही तरीके से बनाई है। दोनों ने चोंच में फूल को बड़े ही सुन्दर ढंग से बनाया गया है। इस गोदना में भी मधुबनी कला का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। मोर के पंख को ऐसे बनाया गया है जैसे पत्तियां हो।

- टैटू संख्या 11 :–

यह टैटू बाजु पर बना हुआ है। इसमें एक दिल बनाया गया है तथा उसके अंदर नाम लिखा गया है। दिल के अंदर उसने अपने पति और अपना नाम गुदवाया है। यह टैटू शौकवश बनाया गया है।

- टैटू संख्या 12 :–

यह गोदना एक औरत ने अपने माथे पर गुदवाया हुआ है जो कि दोनों तरफ चांद बिंदु जैसा लग रहा है। अपने चेहरे पर ऐसे गोदने गुदवाने का तात्पर्य है, श्रृंगार न करना अर्थात यह लोग फिराकपरस्त लोग हैं तथा जगह–जगह घूमते रहते हैं। घूमते रहने के कारण साजो – सजावट का सामान ये नहीं खरीदते। अतः अपने सुहागिन होने का सबूत देने के लिए ये अपने चेहरे पर हमेशा के लिए कुछ इस प्रकार का डिजाइन बनवा लेते हैं।

- टैटू संख्या 13 :–

यह टैटू बाजू पर बना हुआ है। यह आधुनिक समय का टैटू है। इसमें पहले तो वाहेगुरु का गोदना कराया हुआ है जो कि धार्मिक आस्था से जुड़ा हुआ है। साथ में दो तितली को बनवाया हुआ है, जिसमें बड़े सुंदर ढंग से बनाया हुआ है। यह टैटू शौकवश बनवाया गया है।

- टैटू संख्या 14 :–

यह टैटू बाजू पर बना हुआ है। इसमें एक माँ का चित्र का गोदना करवाया हुआ है। यह टैटू आधुनिक समय का टैटू है। इसमें लिखा है – करा अरदास माये रब आगे, हर जन्म तेरा पुत बनके आवां। यह टैटू शौकीनवश बनवाया गया है।

- टैटू संख्या 15 :–

यह टैटू पर बनवाया गया है। मैनेचेस्टर बलालेज नामक युवक ने अपने पसंदीदा जूते की डिजाइन का टैटू अपने पैरों पर गुदवाया। इसके लिए उन्होंने 8 घंटे असहनीय दर्द सहा। सबसे ज्यादा दर्द पैरों की उंगलियों और ऐडी पर हुआ। उन्होंने कहा कि अब मुझे कभी भी अपने पसंदीदा जूतों के बिना घर छोड़ने की चिंता नहीं सताएगी। यह अब हमेशा मेरे साथ ही रहेंगे। यह जूते मेरे पसंदीदा हैं और मैं किसी भी कीमत पर इससे अलग नहीं होना चाहता था। इसलिए टैटू गुदवा लिया।

➢ टैटू संख्या 16 :–

यह टैटू आधुनिक तकनीक से बना है जिसमें एक मानव आकृति को दिखाया गया है। यह आकृति एक औरत की है जिसका एक हाथ ऊपर है, जिसमें तलवार पकड़ी हुई है तथा एक हाथ नीचे की तरह है जो कि बंद है। आकृति के पीछे की तरफ दो पंख बनाए गए हैं। इसके पंख बाज के पंखों जैसे लग रहे हैं। स्त्री के चेहरे के भावों में रौद्र रस दिखाई दे रहा है। इस टैटू में स्त्री को परी के रूप में दिखाया गया है। परी के कपड़े बड़े ही सटीक ढंग से बनाए गए हैं तथा परी को बालों बादलों पर सवार चित्रित किया है। ऐसा लग रहा है मानो वह किसी को मारने के लिए खड़ी हो। इसमें केवल लाईनर ही नहीं शेडर सूईयों का भी प्रयोग किया गया है।

➢ टैटू संख्या 17 :–

यह टैटू कंधें पर बना है जोकि मॉडर्न अबस्ट्रेक्ट तकनीक के द्वारा बनाया गया है। यह एक डिजाइन है जिसका कोई अर्थ नहीं निकलता, परंतु यह देखने में बहुत ही सुंदर व आकर्षण लग रहा है। इस टैटू के लिए केवल लाईनर सूईयों व मशीन का प्रयोग किया गया है। यह टैटू बैल की तरह बनाया गया है। इसे केवल रेखाओं द्वारा ही प्रस्तुत किया गया है।

➢ टैटू संख्या 18 :–

यह टैटू एक आदमी ने अपनी पीठ व दोनों बाजुओं पर बनवाया हुआ है। उसने महात्मा बुद्व की प्रतिमा को गुदवाया है। बुद्व के प्रति अपनी आस्था व भक्ति को प्रकट करने के लिए यह टैटू बनवाया है। इसमें महात्मा बुद्व को भक्ति में लीन दिखाया गया है। महात्मा बुद्व कमल के फूल के ऊपर बैठे हैं। प्रतिमा के दोनों तरफ वृताकार में दो डिजाइन बनाए गए हैं जिसमें छोटा–छोटा डिजाइन भरा हुआ है। तथा बुद्धा स्तूप से संबंधित कुछ चिह्न बनाए गए हैं। प्रतिमा के चारों ओर के खाली स्थान पर छोटे–छोटे एवं आकर्षक डिजाइन द्वारा पूरी तरह से भरा हुआ है। दोनों बाजुओं पर कंधों से लेकर कोहनी तक बनाया हुआ है। कंधे पर एक फूल बना है जो कि कोहनी तक बेल तथा पतियों द्वारा भरा हुआ है। पूरे टैटू में संतुलन बड़े सुंदर ढंग से बनाया गया है।

➢ टैटू संख्या 19 :–

यह टैटू पैर पर बना हुआ है जो कि आधुनिक द्वारा बनाया गया है। यह पैर के एक तरफ बनाया गया है। यह टैटू एक बेल है जिसमें लाल रंग से फूल तथा हरे रंग से पत्तियां बनाई गई हैं।

इस टैटू को सबसे पहले काली सही से रेखांकन किया गया है, फिर रंगों से इसे भरा गया है। फूलों एवं पत्तियों में शेडिंग इस प्रकार से दिए हुई है मानो यह सब असली हो, कुछ पत्तियों में फूलों का आकार अलग तथा कुछ का अलग है। रंगों के द्वारा यह टैटू बहुत ही सुंदर व आकर्षण लग रहा है।

- टैटू संख्या 20 :–

यह टैटू पीठ पर बना है जिसमें एक चेहरे को गुदवाया गया है। चेहरे के भाव बहुत ही गुस्से में दिखाए गए हैं। चेहरे में छाया व प्रकाश का भी प्रयोग किया गया है। आदमी के बाल व दाढ़ी खुले हुए हैं। बालों को बड़े सुंदर ढंग से बनाया गया है। सर पर एक मुकुट डाला हुआ है। बालों में शेडिंग बड़े सुंदर ढंग से दी गई है। चेहरे के चारों तरफ कहीं–कहीं छोटे से डिजाइन बनाए गए हैं जो कि इसकी सुंदरता को और बढ़ा रहे हैं।

- टैटू संख्या 21 :–

यह टैटू कंधे पर बनाया गया है। यह प्रभु यीशु का चित्र बनाया गया है जिसमें उनके सिर पर कांटों का ताज बनाया है। कांटो की वजह उनके सिर से खून निकल रहा है, जो उनके चेहरे व गर्दन पर लगा हुआ है। चेहरे पर दर्द के भाव साफ झलक रहे हैं। बालों को खुला हुआ बनाया गया है। जिसमें लाईनर तथा शेडर का प्रयोग किया गया है। चेहरे के भाव देखकर लग रहा है कि उन्हें बहुत अधिक दर्द रहा होगा जो असहनीय है। पीड़ा होते हुए भी उनके चेहरे पर एक रूहानी शक्ति प्रतीत हो रही है। चेहरे के चारों और प्रकाश का आभास हो रहा है।

- टैटू संख्या 22 :–

यह टैटू गर्दन पर पीछे की तरह बना हुआ है जो कि कुमुदिनी के फूल बने हैं। इसमें तीन फूल बनाए गए हैं तथा साथ में पत्तियां और कुछ बैलें भी चारों ओर से निकाली गई हैं। इसमें तीन रंगों का प्रयोग किया गया है। फूलों को सफेद रंग से बनाया गया है तथा पतियों को हरे रंग से बनाया गया है। संपूर्ण चित्र बहुत ही सुंदर लग रहा है।

- टैटू संख्या 23 :–

यह टैटू कंधें पर बनाया गया है। इसमें दो हाथों को जुड़ा हुआ दिखाया गया है। हाथ में एक माला पकड़ी हुई है जिसके नीचे ईसाईयों की पूजा का निशान 'क्रॉस' बनाया गया है। हाथों के थोड़ा ऊपर कांटों का एक ताज बनाया गया है। यह संपूर्ण टैटू प्रभु यीशु को समर्पित है। इसमें भक्ति भाव

साफ दिखाई दे रहा है। हाथों के चारों और शेडिंग के द्वारा जो बॉर्डर बनाया गया है वह टैटू को चार चांद लगा रहा है अर्थात और भी आकर्षक बना रहा है।

- **टैटू संख्या 24 :–**

यह टैटू कंधों के ठीक ऊपर की तरफ बनाया गया है। इसमें कुछ फूलों को बनाया हुआ है, जोकि लाल या गुलाबी रंग से बनाए गए हैं। फूल को देखकर ऐसा लग रहा है मानो किसी टहनी से लटक रहे हो। ऐसे टैटू खुशी के प्रतीक होते हैं। पूरे टैटू को बड़े सुंदर ढंग से बनाया गया है।

उपसंहार

अंग सज्जा जन–साधारण की भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। इस कला को मुख्यतः ग्रामीण जनता से संबंधित किया है। यह सदैव अंग सज्जा से प्रेरणा और पोषण प्राप्त करती रही है। यह कला आंतरिक सौंदर्य का अभिव्यक्त प्रत्यक्ष तथा सरलतम रूप है। गांव में अंग सज्जा का सृजन इसी उद्देश्य से किया जाता है। इस विषय को चुनने का मेरा विचार लोगों के हाथों पर तथा शरीर के विभिन्न अंगों पर खिणी हुई आकृतियों को देखकर बना, जो कि बचपन से ही मेरे आकर्षण का केंद्र रहा है। जिसे गोदना अर्थात टैटू कला के नाम से जाना जाता है।

प्राचीन समय में यह एक लोक कला थी। परंतु आज यह एक फैशन है। इस विषय पर शोध करने का मेरा उद्देश्य इसके प्रभाव तथा दुष्प्रभाव पर प्रकाश डालना है, जिससे लोग आज अनजान है। इस कला को प्राथमिकता देने के लिए और सुंदर बनाने के लिए एक ऐसा मंच होना चाहिए जिस के बैनर तले युवा अपने इस कला को संवार सकें। परंतु हमें गलियों – गलियों में घूम – घूम कर टैटू बनवाने वालों से बचना चाहिए क्योंकि उससे शरीर पर दुष्प्रभाव हो सकते हैं। उन्हें बनाने का तरीका तो पता होता है, परंतु इसकी जानकारी पूर्ण रूप से नहीं होती।

इस कला को संवारने के लिए हमें बिना किसी लालच के नए लोगों को इससे जुड़ने को प्रेरित करना चाहिए। प्राचीन समय में यह किसी विशेष उद्देश्य से बनने वाली कला का स्थान मशीनों ने तो ले लिया है परंतु जब मैंने अखबारों में से पढ़ा और गडरिया, लोहार तथा चंडीगढ़ में टैटू कलाकार से साक्षात्कार किया तो मुझे इस कला के बारे में बहुत अधिक जानकारी मिली। उन्होंने बताया कि यदि इस कला को बढ़ावा देना है तो सर्वप्रथम हमें इसकी जानकारी पूर्ण रूप से होनी चाहिए तथा इसे निखारना चाहिए, क्योंकि यह शताब्दियों से चली आ रही कला है और हमें इससे समाप्त होने से बचाना चाहिए।

उन्होंने यह भी बताया कि एक तरफ जहां इस कला के लाभ हैं वहीं दूसरी तरफ यह हानिकारक भी है। परंतु यदि सावधानियां बरती जाएं तथा लोगों को इससे अवगत कराया जाए तो यह कला एकदम सुरक्षित है।

अतः इस शोध का उद्देश्य यही है कि इस कला को समाप्त होने से बचाया जाए। इसे बचाने के लिए लोगों को इसके प्रति जागरूक करना अति आवश्यक है। हमें अपनी संस्कृति और लोक कला से जुड़े रहना चाहिए क्योंकि बिना लोककला के कोई राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 डॉ0. नीलिमा गुप्ता, भारतीयलोक कला (पृं सं0. 120, 121, 122, 123)

2 **https://wikipedia.org>wiki**

3 यादव अतुल : हरियाणा लोक सांस्कृतिक धरोहर (पृ.सं. 149, 150)

4 **https://w.w.w.jagran.com/fashionbeauty 19659641.html**

5 **https://w.w.w.haidunia.com.jahpur**

6 **https://Jantantronline.in**

7 नीलिमा गुप्ता : भारतीय लोकला (पृ.सं. 130, 131)

8 **https://w.w.w.sahapedia.org**

9 नीलिमा गुप्ता : भारतीय लोकला (पृ.स. 135, 136)

10 **https://w.w.w.haidunia.com.jahpur**

11 श्रीमति प्रति विश्वकर्मा : पूर्वाच्चल की लोक चित्रकला (पृ.सं. 37, 38, 39)

12 **Kipedia-org translate.google**

13 **https://w.w.w.lyprahe.com**

14 हरियाणा का इतिहास, : स्टुडेंट सीरिज, एम.ए.फाइनल कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।

15 साक्षात्कार – राम प्यारी, तहसील – गन्नौर – जिला सोनीपत, मार्च 18 सुबह – 11 बजे।

16 'सिंह' सुनील कुमार – लुसेन्ट – सामान्य ज्ञान, पटना (पृ.सं. 152 – 161, 170, 183)

17 हरियाणा का इतिहास, स्टुडेंट सीरिज, एम.ए. फाइनल, विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र।

18 **www.en.wikipedia.org-Tatto-link**

चित्र ग्रन्थ सूची

1 टैटू संख्या – 1

2 टैटू संख्या – 2

3 टैटू संख्या – 3

4 टैटू संख्या – 4

5 टैटू संख्या – 5

6 टैटू संख्या – 6

7 टैटू संख्या – 7

8 टैटू संख्या – 8

9 टैटू संख्या – 9

10 टैटू संख्या – 10

11 टैटू संख्या – 11

12 टैटू संख्या – 12

13 टैटू संख्या – 13

14 टैटू संख्या – 14

15 टैटू संख्या – 15

16 टैटू संख्या – 16

17 टैटू संख्या – 17

18 टैटू संख्या – 18

19 टैटू संख्या – 19

20 टैटू संख्या – 20

21 टैटू संख्या – 21

22 टैटू संख्या – 22

23 टैटू संख्या – 23

24 टैटू संख्या – 24

टैटू संख्या – 1

टैटू संख्या – 2

टैटू संख्या – 3

टैटू संख्या – 4

टैटू संख्या – 5

टैटू संख्या – 6

टैटू संख्या – 7

टैटू संख्या – 8

टैटू संख्या – 9

टैटू संख्या – 10

टैटू संख्या – 11

टैटू संख्या – 12

टैटू संख्या – 13

टैटू संख्या – 14

टैटू संख्या – 15

टैटू संख्या – 16

टैटू संख्या – 17

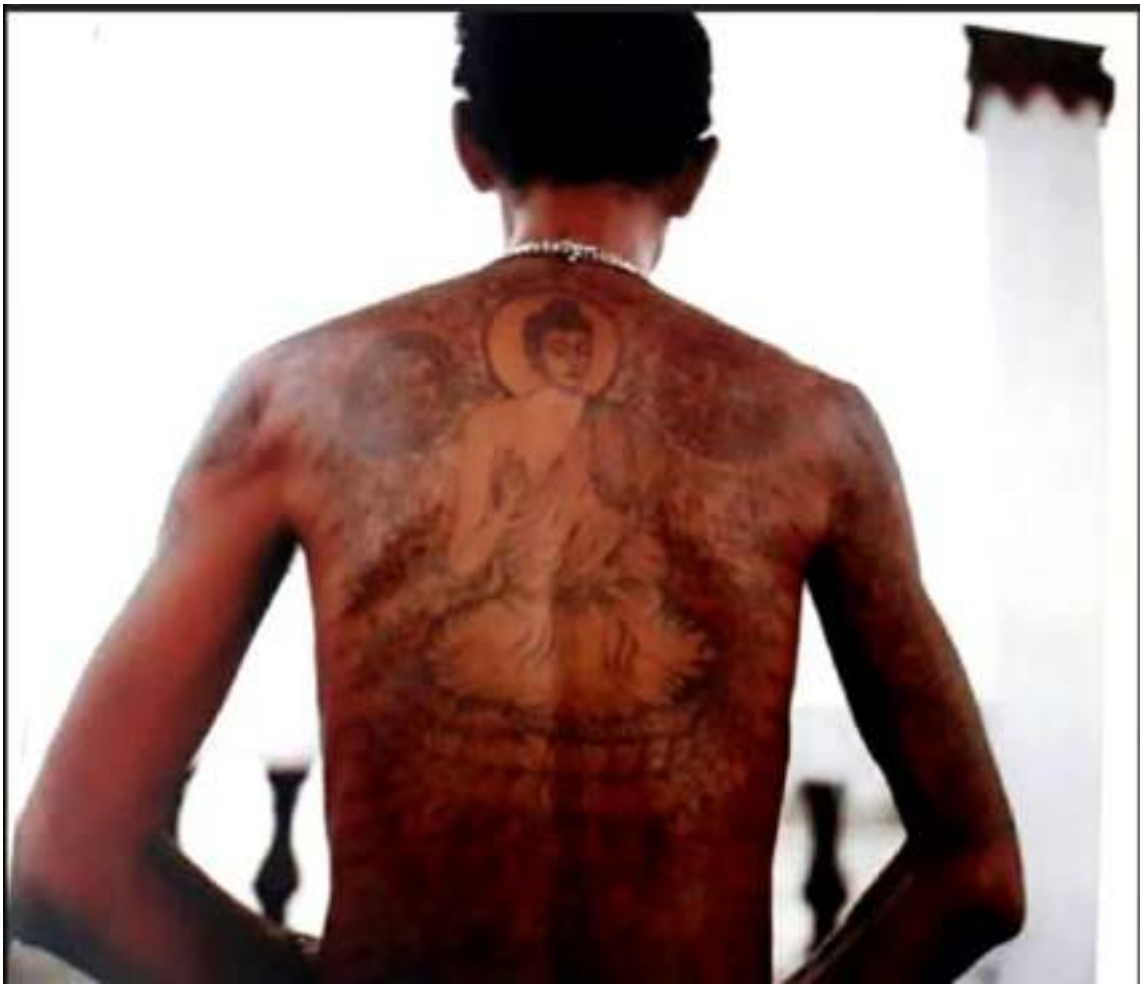

टैटू संख्या – 18

टैटू संख्या – 19

टैटू संख्या – 20

टैटू संख्या – 21

टैटू संख्या – 22

टैटू संख्या – 23

टैटू संख्या – 24

ROLE OF DIGITAL IN ART: AN OVERVIEW

KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA

A

Dissertation submitted for the degree

Of

MASTER OF ARTS IN FINE ARTS

Estd. 1968

Researcher
Muskan
MA Fine Arts
Final Year

Supervisor
Mr. Mahesh Dhiman
Assistant Professor

Head of Department
Mrs. Santosh
Associate Professor

DEPARTMENT OF FINE ARTS

ARYA KANYA MAHAVIDYALYA

SHAHABAD MARKANDA

2022-23

TO WHOM IT MAY CONCERN

It is certified that **Ms. Muskan,** Roll no-210155501, student of M.A Final Year has made research on the title **"Role of Digital in Art: An Overview".** It is her original work. She has completed this with full devotion and hard work. We wish her for a successful a bright future.

Date: **Dr. Aarti Trehan**
Principal

CERTIFICATE

It is certified that **Ms. Muskan,** Final year student of Master of Fine Art has a completed a short dissertation under my guidance on the title of **"Role of Digital in Art: An Overview".**

Date

Mrs. Santosh
Associate Professor
Head of Department

DECLARATION

I certify that the work presents in the project report entitled, for the award of degree of M.A Fine art is an independent study carried out by me under the guidance of Mr. Mahesh Dhiman, Arya kanya Mahavidyalaya, Shahabad Markanda.

Date:

Muskan

M.A-Final Year

PREFACE

Art is an inspiration to our life. Art is subjective and means something different to every single person on earth, this too is the truth. Truthiness of person and shyness of a woman is an art. Art is an inspiration to our life. There is many ways to define art. Art plays a large part in making a confidence high and higher.

My dissertation is on digital art I have discussed about the digital art. Digital Art is an artistic work or practice that uses digital technology as an essential part of the creative or presentation process. Digital art is a term used to describe any art that is made by using software.

Digital art is a rapidly growing field that has become increasingly popular in recent years. As technology continues to advance, digital art is becoming more accessible and easier to create. In this dissertation, we will explore the various aspects of digital art, including its history, techniques, and tools. We will also discuss the importance of digital art education and how it can be integrated into the curriculum.

Digital art is a form of art that uses digital technology to create and display artwork. It has become increasingly popular in recent years due to the advancements in technology and the accessibility of digital tools. Digital art can take many forms, including digital painting, 3D modeling, animation, and graphic design. One of the unique aspects of digital art is the ability to manipulate and edit artwork easily, allowing for endless possibilities and experimentation. However, creating digital art requires a good understanding of the tools and techniques used in digital art, as well as a creative vision.

In this preface, we will explore some of the key concepts and techniques used in digital art, including context, query context, and filter context, as well as tips and tricks for writing the best queries in LINQ to Entities.

Overall, this dissertation aims to provide a comprehensive overview of digital art and its various aspects. It is intended for students, educators, and anyone interested in learning more about this exciting and rapidly growing field.

ACKNOWLEDGEMENT

I would like to thank my Principal **Dr. AARTI TREHAN** allow me to visit the Kurukshetra University and other libraries for the research purpose.

I am very thankful to the Department of Fine Arts of Arya Kanya Mahavidyalya, Shahabad from where I got on opportunity of writing a book to reach a wide range of readership.

Mrs. Santosh, Head of the Department who undertook to act as my supervisor despite her many other academic & professional commitments.

Mr. Mahesh Dhiman, for his valuable time, guidance, cooperation and encouragement throughout the entire course.

Ms. Kiran Khevaria, who gave her precious time &kind advice regarding the topic of my research, her wisdom, knowledge & commitment to the highest standards inspired, motivated me.

I would like to thank college Library for providing me books related to my research.

I would like to express my sincere thanks to all the staff members and my classmate who helped me in writing this topic in every possible way. Also, I am thankful to my family members who gave me enough time to collect information for writing on this topic. I express my gratitude to all these who have directly or indirectly helped or guided me in this work. Library, who helped me in my research work and provided art materials.

My sincere thanks to all teachers and my classmates who have helped me in researching this topic in every possible way. Also, I am thankful to my family members who gave me enough time to collect information for writing on this topic.

Lastly, I express my gratitude to all those who have directly or indirectly helped or guided me in this work.

This short dissertation will prove to be useful for the connoisseurs of art, as well as provide more information to those who want to know more and more about the Digital Art. If this small research benefits the readers even a tiny bit, I will consider that my effort has been successful.

I am thankful to Mr. SATADRU SOVAN (DIGITAL ARTIST), who helped me in my research work and provided art materials. This short dissertation will prove to be useful for the connoisseurs of art.

INDEX

Preface
Acknowledgement
Chapter

Page no.

CHAPTER 1: Introduction 10-21

- A Brief of Digital and Art
- The Purpose of Digital in Contemporary Art

CHAPTER 2: History of Digital Art 22-32
CHAPTER 3: A brief description of Digital Techniques 33-50

- Types of Digital Art
- Types of Digital Artist

CHAPTER 4: Special References of Artist Satadru Sovan 51-60

CHAPTER 5: Conclusions 61-62

Bibliography
List of Images
Images

CHAPTER 1

INTRODUCTION

The history of drawing is as old as the history of humankind. It is believed that drawing was used as a specialized form of communication before the invention of the written language. Drawings like pictograms, depicted objects and abstract concepts demonstrated by the production of cave and rock paintings which is created by Homo sapiens around 30,000 years ago. The sketches and paintings produced in prehistoric times were eventually stylized and simplified. During Renaissance the term 'disegno' meant drawing both as a technique to be distinguished from coloring and also as the creative idea made visible in the preliminary sketch.

In a period of artistic flourish, the Renaissance brought about drawings exhibiting realistic representational qualities, where there was a lot of influence from geometry and philosophy. Initially, artists used wooden tablets for the production of their drawings. The use of the drawing in the art increased with the widespread availability of paper in the 14th century.

Today our life is totally changed as we are surrounded by the new technology; our life has become easier than before ever. Now a days, Art has become very important part of our daily Life. How can be it untouched with those new technologies which affect our life so much in all aspects? We have an art in a new packaging of Digital which we known as Digital Art.

The Digital art has become an increasingly fluid factor, present in some quantity in virtually all our experience and dominant in our most complex activities. Just as digital media are more present in some form or another in

virtually every aspects of our lived experiences, from our phones to our cars to our sidewalks and our homes, so these new technologies create innumerable and inter active possibilities for aesthetic experimentation and expression. Both every day and exotic, public and private, autonomous and commercial, the internet is a chaotic, diverse and crowded form of contemporary public space.

It is hardly surprising therefore to find so many art forms related to it: web sites, software, broadcast, photography, animation, radio and email to name just a few. Moreover, the computer fundamental for experiencing internet art can be both a channel and a means of production and can take the form of a laptop, a cellular phone, an office computer-each with its own screen software, speed and capability. Digital art, the exciting unpredictable set of works and practices that continually expanding not only into the future and back to its origins, but also exploring alternate & realities, can take almost any form. But what unities the photographs, print, sculptures, installations, performance desire to redefine the boundaries and parameters of art. In its tendency to incorporate elements of all other media digital art enables them to operate in completely new things.

Renaissance and old master paintings of religions scenes with video game and social media platforms, crafting surreal and animated and this is precisely the source of digital art's greatest strength. It never leaves the viewer or user indifferent. By challenging us to participate & engage with the work, digital art takes on infinitely varied experiential properties.

Whether exploring the elusive changes made to a digitally altered photograph or employing an intuitive interface to use and help shape a work, digital art offers new possibilities for the aesthetics and experience of contemporary.

A Brief Description of Digital & Art

Digital Art is an artistic work or practice that uses digital technology as an essential part of the creative or presentation processes art done in a digital medium. Digital art is a term used to describe any art that is made by using software. Digital artists are always looking for the latest skill to enhance their work often times, knowing one simple brick speeds up your work flow tremendously. Photoshop offers many digital art techniques to accomplish the task at hand, yet many people don't know all the options available to the software.

Digital art is an area of specialization that falls within the department of media arts. Digital art in an academic selling is the vehicle to invent new forms of scholastic and artistic knowledge. The specific genres within digital art include photography, video, games, interactive cinema, animation, software art networked art and internet art.

The genres will continue to expand as technology. It is debatable when exactly the digital art began artists have been experimenting with computers at least since the 1970's as in the evolution of photography and video art this new medium was often considered threat to traditional art forms over the decades art making use of digital technologies has taken many forms and even today.

Some of the concept explored in digital art date back almost a century, and many others have been previously addressed in various traditional arts what is in fact new is that digital technology has now reached such a stage of possibilities for the creation and experience of art. This is little bit about the Digital art. Now, first the definitions of the art and know more about the DIGITAL.

DIGITAL

What is the full form of DIGITAL?

D =Data,

I=Intense competition,

G=Globalization,

I=Information,

T=Technology,

A =Automation.

L=Low cost

Digital expressed as series of the digits O and 1. Digital represents the values of a physical quantity such as voltage or magnetic. Digital means the Digit. Computers are digital machines because at their most basic level they can distinguish between just two values o and 1 off and on. There is no simple way to represent all the values in between such as 0.25. All data that a computer process does, must be encoded digitally, as a series and ones.

The opposite of digital is analogy A typical analogy device is a clock in which the hands move continuously around the face. Such a clock is capable of indicating every possible time a day. In contrast, a digital clock is capable of representing only a finite number of times (every tenth of a second). In general, human experience the world analogically vision, for e.g., is an analogy experience because we perceive infinitely smooth gradations of shapes and colors. Most analogy events, however, can be simulated digitally photographs in newspapers, for instance consist of an array of dots that are either black or white. Form after the viewer does not see the dots (the digital form) but only lines and shading which appear to be continuous.

Although digital representations are approximations of analogy events, they are useful because they are relatively easy to store and manipulate electronically. The trick is in converting from analog to digital and backs again, this is the principle behind compact discs (CDs). The music itself exists in an analogy form, as waves in the air, but these sounds are then translated into a digital form that is encoded onto the its original analogy form, and sends it to the amplifier and eventually the speakers.

Internally, computers are digital because they consist of discrete units called bits that are either on or off. But by combining many bits in complex ways, computers simulate analogy events. In one sense, this is what digital is all about.

ART

When we hear the word art, some of our minds jump to museums or framed paintings. Art has been around for thousands of years, and through the ages it has evolved in a number of ways. The reasons for creating it vary from person to person, depending on any number of factors as well, so defining art is pretty tricky and is something that's been debated throughout history.

Art is the expression of one’s views and feelings, which may take many forms like dance, music, painting, literature, or theatre. By seeing the art of a particular country, we can easily understand its inherent culture.

Art, also called (to distinguish it from other art forms) visual art, a visual object or experience consciously created through an expression of skill or imagination. The term art encompasses diverse media such as painting, sculpture, printmaking, drawing, decorative arts, photography, and installation.

Painting is one of the oldest kinds of art, dating back tens of thousands of years, and is evident on caves at various sites across the world. Painting is the application of paint, usually on a two-dimensional surface. Sculpture is another ancient art form, dating back to some of the earliest civilizations. Unlike painting though, this form of art involves the creation of art in the three dimensions. The type of material used can be anything natural or artificial – from clay, metal, bronze, marble and wood to objects that artists come across in their everyday lives.

Some architecture has a distinct aesthetic quality though – indeed, the relationship between utility and beauty is sometimes central in architectural design as it is in other forms of art. Looking back, some of the most exquisite examples of architecture still boggle the mind.

Different processes can be used in creating sculptures, such as modeling, casting, assembling, and carving.

We have already discussed **DIGITAL AND ART** separately, now we have to combine the definition of digital art.

DIGITAL + ART = DIGITAL ART

Digital art can be defined as any art that is made with the help of a computer. Drawings made on paper that are scanned in and changed in any way on the computer photographs that are modified 3D characters created using a computer are all examples of digital art. Digital art is a general term for a range of artistic works and practices that use digital technology as an essential part of the creative or presentation process.

Since the 1970s various names have been used to describe the process including computer art and multimedia art, and digital art is itself placed under the

larger umbrella term new media art. After some initial resistance, the impact of digital artist is used to describe technologies in the production of art in an expanded sense.

"Digital art" is a term applied to contemporary art that uses the methods of mass production or digital media. The techniques of digital art are used extensively by the mainstream media in advertisements, and by film-makers to produce visual effects desktop publishing world, although that is more related to graphic design. Both digital and traditional artists use many sources of electronic information and programs to create this work. Given the parallels between visual and musical arts, It is possible that general acceptance of the value of digital art will progress to create their work in which the same way as the increased acceptance of electronically product music over the last three decades.

Digital art be purely computer generated or taken from other sources such as a scanned photograph or image drawn using vector graphic software using a mouse or graphics tablet. Though technically the term may be applied to art done using other media or process and merely scanned. It is usually reserved for art that has been non-trivially modified by a computing process digitized text data and raw audio and video recordings are not usually considered digital art in them, but can be part of the larger project of computer art and information art.

Artworks are considered digital painting when created in similar fashion to non- digital paintings but using software on a computer platform and digitally outputting the resulting image as painted on canvas. Digital art consists of either 2D visual information displayed on an electronic visual display or information mathematically translated into 3D information, viewed through perspective

projection on an electronic visual display. The simplest is 2D computer graphics which reflect how you might draw using a pencil and a piece of paper.

In this case, however the image is one the computer screen and the instrumental you draw with might be a tablet styles or a mouse. What is generated on your screen might appear to be draw with a pencil, pen or paintbrush. The second kind is 3D computer graphics, where the screen becomes a window into a virtual environment, where you arrange objects to be "photograph" by the computer. Typically, a 2D computer graphics use raster graphics as their primary means of source data representations, whereas 3D computer graphics use vector graphics in the creation of immersive virtual reality installations.

A possible third paradigm is to computer programs and could be considered the nature art form of the computer. Digital art constitutes a broad field of activity and incorporates many forms. Some resemble video installations, particularly large-scale works involving projections and live video capture. By using projections techniques that enhance an audience impression of sensory envelopment, many digital installations attempt to create immersive environments others go even further and attempt to facilitate a complete immersion in virtual realms.

Digital art brings together art, technology, math and science. Digital art requires a creative spirit and to knowledge of art, design and computers. The digital artists must be able to move easily between the worlds of art, science, math and technology. Digital art has by now become a comprehensive term for any manifestation of the arts where a computer has been used to create said art. By definition the art work has to be generated in digital form, which can be described

electronically as a series of ones and zeros. The opposite of this is analogy nevertheless, not every digital depiction can be considered art.

The boundaries are not set in stone and technology to a great extent. Thus the roots of digital art can also be found in mathematics and computer science doesn't all of this somehow remind us of the era of the renaissance when Leonardo data Vinci was also an inventor, Michelangelo an engineer and Galileo galilees' an artist? Any form of symbiosis usually leads to the formation of new avenues of thought.

In art, it isn't important how a piece came into existence of the only important is the result, which needs a convincing concept in regards to contents and or aesthetics. Since it is part the characteristic and the role of the digital arts to Lear down boundaries and since this categorization has not been invented by artists but art stories we can define art as digital art, if it uses the potential of a computer or the internet to produce a result, which wouldn't be achievable with any other means. Art works which represent a separate means.

Art works, which represent a separate media specific picture language, can be counted as digital art, too as well as such art works which deliberately deal with the art.

The Purpose of Digital in Contemporary art

Art is a product of society, just as much as society mirrors art. It is a symbiotic relationship that doesn’t drop. With technology at our fingertips, it’s no surprise that artists want to incorporate digital art into society. As a result, today’s digital art is inventive, dynamic and diverse.

From digital illustrations to immersive installations, digital art has transformed art creation, consumption and engagement. The role digital art plays in society is multifaceted. Not only has it brought about Gender Equality through various expressions, but it has also helped achieve other United Nations Sustainable Development Goals, including Decent Work and Economic Growth, Quality Education and Reduced Inequalities, among many others.

Digital art in modern time

Digital technology has made it easier for artists to create and push their talent without surpassing barriers such as museums, galleries, and art facilities. Artists from humble backgrounds have recently risen thanks to technology. As a result, they have gained exposure to wider audiences and ground in the international space.

Digital art has existed for decades and outside of commercial work has been massively undervalued, unappreciated and excluded from the fine art market. All that is now changing. Despite their brief history, NFTs have changed digital art and the fine art world at large.

NFTs (non-fungible tokens) can represent ownership in almost anything but are typically tied to digital assets. Each NFT holds unique data that is stored on a digital ledger that establishes a transparent proof of ownership on the blockchain network. This enables anyone at any time to trace who owns a particular digital asset.

Fine art NFTs are simply a non-fungible token that represents ownership of a digital piece of fine art, this can be either a digital artwork or a physical artwork

that has been converted into a digital format. Art democratization has made it easier for buyers and art enthusiasts to access creative pieces worldwide.

Experimenting with New Forms of Expression

Digital art has enabled artists to unearth their creativity further. Artists can advance their work and improve their talent through new materials, mediums and techniques.

Digital art has expanded the possibilities through augmented reality exhibitions and virtual reality installations, among other avenues. Unlike conventional art galleries, artists leverage technology to access markets they would have only imagined before. Use algorithms to create generative art. Using simple rules on patterns, shapes and colours, you can create unique art pieces. Users can participate in art creation through interactive art and the creation of virtual reality art for 3D spaces.

Breaking the Boundaries between Different Artistic Disciplines

Contemporary art challenges traditional forms of art for a better experience. For instance, using sculpture, sound and projection mapping for digital art installations creates immersive experiences that are entertaining and engaging.

Digital tools enable artists to combine various elements, such as animation, sculpture, photography and painting to develop new art forms. Digital art breaks boundaries through interactive installations as well. Sensors and other technologies allow viewers to take part in artwork from digital artists. Digital artists can use video game engines to deliver creative visually-stunning pieces of art. Artists are also taking advantage of augmented and virtual reality to showcase art.

End Note :

- 3dtotal, The Definitive Digital Art Collection, Publisher: 3DTotal Publishing, Publication date:14 February 2013.
- Spina Mala, Altro Evo Art Book Illustrations: Digital Painting: Sword and Sorcery Fantasy Art Book on the Day of the Dragon (Fantasy Action Series from Altro Evo 0), Publisher: Work on Color, Publication date: 19 March 2017.
- https://www.eden-gallery.com
- http://www.wisegeek.com/what-is-digital-illustration.htm

CHAPTER- 2
HISTORY OF DIGITAL ART

Digital art has a rich history that spans several decades. The earliest forms of digital art can be traced back to the 1960s, when artists began experimenting with computers as a medium for creating visual art. One of the first artists to work with digital technology was John Whitney, who used a computer to create abstract animations in the 1960s. Whitney's work laid the foundation for the development of digital animation and set the stage for other artists to explore the potential of computer technology.

In the 1950s, many artists and designers were working with mechanical devices and analogue computers in a way that can be seen as a precursor to the work of the early digital pioneers who followed.

One of the earliest electronic works in the V&A's collection is 'Oscillon 40' dating from 1952. The artist, Ben Laposky, used an oscilloscope to manipulate electronic waves that appeared on the small fluorescent screen. An oscilloscope is a device for displaying the wave shape of an electric signal, commonly used for electrical testing purposes. The waves would have been constantly moving and undulating on the display, and there would have been no way of recording these movements on paper at this time. It was only through long exposure photography that the artist was able to record these fleeting moments, allowing us to see those decades later.

Laposky photographed numerous different combinations of these waves and called his images 'Oscillons'. The earliest photographs were black and white, but in

later years the artist used filters in order to produce striking colour images such as 'Oscillon 520'.'Oscillon 520',by Ben Laposky, US, 1960. Museumno. E.1096-2008. Given by the American Friends of the V&A through the generosity ofPatric Prince.

1960s

In the early 1960s computers were still in their infancy, and access to them was very limited. Computing technology was heavy and cumbersome, as well as extremely expensive. Only research laboratories, universities and large corporations could afford such equipment. As a result, some of the first people to use computers creatively were computer scientists or mathematicians.

Many of the earliest practitioners programmed the computer themselves. At this time, there was no 'user interface', such as icons or a mouse, and little pre-existing software. By writing their own programs, artists and computer scientists were able to experiment more freely with the creative potential of the computer.

Early output devices were also limited. One of the main sources of output in the 1960s was the plotter, a mechanical device that holds a pen or brush and is linked to a computer that controls its movements. The computer would guide the pen or brush across the drawing surface, or, alternatively, could move the paper underneath the pen, according to instructions given by the computer program. Another early output device was the impact printer, where ink was applied by force onto the paper, much like a typewriter. John Lansdown using a Teletype (an electro-mechanical typewriter), about 1969-1970.

Much of the early work focused on geometric forms and on structure, as opposed to content. This was, in part, due to the restrictive nature of the available

output devices, for example, pen plotter drawings tended to belinear, with shading only possible through cross hatching. Some early practitioners deliberately avoided recognizable content in order to concentrate on pure visual form. They considered the computer an autonomous machine that would enable them to carry out visual experiments in an objective manner.

Both plotter drawings and early print- outs were mostly black and white, although some artists, such as computer pioneer Frieder, Naked, did produce plotter drawings in color. Early computer artists experimented with the possibilities of arranging both form and, occasionally, color in a logical fashion. ‘Homage à Paul Klee a screen-print of a plotter drawing created by Frieder Nake in 1965, was one of the most complex algorithmic works of its day. An algorithmic work is one that is generated through a set of instructions written by the artist. Naked took his inspiration from an oil painting by Paul Klee, entitled 'Highroads and Byroads' (1929), now in the collection of the Ludwig Museum, Cologne.

When writing the computer program to create his own drawing 'Homage à Klee', Nake defined the parameters for the computer and the pen plotter to draw, such as the overall square form of the drawing. He then deliberately wrote random variables into the program which allowed the computer to make choices of its own, based on probability theory. In this way, Nake was able to explore how logic could be used to create visually exciting structures and to explore the relationship between forms. The artist could not have predicted the exact appearance of the drawing until the plotter had finished.

Bell Laboratories

Bell Labs, now based in New Jersey, was hugely influential in initiating and supporting the early American computer-art scene and produced perhaps the

greatest number of key early pioneers. Artists and computer scientists who worked there include Claude Shannon, Ken Knowlton, Leon Harmon, Lillian Schwartz, Charles Csuri, A. Michael Noll, Edward Zajec, and Billy Klüver, an engineer who also collaborated with Robert Rauschenberg to form Experiments in Art and Technology (EAT). The Laboratory began life as Bell Telephone Laboratories, Inc. in 1925 and went on to become the leading authority in the field of new technologies.

Bell Labs was heavily involved in the emerging art and technology scene, in particular it contributed to a series of performances entitled '9 Evenings: Theatre and Engineering' organized by EAT in 1966. The performances saw 10 contemporary artists join forces with 30 engineers and scientists from Bell Labs to host a series of performances using new technologies. Events such as these represent important early recognition by the mainstream art world of the burgeoning relationship between art and technology. The executive director of Bell Labs was employed as an 'agent' for EAT, his task to spread the word about the organization in the right circles, namely industry.

In the 1970s, artists such as Harold Cohen and Vera Molnar began to create digital art using early computer graphics software, such as the IBM System/360 and the Evans & Sutherland PS-1. These artists were among the first to explore the possibilities of creating art using mathematical algorithms and code. This experimentation laid the foundation for the development of generative art, a form of digital art that is created using algorithms and mathematical processes.

By the 1970s, a number of artists had begun to teach themselves to program, rather than relying on collaborations with computer programmers. Many of these artists came to the computer from a traditional fine art background, as opposed to

the scientific or mathematical background of the earliest practitioners. Artists were attracted to the logical nature of the computer and the processes involved. In the early 1970s the Slade School of Art University of London, established what was later called the Experimental and Computing Department. The Slade was one of the few institutions that attempted to fully integrate the use of computers in art into its teaching curriculum during the 1970s. The department offered unparalleled resources with its in-house computer system.

Paul Brown studied at the Slade from 1977 to 1979. His computer-generated drawings use individual elements that evolve or propagate in accordance with a set of simple rules. Brown developed a tile-based image generating system. Despite using relatively simple forms, it would have taken a long time to write a program to produce a work such as this.

1980s

The term 'Computer Art' is used less frequently to describe artists and designers working with the computer today. Many artists who now work with computers incorporate this technology into their practice as just one tool amongst many that they may use interchangeably.

This is part of a more general shift towards artists and designers working in an increasingly interdisciplinary manner. Many no longer define themselves as practitioners of a specific media.

James Faure Walker can be described as both a digital artist and a painter. Since the late 1980s Faure Walker has been integrating the computer into his practice as a painter, incorporating computer-generated images into his paintings, as well as painterly devices into his digital prints.

He moves between the tools of drawing, painting, photography and computer software, blending and exploiting the different characteristics of each. His work frequently plays on the contrast between physical paint and digital paint, and sometimes it is difficult to differentiate between the two.

The historical contact for interactivity includes the surreal; flux us and situations movements of the 20" century. Since development in the 1940's the computer was first and foremost a machine to solve scientific problems and to carry out complex arithmetic operations as fast and with as few errors as possible. Back then, it most definitely wasn't a tool for artists- it was too big, too difficult to operate and of course, its price was prohibitive.

To program and operate computers, you also had to learn a specific programming language. Not even one of its inventors, thought about the computer's usefulness in creating art. When the first scientists started producing computer digital art in the 1960's, it was considered nothing but an experiment at first, most of them were working for big companies or universities, where they had access to the first computers which back then were still gigantic machines were able to do, which led to the production of the first rough plotter drawings. In Germany, the theoretical back ground was provided by max Bense. In 1949, Bense became professor of philosophy and science at the technique Hochschute Stuttgart, where he continued to teach until 1978.

The 1990s witnessed a technological development of unprecedented speed for the digital medium the so-called digital revolution. Even though the foundations of many digital technologies had been laid up to sixty years earlier these technologies became seemingly ubiquitous during the last decade of the twentieth century: hardware and software became more refined and affordable and

the advent of the World Wide Web in the mid-1990s added a layer of global connectivity. Artists have always been among the fist it reflect on the culture and technology or their time, and decades before the digitaltechnologies as its very own medium, being produced, stored and represented exclusively in the digital format and making use of its interactive participatory of features while both of these kinds of art share some of the different characteristics of digital technology they are often distantly different in their manifestations and aesthetics.

These two broad categories e not meant as a definitive classification but rather as a preliminary diagram of territory that is by its nature extremely hybrid. While definitions and categories may be helpful in indentifying certain distinguishing an art um, particularly when it is still constantly evolving as is the case with Digital art. While this dissertation tries to be as inclusive as possible when it comes to the various manifestations of digital art and the ways in which they expand and challenge artistic practice it still presents only a small selection of the broad range of digital work that has been created many of the forms and themes of digital art.

Whatever you think of an AI-generated image winning a digital art prize, it's undeniable that artificial intelligence is making an impact on the art world.

But AI is only one facet of the digital art scene, which is growing and becoming increasingly populated with creators from all walks of life (and artificial life, as we've seen above). We’re investigating how AI affects artists, the true value of NFTs, the potential for 3D and holographic art in the 21st century, and other technologies for creative work.

Artists have embraced computer technology ever since it became available in the 1950s, and upon taking a closer look, you'll realize that computer art is not as new as you might think.

Pre-Digital Art

A few notable creative technologies preceded the digital age and impacted the trajectory of artistic work. It's interesting how artists have used these pre-digital technologies to make artwork, and how many of these analog technologies were later translated into a digital format.

Changing the Artist's Perspective: Early Devices

Technological advancements have invariably led to new developments in art and design. Throughout the ages, artists have always been interested in new ways to make images and express how they see the world. New technologies also help artists to be more productive and accurate image makers.

Three of the earliest analog optical devices used by artists are the camera obscura, camera lucida, and phenakistoscope, which are predecessors to photography and animation.

A device used since classical times (as far back as the 4th century); the camera obscura was a pinhole camera that could take up an entire room. It was used to project a scene onto a surface so the artist could copy it. Later, photography introduced a mechanical way for the artist to capture images in a box.

The camera lucida was a device with either a mirror or a prism inside that enabled the artist to look down on their drawing surface and see the scene in front of them simultaneously. It allowed the artist to draw perspective and proportions

more accurately. Camera Lucida's is still available today but are less popular than in the early 1800s when the device was first patented.

A Camera Lucida

Phenakistoscopes and related optical devices, such as stroboscopes and zoetrope's, were invented in the 1830s to create the illusion of movement through the rotation of a series of drawings. Stereoscopes, the early versions of 3D imaging, were also invented in the 1830s.

We should also not forget the printing press, a paradigm-shifting pre-digital technology that made the mass reproduction and dissemination of text and images more accessible (sounds a lot like the internet, right?). Printing led to new modes of artistic expression, such as printmaking, illustration, book design, and graphic design.

In 1952, signwriter, draftsman, and mathematician Ben F. Laposky held an exhibition of his Oscillons electronic drawings made using oscilloscopes and photography. These works are considered to be some of the first analog computer graphics.

Even though these are all analog technologies, it's clear that they paved the way for later digital devices that would solve the same "Jobs To Be Done" using computer chips and software programs.

Mixing Reality with Fiction: Film

Live-action movies have existed since before animated feature films. A live-action film is one where camera footage is mixed with animation to tell a story.

This was arguably the first sign of the possibility of virtual reality (even though it wasn't in real-time). The Enchanted Drawing (1900) is recognized as the first live-action film and was directed by J. Stuart Blackton and produced by Thomas Edison.

Removing the Artist's Hand: Modernism

A key concern or technique in twentieth-century Modern and Conceptual Art was the "removal of the artist's hand," which is the concept of removing the traces of authorship and originality that make artworks so valuable and exclusive. Marcel Duchamp was one of the first artists who displayed "readymade" objects as artworks.

Many mid-twentieth-century art movements, such as Pop Art, became obsessed with the mass production and consumption of products, either completely rejecting this socio-economic crisis or buying into it.

In both cases, the use of new technologies for making contemporary art was explored and led to artists increasingly using machines and manufactured products to make art.

Two of the earliest examples of pre-digital computer art are the computer-generated motion graphics that John Whitney Sr. made with old WWII Turing machines in the 1950s and the "machine drawings" that artist Desmond Paul Henry produced using WWII bombsight analog computers. Whitney became a film and advertising motion graphics pioneer, and Henry's machine-made drawings won him an art prize in 1961 that launched his artistic career.

End Note:

- Cousens David, Digital Art: A Complete Guide to Making Your Own Computer Artworks, Language English, Publisher,Arcturus Publishing Ltd,Publication date:15 May 2013.
- Bloomsbury,Digital Arts: An Introduction To New Media, , Language English, Publishing India Private Limited, Publication date:1 January 2019.
- https://www.tate.org.uk/art/art-terms/d/digital-art#:~:text=The%20first%20use%20of%20the,paper%20placed%20on%20the%20floor.
- https://magazine.artland.com/digital-art
- https://www.vectornator.io/blog/digital-art/

CHAPTER -3

A BRIEF DESCRIPTION OF DIGITAL TECHNIQUES

The history of digital art has been shaped as much by the history of science and technology as by art - historical influences. The technological history of digital art is inextricably linked to the military-industrial complex and to research centers, as well as to consumer culture and its associated technologies.

Computers were essentially 'born' in an academic and research environment, and still today research universities and centers play a major role in the production of some forms of digital art. digital art did not developed in and art - historical vacuum either but has strong connections to previous art movements among them dada, fluxes and conceptual art the importance of these movements for digital art resides in their emphasis on formal instructions and in their focus on concept, event and audience participation as opposed to unified materials objects Dadaist poetry Aesthetic zed the construct of poems out of random variations to create an artifice that resulted from an interplay of randomness and control. This idea of rules being a process for creating art has a clear connection with the algorithms that form the basis of all software and every computers operation: a procedure of formal instructions that accomplish a 'result' in finite number of steps just of computers art is the instruction as a conceptual elements.

The term "digital art history" has become a shortened reference to the potentially transformative effect that digital technologies hold for the discipline of art history. Advanced technologies are making research materials more widely accessible and allowing scholars to ask and answers. The latest tool and techniques allow researchers to handle age volume of digitized images and texts, trace patterns and connections formally hidden from view, recover the past in virtual

environment and bring the complex intricacies of works of art to light as never before to name just a few opportunities.

Digital technologies are the new medium they are the new ground technological changes create new environment of perception and the form of media has a more significant effect on media has a more significant effect on society and knowledge than the information in that media. The approach in every study of any medium, once identified is examine its shape or contours and discovering its underlying meaning. Successive media rise and fall. This holds tree in the realm of digital arts- the electronic media. We must remain informed about the subtle nature of new media -the electronic palette from which our works emerge. Intrinsic effects make each media unique.

The message of any medium or technology is the change of scale or pace or pattern that it introduces into human affairs." The medium is the message because it in the medium that shapes and controls the scale and form of human association and action. "Content is the interactive quality, a verb or continuing process. For the digital revolution in art, the computer is one such expressive medium that is transforming culture in a variety of ways, both educational and on the production end in both 'input' and 'output'. It has become a virtual temple - of living light that is subject, tool, and medium with the aesthetics of a base, the algorithms and the code facilitating self-exploration and collaboration."

"Art that uses digital technologies as medium can take so many different forms. All of these forms are aesthetically very different and to distinguish. However, there are certain prominent themes and narratives within new media among them data visualization and mapping, database aesthetic paming paradigms agent technology etc. currently more and more works grew being developed for

nomadic devices. PDAs (personal digital assistant) or cell phones, and I would expect that this art will experiment more with network structures that go beyond the static set up of the C.P.U, monitor and keyboard. Digital artists have tagged behind this fundamental change in thinking the subliminal, processed world of electronic technology which will soon play out in unrestricted space.

Multimedia means a convergence of media, communications technologies art design and culture an "intermediate" many believe that is perhaps miss-stated. Many of the elements of multimedia interactivity, artificial reality, performance, storage etc are well established with their own compelling histories. Technology communications media and culture use the history and contact of interactive art and design as a framework. In the digital world, film, design, animation and hypermedia become new media. The historical context for interactivity includes the surreal.

Digital art hasn't been around very long in the grand scheme of things, but it has already become a giant industry filled with lots of different types of art and artist**.**

Types of Digital Art

These are many of the main disciplines, but this list is not exhaustive. There are specializations, and also instances of combining these. For example, many artists will model or sculpt in 3d, to create a base image for their digital painting.

- Digital printing and drawing
- Vector art
- 3d modelling
- 3 d sculpturing

- Matte painting and photo manipulation
- Raster painting
- Digital coloring
- Digital illustration and art
- Digital photo manipulation
- Digital painting
- Digital photography
- Digital camera

Digital Painting and Drawing

Digital Painting is often used for imaginative illustration work, particularly in the fantasy and science fiction genres for games, films and books. Digital Painting emulates traditional painting, such as oil, acrylic and watercolor painting. You use a stylus either on something like an ipad, or with a drawing tablet plugged into a computer, in conjunction with some art software like Adobe Photoshop, Clip Studio Paint, Krita or Procreate.

The artist moves the stylus over the tablet like they would a brush over a canvas; the art software on their computer interprets this movement as a digital brushstroke on a digital canvas, formed of pixels.

Vector Art

Vector art produces a similar end result to digital painting, but with a distinctive cleanliness to its aesthetic. This kind of art is often used on t-shirts, logos and graphic elements - anywhere that a clean finish is desired. Illustrations are also perfectly achievable with vector art. Put simply, instead of making pixel-based

strokes as if with a brush or pencil, as you would in digital painting, vector artists designate points for the software to draw a line or shape between. The artist can then manipulate the straightness or curve of that line, or of the edges of the shape, and fill the shapes with solid colors or gradients.

Layered and built up enough, the lines and shapes can be used to compose a piece of art. This is done using a piece of software such as Adobe Illustrator.

Vector art often blurs the line between graphic design and art, as usually it has a very strong core of composition, shape design and color theory, just like graphic design.

The biggest advantage of art made with vectors is that it can be resized to as big or as small as you want, and it will still be crisp and clean. Pixel-based digital painting doesn't have this luxury, and will look worse when resized

3d modelling

3D modelling is used to create a digital, 3-dimensional representation of characters, environments and objects for use in things like movies, games and illustrations.

Similar to vector art, the artist designates points in a digital 3D canvas, which the software will draw lines and planes between. Multiple planes grouped together are called a 'mesh', and the artist will manipulate and create planes to craft a mesh to look like the desired object.

The graphics for nearly all modern games are made using 3D modelling, as well as most special effects for movies, television shows, architectural mockups, and many more uses.

Common 3D modeling software's are 3DS Max, Maya and Blender.

3D sculpting

A newer form of 3D modeling, 3D sculpting is designed to emulate the traditional method of sculpting with something like clay.

Just like sculpting in real life, artists start with a simple block of digital clay, and push and pull it into the desired shape. Just like traditional sculpting, they can add and subtract digital clay when they want to, or stamp it with texture and smooth it out.

Because 3D sculpting is a little faster for creating organic shapes than 3D modelling is, it will frequently be used to sculpt characters and creatures.

The most well-known program for 3D sculpting is Zbrush, but the free and open-source software Blender has been gaining a lot of recognition for its 3D sculpting capabilities.

Matte Painting and Photomanipulation

Matte painting is similar to digital painting, but also integrates heavy use of photographs and occasionally 3D modeling to create photorealistic landscapes and environments. Matte painting is most often used in movies, when a scene is required to have a realistic background that is either too expensive to film in, impossible to film in, or simply doesn't exist.

Matte painters will instead craft a background that seamlessly blends with the actual live-action footage, using photographs, 3D modelling and digital painting techniques in a piece of software such as Photoshop.

These techniques have allowed most modern films to have huge sweeping vistas and mind-blowing scenes that are fantastical but still convincingly realistic.

Photomanipulation is closely related - the techniques and purpose. It is the art of putting together or assembling of small pieces of paper, tiles, marble, stones, etc. They are often found in cathedrals, churches, temples as a spiritual significance of interior design. Small pieces, normally roughly quadratic, of stone or glass of different colors, known as tesserae, (diminutive tessellate), are used to create a pattern or picture.

Raster painting

Raster paints are yet another prominent kind of digital art. This is a type of digital painting that has gained popularity due to its striking similarity to traditional hand painting. Since other types of digital art produced a more virtual appearance of illustrations, traditionality has always been valued more than virtual illustration.

2D/3D Computer Graphics

Both in terms of conception and ultimate effect, 2D and 3D graphics are significantly distinct from one another. 2D graphics have height and breadth at their most basic level, whereas 3D graphics provide a layer of depth that adds realism.

2D visuals are most commonly associated with classic cartoons. 2D visuals are common in animation and video games because they provide a realistic yet flat perspective of movement on the screen.

3D images create genuine depth, allowing viewers to look into places, see the movement of light and shadows, and obtain a better comprehension of what is

being displayed. 3D motion graphics take use of the brain's innate desire to investigate what it sees and expand our knowledge of the world.

Digital coloring

The COLORCUBE is a three-dimensional model by which one can understand and teach digital color theory. This elegant representation of color bridges the gap between additive and subtractive systems of color, and defines the method by which colors are stored, manipulated, and reproduced using computer technology.

The COLORCUBE is patented in the United States and patent-pending internationally. More consumers than ever are buying their way into the digital imaging market. Digital cameras, color printers and color scanners have become less expensive and therefore, more accessible to new users. Accompanying this revolution in color usage is the need to understand digital color and its inherent complexity.

Research indicates that typical end-users are baffled by the intricate behavior of color and often complain that "the colors that print do not match what is on the monitor" .In spite of astounding technological advances in color, it is readily apparent that few people understand the theory of how digital color works. This inability to fully comprehend new color technologies can lead to customer dissatisfaction and products that fall short of user expectations.

Spittin' Image Software introduces a new "low-tech" invention designed to explain the principles of digital color. This recently U.S.-patented device, aptly named the COLORCUBE, serves as a physical model of how color is stored, manipulated, and reproduced using digital processes. If a $50,000 digital color system does not perform to expectations, the endsystem does not perform to expectations, and the end user is likely to conclude the product is broken.

As digital color products become less expensive and sales volumes increase, the availability of economical product training will become an important issue. For users to understand how best to recognize and deal with complex color problems, they must become familiar with the fundamentals of digital color.

The COLORCUBE is an elegant model of digital color which can be used to teach simple color concepts. Users can learn and properly understand the basic physiology of color perception, the intricate relationship between additive and subtractive color systems, and the mathematics of color image manipulation.

Digital Illustration and Art

Digital illustration is the technique of using a computer to produce original artwork. Digital illustrators use a combination of illustration software and image editing software to create computer art. Digital illustration is not merely the manipulation of images with software, it is the actual creation of new art with digital tools. An artist might use a graphics tablet or a mouse to create digital artwork. A graphics tablet is an input device that connects to the computer and has a tablet, or pad, with an attached pen. The artist uses the pen to draw on the tablet. The resulting image is saved to the computer, when sensitivity, which gives artists more flexibility in the way they draw. The software used for digital illustration can be either vector- based or raster-based.

Vector-based software draws shapes and lines based on mathematical principles. The paths it draws are fully scalable. Making them larger or smaller does not affect them or make them "fuzzy." like bitmap, or raster, software does. Raster-based, or bitmap, software creates images from pixels, which are small rectangles that make up an image on a screen. Because each pixel might contain

bits from different parts of an image, the image gets fuzzier as it gets larger, so there is a limit how much a raster-based image can be scaled.

Typically, drawing software is vector-based, while image editing software is raster-based. who wants to become a digital illustrator generally needs to be Someone extremely familiar with both vector- and raster-based software. There are not very many vector-based software packages; Adobe Illustrator is by far te most commonly used by professionals. There are a number of raster- based applications, but Adobe Photoshop is preferred by many illustrators. A digital illustrator may or may not have a background in traditional art, but will often have a background in design.

Digital illustration is used in nearly every area of graphic design and illustration. It is used extensively in web design and software design, as well as in the creation of posters, t-shirts, computer animation, and advertisements. Digital illustration is often combined with traditional illustration, especially in books and comic books, to produce a truly unique style of art 10

Digital photo manipulation

Photo manipulation is a form of digital art that involves photography, illustration, and graphic design all at the same time. Photo manipulation is popular because it can create scenes that stretches beyond one's imagination but can still appear so real. Because of its flexibility in creating such a wonderful image composition, photo manipulation is often used in the field of advertising to deliver witty and strong messages to the audience. Photo manipulation is the act of altering a photo using computer software to improve the look, beauty and readability of the image. Frequently it's difficult for a viewer to differentiate between a manipulated mage and reality.

Photo manipulation is a tool used by photographers. Photojournalists, photo editors, graphic designers and others working in visual communications, communication design, visual arts, mass media, content design, page layout, and related fields. Photo manipulation creatively combines and modifies elements of a photo to produce a unique image that is convincing to a viewer. Manipulation gives a photo a realistic view of an unreal picture. The entire manipulation process is subjective. After they are shot, many photos turn out to need small corrections, adjustments or modifications. For instance, as the result of such factors as technical characteristics of the camera or the weather or available lighting they may need perfecting or enhancing. In addition, many photos today are "photo shopped" to satisfy the imagination and creativity of a photographer. The widely-used term photo shopped comes from the brand name of the most popular image manipulation software, Photoshop from Adobe Systems.

Digital painting

Digital painting is a method of creating an art object (painting) digitally and/or a technique for making digital art in the computer. As a method of creating an art object, it adapts traditional painting medium such as acryli paint, oils, ink etc. and applies the pigment to traditional carriers, such as Paper, woven, canvas cloth, polyester etc. by of computer software driving industrial robotic or office machinery (printers). Means As a technique, it refers to a computer graphics software program that uses a virtual canvas and virtual painting box of brushes, colors and other supplies. The virtual box contains many instruments that do not exist outside the computer, and which give a digital artwork a different look and feel from an artwork that is made the traditional way is called digital painting.

Digital photography

Digital photography is the art and science of producing and manipulating digital photographs-photographs that are represented as bit maps. Digital photographs can be produced in a number of ways:

- Directly with a digital camera
- By capturing a frame from a video
- By scanning a conventional photograph

Once a photograph is in digital format, you can apply a wide variety of special effects to it with image enhancing software. You can then print the photo out on a normal printer or send it to a developing studio which will print it out on photographic paper. Although the resolution of digital photos is not nearly as high as photos produced from film, digital photography is ideal when you need instant, low-resolution pictures. It's especially useful fgraphics need to be low resolution anyway so that they can be downloaded quickly. Digital photography uses an array of electronic photo detectors to capture the image focused by the lens, as opposed to an exposure on photographic film. The captured image is then digitized and stored as a computer file ready for digital processing. Viewing, digital publishing or printing, Until the advent of such technology. Photographs were made by exposing light sensitive photographic film, and used chemical photographic to develop and stabilize the image. By contrast, digital photographs can be displayed, printed, stored, manipulated, transmitted, and archived using digital and computer techniques, without chemical processing. Digital photography is one of several forms of digital imaging. Digital images are also created by non-photographic equipment such as computer scanners and radio telescopes. Digital images can also be made by scanning other photographic images".

Digital camera

A camera that stores the pictures or video it takes in electronic format instead of to film. There are several features that make digital cameras a popular choice when compared to film cameras. First, the feature often enjoyed the most is the LCD on the digital camera. This display allows users to view photos or video after the picture or video has been taken,which means if you take a picture and don't like the results, you can delete it; or if you do like the picture, you can show it to other people. Another nice feature with digital cameras is the ability to take dozens, sometimes hundreds of different pictures. In the picture to the right, is a Casio QV-R62, a 6.0 Mega Pixel digital camera used to help illustrate what a digital camera may look like. Digital cameras have become the camera solution for most users today as the quality of the picture they take has greatly improved and as the price has decreased. Some users may be hesitant in buying a digital camera because of the inability of getting their pictures developed.

However, there are several solutions in getting your digital pictures developed. For example, there are numerous Internet companies capable of developing your pictures and send you your pictures in the mail. In addition, many of the places that develop your standard cameras film now have the ability to develop digital pictures if you bring them your camera, memory stick, or pictures on CD.

A digital camera (or digicam) is a camera that encodes digital imagesand videos digitally and stores them for later reproduction. Most cameras sold today are digital, and digital cameras are incorporated into many devices ranging from PDAs and mobile phones (called camera phones) to vehicles.Digital and film cameras share an optical system. Typically, using a lens with a variable diaphragm to focus light onto an image pickup device, the diaphragm and shutter admit the correct amount of light to the imager, just as with film but the image pickup device

is electronic rather than chemical. However, unlike film cameras, digital cameras can display images on a screen immediately after being recorded, and store and delete images from memory. Many digital cameras can also record moving video with sound. Some digital cameras can crop and stitches elementary image editing".

Types of Digital Artist

There are different types of digital artist who have pursued their career in the digital art industry.

Concept Artist

Concept artists explore the visual design of characters, creatures and environments, typically by making multiple sketches and slowly refining their best ideas into a final design. Concept artists are usually expected to be able to create art quickly and efficiently, using up to date methods, and produce a lot of different ideas in a short time. Concept artists also have to be able to handle their art being critiqued and rejected all the time, and not take it personally.

Illustrator

Illustrators create final pieces of 2D art designed to be viewed by the general public, usually as part of a product. This includes book covers and interior art, promotional and marketing images, card artwork, static game visuals etc. They are able to take more time over creating each piece of art than a concept artist is, as the final quality of the illustration matters a lot more than in concept art.

Illustrators will often have images such as concept art or a written description to work from, as they are usually depicting something that has already been designed.

Illustrators need to readily accept feedback from their clients and make changes to their art, and not feel too attached to illustrations despite spending a lot of time refining and polishing them. Illustration also requires a focus on building strong art fundamentals, to produce the highest quality art you can.

Most illustrators rely on either digital painting or vector art skills, and many will also incorporate 3D modeling, 3D sculpting and photomanipulation to allow them to get a higher quality finish in less time.

Character Artist

A character artist is a 3D artist that models or sculpts characters, creatures and sometimes objects and props for the entertainment industry. They use 3D modelling and 3D sculpting software, and often will be handed concept art to work from and be tasked with creating highly detailed and convincing characters and creatures.

The 3D models they create will be used in the final product, so they have to be able to produce extremely high-quality work. This will require not just a good knowledge of their software, but also strong art fundamentals, especially human anatomy and drapery.

There is a certain amount of confusion about the term 'character artist' - in some informal circles, artists that draw or paint 2D characters are also called character artists.

So, if you read advice about character artists online, make sure that you know whether the advice is for 3D character artists, or 2D character artists!

Environment Artist

Environment artists make the 3d landscapes, buildings and scenery for use in things like games and films. They typically will get a design to follow from a concept artist, and build the final environment in 3D modelling and sculpting software's. The environments they build will be the finished asset used in the film or game they are working on.

Like illustrators and character artists, environment artists are creating finished art for a commercial product, so they must be able to create high quality and polished landscapes and architecture. On top of their art looking good, environment artists in the games industry must also make functional environments that players will be able to interact with properly.

Environment artists should be most familiar with 3D modelling software, and also with game engines. The art fundamentals that they should focus on improving at are composition, perspective and lighting.

Animator

Animators bring life and movement to art, usually with creatures and characters for films, games and television, either in 2D or 3D.For larger commercial projects in the entertainment industry, animators will not make the models for the characters and creatures themselves - they will be designed by concept artists, and the models created by character artists.

Using 2D software's like Adobe Animate and 3D software's like Maya and Blender, animators are tasked with turning a static digital model into a convincing illusion of a living, expressive being. Animators must have strong knowledge of the art fundamentals, particularly of gesture and human expressions. Most of all, animators must understand how to communicate movement, which is a huge and completely separate skill.

2D Artist and 3D Artist

2D Artist and 3D Artist are catch-all names for multi-disciplined artists that create a variety of art used in things like games. They might create character and creature art, environment art, effects, the User Interface and even animate.

Larger companies will hire a group of specialized artists, like those I've listed above, to each handle a specific part of the art pipeline.

Smaller teams don't have the finances to be able to hire so many people - instead, they will look to hire a generalist artist, who can handle making as much of the different kinds of art as possible on their own.

On a smaller project, a 2D or 3D artist may make the concept art, then make final models of the characters, creatures, props and environments, and finally animate those models, as well as create illustrations for marketing purposes and potentially make many other kinds of art.

Because of this, these generalists are expected to be jack of all trades, with a natural curiosity to learn about new things, and a willingness to switch tasks as the project needs. I hope this list helps you figure out the kind of art career you want to pursue - the amount of enjoyment and fulfilment from each will honestly come down to personal preference.

End Note

- Cousens David, Digital Art: A Complete Guide to Making Your Own Computer Artworks, Publisher: Arcturus Publishing Ltd, Publication date: 15 May 2013.
- https://magazine.artland.com/digital-art
- https://www.vectornator.io/blog/digital-art/
- https://worldart.news/2023/01/23/brief-history-of-digital-art/

CHAPTER 4

Special references of Artist SATADRU SOVAN

Satadru Sovan Banduri is a well-known painter and video artist from India. He started his career like most other artists- by working towards his undergraduate and graduate degrees in fine arts from art school. He was at Kala Bhavan, Visva Bharati University, Shantiniketan which is one of the best international art schools in India. He responds to or rather, reacts to his immediate environment and an unfamiliar visual culture through innovations in his art practice. He started working with digital media quite a few years ago while it was still unfashionable to do so in India.

After finishing his graduate degree, he started working as an independent artist. Since then, he has participated in several regional, national and international art shows. He also is immensely fascinated by information technology and the digital revolution. He has been learning software that has changed the way he looks at visual art-Photoshop, Flash, Premiere and others. Later, he joined the IT industry as a professional where he gained proficiency in working with imaging and video software to create 'commercial art' like animation movies and websites. As an artist, Satadru's predominant interest in recent years has been observation of multifarious aspects of existence in a Metropolis and portrayal of his impressions through his work. At the same time, he tries not to let his opinions get reflected through his work as far as possible. In fact, he almost always introduces an element of humor in his works so that they remain incisive and insightful. So, in that sense his paintings are a kind of intimate but third person views of life in a metro. Life in

a Metro like Delhi and all its conceivable aspects from mobile Sms, jargon to pubbing and clubbing are inspiration and subject-matter for his work. Discotheques and strobe lights, DJs and blaring music, chiseled bodies and pierced body parts and much more. It is a world saturated with desire for anything and everything. And so is Satadru's palette- saturated and loud. The artist has attempted to showcase a segment of our society that refuses to be generalized. Consumerism consumes people's individuality and turns them into larger-than-life entities. This visual culture would confound and even overwhelm someone who is not a part of the urban milieu or has just recently come to be a part of it. But closer observation and certain amount of empathy from the viewer would reward him with interesting and humorous insights into human psyche. Contemporary new media art practices.

Satadru has attained a vibrant global position with his multi-disciplinary works. He is working generally addresses gender and sexuality in Indian society through the observation of urban culture "the metro. He voices his ideology through cyber space and open-source social networking that have come out of a careful and well-thought techno savvy process. He is Fulbright Scholar from University of California, (UCSC) 2007. He has been working with many mediums to represent their thoughts and feelings since his artistic career was started. The subject matters in his work involve socio-cultural crisis of our country as well as the South Asian life. His research was last few-year what will be social changes in Global- society post cyber movement.

Psychedelic 'Openness' is seen as the fundamental principle of the Internet. Within his practice he has exploring the cultural swap and sociocultural hybridity. His interested in how distinct cultural experiences have shaped us all, and he also researching the points where these distinctions overlap, and where unique, hybrid and odd cultural forms emerge with gender vocabulary.

The Social cultural revamp is like mobile molten-moving through the time space continuum at will. The south Asian narratives is in my multi-disciplinary projects address issues of cultural dislocation Jargon and the cultural alter that can occur in the rendering. Translation/ transmutation of time and space. He specifically interested in the contemporary transmission of visual culture, and the experiences of gender who led trans-cultural lives. Multi-disciplinary work is research about drift in social & cultural arena. He always loves to explore society life discourse and changes of manifestation. The Cutting-Edge dialogue revitalizes me and motivates to continue my art practice. Society-activism and participatory cultural is our core element of his work. His interest and expertise are in digital art and new media, an area that he continues to work in.

Focusing on the restricted sexuality and latent fantasizing that he feels is endemic to his native India, he creates art that is colorful and fun filled besides conceptual under layers. His works highlights the way in which Consumerism consumes people's individuality and turns them into larger-than-life entities Starting work with digital media, while it was still an unexplored genre in India, Banduri fascinated by information technology and the digital revolution, has been experimenting in the genre by inter mixing his painted imagery in a digital context. Working as an independent artist, he has participated in several regional, national and international art shows.

Whenever an artist produces a new body a new work, one's first instinct is to hold it up against the earlier bodies of work and ask, "What’s new in this? And where is the headed? Looking back at the subjects and building blocks of Satadru Sovan's older work, one is familiar with his canvas that examine cyberspace, social networking and cyber visions of blurred gender-"thumbnail portraits of the virtual lives of the sexually aware, seeking neitzen", as I have described them earlier toned

bodies honed faces, urban landscape air-brushed clean of anything ugly. All prestige of personality is emerging either as an uber-heightened or fantastically different version of its actual self, everything emerging from and vanishing constantly into a swirling cyber cloud.

The elements things that carry over from Satadru Sovan's earlier work are in full narrative force too. The naked male body in all its toned glory, hinting at blurred sexual boundaries; and the paradoxical clothed primness of the beautiful idealized girls, contrasted with their ravenous cyber searching. The examination of the online psyche and its brittle near-fraudulence and the inversion of worlds(where the virtual is more real than the real world because the real world is not half as enjoyable the virtual one) are still yielding good narrative ground for the artist the colours too, are still the colours of the idealized rainbow world- purples, pinks, lavenders and peaches nothing ever gets dirty around here because it never really exists in the grime of reality.

In his new work we definitely notice that emergence of new leitmotifs and an increased dependence on them, lo suggest more than directly communicate, patterns of behavior that the artist finds interesting. An inventory of some of the new motifs includes the kingfisher- that brilliantly plumed bird that waits patiently and then unhesitatingly darts under water for its prey, much like the scrap-hungry netizen. The peacock in mythology scriptures is a bird with a thousand eyes that will seek wide-eyed forever. The varied use of flowers to connote sexual longing and readiness rampantly aggressive floral forms, leaping across the canvas to bridge the gap, that their relatively cool human owners are unable to bridge in their respective realities. The use of a curious shimmering ball- like device in many of the images implies illusion, mirage and nothingness. New too, is the emergence of hi-rise buildings in these works, as a virtual urban playground. The use of the

bubble in some of the works now conspires with the cyber cloud, to provide both ephemeral qualities, as well as fragile physical space for characters to play their parts. Any combination of these leitmotifs along with the "dudes and dudettes "of Satadru Savan's cyber world, yields emotional messages. The messages in Satadru Sovan's new works are as fleeting as the domain they inhabit. The new world has nothing but floating relationships. These relationships need no rest, no house. Their houses float too. Nothing is in one place. People and places flow. Emotions flow.

The net is the ultimate floating space. Illusions are now even more illusory. Neither etymology nor etiology exists for these players in this cyberswid. Everyone searches and searches. The very environment, in which they search, is nothing but one big searches engine itself eternally seeking answers for itself. The object of the search is not something new or mysterious. Just another facet of one's own comfort zone will do. Everyone wants to out their innermost selves, but only in the most intimate conversation conduced with just one's self. There is no real achievement, only a fluctuating number of scraps and hits that the sweetest fake pics of someone else's six pack and botoxed lips attract. Virtual flowers reach across and copulate with the universe. Virtual kingfishers dive in and grab. What they want while real people sit in one spot and send their minds circumambulating the universe. It's a fascinating world that Satadru Sovam conjures, even a beautiful one-though not a very happy one".

Art was the buzzword in Delhi in September when Asia's biggest artist driven art fair, the United Art Fair 2013 (UAF), opened at the massive Pragati Maidan with a mindboggling 2000 artworks and 300 artists. We were swished in a sleek shuttle car to the manicured entrance of the art fair halls, a throng of security people and ushers letting us into a glittering space bulging with artworks of all kinds, elegantly displayed on walls, pedestals and even floors. The curatorial range

was staggering from the stellar Peter Nagy, Alka Pande, Ram Rahman and Heidi Fichtner, to newer kids on the block like Mayank Kaul. A heady mix of curatorial expertise and an obsession with fresh talent gave the fair an edge. It was a pleasure to see senior artists like Manu Parekh showing alongside newcomers like the talented young Mainaz Bano from Lucknow, whose uber cool, blown-up, mixed-media miniatures are bound to excite even connoisseurs of the genre wherever they go on display. Parekh's digitized prints, on the other- hand, were somewhat predictable.

Yet, they were exciting as a septuagenarian's nod to the whole new world of 'in' digital art.Among a breathtaking display across genres and media, some works definitely stood out. Vanita Yaji's assemblage of sleeping figures in white, called everyone is Pure While Asleep, was intriguing, and not just because she stuck hand-crafted cloth dolls on canvases to capture moments from across a spectrum of possible characters and scenarios in the bedroom, caught deep in sleep. The playfulness of the piece was undercut by the shadow of events that must inevitably unfold when the same characters are awake.

In chromatic contrast, Satadru Sovan's works were a foray into the loud and hyper-real between conventional gouaches on paper to printed LED light boxes. Satadru's selection of artworks covered a wide range of media and explored our fractured reality in insidious ways-through visual resonances that allow the co-presence of birds, deer, hibiscus flowers, Bollywood male stars and mega monuments within the same space, some even crawling between 'paintings and onto the surface of light boxes or across the background wall to create an immersive experience, where disbelief hangs suspended. It was exciting to see a different facet of Satadru's creativity. He was in Kathmandu just about a month

ago, as part of the Bikalpa Art Center's workshop dedicated to new media works and had produced installations on issues relevant to human trafficking in Nepal.

The human body, however, was in positive focus in Katharina Poggendorf-Kakkar's delicate drawings of women's bodies in the nude and hard-hitting assemblages of found and organic materials celebrating 'shakti' and the woman. The yoni and the bindu are recurrent visual themes that weave her, oeuvre together and imbue it with the strength of the feminine.

The author herself was selected to participate in the UAF by one of the senior curators. Her triptych of oil-on-canvas called India Shining I, II and III was a tongue-in-cheek take on the brazen success story that the country continues to fashion itself into while vital issues, contradictions and drawbacks bog it down in reality. Gender vulnerability, especially against the backdrop of a pre- and post-Independence history of imagining the nation as the 'mother, throw into question such unifying narratives of complacency popularized within and without its borders. Unrestricted environmental degradation and rapid saffron station of a secular state further add to the complexities. India Shining is a somewhat covert visual take on some of these issues.

However, what made this fair so unique was the space it gave to artisanship and the so called 'crafts. A large number of pieces on show were created by artists coming from a background of inherited folk traditions. Be it through the exhibition of exquisite painted chairs from Rajasthan or scaled down versions of cinema billboards, the UAF directed focus to fast disappearing and newly revived traditional arts. Kailash Chandra Meher's amazingly detailed and monumental traditional leaf motifs-painted on tussar and presented like any other painting meant for a wall-for example, were a huge draw at the fair All in all, this year's

UAF was a groundbreaking show that brought together an amazing spectrum of artists and artworks from across India and the world". Satadru Sovan Banduri is a multi-disciplinary Indian NFT artist, specializing in canvas art, digital art and installations with light as well as performance art. He recipient of several awards including prestigious Fulbright Scholar From DANM, California USA, and residencies. His work is in the private collections as well as museums. The recent series by artist's works to enact simultaneous themes of ecological ruin and gender based practice in the visual arts. The highly aesthete paintings, displaying bold and evocative colour, yet relate a situational crisis, the extinction of species in a non-linear manner. The artist has sought to depict those flora and fauna now long since vanished with those under imminent threat, a poignant depiction which demands the viewer reflect on the past to present invasive presence of humankind in the global ecosystem.

The recent work exhibited was TECHNÉ DISRUPTORS i.e one of the first art, tech & NFT shows from the Global South with a focus on South Asia, High Line Nine Gallery, New York, USA his international exhibitions include the Lincoln Centre in New York, and The Museum of Art and History (MOMA) in Santa Cruz as well Schema Art Museum ,Korea, Cheongju Contemporary Art Museum in, Malaysia, as well as exhibitions in USA ,Sofia, Bulgaria, Tallinn, Korea, Hong Kong, South Africa, Vietnam, Iran and Germany. He has also participated in Biennales in Iran, The Cheongju International craft Biennale, the Bodhgaya Biennale, THAT ART FAIR, Cape Town, Cheongju International Art Fair South Korea, Johannesburg Art Fair at South Africa, United Art Fair Delhi, Art Expo in Malaysia, and the Indian Art Fair, New Delhi. Performances and workshops include in USA, China, Vietnam, South Korea, South Africa, Mongolia, Manyamar, Nepal, India and Bangladesh. His art works through 11 solo

exhibitions, 10 Art fairs, 5 Biennales and over 165 Performances in 25 countries. His art works are exhibited in 7 national and international Museums.

His national and international art achievement with 11 solo show (Korea, Vietnam, USAMichigan city, California Santa Cruz),6 Museum Show(Lincoln Centre New York City, Schema Art Museum Korea, Chongqing China, Santa Cruz California) ,RESIDENCY 25 residency (USA, China, Cheongju, Korea, Vietnam, Myanmar, Mongolia, Bangladesh, Nepal Cape-Town, triangle Network South Africa Northern California, USA, Michigan USA) 6 BIENNALE(IRAN, Korea, Athens) ,7 Art fair, 54 Art performance around the globe. He is founder & director of Hexxydexxybox international performance platform. He is board member The Lock Unlock Performance Art Project initiative and Brand-Ambassador of Worldwide Peace Marker Project collective USA.

Placed under the larger category of new media art, digital art is defined as any creative practice that uses digital technology as an essential part of the artistic process. Just like traditional fine art, digital art offers multiple mediums and styles that artists can use to express themselves, from digital photography, computer graphics and pixel art to more experimental mediums such as AI-generated art and AR art, everything goes in the spectrum of digital art. Involving techniques that are not distinctive of creative expression only, digital art is ever-evolving and radical in the way it is produced, distributed, and viewed.

But not only does digital art employ different electronic technologies, it also results in a digital final product, be it a vector image, an Adobe Photoshop collage, a virtual environment, or an NFT, just to mention a few. As digital technology has become inextricably intertwined with everyday existence and continues to

advance, new artistic avenues open up and the artist's toolbox is today wider than ever.

End Note:

- Stenning Derek, Beginner's Guide to Digital Painting: Characters, Publisher: 3DTotal Publishing, Publication date: 2 April 2015.
- Gilbert Regine M., Inclusive Design for a Digital World: Designing with Accessibility in Mind, (Franz Kurfess, Computing Reviews, September 7, 2021).
- https://worldart.news/2023/01/23/brief-history-of-digital-art/
- https://www.architecturelab.net/types-of-digital-art/

CHAPTER 5

Conclusion

Indian Digital Art does not limit only to traditional forms of art, but including such mediums transforms digital techniques. It has developed entirely new forms of art, such as net art, software art, and digital installation and more, which have emerged from experimentations. Computer mixed with traditional media offers many advantages such as it can be quicker to employ, easier to mix with compatible media, like oils and watercolors and so on. Its ability to correct mistakes leads to a bolder and more tentative style.

Also, since the output is actually significantly independent of the creation process, it is possible to choose things like the size of the work and the media in which it is printed on. Digital technology has revolutionized the way in which art is created and it is experienced. In this paper the digital art concept with reference to Indian digital art been incorporated. In addition to it the artist's work and their views been documented. Keywords: Indian Digital Art, Indian Art, Contemporary Art, Computer Art, Internet art is a part of new media art as well as a part of electronic art. A few sub-genres of Internet art are software art, generative art, net-poetry and networked narrative.

Digital art most commonly refers to art created using digital tools for human expressions. "Digital art" is a term which is applied to the new contemporary art form that uses the methods of mass production or digital media for expressing the thoughts, ideas, and messages. Digital techniques Indian Digital Art is created by using purely computer for example fractals, and algorithmic art or it can be

manipulation of scanned photographs, or image is drawn using vector graphics created by using the software using a mouse or graphics tablet. The term can be applied to the art which is partially created by using traditional media or hand processes but further modified by digitizing them.

After doing this dissertation, I got to know that in today's time period, advertising plays a vital role in coordinating viewer's attention. Digital art has gained popularity in recent years. Digital art has become a part of daily life and greatly impacts traditional art. Digital art has its own merit and value. Digital art is worth it because it is art, just like traditional versions, only that it is linked to technology. Digital art has long been undervalued, in large part because it's so freely available. To help artists create financial value for their work.

The accessibility of digital technology is breaking down barriers to art-making, and more people are enabled to live out their creativity. It is still unclear what the impact digital art has on the job market for artists today. Digital art is variably referred to as electronic art, computer art, computational art, new media art, multimedia art, internet art, digital installation art or advertising motion graphics. Digital art is not just about pixels, but also about digital artists' lab.

BIBILOGRAPHY

Books:

- 3dtotal, The Definitive Digital Art Collection, Publisher: 3DTotal Publishing, Publication date:14 February 2013.
- Spina Mala, Altro Evo Art Book Illustrations: Digital Painting: Sword and Sorcery Fantasy Art Book on the Day of the Dragon (Fantasy Action Series from Altro Evo 0), Publisher: Work on Color, Publication date: 19 March 2017.
- 3dtotal, Digital Painting Techniques, Edition1st, Publisher: Routledge.
- Donohue Chip, Technology and Digital Media in the Early Years, Language English, Publication date:15 October 2014.
- Cousens David, Digital Art: A Complete Guide to Making Your Own Computer Artworks, Language English, Publisher, Arcturus Publishing Ltd, Publication date:15 May 2013.
- Bloomsbury, Digital Arts: An Introduction To New Media, Language English, Publishing India Private Limited, Publication date:1 January 2019.
- Cousens David, Digital Art: A Complete Guide to Making Your Own Computer Artworks, Publisher: Arcturus Publishing Ltd, Publication date: 15 May 2013.
- 3dtotal, Beginner's Guide to Digital Painting in Photoshop 2nd Edition, Publisher: 3DTotal Publishing, Publication date: 25 February 2020.
- Stenning Derek, Beginner's Guide to Digital Painting: Characters, Publisher: 3DTotal Publishing, Publication date: 2 April 2015.
- Gilbert Regine M., Inclusive Design for a Digital World: Designing with Accessibility in Mind, (Franz Kurfess, Computing Reviews, September 7, 2021).

Online Resources:

- https://www.eden-gallery.com
- http://www.wisegeek.com/what-is-digital-illustration.htm
- "http://www.computerhope.com/jargon/d/digicame.htm
- With the help of (SATADRU SOVAN)
- https://www.adobe.com/uk/creativecloud/illustration/discover/digital-art.html
- https://www.eden-gallery.com/news/what-is-digital-art
- https://study.com/academy/lesson/what-is-digital-art-definition-history-examples.html
- https://www.tate.org.uk/art/art-terms/d/digital-art#:~:text=The%20first%20use%20of%20the,paper%20placed%20on%20the%20floor.
- https://magazine.artland.com/digital-art
- https://www.vectornator.io/blog/digital-art/
- https://worldart.news/2023/01/23/brief-history-of-digital-art/
- https://www.architecturelab.net/types-of-digital-art/
- https://www.selfemployedartist.com/blog/types-of-digital-art

LIST OF IMAGES

1. At midnight in the museum
2. Journey for Cosmos Multidisciplinary Digital collage installation
3. Life is a broken winged bird suspend Chameleon cannot fly.
4. Deep mystery there is a Song of Stillness.
5. Heedless of Lacking space.
6. Scare evening sky.
7. Billions of years ago without ambition.
8. Eons Of fauna and flora hominids have stood for mere years.
9. Untouchable dream.
10. Wanna fly with Larva
11. Trapped in the sky
12. Crater cracker on Fiery Fountain of Steam Spitter.
13. Makeshift planet will host
14. Unnoticed gap at homewards
15. Unnoticed gap at homewards
16. Unnoticed gap at homewards
17. Unnoticed gap at homewards
18. Unnoticed gap at homewards
19. Untitled
20. Untitled
21. Untitled
22. Untitled
23. Untitled
24. Untitled

25. Untitled
26. Untitled
27. Untitled
28. Untitled
29. Untitled

IMAGES

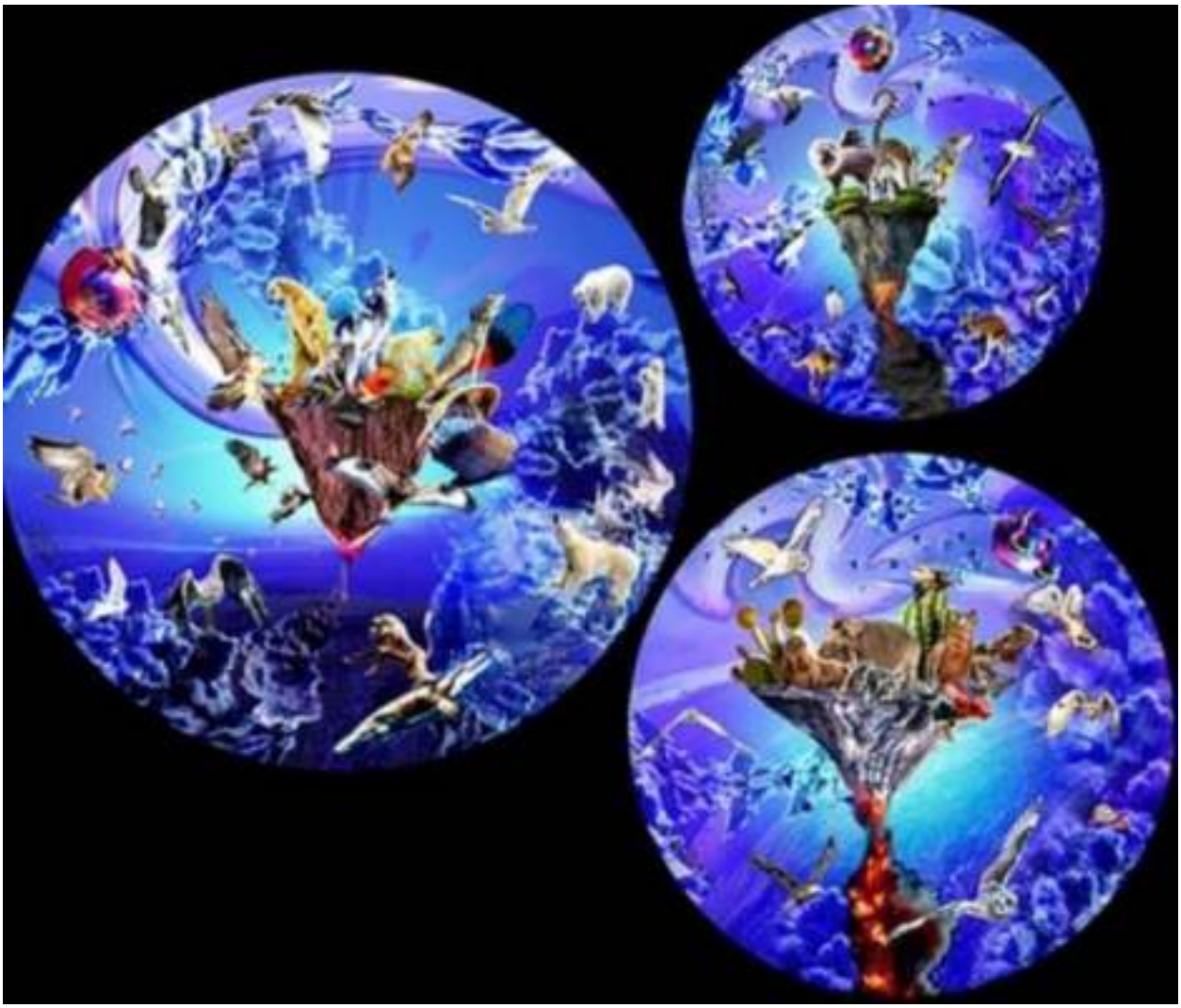

At Midnight in the museum

Journey for cosmos, Multidisciplinary digital collage installation

Life is a broken-winged bird

Deep mystery there is song of stillness

Heedless of lacking space

Scare Evening Sky

Billions of years ago, without ambition

Untouchable Dream

Wanna Fly With Larva

Trapped in sky

Crater cracker on fiery fountain of steam spitter

Makeshift planet will host

Unnoticed Gap at homewards

Unnoticed Gap at homewards

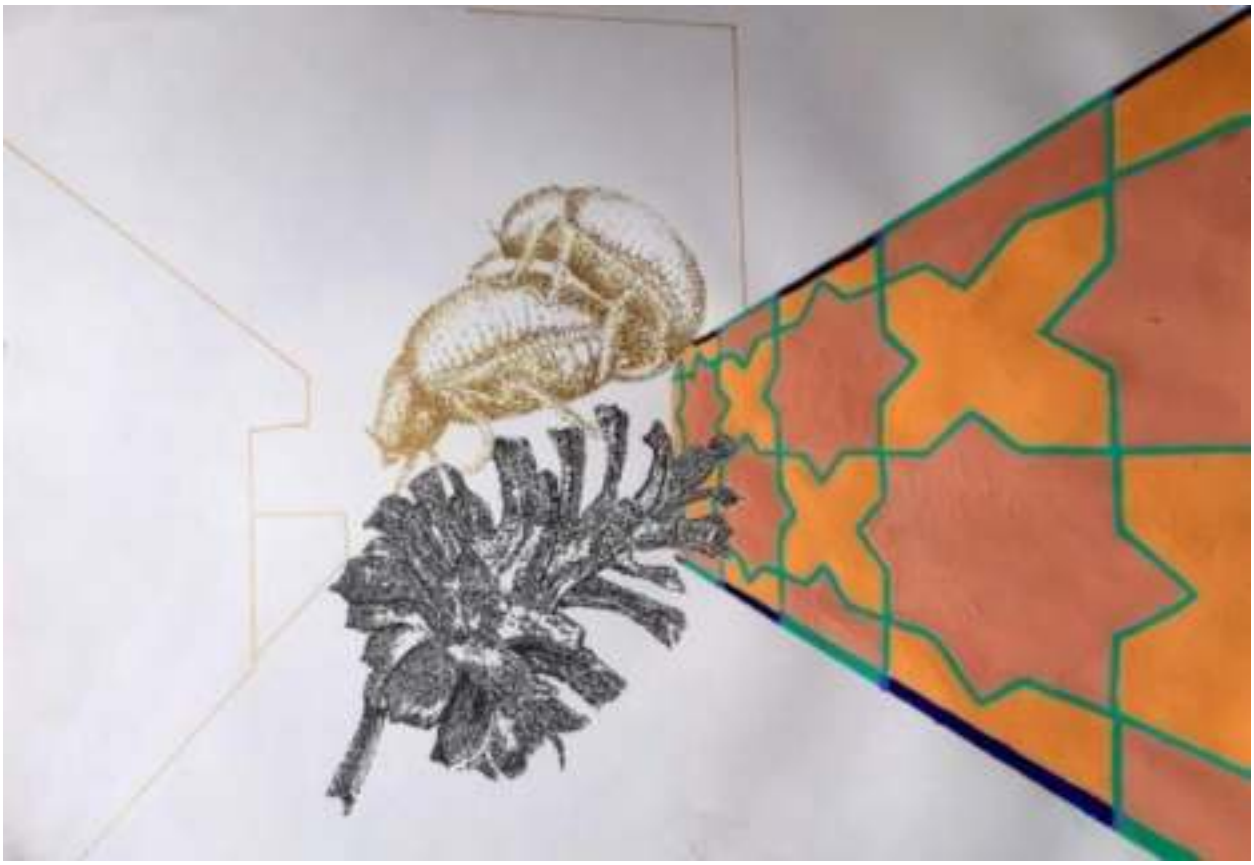

Unnoticed Gap at homewards

Unnoticed Gap at homewards

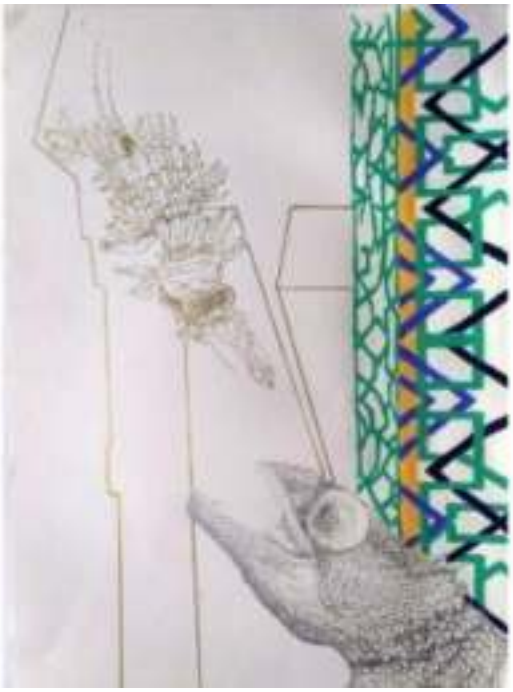

Unnoticed Gap at homewards

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

Untitled

"हिम चटर्जी का कला संसार"

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

शोधकर्त्री
नेहा देवी
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

निर्देशिका
महेश चौहान

विभागाध्यक्षा
श्रीमति संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा0)

Estd 1988

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्डा)

2022–2023

"हिम चटर्जी का कला संसार"

Examined
01/06/2023

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

शोधकर्त्री
नेहा देवी
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

निर्देशिक
महेश धीमान

विभागाध्यक्षा
श्रीमति संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा0)

Estd. 1968

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्डा)

2022–2023

प्रो0. हिम चटर्जी

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा०)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नेहा देवी, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने "हिम चटर्जी का कला संसार" शीर्षक पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

मैं इसके उज्जवल भविष्य एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक : 01/06/2023

संतोष
एसो. प्रोफेसर
श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं नेहा देवी, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध "हिम चटर्जी का कला संसार" विषय मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। मैंने इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित कृति है। जो सामग्री प्रयोग की गई है। उनको दिखाने का प्रयास किया गया है।

Mahesh Dimar

निर्देशक

महेश धीमान

Neha Devi

शोधकर्त्री

नेहा देवी

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा०)

कुरुक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नेहा देवी, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने "हिम चटर्जी का कला संसार" शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

मैं इसके उज्जवल भविष्य एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

Aarti

प्राचार्या

डॉ श्रीमती आरती त्रेहन

दिनांक: 1/6/23

प्राक्कथन

सौंदर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु का नाम कला है। कला को सरल शब्दों में "सत्यम् शिवम् सुंदरम्" कहा गया है। यद्यपि कला वह है जो आत्मा को परमात्मा में लीन करती है। कला, कलाकार के भावों को व्यक्त करने का माध्यम है।

हिम चटर्जी ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका जीवन पूर्णता कला के लिए समर्पित हैं। वे जीवन के अस्तित्व का वर्णन तथा जीवन के स्नेह पूर्ण व्यवहार को अपनी कला में दिखाते हैं। जो हम सभी के जीवन को एक खास हिस्से को दर्शाती है।

हिम चटर्जी एक दृश्य कलाकार हैं और वह लैंडस्केप बनाते हैं। हिम चटर्जी एक बहुत अच्छे स्वभाव के कलाकार हैं।

मैंने हिम उन कुमार चटर्जी की पेंटिंग अपने कॉलेज में प्रधानाचार्य के कार्यालय में देखी थी, जिसकी मैं बहुत प्रभावित हुई। फिर मुझे लघु शोध लिखने का मौका मिला। तब मैंने हिम कुमार चटर्जी पर लिखने का सोचा और सर ने लघु शोध लिखने के लिए हिम चटर्जी से अनुमति ली और हिम चटर्जी से 23 अप्रैल 2023 को हिम चटर्जी से मेरा साक्षात्कार हुआ और जिसमें चटर्जी से उनके जीवन को लेकर मेरी बातचीत हुई और मुझे हिम चटर्जी के कामों को समझने का मौका मिला।

- प्रथम अध्याय में 'कला का संक्षिप्त परिचय', 'बंगाल स्कूल', 'अवनींद्र नाथ टैगोर', 'समकालीन कला', सनत चटर्जी का संक्षिप्त रूप से वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

- द्वितीय अध्याय में 'हिम चटर्जी का जीवन परिचय' पर प्रकाश डाला है।

- तृतीय अध्याय में 'हिम चटर्जी की कला यात्रा' , 'प्रदर्शनीयां' , पुरस्कार, व कार्यशाला कलाकृतियों का विवरण किया गया है।

- चतुर्थ अध्याय में 'हिम चटर्जी का भारतीय समकालीन कला में योगदान' के बारे में लिखा है।

- पंचम अध्याय में 'हिम चटर्जी से साक्षात्कार' लिखा है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ सूची, और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करें।

इस शोध पत्र में जो त्रुटियां रह गई हैं, उनके लिए दोस्ती मैं ही दोषी हूं । अतः इसके लिए मैं विद्वानजनों से क्षमा प्रार्थी भी हूं।

नेहा देवी

शोधकर्त्री

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का आलेख संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूँ जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से मैं इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

सर्वप्रथम मैं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा, के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष मैडम के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ , जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। श्री पवन कुमार विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूं कि इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

मैं आदरणीय कलाकार एस. प्रणाम. के. सिंह जी का भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपना मूल्यवान समय निकालकर अपने विचार सांझा किए तथा शोध की निष्कर्ष राह दिखाई। इसके साथ–साथ मैं अपने परिवार जनों का भी ह्रदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में सक्षम हो पाई।

मैं आदरणीय श्री महेश धीमान सर व आदरणीय सहायक प्रोफेसर श्रीमती किरण खेवरिया मैडम के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं अपने मित्रों तथा सहपाठियों की भी ह्रदय से आभारी हूँ।

अंत में मैं प्राचार्य महोदय आदरणीय डॉ0. आरती त्रेहन मैडम जी का भी आभार प्रकट करती हूँ जो ललित कला विभाग को सुचारू रूप से चलाने में ललित कला विभाग का सहयोग कर रही हैं। मैं अपने सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य संपन्न हो सका। यदि इस लघु शोध प्रबंध में पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ पहुंचा, तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी।

नेहा देवी

शोधार्थी

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	पृष्ठ संख्या
आभार	
प्रथम अध्याय: परिचय	01 – 10
– बंगाल स्कूल	
– अवनिंद्रनाथ टैगौर	
– समकालीन कला	
– सनत चटर्जी	
द्वितीय अध्याय :	11 – 14
– हिम चटर्जी का जीवन परिचय	
– शिक्षा	
तृतीय अध्याय:	15 – 52
– हिम चटर्जी की कला – यात्रा	
– प्रदर्शनीयाँ व पुरस्कार	
– कार्यशाला	
– कलाकृतियों का विवरण	
चतुर्थ अध्याय:	53 – 54
– हिम चटर्जी का भारतीय समकालीन कला में योगदान	
पंचम अध्याय :	55 – 62
– हिम चटर्जी के साथ साक्षात्कार	
– उपसंहार	63 – 64
– संदर्भ ग्रंथ सूची	65 – 65
– चित्र संग्रह सूची	66 – 66
– चित्र सूची	68 – 91

प्रथम अध्याय

- परिचय
- बंगाल स्कूल
- अवनिंद्रनाथ टैगोर
- समकालीन कला
- सनत चटर्जी

परिचय

कला का अर्थ :–

कला (आर्ट) शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक विशेष पक्ष को छूकर रह जाती हैं। कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है, यद्यपि इसकी हजारों परिभाषाएं की गई हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिनमें कौशल अपेक्षित हो, यूरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है। कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है, जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है।

कला का परिचय :–

कला शब्द का प्रयोग शायद सबसे पहले भरत के "नाट्यशास्त्र" में ही मिलता है। पीछे वात्यायन और उशनस ने क्रमशः अपने ग्रंथ "कामसूत्र" और "शुक्रनीति" में इसका वर्णन किया। "कामसूत्र", "शुक्रनीति", जैन ग्रंथ – "प्रबंधकोश", "कलाविलास", "ललित विस्तार" इत्यादि सभी भारतीय ग्रंथों में कला का वर्णन प्राप्त होता है। अधिकतर ग्रंथों में कलाओं की संख्या 64 मानी गई है। "प्रबंधकोश" इत्यादि 72 कलाओं की सूची मिलती है। "ललित विस्तार" में 86 कलाओं के नाम गिनाए गए हैं। "कलाविकास" में सबसे अधिक संख्या में कलाओं का वर्णन किया है, उसमें 64 जनोपयोगी, 32 धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष संबंधी, 32 मान्सर्थ शील प्रभावमान संबंधी, 64 स्वछकारिता संबंधी, 64 वेश्याओं संबंधी, 10 भेषज, 16 कायस्थ तथा 100 सार कलाओं की चर्चा है।

सबसे अधिक प्रमाणित सूची "कामसूत्र" की है। यूरोपीय साहित्य में भी कला शब्द का प्रयोग शारीरिक या मानसिक कौशल के लिए ही अधिकतर हुआ है। वहां प्रकृति से कला का कार्य भिन्न–भिन्न रूपों में माना गया है। कला का अर्थ है – रचना करना अर्थात वह कृत्रिम है। प्राकृतिक सृष्टि और कला दोनों भिन्न–भिन्न वस्तुएं हैं। कला उस कार्य में है जो मनुष्य करता है, कला और विज्ञान में भी अंतर माना जाता है, विज्ञान में ज्ञान का प्राधान्य है। कला में कौशल का, कौशलपूर्ण मानवीय कार्य को कला की संज्ञा दी जाती है। कौशलविहीन बेढ़ब ढंग से किए गए कार्यों को कला का स्थान नहीं दिया जाता।

कला और संस्कृति में संबंध :–

किसी भी देश के विकास में कला का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह सांझा दृष्टिकोण, मूल्य, प्रथा एवं एक निश्चित लक्ष्य को दिखाता है। सभी आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य गतिविधियों में संस्कृति

एवं रचनात्मकता का समावेश होता है। विविधताओं का देश भारत अपनी विभिन्न संस्कृतियों के लिए जाना जाता है।

भारत में गीता, संगीत, नृत्य, नाटक – कला, लोक परंपराओं, कला – प्रदर्शन, धार्मिक – संस्कारों एवं अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्रों में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है, जो मानवता की 'अमूर्त संस्कृति विरासत' के रूप में जाना जाता है। इनके संरक्षण हेतु संस्कृति मंत्रालय ने विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं को कार्यन्वित किया है, जिसका उद्देश्य कला प्रदर्शन एवं साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों, समूहों एवं सांस्कृतिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

इस खंड में भारत की सांस्कृतिक विरासत, प्राचीन स्मारकों, साहित्य दर्शन, विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों, कला प्रदर्शनी, मेले, त्योहारों एवं हस्तकला के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। भारतीय कला एवं संस्कृति के उन्नयन एवं प्रचार–प्रसार में शामिल विभिन्न संस्थाओं की जानकारी भी यहां प्रदान की गई है।

कला का स्वरूपः–

कला एक ऐसा विषय है जिसे किसी पहचान की जरूरत नहीं है, यह अपनी पहचान अपने आप में समेटे हुए हैं। कला को हम किसी बंधन में कैद नहीं कर सकते। पुरानी होने से कला का महत्व कम नहीं हो जाता, बल्कि अक्सर उसका महत्व बढ़ जाता है। उसे देखकर हर इंसान को अपनी प्राचीन कला एवं संस्कृति का पता चलता है। कला का कोई वास्तविक स्वरूप नहीं होता, वह अपना नया रूप ग्रहण करती है।

"हम प्रतिदिन अनेक कार्य करते हैं इनमें से कुछ कार्य साधारण रीति के किए जाते हैं और कुछ कार्यों को हम अपने विशेष कुशलता दिखाते हैं विशेष कुशलता पूर्वक किए गए कार्य दूसरों को आकर्षित करते हैं और प्रभावित भी। प्रकृति के प्रांगण में भी प्रतिक्षण अनेक नवीन धाराएं होती रहती हैं। चंद्रमा के घटने –बढ़ने के आधार पर ही उसे सोलह कलाओं से युक्त माना जाता है। देवताओं के अपने–अपने कार्य और प्रभाव भी उनकी कलाएं कही जाती हैं। सुंदर अथवा आनंद प्रसाद, अनुभव, गिनती करना, शब्द करना, प्रसन्न करना आदि को भी कला जाता है।"

कला प्रकृति की देन है। चित्रकार में कला प्रकृति से ग्रहण किया है और अपने नए भावों से दिखाया है। जो समाज को बोलकर या लिखकर बयान नहीं कर सकता, उसे वह अपने चित्रों की सजीवता के द्वारा पेश करता है। किसी भी चित्रकार की एक अलग पहचान होती है। उसका एक अलग मुकाम होता है। उसके द्वारा प्रयोग किए गए रंगों को देखकर उसके विचारों की गहनता का आभास होता है। एक चित्रकार की चित्रकारीता ही उसके लिए नए आयाम स्थापित करती है। उसे नई दिशा एवं गति प्रदान करती है।

कला संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत में 'कला' शब्द की रिद्धि 'कल' धातु से हुई है।

बंगाल स्कूल

बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट, जिसे आमतौर पर बंगाल स्कूल कहा जाता है। एक कला आंदोलन और भारतीय चित्रकला की एक शैली कोमलता थी, जिसकी उत्पत्ति बंगाल मुख्य रूप से कोलकाता और शांतिनिकेतन में हुई थी और 20वीं की शुरुआत में ब्रिटिश राज के दौरान पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फली–फूली। अपने शुरुआती दिनों में पेंटिंग की भारतीय शैली के रूप में भी जाना जाता है।

यह भारतीय राष्ट्रवाद (स्वदेशी) से जुड़ा था और इसका नेतृत्व अबनींद्रनाथ टैगोर ने किया था। (1871 – 1951) लेकिन 1896 से गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट, कोलकाता के प्रिंसिपल ई.बी हैवल जैसे ब्रिटिश कला प्रशासन द्वारा भी इसे बदलाव और समर्थन दिया जा रहा था। अंततः इसे आधुनिक भारतीय चित्रकला का विकास हुआ।

इतिहास :–

बंगाल स्कूल एक अवांट गॉड (avant garde) और और राष्ट्रवादी आंदोलन के रूप में उभरा जो पहले भारत में राजा रवि वर्मा और ब्रिटिश कला विद्यालयों जैसे भारतीय कलाकारों द्वारा प्रसारित अकादमिक कला शैलियों के खिलाफ प्रतिक्रिया करता था। पश्चिम में भारतीय आध्यात्मिक विचारों के प्रभाव के बाद, ब्रिटिश कला शिक्षक अर्नेस्ट बिनवील्ड हैवेल (Ernest Binfied Havell) के छात्रों ने मुगल को मुगल लघु चित्रों की नकल करने के लिए प्रोत्साहित करके कोलकाता स्कूल ऑफ आर्ट्स में शिक्षक विधियों में सुधार करने का प्रयास किया। यह विवाद का कारण बना जिसके कारण छात्रों की हड़ताल हुई और स्थानीय प्रेस से शिकायतें आई, जिनमें राष्ट्रवादी भी शामिल थे। उन्होंने इसे एक प्रतिगामी कदम माना। हावेल को कभी रविंद्रनाथ टैगोर के भतीजे कलाकार अबनींद्रनाथ टैगोर ने समर्थन दिया था।

टैगोर ने मुगल कला से प्रभावित कई कृतियों को चित्रित किया। एक ऐसी शैली जिसे हैवेल पश्चिम के "भौतिकवाद" के विपरीत भारत के विशिष्ट आध्यात्मिक गुणों को अभिव्यक्त करने वाला मानते थे। टैगोर की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग, भारत माता (मदर इंडिया) एक युवा महिला को दर्शाया गया है जिसे हिंदू देवताओं के रूप चार भुजाओं के साथ चित्रित किया गया है। जो भारत की राष्ट्रीय आकांक्षाओं का प्रतीक है। टैगोर ने बाद में कला के पैन – एशिया मॉडल के निर्माण की आकांक्षा के तहत जापानी कलाकारों के साथ संबंध विकसित करने का प्रयास किया। "भारत माता" के चित्रों के माध्यम से अवनींद्रनाथ ने देशभक्ति के पैटर्न की स्थापना की। वे बंगाल स्कूल के चित्रकार और कलाकार थे। नंदलाल बोस, मार चुगताई, सुनयनी देवी, (अवनींद्रनाथ टैगोर की बहन) मनीषा डे, मुकुल डे, कालीपाद घोषाल, आसित कुमार, हलदर, सुधीर, रवस्तागीर, क्षितिंद्रनाथ मजुमदार, सुगरा रबाबी, 1920 के दशक

के आधुनिकतावादी विचारों के प्रसार के साथ भारत में बंगाल स्कूल के प्रमुख में गिरावट आई। 2012 तक विद्वानों और पराखी लोगों के बीच कला के बंगाल स्कूल में रुचि में वृद्धि हुई।

निर्मल सिंह 'अवनींद्रनाथ टैगोर' के समकालीन थे। उन्होंने पानी के रंगों में चित्रित किया। उनके चित्र केवल निजी संग्रह में पाए जाते हैं।

परंपरा :–

बंगाल आधुनिक भारत के कुछ बेहतरीन कलाकारों को पैदा करता रहा है। गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट में एक विभाग है जो छात्रों को लगभग एक सदी से टेम्परा और वॉश पेंटिंग की पारंपरिक शैली का प्रशिक्षण दे रहा है। ये छात्र बंगाल स्कूल के कलाकारों की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। जो शुरू में कलाकारों का समूह थे, जो अवनींद्रनाथ टैगोर की शैली का अनुसरण करते थे और उनकी सौंदर्य दृष्टि को सांझा करते थे। उनमें से धीरेंद्र नाथ ब्रह्मा बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के जीवित किवदंती हैं। वह सुलेख के मास्टर हैं और उनके असंख्या छात्र हैं जो बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट पेंटिंग की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

चित्रकला की इस शैली में अन्य प्रसिद्ध कलाकारों में अमित सरकार, सुक्ति, शुभ्र प्रधान, (सुभाषिक शुभ प्रधान) और रतन आचार्य शामिल हैं। जोगेन चौधरी, मृवाल, कांति दास, गोपाल सान्पाल, गणेश पायने, मनीषी डे, शालू लाहिडी, गणेश हलोई, जहर दास गुप्ता, समीर ऐच, विकास भट्टाचार्य, मनिंद्र भूषण गुप्ता, सुदीप रॉय, रामनंद बंद्योपाध्याय और देव ज्योति थे।

सनत चटर्जी (Sanat Chattergee) बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के अंतिम अवधूतों में से एक थे। उन्होंने लगभग 15 वर्षों तक असित कुमार हलदर के अधीन अध्ययन किया।

अवनींद्रनाथ टैगोर

अगस्त 1871, 5 दिसंबर 1951, "इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट के प्रमुख कलाकार और निर्माता थे। वह भारतीय कला में स्वदेशी मूल्यों में पहले प्रमुख प्रतिपादक भी थे। उन्होंने कला के प्रभावशाली बंगाल स्कूल की स्थापना की, जिससे आधुनिक भारतीय चित्रकला का विकास हुआ। वह विशिष्ट रूप से बच्चों के लिए एक प्रसिद्ध लेखक भी थे। लोकप्रिय रूप से 'अबन ठाकुर' के रूप में जाना जाता है। उनकी पुस्तक राजकाहिनी, बुरो अंग्ला, नालक और खिरेर पुतुल बंगाली भाषा के बच्चों के साहित्य और कला के मील का पत्थर थी।

टैगोर ने कला के पश्चिम मॉडलों के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए मुगल और राजपूत शैलियों का आधुनिकीकरण करने की मांग की जैसा कि ब्रिटिश राज्य के तहत कला विद्यार्थियों में पाया जाता है। बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के अन्य कलाकारों के साथ, टैगोर ने अजंता की गुफाओं से प्रेरणा लेते हुए भारतीय कला इतिहास से प्राप्त एक राष्ट्रवादी भारतीय कला के पक्ष में वकालत की। टैगोर का काम इतना सफल था कि अंततः इससे ब्रिटिश कला संस्थानों के भीतर एक राष्ट्रीय भारतीय शैली के रस में स्वीकार किया गया और प्रचारित किया गया।

व्यक्तिगत जीवन और पृष्ठभूमि :-

अवनींद्रनाथ टैगोर का जन्म जोरासांको कलकाता, ब्रिटिश भारत में गुनेंद्रनाथ टैगोर और सौदामिनी देवी के यहां हुआ था। उनके दादा गिरिंद्रनाथ टैगोर थे, जो "राजकुमार" द्वारकानाथ टैगोर के दूसरे पुत्र थे। वे प्रतिष्ठित टैगोर परिवार के सदस्य थे और कवि रविंद्रनाथ टैगोर के भतीजे थे। उनके दादा और उनके बड़े भाई गगनेंद्रनाथ टैगोर भी कलाकार थे।

टैगोर ने 1880 के दशक में कोलकाता के संस्कृत कॉलेज में पढ़ाई के दौरान कला सीखी।

1890 में टैगोर ने कोलकाता स्कूल ऑफ आर्ट में भाग लिया जहां उन्होंने ओ0. छिलार्डी में पेस्टल का उपयोग करना सीखा और वह संस्थान में पढ़ाने वाले यूरोपीय चित्रकार सी. पाल्मर में तेल चित्रकला सीखी।

1888 में उन्होंने प्रसन्ना कुमार टैगोर के वंशज भुजगेंद्र भूषण चटर्जी की बेटी सुहासिनी देवी से शादी की। उन्होंने 9 साल के अध्ययन के बाद स्कूल संस्कृत कॉलेज छोड़ दिया और सेंट जेवियर्स कॉलेज में एक विशेष छात्र के रूप में अंग्रेजी का अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने लगभग डेढ़ साल तक पढ़ाई की। उनकी एक बहन सुनयनी देवी थी, जो एक चित्रकार भी थी।

➢ समकालीन कला की विशेषताएँ :-

अब प्रश्न उठता है कि समकालीन कला में ऐसी कौन सी विशेषताएँ हैं जो उसे इतना आकर्षित बनाती हैं, कि समकालीन कला क्या है।

➢ वर्तमान समय का प्रतिनिधित्व :-

समकालीन कला वर्तमान का प्रतिबिंब है। जैसा कि हम जानते हैं कि पिछली कलाएँ मुख्य रूप से ऐतिहासिक घटनाएं या अतीत की घटनाएं केंद्रित थी, लेकिन समकालीन कलाएँ यह पाती है कि लोग अपने दैनिक जीवन को कैसे जीते हैं। नतीजन समकालीन कला के माध्यम में भविष्य में, भविष्य में भी आज की कोई भी आधुनिक छवि को देख सकते हैं और 21वीं सदी में मानव अस्तित्व की एक झलक प्राप्त कर सकते हैं।

➢ आकर्षण और सौंदर्य पूर्ण रूप से मनभावन :-

समकालीन कला आंतरिक समझ या सच्चाई को समझने पर केंद्रित है। फिर भी ढली हुई और गैर-समानता प्रस्तुति हमें खींची गई सुंदर कल्पनाओं से आंखों को खुरती मिलती हैं।

➢ प्रेरक :-

समकालीन कला में छिपी सच्ची प्रेरणा देती हैं। और लोगों को अधिक रचनाकार होने के लिए सोचने में मदद करती हैं।

➢ अन्य से संबंध बनाना :-

समकालीन पेंटिंग की कल्पना इतनी मनोरम और निरपेक्ष है कि दर्शक कलाकार के साथ एक ऐसा लिखता है, जो किसी अन्य प्रकार की कला नहीं कर सकता है।

आज के समकालीन कलाकार :-

वैसे देखा जा सकता है भारत देश में बहुत से समकालीन कलाकार हैं और जो कि आज की समकालीन कला पर बहुत काम करते हैं और ये सभी कलाकार, कला जगत में सभी कलाओं से हैं। पर मैं बात करता हूँ हिम चटर्जी की और कुछ और कलाकारों की जो कि आज के भारतीय समकालीन कलाकार हैं और इनसे आज की भारतीय समकालीन कला की कुछ नई बातों का पता चलता है कि

आज की समकालीन में चल क्या रहा है। क्योंकि एक पेंटिंग कलाकार अपनी बात को पेंटिंग के माध्यम के रूप में दिखाता है और मूर्तिकार अपने माध्यम में और एक छापाकार अपने माध्यम में अपने समकालीन विचारधारा के साथ आगे बढ़ता है।

हिम चटर्जी ने अपनी विचारधारा को ड्राइंग, पेंटिंग, भित्ति चित्र के माध्यम से बताया है। और राम विरंजन जी ने पेंटिंग के और ड्राइंग के माध्यम से बताया है, तो इसी प्रकार उदयपुर से हेमंत त्रिवेदी पेंटिंग, श्याम शर्मा ने छापाकला में और मदनलाल ने पेंटिंग माध्यम में समकालीन कला को दिखाया है। ऐसे ही कई समकालीन कलाकार हैं। इन सब ने आज की समकालीन कला से कला का रुख मोड़ कर रख दिया है और इन कलाकारों से हमें बहुत कुछ सीखने और देखने को मिलता है और इन महान कलाकारों से आज का युवा भी आज की समकालीन कला में कुछ नया लेकर आ रहा है। तो इस प्रकार से हिम चटर्जी के साथ बहुत से कलाकार जुड़े और इनके समकालीन कला को आगे बढ़ाया और बढ़ाते रहेंगे।

सनत चटर्जी

सनत चटर्जी का जीवनकाल :-

1935 में जन्मे संत चटर्जी (चट्टोपाध्याय) बंगाल स्कूल के एक भारतीय चित्रकार थे, जो आसित कुमार हलदर के अंतिम शिष्य थे। वह उन प्रमुख कलाकारों में से एक थे जिन्होंने बीसवीं शताब्दी में बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट की शैली को आगे बढ़ाया।

प्रारंभिक वर्ष :-

प्रदर्शन कलाओं के प्रति झुकाव बचपन से ही रहा और सनत चटर्जी, भारत में मूर्ति बनाने की परंपरा से प्रेरित होकर कई धार्मिक समारोहों के लिए मिट्टी की मूर्तियां बनाकर, मूर्तिकला में अपने कौशल को पूरा करना शुरू किया।

एसोसिएशन असित हलदर के साथ :-

सन 1949 के आसपास जब सनत चटर्जी 14 वर्ष के थे, तब एक पूजा पंडाल में उनके काम को देखकर असित कुमार हलदर ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया। वह लगभग 15 वर्षों तक उनके छात्र रहे थे।

सनत चटर्जी ने असित कुमार हलदर से बंगाल स्कूल की परंपरा को आगे बढ़ाया। असित कुमार हलदर के मार्गदर्शन में 14 वर्षों 1949 से 1964 तक की अवधि में सनत चटर्जी के विभिन्न

तकनीक और शैलियों को सीखा। जो वॉश पेंटिंग, ऑयल टेम्परा, मूर्तिकला, फ्रेस्कोस से लेकर सिल्क पेंटिंग तक फैली हुई थी।

असित कुमार हलदर के साथ :-

सनत चटर्जी 1949 से 1964 तक, उनके निधन तक असित कुमार हलदर के साथ जुड़े रहे। सनत चटर्जी, असित कुमार हलदर के सबसे अच्छे शिष्यों में से एक थे और वे उन्हें अपने पुत्रों में से एक मानते थे। श्री हलदर के कहने पर ही सनत चटर्जी हिमाचल प्रदेश आ गए। हलदर हिमाचल के तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर राजा बजरंग बहादुर सिंह भद्री के करीबी दोस्त थे, जिन्हें राजा साहिब भद्री के नाम से भी जाना जाता है।

कला के पारखी रवि राजा साहिब भादरी ने नाहन (हिमाचल प्रदेश) में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स कॉलेज खोला और असित हलदर से कला कॉलेज में शामिल होने के लिए सनत को आगे बढ़ाने का अनुरोध किया। प्रारंभ में, सनत ने मना कर दिया, लेकिन जब असित हलदर में आग्रह किया और अनुरोध को अपनी गुरु दक्षिणा के रूप में प्रस्तुत किया। सनत चटर्जी सहमत हो गए और नाहन में कला महाविद्यालय में शामिल हो गए। इसके बाद असित हलदर की तबीयत बिगड़ने लगी और 13 फरवरी 1964 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

सनत चटर्जी :-

27 साल की उम्र में सनत चटर्जी ने 60 के दशक की शुरुआत में हिमाचल प्रदेश (हिमालय की तलहटी में) को अपनी कर्मभूमि बनाया। जब वे नाहन के कला महाविद्यालय में व्याख्याता के रूप में शामिल हुए। कला के इस यात्रा में उन्होंने लगातार विभिन्न चरणों में अपनी शैली में सुधार किया। हिमाचल प्रदेश में स्थानांतरित होने के बाद उनके काम स्पष्ट रूप से पहाड़ी पेंटिंग और हाल ही में थांगका पेंटिंग से प्रभावित थे। उन्होंने रेशम पर पानी के रंग के साथ काम करने की अपनी शैली विकसित की, जहां उन्होंने रेशम के कपड़े पर पानी के रंग से स्क्रोल पेंटिंग बनाने की एक नई तकनीक विकसित की और साथ ही ऐसी कलाकृति में परिवहन के लिए एक नया समाधान तैयार किया। बाद के वर्षों में उनके विभिन्न स्कॉलों ने अजीत कुमार हलदर द्वारा फ्रेस्कोस को अगले स्तर तक ले लिया, जिससे टंका चित्रों के वियरण और बोल्ड रंग संयोजन के साथ बंगाल स्कूल के संगम के रूप में वर्णित किया जा सकता है। उसने दुनिया के कुछ सबसे लंबे स्कॉल बनाए।

बौद्ध चित्रकला शैलियों की दो अलग-अलग शाखाएँ, एक अजंता की गुफाओं की और दूसरे बौद्ध थांगको की, जो सदियों पहले अलग हो गई थी। सनत चटर्जी की रचनाओं में एक संपूर्ण चक्र और संगम बनती प्रतीत होती हैं।

एंड नोटस :-

- अशोक कला सौंदर्य और समीक्षा शास्त्र पृ. सं. 34
- वीरेश्वर डॉ. प्रकाश, शर्मा डॉ. नुपूर, कला दर्शन Publishing ISBN- 9878182832060, प्रथम संस्करण 2008
- चतुर्वेदी डॉ. ममता, समकालीन भारतीय कला, Publishing ISBN- 987813764712, प्रथम संस्करण 2008
- राम विरंजन, समकालीन भारतीय कला, Publishing ISBN- 81867240712, प्रथम संस्करण 2008
- मागो प्राण नाथ, भारत की समकालीन कला, Publishing ISBN- 788123746173प्रथम संस्करण 2008
- शर्मा लोकेश चन्द्र, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, Publishing ISBN- 9788182830982, प्रथम संस्करण 1970

द्वितीय अध्याय

- हिम चटर्जी का जीवन परिचय
- शिक्षा

"हिम चटर्जी का जीवन परिचय"

इतिहास के पन्नों में देखा जा सकता है, कि हिम चटर्जी एक प्रसिद्ध भारतीय समकालीन चित्रकार हैं। उनको समकालीन इसलिए माना जाता है क्योंकि उन्होंने समय के साथ–साथ चित्रकला में आने वाले परिवर्तनों तथा चुनौतियों के साथ अपने आप को ढाला है और अपने नए अनुभव व अविष्कारों के साथ आगे बढ़ते रहे। और कहा जाता है कि संसार ईश्वर का एक अद्भुत व अद्वितीय निर्माण है, जिसमें प्रकृति ने अलग–अलग वह नए नए ढंग से अपनी मोहक कृति द्वारा इस संसार को हमेशा से ही सजाएं रखा है।

संसार में देखा जा सकता है, प्रकृति के इन मोहक रंगों से मोहित होकर कई कलाकारों ने अपने चित्रों में अपने चित्रफलक पर रंग बिखेरे रंगों को बिखेरने की अनेकों खूबसूरत कोशिश की है और उसमें कामयाब भी हुए हैं। उन्हें कलाकारों में से एक कलाकार हैं 'हिम चटर्जी" जो कि प्रकृति की ही गोद हिमाचल की खूबसूरत वादियों के आंचल में रहते हैं।

'हिम चटर्जी' हिमाचल में शिमला के निवासी हैं। वे हिमाचल की उन खूबसूरत वादियों में अपने सुंदर रंगों के साथ अपना जीवन यापन कर रहे हैं, जहां पर प्रकृति ने अपने अनेकों सुंदर कृतियों द्वारा इस संसार को और को और भी खूबसूरत बना रखा है और प्रकृति ने अपने खूबसूरत रंग हिमाचल को दे रखे हैं, जिससे पूरा हिमाचल रंग बिरंगे रंगों से खिलाता हुआ दिखाई देता है। शायद इसलिए हमारे चित्रकार हिम चटर्जी भी उन वादियों के अद्भुत आकर्षण से सम्मोहित होकर उसे अपने चित्रफलक पर उतारने को मजबूर हो गए और उन वादियों जैसे ही सुंदर रूप वाली कलाकृतियों को अपने चित्रपलक पर उतार दिया।

वैसे तो हिम चटर्जी का जीवन परिचय उनके पिता श्री सनत कुमार चटर्जी से शुरू होता है क्योंकि आज हिम चटर्जी जो इतने प्रसिद्ध चित्रकार हैं वो अपने पिताजी की वजह से बने हैं। इस प्रकार हिम चटर्जी का जीवन परिचय शुरू होता है।

जीवन परिचय :–

हिम कुमार चटर्जी का जन्म 2 मार्च 1968 को हुआ था जो कि नाहन नामक जगह पर इनका जन्म हुआ और इनके घर पर इनके पिता श्री सनत कुमार चटर्जी जो की बहुत प्रसिद्ध कलाकार व चित्रकार थे और इनकी माता गाना गया करती थी, जो कि एक शास्त्रीय गायक थी। और हिम चटर्जी की माता रेडियो व दूरदर्शन पर गाना गाया करती थी, पिता भी गाना गाया करते थे। उस समय में रिकोर्डर हुआ करते थे HMB के और इस प्रकार घर के एक कला का माहौल बना रहता था और इनकी एक बहन हिमा और और छोटे भाई होमी है और हिम चटर्जी के तीन भाई बहन हैं। इन तीनों

भाई–बहनों के नाम हिमालय पर रखे गए थे और इस तरह से हिम चटर्जी का बचपन कलात्मक वातावरण में ही रहा और शुरू से ही उनके घर का वातावरण ही कला में समा रहा।

हिम चटर्जी ने अपने जन्म के बाद जब अपनी आंखें से देखना और कानों से सुनना शुरू किया था तब से ही उनकी शिक्षा बहुत शुरू हो गई थी, क्योंकि जब उन्होंने पहली बार देखा तो अपने पिता को चित्र बनाते देखा था। फिर समय के साथ अपने घर में कला की बातों को सुना और कला को देखा। वे बातें उनके मन में रम गई और अपने घर में जगह जगह पर रंग तुलीका आदि को देखा, गाने की आवाज को सुना तो इन सब ने उनके मन में कला को उत्पन्न किया।

शिक्षा

हिम कुमार चटर्जी की शिक्षा वैसे तो बचपन से ही शुरू हो गई। उनकी मैट्रिक की शिक्षा खत्म होने के बाद उनका कॉलेज शुरू होना था, पर इनका मन कला में नहीं था, क्योंकि लोग कहा करते थे कि कला के माध्यम को नालायक लोग लेते हैं और हम चटर्जी को या तो नॉन मेडिकल से करते हैं तो इंजीनियरिंग बने गए, मेडिकल लेते हैं तो डॉक्टर बनेंगे, पर हिम चटर्जी का कला का काम भी बहुत अच्छा था और उनके पिता जी भी यह चाहते थे कि वह कलाकार बनने। पर हिम चटर्जी ने कॉलेज की पढ़ाई नॉन मेडिकल से शुरू की, उस समय पिता भी कॉलेज के प्रोफेसर थे और उनके मन भी था कि वह कला में ही पढ़ाई शुरू करें। पर उनके पिता ने उन पर प्रेशर नहीं डाला और जो उनके पिता के दोस्त थे, उन्होंने हिम चटर्जी को बहुत अच्छे ढंग से समझाया कि उनके पिता के पास इतने पैसे नहीं हैं कि वह आपको नॉन मेडिकल या मेडिकल करवा सके। फिर यह सब समझकर कर वे कला की तरफ आ गए। फिर कुछ समय के लिए तो कला के माध्यम में काम किया, पर कुछ समय बाद कॉलेज में एम.बी.ए. आया और हम चटर्जी एम.बी.ए. में चले गए। पर फिर कुछ समय बाद ही चटर्जी वापस आए और मास्टर पेंटिंग करने के लिए देहरादून गए और वहां से मास्टर पेंटिंग किया और हिम चटर्जी के पिताजी का मानना था कि एक बरगद के पेड़ के नीचे कोई दूसरा पेड़ नहीं उग सकता है, तो इसलिए श्री सनत कुमार चटर्जी ने अपने पुत्र हिम कुमार चटर्जी को अपने से दूर रख कर, हिम चटर्जी के शिक्षा को पूरा करने में उनका साथ दिया। जिससे वहां कला के साथ वह बढ़चढ़ सामने आए और कला के क्षेत्र में अपने पिताजी का नाम पर सिद्ध किया।

हिम चटर्जी अपने पिताजी से प्रेरित हो कला के क्षेत्र में अपना अलग मुकाम पाया और अगर देखा जाए तो श्री सनत कुमार चटर्जी का काम बहुत अलग था क्योंकि उनका काम बंगाल स्कूल का निचोड़ था और उनके पुत्र हिम कुमार चटर्जी का काम उनके काम से अलग था। फिर हिम चटर्जी ने अपने जीवन काल में बहुत सी उपलब्धियां हासिल की और इस प्रकार हम चटर्जी को विजुअल आर्टिस्ट्स के नाम से भी जाना जाता है और हिम कुमार चटर्जी की सभी उपलब्धियों में से कुछ

उपलब्धियां इस प्रकार हैं जो उनके जीवनकाल को दिखाती हैं जैसे कि वह हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के ललित कला विभाग के चेयरमैन बने और उन्होंने भित्ति चित्र में भी उपलब्धि हासिल की।

इस प्रकार वह समय के साथ–साथ बहुत से विश्वविद्यालय के बोर्ड ऑफ मेंबर बने और वे ए अच्छे कला सलाहकार बने। इस प्रकार इनका जीवनकाल चलता जा रहा है और इनकी उपलब्धियां हम सबके सामने निकल कर आ रही हैं और आती रहेंगी।

हिम कुमार चटर्जी ने अपने जीवन काल में एक समय में इन्होंने अपने पिताजी के नाम से एक गैलरी की स्थापना की, जो कि "सनत कला फाउंडेशन" के नाम से प्रसिद्ध हुई, जो 2008 में स्थापित हुई। यह गैलरी दुनिया की प्रसिद्ध गैलरीओं में से एक है। इस गैलरी बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के शिष्यों सहित कई प्रमुख कलाकारों के कुछ बेशकीमती चित्रों का भी गौरव रखती हैं।

हिम चटर्जी की इस गैलरी में आज भी कई महान कलाकारों का आना जाना है। उन कलाकारों ने इस प्रकार इस गैलरी में बहुत सुंदर ढंग से नाम किया है। कुछ साथी कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं जैसे – जतिन दास, राम विरंजन, श्याम शर्मा, मदनलाल, हेमंत त्रिवेदी, विजय डोरे आदि कलाकारों ने यहां पर आकर बहुत सुंदर काम किया है। जो यह, सभी इस युग के महान भारतीय समकालीन कलाकार हैं। हिम चटर्जी ने अपने जीवन में समाज के लिए कई तरह के भित्ति चित्र बनाएं। इस प्रकार से हिम चटर्जी का जीवन परिचय चलता आ रहा है।

तृतीय अध्याय

- हिम चटर्जी की कला यात्रा
- प्रदर्शनियाँ व पुरस्कार
- कार्यशाला
- कलाकृतियों का विवरण

हिम चटर्जी की कला यात्रा

हिम चटर्जी की कला यात्रा उनके जन्म से ही शुरू हो गई थी। जन्म के बाद जब उन्होंने पहली बार अपनी आंखें खोली और पहली बार अपने कानों से सुना और अपने पिता को पेंटिंग करते देखा और माता को गाना गाते सुना तब से उनकी कला यात्रा शुरू हो गई थी। क्योंकि उनके घर पर हर समय कला की ही बातें हुआ करती थी। तब से ही उनके मन में कला के लिए वो भाव आ गए थे, जो कि एक कलाकार चित्रकार के अंदर होने चाहिए। हिम चटर्जी के पिता श्री संनत चटर्जी ने इनके अंदर कला का वह बीज बचपन में बो दिया था जो कि आज हम सबके सामने एक बड़े वृक्ष के रूप में निकल कर आया है, क्योंकि हम चटर्जी की कला यात्रा में उनके माता–पिता श्री सनत कुमार चटर्जी की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

हिम चटर्जी ने अपनी आगे की कला यात्रा अपने कॉलेज से शुरू की, जो की बहुत दिलचस्प थी क्योंकि हिम चटर्जी ने अपनी कला यात्रा की दूसरी पोड़ी देहरादून के मास्टर डिग्री के लिए गए और वहां से अपनी कला यात्रा शुरू की और उनके साथ साथ हिम चटर्जी जो कि उनका रिश्ता बंगाल स्कूल से भी रहा है, बंगाल स्कूल बहुत से महान कलाकारों के चित्र जो कि आज भी उनके पास है, इसलिए कला में उनकी रुचि देखने को मिलती है, जो कि उनके पिताजी ने उनके अंदर बहुत अच्छे ढंग से रखी है।

हिम चटर्जी ने विभिन्न तरह की कला से अपनी कला यात्रा शुरू की जैसे ड्राइंग, पेंटिंग, निति–चित्र आदि के सहयोग से वह आगे बढ़ते गए।

हिम चटर्जी की कला यात्रा इन्होंने कई उपलब्धियां मिली हैं जिनमें कई पुरस्कार, प्रदर्शनियां मिली हैं।

वह अपने काम को ही कला समझते हैं। जब भी किसी कार्यशाला में चित्र बनाते देखा जाए तो उन्हें देखकर यह एहसास होता है कि वे पूरे ह्रदय से अपनी कलाकृति को पूरा करते हैं। साथ ही अन्य कलाकारों की भांति अलग से प्रयोग करते हैं। उन्हें प्रत्येक कार्य को बहुत सफाई व सुंदर ढंग से किया है।

हिम कुमार चटर्जी ने भारत के बड़े–बड़े शहरों में उन्होंने अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनीयां लगाई। हिम कुमार चटर्जी चित्रांकन के एक प्रशिक्षित कलाकार हैं और एक निश्चित परिदृश्य (लैंडस्केप) के बेहतरीन अलंकारिक चित्रकार हैं। विविध मिजाज के परिदृश्य (लैंडस्केप) में उन्होंने अपनी संवेदनशीलता और निपुणता के सभी कौशल कको रेखाओं और रंगों की चित्रकारी में रंग डाला है।

उनके चित्र और आकृतियों को अपने आंतरिक भावनाओं के साथ टकटकी लगा कर देखना बेहद खुशी की बात है। उनकी चित्रकारी हमें आंतरिक और बाहरी वास्तविकता के एक अलग दायरे में

ले जाती है। शायद उनकी रचनाएं उनके सभी प्रशंसकों और समझकारों दर्शकों के लिए एक आश्चर्य के रूप में आती हैं।

हिम कुमार चटर्जी अनेकों परिदृश्य (लैंडस्केप) व कलाकृतियों का निर्माण कर चुके हैं और निरंतर चित्र सृजन कर रहे हैं। उन्होंने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है। उनकी अनेकों कला, कार्यशाला, प्रदर्शनीओं, कला शिविरों में सहभागिता रही है। उन्होंने अनेकों चित्रकला प्रतियोगिताओं में वह निर्णायक की भूमिका निभा चुके हैं तथा वर्तमान में भी वह इस क्षेत्र में सक्रिय हैं।

कला जगत में रहते हुए हिम कुमार चटर्जी ने इतने काम किए हैं और अभी भी कर रहे हैं और बाकी कलाकारों के लिए निश्चय ही मार्गदर्शक बनेंगे। हिम कुमार चटर्जी की कला को विभिन्न माध्यमों को कुछ भागों में इस प्रकार दिखाया गया है जैसे –

- ड्राइंग
- पेंटिंग
- भित्ति चित्र
- सार्वजनिक कलाओं का भित्ति चित्र

➢ ड्राइंग :–

हिम कुमार चटर्जी ने अपने सफर में विभिन्न तरह की ड्राइंग की हैं और आने वाली अपनी कला यात्रा को आगे बढ़ाया है। हिम चटर्जी ने ड्राइंग में "Bull Series" पर भी कार्य किया है और कई तरह के मंदिर बनाए हैं और हिम चटर्जी को ड्राइंग मध्य में भी काफी प्रसिद्धि मिली है। इस प्रकार से हिम कुमार चटर्जी ने ड्राइंग माध्यम में अपनी कला यात्रा का समय शुरू किया था और वह निरंतर ड्राइंग करते रहते हैं।

➢ पेंटिंग :–

हिम चटर्जी ने पेंटिंग मध्य में रंग से विभिन्न तरह के परिदृश्य (लैंडस्केप) बनाए जिसमें मंदिर में हिमाचल के कई दृश्य पेंट किए और हिम चटर्जी ने हिमालय को भी पेंट किया है और हिम चटर्जी ने अपनी कला यात्रा में विभिन्न तरह के लैंडस्केप किए हैं। तरह–तरह के आकार के इनकी कला यात्रा में लैंडस्केप का भी अच्छा साथ रहा है और विभिन्न रंगों में कार्य किया है।

➢ भित्ति चित्र :–

हिम कुमार चटर्जी ने भित्ति चित्र में बहुत से कार्य किए हैं जिसमें से शिमला में बहुत से भित्ति चित्र दीवारों पर देखने को मिल जाते हैं। शिमला के कई गेटों को तैयार किया है। इस प्रकार हिम कुमार चटर्जी की कला यात्रा में भित्ति चित्र का भी बहुत जरूरी हिस्सा रहा है।

➢ सार्वजनिक कलाओं का भित्ति चित्र :–

हिम चटर्जी ने अपनी कला यात्रा में सार्वजनिक कला को बहुत बड़ा हिस्सा माना है और इस सार्वजनिकता कला को विश्व का सबसे बड़ा भित्ति चित्र का खिताब मिला और इस कला यात्रा में लोगों के लिए विभिन्न विभिन्न तरह के बहुत से भित्ति चित्र बनाएं। इस प्रकार विश्व के सबसे बड़े भित्ति चित्र के लिए भी श्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि हिम कुमार चटर्जी ने यह भित्ति चित्र बनाकर देश का गौरव बढ़ाया है।

हिम कुमार चटर्जी ने अपनी कला यात्रा के अलग–अलग समय में अलग काम किया है और श्रृंखला में भी काम करते हैं जैसे की हिम चटर्जी ने पिंगलते हुए पहाड़ों की श्रृंखला पर काम किया है, जो कि दिल्ली प्रदर्शनी में देखने को मिल जाएगा। हिम चटर्जी लगभग 20 से 25 सालों से सार्वजनिक कला कर रहे हैं जिससे लोगों को बहुत कुछ देखने को मिलता है, जो कि लोगों के लिए करते हैं और बाकी पेंटिंग अपने लिए करते हैं।

हिम चटर्जी ने कई तरह की मूर्तियां बनाई और जिससे कला यात्रा का सफर चलता रहा। हिम कुमार चटर्जी के इस सफर में कई तरह के समकालीन कलाकारों ने साथ दिया और उनके साथ इस कार्य को किया। जैसे जतिन दास, राम विरंजन, श्याम शर्मा, हेमंत त्रिवेदी, विजय डोरे आदि इन सब कलाकारों के साथ रहकर कार्य किया।

प्रदर्शनीयाँ व पुरस्कार

हिम चटर्जी

चित्रकार / चित्रकारी के प्रोफेसर- (दृश्य कला)

जन्म तिथि- 02 मार्च, 1968,

(श्री सनत कुमार चटर्जी के पुत्र, बंगाल स्कूल के एक प्रख्यात कलाकार और शिष्य और श्री असित कुमार हलदर के दत्तक पुत्र ।)

वर्तमान में-

- डीन, प्रदर्शन और दृश्य कला संकाय, एचपीयू, शिमला।
- अध्यक्ष, दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश। 2005 से आज तक।
- यूजीसी के समन्वयक - एफआरजी (कला और मानविकी के फैलोशिप और अनुसंधान अनुदान) 2022-23
- विशेषज्ञ सदस्य- अत्यधिक विशिष्ट संस्थानों (एचएसआई) समिति के लिए मैनुअल के लिए एनएएसी, जून
- 2022
- अध्यक्ष, राज्य फोकस समूह-कला शिक्षा, - एससीईआरटी-एच.पी. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, फरवरी-
- 2022।
- संगीत नाटक अकादमी, (संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय अकादमी), नई दिल्ली जून 2022 की सामान्य
- परिषद के सदस्य
- दृश्य और प्रदर्शन कला की सदस्य-विशेषज्ञ समिति पाठ्यचर्या की रूपरेखा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
- (यूजीसी), एमएचआरडी, सरकार। ऑफ इंडिया, 2019।
- हिमाचल प्रदेश राज्य हस्तशिल्प और हथकरघा निगम लिमिटेड के लिए एकीकृत डिजाइन और तकनीकी
- विकास परियोजना के विशेषज्ञ
- सदस्य-कार्यक्रम समिति उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, भारत
- सदस्य। राज्य लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड, (SAAB) प्रधान महालेखाकार कार्यालय, हिमाचल प्रदेश 18 जनवरी
- 2018 से आज तक भारत के सीएजी से
- कांगड़ा पेंटिंग के लिए भौगोलिक संकेतक के तहत निरीक्षण निकाय के सह अध्यक्ष। हिमाचल प्रदेश सरकार।
- INTACH के संयोजक-हिमाचल चैप्टर, -इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज।
- अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की सौंदर्यीकरण समिति।

- सदस्य सलाहकार समिति गेयटी हेरिटेज कॉम्प्लेक्स, द मॉल, शिमला
- हिमाचल प्रदेश सांस्कृतिक नीति बनाने वाले सदस्य, हिमाचल प्रदेश सरकार

कला सलाहकार/सलाहकार/क्यूरेटर :-

प्रमुख सार्वजनिक कलाएँ स्थापित

1. 19 जून 2022 को भारत के प्रधान मंत्री द्वारा उद्घाटन लार्सन एंड टुब्रो कंपनी, (L&T) के साथ इंटीग्रेटेड ट्रांजिट कॉरिडोर, नई दिल्ली ITPO सबवे परियोजनाओं में दुनिया के सबसे लंबे म्यूरल 4m x 3 किमी और अधिक की संकल्पना, डिजाइन और स्थापना। लगभग 29000sq मीटर कला बाहरी भित्ति के रूप में काम करती है।

2. स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत विभिन्न स्थानों पर शिमला के तीन प्रवेश द्वारों की अवधारणा और डिजाइन तैयार किया गया। मार्च 2022-23।

3. संजौली-ढाली बाईपास पर नए हेलीपॉड पर विभिन्न कला कृतियों जैसे भित्ति चित्र, संस्थापनाओं को डिजाइन और स्थापित किया। शिमला हिमाचल प्रदेश 2021

4. हिमाचल प्रदेश के सभी प्रवेश बिंदुओं-2021 के लिए विभिन्न द्वारों का डिजाइन तैयार किया गया

5. हिमाचल प्रदेश के राज्य के स्वर्ण जयंती समारोह का जश्न मनाने के लिए हिमाचल प्रदेश के तीन प्रवेश स्थानों परमाणु, गरमोरा और पौंटासाहिब पर बड़े भित्ति चित्र स्थापित किए गए। जनवरी 2021।

6. जम्मू एयरपोर्ट, जम्मू

7. वाराणसी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा

8. अंतर्राष्ट्रीय गोवा हवाई अड्डा

9. सीएजी-नियंत्रक महालेखाकार कार्यालय, नई दिल्ली

10. एनएसजी (राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड) मुख्यालय, नई दिल्ली

11. नेशनल एकेडमी ऑफ ऑडिट एंड अकाउंट, शिमला

12. शहीद सुखदेव कॉलेज, रोहिणी, दिल्ली

13. दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, द्वारका, सेक्टर-3, नई दिल्ली

14. लोक सभा अध्यक्ष का चित्र, संसद भवन, नई दिल्ली।

15. राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड संग्रहालय, मनसेर, हरियाणा

16. नई दिल्ली में फ्लाईओवर के विभिन्न स्थानों पर कलाकृतियां

17. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

18. ग्रैंड होटल, शिमला

19. कार्डिनल रॉयल रिट्रीट, शिमला

20. गोल्डन ट्यूलिप, कुफरी, शिमला

21. वीनेट नालधेरा रिसॉर्ट, शिमला

चल रही परियोजनाओं के लिए कला सलाहकार-

1. हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग शिमला स्मार्ट सिटी परियोजना के लिए

2. नई दिल्ली ITPO सबवे परियोजनाओं के लिए लार्सन एंड टुब्रो कंपनी, (L&T)।

3. आश्रम फ्लाईओवर, नई दिल्ली

4. गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, द्वारका, नई दिल्ली

5. गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, पूर्वी परिसर, नई दिल्ली

6. द्वारका एक्सप्रेस राष्ट्रीय राजमार्ग, नई दिल्ली

7. राजस्थान राज्य में कोटा के पास भारतमाला परियोजना के तहत पशु अंडरपास और पांच आठ लेन पहुंच- नियंत्रित अंडरपास एक्सप्रेसवे के अंदर

8. रांची, छत्तीसगढ़ में फ्लाईओवर परियोजना

9. हिमाचल प्रदेश पर्यटन और राज्य हस्तशिल्प और हथकरघा निगम लिमिटेड

रहित पद

- पूर्व अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश के योग अध्ययन विभाग। जुलाई 2014
- से दिसंबर 2018 तक।
- पूर्व सदस्य कार्यकारी परिषद, दिसंबर 2016 तक, अकादमिक परिषद सदस्य हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
- शिमला-5
- पूर्व डीन, प्रदर्शन और दृश्य कला संकाय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला -5, 28 दिसंबर 2017 तक।
- पूर्व न्यायालय सदस्य, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय।

पुरस्कार और सम्मान :-

1. कला के क्षेत्र में योगदान के लिए फिक्की एफएलओ अमृतसर और पंजाब सरकार द्वारा 16 दिसंबर, 2022 को अमृतसर में सम्मानित किया गया।

2. वशिष्ठ पूर्व विद्यार्थी सम्मान- हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र संघ द्वारा, 21 अगस्त 2022 को भाजपा के माननीय अध्यक्ष और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जे.पी.नड्डा द्वारा सम्मानित किया गया।

3. माननीय कुलपति द्वारा 22 जून 2022 को नई दिल्ली में विश्व की सबसे लंबी आउटडोर म्यूरल बनाने के लिए सम्मानित किया गया।

4. 30 मार्च 2022 को वैश्विक आगाज और रेडियो मेरी आवाज 2.0 द्वारा स्मार्ट शिक्षा अधिकारी के रूप में सम्मानित किया गया।

5. 27 मार्च, 2022 को कला के क्षेत्र में समर्पण और उत्कृष्ट सेवाओं के लिए कौसा ट्रस्ट अमृतसर द्वारा कौसा ट्रस्ट कला अवार्ड से सम्मानित।

6. हिमाचल प्रदेश के लिए कला और सौंदर्यीकरण में योगदान के लिए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल और मुख्यमंत्री द्वारा सम्मान पुरस्कार। विश्वविद्यालय परिसर। 22 जुलाई 2021।

7. अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और एक के सभी सदस्यों द्वारा सम्मान का पुरस्कार

8. दिनांक 11 सितंबर 2019 को यूजीसी मुख्यालय नई दिल्ली में यूजीसी का पोर्ट्रेट बनाने के लिए समारोह।

9. मध्य प्रदेश के उज्जैन में कलावर्त न्यास 23वें अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव द्वारा राष्ट्रीय स्वस्थी सम्मान से सम्मानित। - भारतीय समकालीन कला के क्षेत्र में योगदान के लिए दिसंबर 2018

10. हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा दृश्य कला में योगदान के लिए ललित कला सम्मान 2016 से सम्मानित। हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा 29 जनवरी 2022 को प्रदान किया गया।

11. 21 दिसंबर, 2014 को नई दिल्ली में तीसरे दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में ललित कला के क्षेत्र में उपलब्धि के लिए सम्मानित।

12. ललित कला के क्षेत्र में योगदान के लिए विश्व हिंदू परिषद, भारत (वीएचपी) द्वारा हिंदू रतन पुरस्कार, 24 जून, 2014।

13. 10 फरवरी, 2014 को भारत के राष्ट्रपति, भारत के प्रधान मंत्री, यूपीए सरकार के नेता और सभी लोकसभा नेताओं की उपस्थिति में श्रीमती मीरा कुमार, संसद अध्यक्ष द्वारा चित्र तैयार करने के लिए सम्मानित किया गया लोकसभा अध्यक्ष श्री बाला योगी, चित्र का अनावरण उसी दिन भारत के राष्ट्रपति द्वारा किया गया था।

14. हिमाचल स्थित एनजीओ संचेतना द्वारा आर्ट ऑफ द ईयर 2009 में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड।

15. पुरस्कृत, कला मेला, दिल्ली ललित कला अकादमी और हिमाचल प्रदेश अकादमी द्वारा आयोजित - 2005 शिमला।

16. राज्य पुरस्कार, अखिल भारतीय ललित कला शिल्प समाज-2004 शिमला

17. पुरस्कृत, दिल्ली ललित कला अकादमी और हिमाचल प्रदेश अकादमी द्वारा आयोजित कला मेला- 2000-2004 शिमला।

18. पहला पुरस्कार, दूसरा बैंक ऑफ पंजाब कला प्रदर्शनी चंडीगढ़-1998 में।

19. दिल्ली ललित कला अकादमी-1998 द्वारा आयोजित कला मेला से सम्मानित।

20. अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, शिमला-1992।

सदस्य :-

□ ललित कला संकाय वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान के बाहरी सदस्य। 31-12-2025 तक

□ गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, जीएनडीयू अमृतसर, पंजाब द्वारा अगस्त 2024 तक दो साल के लिए ललित कला संकाय के बाहरी सदस्य।

□ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा द्वारा दो साल जून 2022 के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज-पीजी के लिए विषय विशेषज्ञ।

□ सीआईआई-यूनिवर्सिटी जयपुर द्वारा दो साल के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज (बीओएस सदस्य) के लिए विषय विशेषज्ञ-2022

□ UETR के प्रतिष्ठित मानद सलाहकार (इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, रुड़की, COER परिसर - 2021, 2022 आगे)

□ सदस्य अकादमिक सलाहकार बोर्ड, सीटी विश्वविद्यालय, लुधियाना, पंजाब -2021

□ चितकारा विश्वविद्यालय, पंजाब द्वारा आरडीसी विषय सदस्य - 2021, 2022 आगे

□ चौधरी चरण सिंह मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा दो वर्षों के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज (बीओएस सदस्य) के लिए विषय विशेषज्ञ। -2021-2022 आगे

□ छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा दो वर्षों के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज (बीओएस सदस्य) के लिए विषय विशेषज्ञ - 2021-2022 आगे

□ एमआईटी डब्ल्यूपीयू पुणे, महाराष्ट्र द्वारा दो साल के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज (बीओएस सदस्य) के लिए विषय विशेषज्ञ। -2020

□ चंडीगढ़ विश्वविद्यालय द्वारा दो साल के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज (बीओएस सदस्य) के लिए विषय विशेषज्ञ - 2020-2022 आगे

□ टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट एंड डिजाइन, दिल्ली-2020 के बोर्ड सदस्य

□ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय-एएमयू, अलीगढ़ द्वारा दिसंबर 2020, 2022 तक दो साल के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज (बीओएस सदस्य) के लिए विषय विशेषज्ञ। ऊपर।

□ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा द्वारा 2020 तक दो साल के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज और आरडीसी सदस्य के लिए विषय विशेषज्ञ। केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश द्वारा अगस्त 2020, 2022 तक दो साल के लिए स्कूल बोर्ड के लिए विषय विशेषज्ञ नियुक्त।

□ गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, जीएनडीयू अमृतसर, पंजाब द्वारा अगस्त 2020 तक दो साल के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज (बीओएस सदस्य) के लिए विषय विशेषज्ञ।

□ ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, जुलाई, 2017 द्वारा दीर्घा विकास समिति के लिए मनोनीत सदस्य।

□ भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार, जून 2017 द्वारा आयोजित या समर्थित सभी उच्च स्तरीय उत्सवों के सुचारू और उचित कामकाज, योजना और समन्वय की निगरानी के लिए सदस्य राज्य स्तरीय समिति।

□ सदस्य बोर्ड ऑफ स्टडीज पी.जी. स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स, हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्तर।

□ औद्योगिक संकेत अधिनियम, 1999 के तहत कांगड़ा पेंटिंग की सदस्य पंजीकरण समिति।

□ जून 2013 से ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की राष्ट्रीय सलाहकार समिति के सदस्य ललित कला विभाग, सुखरिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान में पीएचडी मूल्यांकन के बाहरी विशेषज्ञ। दिल्ली विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, जीएनडीयू अमृतसर, पंजाब विश्वविद्यालय, बीएचयू। वाराणसी, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, यूपी, लाहौर विश्वविद्यालय, आदि

□ शिमला सम्मेलन, कैबिनेट मिशन आदि की छवियों की एक गैलरी स्थापित करने के लिए भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला की सलाहकार सदस्य समिति।

□ सदस्य आईक्यूएसी (आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल) एचपीयू, जुलाई 2013

□ 2004 से 2018 तक हिमाचल सरकार की कला और संस्कृति अकादमी के सामान्य निकाय के सदस्य

□ अध्यक्ष, सौंदर्यीकरण समिति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय जून, 2011

□ सदस्य सौंदर्यीकरण समिति, अध्ययन बोर्ड, संकाय और शैक्षणिक परिषद 1996 से हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

□ सदस्य सलाहकार बोर्ड एकीकृत हिमालयी अध्ययन संस्थान, एचपीयू, शिमला।

□ सदस्य सलाहकार बोर्ड कला मॉल, नई दिल्ली।

□ रोरिच इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स की स्थापना के लिए सदस्य सलाहकार बोर्ड।

एकल प्रदर्शनियां:

1. रूसी कला अकादमी (मास्को, रूस) द्वारा "साइलेंट ब्लेसिंग" आमंत्रित सोलो शो द इंटरनेशनल सेंटर ऑफ़ द रोरिक (मास्को, रूस), द इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंटिफिक इन्फॉर्मेशन ऑन सोशल साइंसेज (INION) (मास्को, रूस), इंटरनेशनल रोरिच मेमोरियल ट्रस्ट (नग्गर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश भारत) भारत-रूसी महोत्सव को समर्पित है। शिक्षाविद निकोलस रोरिक के जन्म के 145 वर्ष, शिक्षाविद स्वेतोस्लाव रोरिक के जन्म के 115 वर्ष, 23 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2019 को नग्गर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश में हेलेना रोरिक के जन्म के 140 वर्ष।

2. आध्यात्मिक स्पीति - 6 अप्रैल से 16 अप्रैल, 2012 तक हिमाचल प्रदेश सरकार के भाषा कला और संस्कृति विभाग द्वारा गेयटी थियेटर, शिमला में आयोजित

3. आध्यात्मिक स्पीति - ललित कला अकादमी, कोलकाता में, 25 जनवरी से 31 जनवरी, 2012

4. मेरे चित्र "फेलो बफेलो" की प्रदर्शनी उदयपुर में विभिन्न स्ट्रोक्स गैलरी, राजस्थान में 24 से 29 जुलाई, 2011

5. अजमेर, राजस्थान जून, 2011 में मेरे चित्र "फेलो बफेलो" की प्रदर्शनी

6. जयपुर, राजस्थान फरवरी, 2011 में मेरे चित्र और स्थापना "फेलो बफेलो" की प्रदर्शनी

7. कुफरी हॉलिडे रिज़ॉर्ट, शिमला-1999 में प्रदर्शनी।

8. 'द सेलिल' द ओबेरॉय होटल में प्रदर्शनी - जनवरी 2000, शिमला।

9. इंडसइंड बैंक, चंडीगढ़-फरवरी, 2000 में चित्रों की प्रदर्शनी।

समन्वयक / क्यूरेटेड शो, संगोष्ठी और कार्यशालाएं, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम :-

1. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में 15 से 17 मार्च 2023 तक प्रथम अंतर्राष्ट्रीय शिमला कला शिखर सम्मेलन -2023 का आयोजन और भाग लिया

2. 26 से 30 अक्टूबर 2022 तक भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला में "स्वतंत्रता" पर राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला का आयोजन और भाग लिया।

3. शोध पद्धति- हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के 37 शोधार्थियों के लिए विजुअल आर्ट्स विभाग, एचपीयू द्वारा आयोजित कार्यशाला 3 जून से 12 जून 2022 तक।

4. 7 मार्च से 19 मार्च 2022 तक पेंटिंग, मूर्तिकला और दृश्य कला पर यूजीसी-एचआरडीसी-एचपीयू पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम समन्वयक।

5. कला कार्यों के लिए GGSIPU में 9 -10 अगस्त 2021 को आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला। विश्वविद्यालय निर्माण विभाग, इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, द्वारका, नई दिल्ली द्वारा आयोजित।

6. ऑनलाइन रिसर्च मेथडोलॉजी-विजुअल आर्ट्स विभाग, एचपीयू द्वारा आयोजित 17 मई से 22 मई 2021 तक राष्ट्रीय कार्यशाला में भारत के विभिन्न कोनों और विदेशों से 67 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

7. परिवहन निदेशालय, हिमाचल प्रदेश द्वारा वित्त पोषित महिला अधिकारिता और सड़क सुरक्षा पर एक दिवसीय महिला राष्ट्रीय कला कार्यशाला का आयोजन किया गया। 7 मार्च 2021 को।

8. परिवहन निदेशालय, हिमाचल प्रदेश द्वारा वित्त पोषित सड़क सुरक्षा पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कला कार्यशाला का आयोजन किया गया। 16 फरवरी 2021 को।

9. 15 अगस्त 2020 से भारत भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के चयनित शिक्षकों द्वारा एक ऑनलाइन प्रदर्शनी "नेगोशिएटिंग प्लुरलिटीज" का समन्वय किया।

10. एचआरडी, एचपीयू शिमला द्वारा 5 अगस्त से 7 अगस्त 2020 तक आयोजित विजुअल आर्ट्स में समन्वित ऑनलाइन एसटीसी-शॉर्ट टर्म कोर्स।

11. ऑनलाइन रिसर्च मेथडोलॉजी- डेटा कलेक्शन टूल्स-एडवांस कोर्स पर नेशनल वर्कशॉप 29 जून से 4 जुलाई 2020 तक, विजुअल आर्ट्स विभाग, एचपीयू द्वारा आयोजित, भारत के विभिन्न कोनों से 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

12. ऑनलाइन रिसर्च मेथडोलॉजी-विजुअल आर्ट्स विभाग, एचपीयू द्वारा आयोजित 4 से 10 जून 2020 तक राष्ट्रीय कार्यशाला में भारत और विदेशों के विभिन्न कोनों से 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

13. प्रदर्शन और दृश्य कला संकाय, एचपीयू द्वारा आयोजित उच्च शिक्षा में पोस्ट कोविड-19 महामारी चुनौतियों पर 20 मई से 26 मई 2020 तक ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय एफडीपी-संकाय विकास कार्यक्रम, दुनिया के विभिन्न कोनों से 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

14. 14 से 16 अक्टूबर 2019 को डीएवी स्कूल न्यू शिमला में महात्मा आनंद सरस्वती पर हिमाचल प्रदेश के सभी डीएवी कला शिक्षकों के लिए तीन दिवसीय कलाकार कार्यशाला और विचार-विमर्श का आयोजन किया।

15. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में 9-10 सितंबर 2019 को इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च में हालिया रुझानों पर परमहंस योगानंद अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और दुनिया भर के 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

16. आर्टलॉग- विजुअल आर्ट्स विभाग, एचपीयू में विजुअल्स की सराहना के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला का आयोजन किया गया। 25 मार्च से 26 मार्च 2019 तक।

17. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में 1 से 2 अक्टूबर, 2018 तक "विज्ञान, कला और आध्यात्मिकता को समझने में अंतःविषय दृष्टिकोण" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और 11 विभिन्न राज्यों से 125 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

18. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में 14 से 15 अक्टूबर, 2017 तक "ब्रेकिंग बाउंडरीज इन हायर एजुकेशन" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

19. मानव संसाधन विकास केंद्र, यूजीसी, एचपीयू शिमला द्वारा आयोजित भारत के विभिन्न राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के दृश्य और प्रदर्शन कला में सहायक प्रोफेसरों के लिए जून 2017, जुलाई 2010, 2008 और जून 2005 में दृश्य कला में तीन सप्ताह के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का समन्वय किया।

20. हिमाचल प्रदेश के भाषा कला एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से रिज, शिमला में 27 अप्रैल से 30 अप्रैल 2017 तक प्रथम हिमाचल कला महोत्सव-2017 का आयोजन किया।

21. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, शिमला में 19 से 22 अक्टूबर 2016 तक "द एसेंशियल टैगोर" पर राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला।

22. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में 14 से 16 अक्टूबर, 2016 तक "आध्यात्म विज्ञान शिक्षा और ललित कला" पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

23. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में 23 अप्रैल, 2016 को मानव विकास में ललित कला और योग की भूमिका पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और पूरे भारत से 240 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

24. द्वितीय शिमला कला महोत्सव 2015 का आयोजन 28 मई से 31 मई तक शिमला अंतर्राष्ट्रीय ग्रीष्म उत्सव के भाग के रूप में जिला प्रशासन शिमला के सहयोग से किया गया।

25. ललित कला अकादमी (नेशनल एकेडमी ऑफ आर्ट, नई दिल्ली) की ओर से 7 जुलाई से 6 अगस्त 2014 तक शिमला गेयटी थिएटर में द रोरिक पैक्ट- इतिहास और आधुनिकता की प्रदर्शनी का आयोजन और प्रतिनिधित्व किया।

26. उपायुक्त शिमला और यूजीसी के सहयोग से "प्रेरणा और इसकी दृश्य अभिव्यक्ति" पर अंतर्राष्ट्रीय ग्रीष्मकालीन महोत्सव शिमला के अवसर पर शिमला मॉल रोड और गेयटी थिएटर में तीन दिवसीय "शिमला कला महोत्सव" का आयोजन और शुरुआत की। 28 से 30 मई, 2014

प्रतिष्ठित निमंत्रण :-

1. दिल्ली पीडब्ल्यूडी द्वारा विभिन्न देशों के 20 राजदूतों के साथ 3 जुलाई 2022 को मुख्य सुरंग प्रगति मैदान, नई दिल्ली में सुरंग के अंदर की गई अपनी कला को समझाने के लिए आमंत्रित किया गया।

2. 6 जुलाई 2021 को चितकारा स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, स्कूल ऑफ डिजाइन, चितकारा यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित "रिसर्च पब्लिकेशन ट्रेंड्स एंड एथिक्स इन आर्ट, आर्किटेक्चर एंड डिजाइन" नेशनल एकडेमी पर बात करने के लिए रिसोर्स पर्सन के रूप में आमंत्रित किया गया।

3. 2 जुलाई 2021 को दृश्य कला विभाग, कन्नड़ा विश्वविद्यालय, हम्पी, कर्नाटक द्वारा "एक कलाकार की कृति" पर राष्ट्रीय लाइव वेबिनार के लिए आमंत्रित किया गया।

4. 30 जून 2021 को कल्प और प्रतिभा स्पंदन सोसाइटी, शिमला-माई जर्नी ऑफ आर्ट द्वारा आयोजित कहानी लेखन और कहानी कहने की कला पर दो दिवसीय आभासी राष्ट्रीय कार्यशाला में संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया।

5. 16 सितंबर 2020 को फेसबुक पर मेरी रचनात्मक यात्रा से अंतर्दृष्टि साझा करने पर बात करने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में अनफोल्डक्राफ्ट, राजस्थान द्वारा राष्ट्रीय लाइव सत्र के लिए आमंत्रित किया गया।

6. हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा सितंबर 2020 को हिमाचल प्रदेश राज्य के स्वर्ण जयंती समारोह के लिए स्मारक डाक टिकट डिजाइन करने के लिए आमंत्रित किया गया।

7. पीडब्ल्यूडी-हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा सितंबर 2020 को हिमाचल प्रदेश राज्य के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर हिमाचल प्रदेश के विभिन्न प्रवेश द्वारों को डिजाइन करने के लिए आमंत्रित किया गया।

8. 6 अगस्त 2020 को व्हाइट रोज़ केरल द्वारा आर्ट- शैडो ऑफ़ हिरोशिमा- ब्लू स्काई की राष्ट्रीय लाइव ऑनलाइन प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित किया गया।

9. 15 जुलाई 2020 को फेसबुक पर मेरी रचनात्मक यात्रा से अंतर्दृष्टि साझा करने पर बात करने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में रंगीत कला महोत्सव, उत्तराखंड द्वारा राष्ट्रीय लाइव सत्र के लिए आमंत्रित किया गया।

10. संस्कार भारती, कोपागांग-मऊ, उ.प्र. द्वारा अखिल भारतीय ललित कला ई-कार्यशाला के लिए आमंत्रित। इंडियन वॉश पेंटिंग के पुनरुद्धार पर लाइव सत्र- 13 जून 2020 को।

11. एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर द्वारा कैनवास पर पहाड़ों के जादू पर बात करने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में राष्ट्रीय वेबिनार लाइव सत्र के लिए आमंत्रित किया गया और 9 जून 2020 को मेरी कृति का दौरा किया गया।

12. 28 मई 2020 को फेसबुक पर मेरी कलात्मक यात्रा से अंतर्दृष्टि साझा करने पर बात करने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में उत्थान आर्ट्स नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय लाइव सत्र के लिए आमंत्रित किया गया।

13. ललित कला विभाग, एम.जी. द्वारा सिस्को वीबेक्स बैठक राष्ट्रीय लाइव सत्र के लिए आमंत्रित किया गया। 17 मई 2020 को दृश्य कला और इसके व्यावसायिक पहलुओं पर बात करने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में काशी विश्वविद्यालय, गंगापुर परिसर, वाराणसी।

14. 1 मई 2020 को ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा एसएएफ गैलरी की ऑनलाइन लाइव यात्रा और इसके महत्व पर व्याख्यान देने के लिए जूम लाइव राष्ट्रीय सत्र के लिए आमंत्रित किया गया।

15. 30 अप्रैल 2020 को समकालीन लोक कला के विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर व्याख्यान देने के लिए ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा जूम लाइव सत्र के लिए आमंत्रित किया गया।

16. 4 मई, 2019 को एनीटून-द स्कूल ऑफ आर्ट एंड एनिमेशन, नई दिल्ली में आर्टिफेस्ट-वार्षिक कला प्रदर्शनी 2019 में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित।

17. टेकनिया इंस्टीट्यूट ऑफ डांस, म्यूजिक एंड फाइन आर्ट्स, नई दिल्ली के 14वें वार्षिक दिवस 11 फरवरी, 2019 में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में आमंत्रित।

18. जयपुर राजस्थान में 17 जनवरी 2019 को तीसरे जयपुर कला महोत्सव 2019 के उद्घाटन समारोह में सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित।

19. हिमाचल के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा 2 अक्टूबर, 2018 को हिमाचल राज्य संग्रहालय शिमला में गांधी सर्किट और अपुर्सी-आज पुरानी राहों से- एक सरकारी योजना के प्रतीक और साइनेज को डिजाइन करने के लिए आमंत्रित किया गया।

20. अंतर्राष्ट्रीय खजुराहो नृत्य महोत्सव, म.प्र. 24 फरवरी, 2018।

21. शिमला में प्रारंभिक शिक्षा विभाग और सर्व शिक्षा अभियान के सहयोग से अमेरिकी दूतावास के साथ मलीन लिंक्स फाउंडेशन (एलएलएफ) द्वारा 16 दिसंबर से 20 दिसंबर, 2017 तक गहन पहुंच कार्यक्रम "अपने क्षितिज का विस्तार करें" में संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया।

22. उद्योग विभाग, एच, पी, नई दिल्ली में 14 नवंबर 2016, 2017, 2018 से प्रगति मैदान में भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, आईटीपीओ में हिमाचल मंडप को डिजाइन करने के लिए कला सलाहकार के रूप में आमंत्रित किया गया।

23. उद्योग विभाग, एच, पी, द्वारा नई दिल्ली में 3 नवंबर से 5 नवंबर, 2017 तक विश्व खाद्य महोत्सव के लिए फोकस राज्य के रूप में हिमाचल पवेलियन को डिजाइन करने के लिए कला सलाहकार के रूप में आमंत्रित किया गया।

24. हिमाचल प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा 24 अक्टूबर, 2017 को राज्य स्तरीय मिनिएचर पेंटिंग और चंबा रुमाल प्रदर्शनी में पुरस्कारों के चयन के लिए जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

25. 25 जुलाई 2017 को ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के तहत सभी कला दीर्घाओं के नियमों और विनियमों में सुधार के लिए आमंत्रित किया गया।

26. पौंग डैम, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में महाराणा प्रताप की भव्य मूर्ति की स्थापना के लिए चयन समिति के मानद सदस्य। भाषा कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, मई, 2017 द्वारा स्थापित 27. गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी 2017 के लिए नई दिल्ली में हिमाचल प्रदेश की झांकी का डिजाइन और निष्पादन।

28. भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला संगठन-आईटीपीओ में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला- आईआईटीएफ नवंबर 2015 थीम-मेक इन इंडिया और नवंबर 2016 थीम-डिजिटल इंडिया के लिए हिमाचल मंडप को डिजाइन और निष्पादित किया गया।

29. 3 सितंबर, 2016 को विशेष ओलंपिक भारत द्वारा एक नौकरशाह और एक मानसिक रूप से विकलांग बच्चे के साथ विशेष पेंटिंग बनाने में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया।

30. 15 नवंबर 2015 को भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला-आईआईटीएफ के लिए भारतीय व्यापार मेला संगठन-आईटीपीओ नई दिल्ली में सर्वश्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय मंडप का न्याय करने के लिए जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

31. दूसरे शिमला कला महोत्सव के उद्घाटन का जश्न मनाने के लिए बैले डांस के प्रदर्शन के साथ स्पॉट पेंटिंग पर "जुगलबंदी" के लिए आमंत्रित, हिमाचल के माननीय मुख्यमंत्री की उपस्थिति में उपायुक्त कार्यालय शिमला द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शिमला ग्रीष्मकालीन महोत्सव का एक हिस्सा 28 मई, 2015 को गेयटी थियेटर, शिमला में प्रदेश

32. आनंद, गुजरात में कला, 2015 की पहली सीवीएम राष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए अंतिम जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

33. 22 मार्च, 2013 को संसाधन व्यक्ति के रूप में " रंग शब्द और संगीत " नामक उनके कार्यक्रम के लिए दूरदर्शन द्वारा आमंत्रित

34. ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आयोजित दिनांक 25 मार्च, 2013 को शिमला में राष्ट्रीय कलाकार शिविर के उद्घाटन के लिए आमंत्रण

35. ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा 12 जनवरी, 1013 को अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित

36. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, शिमला नवंबर 2012 में फोटो गैलरी और टैगोर केंद्र स्थापित करने का निमंत्रण

37. कसौली, हिमाचल प्रदेश में प्रथम कसौली साहित्य समारोह में "छाप" शीर्षक से मेरी कृतियों की प्रदर्शनी के लिए आमंत्रण। अक्टूबर, 2012।

38. दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अगस्त 2012 द्वारा अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में अंतिम जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित

39. हिमाचल सरकार द्वारा हिमाचल प्रदेश की 26 जनवरी 2013 (गणतंत्र दिवस) झांकी के डिजाइन और निष्पादन के लिए आमंत्रित; प्रदेश, जुलाई 2012, और जिसे भारत सरकार द्वारा भी चुना गया है।

40. दूरदर्शन, हिमाचल प्रदेश, जून 2012 की पृष्ठभूमि बनाने के लिए आमंत्रित किया गया

41. महानिदेशक द्वारा महात्मा गांधी का चारकोल पोर्ट्रेट बनाने के लिए डी.जी. नेशनल एकेडमी ऑफ ऑडिट एंड अकाउंट्स, शिमला, मई 2012 में कार्यालय।

42. पर्यटन और नागरिक उड्डयन विभाग, सरकार की ओर से हिमकॉन द्वारा ग्रामीण पर्यटन के लिए जागरूकता शिविर में संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया। हिमाचल प्रदेश की 7 से 9 मई, 2012 तक।

43. 19 अप्रैल, 12 को फोटोग्राफी स्टाफ के मूल्यांकन के लिए केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (सीपीआरआई) की मूल्यांकन समिति की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया गया।

44. संसद भवन, नई दिल्ली से लोकसभा अध्यक्ष श्री बाला योगी, जनवरी, 2012 के चित्र की तैयारी के लिए निमंत्रण।

45. आईआईएएस, गोवा विश्वविद्यालय और गोवा प्रशासन के निदेशक द्वारा गोवा के 50 वर्ष पूरे होने का प्रतीक बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। दिसंबर 2011 " गोवा 1961 और उससे आगे"

46. इंडस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, ऊना, हिमाचल प्रदेश में दो दिनों के लिए कला पर कार्यशाला सह व्याख्यान का समन्वय करने के लिए आमंत्रित किया गया। 26-27 नवंबर, 2011।

47. 14 नवंबर, 2011 को गॉर्टन कैसल, एजी में भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की ओर से भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक-सीएजी की संस्था की 150वीं वर्षगांठ मनाने के लिए जुगलबंदी के रूप में बातचीत और मौके पर पेंटिंग के लिए आमंत्रित शिमला

48. राज्य संग्रहालय शिमला हिमाचल प्रदेश के मुख्य लॉन के सामने स्कल्प्चरल वाटर फॉल की स्थापना हेतु एच.पी. सरकार और शिमला होटल और रेस्तरां एसोसिएशन, अगस्त 2011।

49. आचा कला और संस्कृति अकादमी, हिमाचल प्रदेश, मार्च 2011 द्वारा लघु चित्रों और चंबा रूमाल की राज्य स्तरीय प्रदर्शनी के लिए पुरस्कारों के चयन के लिए जूरी सदस्य के लिए

50. इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स सोसाइटी, IAFAS, अमृतसर के लिए अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी के चयन के लिए जूरी सदस्य के लिए। 2008

51. चंबा, हिमाचल प्रदेश में भूरी सिंह संग्रहालय में मेरे चित्रों की प्रदर्शनी के लिए। संग्रहालय के 15 सितंबर, 20 सितंबर, 2008 को इसके 100 साल पूरे होने के अवसर पर।

52. एचसीएन-जून 2010 के लिए कला कार्यशाला आयोजित करने के लिए वाइल्ड फ्लावर होटल, शिमला द्वारा

53. वाइल्ड फ्लावर होटल, शिमला द्वारा कला कार्यशाला आयोजित करने के लिए-अमरोप इंटरनेशनल ग्रुप के लिए -22 नवंबर, 2009 को वाइल्ड फ्लावर हॉल, शिमला में

54. कैडबरी इंटरनेशनल लिमिटेड-2007 के विश्व व्यापी सीईओ के लिए कला कार्यशाला आयोजित करने के लिए वाइल्ड फ्लावर होटल, शिमला द्वारा

55. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, शिमला 2010 में एक आर्ट गैलरी स्थापित करने का निमंत्रण

56. मनाली दिसंबर 2009 में अटल बिहारी इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग एंड एलाइड स्पोर्ट्स ऑफ इंडिया में एक गैलरी स्थापित करने का निमंत्रण।

57. शीतकालीन कार्निवाल के दौरान मनाली में अटल बिहारी इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग एंड एलाइड स्पोर्ट्स ऑफ इंडिया की झांकी डिजाइन करने के लिए आमंत्रण और वर्ष 2010 और 2011 के लिए पहला पुरस्कार भी जीता

संगोष्ठी और कार्यशालाएं :-

1. 25 से 27 फरवरी, 2022 को अतिथि कलाकार के रूप में कलाकार संघ पंजाब द्वारा जालंधर में आयोजित राष्ट्रीय कला कार्यशाला में भाग लिया।

2. दिनांक 27 से 29 अक्टूबर, 2021 तक कौसोली में जुम्बिश कला द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कला कार्यशाला में भाग लिया।

3. पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर द्वारा 25 जून से 20 जुलाई 2021 तक ऑनलाइन आयोजित राष्ट्रीय कला कार्यशाला "विरासत वास्तुकला" में भाग लिया।

4. 15 जुलाई 2020 को रंगीत-उत्तराखंड आर्ट फेस्टिवल इंटरनेशनल ऑनलाइन आधारित आर्ट टॉक ऑन-माय जर्नी ऑफ आर्ट में संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया

5. 10 जुलाई 2020 को कोविड-19 महामारी के कारण ललित कलाओं में उभरते आयाम पर राष्ट्रीय वेब आधारित कला संगोष्ठी में संसाधन व्यक्ति और अध्यक्ष के रूप में भाग लिया

6. 5 जुलाई 2020 को जयपुर, राजस्थान के रंगमलहार में रिसोर्स पर्सन के रूप में - क्रिएटिव कैरी बैग पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन कला कार्यशाला में भाग लिया।

7. रूसी एकेडमी ऑफ आर्ट्स (मॉस्को, रूस), द इंटरनेशनल सेंटर ऑफ द रोएरिच्स द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय इंटरडिसिप्लिनरी कॉन्फ्रेंस «रूस एंड द ईस्ट: एआरटी, फिलॉसफी एंड कल्चर» में "क्या कलात्मक प्रेरणा संक्रामक है" पर एक पेपर में भाग लिया और प्रस्तुत किया। (मास्को, रूस) सामाजिक विज्ञान पर वैज्ञानिक सूचना संस्थान (INION) (मॉस्को, रूस), इंटरनेशनल रोएरिच मेमोरियल ट्रस्ट (नग्गर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश भारत) 23 और 24 अक्टूबर 2019 को नग्गर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश में।

8. वितकारा विश्वविद्यालय, राजपुरा, पंजाब में राष्ट्रीय कला संगोष्ठी-चित्रम -18 अप्रैल से 21 अप्रैल 2019 में संसाधन व्यक्ति और प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में भाग लिया

9. राष्ट्रीय चित्रकार शिविर-दिल्ली में 18 से 23 मार्च 2019 तक भाग लिया। केरल ललितकला अकादमी, त्रिशूर द्वारा आयोजित।

10. 23 से 28 फरवरी 2019 तक दृश्य कला विभाग, एमपीएसयू, उदयपुर में अंतर्राष्ट्रीय मल्टीमीडिया कला संगोष्ठी में भाग लिया।

11. मध्य प्रदेश के उज्जैन में कलावर्त 23वें अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव में भाग लिया। 21 से 24 दिसंबर 2018 तक।

12. 12 फरवरी, 2018 को गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, अंबाला हरियाणा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी - भारत की विरासत में रिसोर्स पर्सन के रूप में आमंत्रित

13. मनाली, हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला में भाग लिया। कला प्रेरणा समूह द्वारा आमंत्रित 12 से 14 जनवरी, 2018 तक।

14. 27-30 अप्रैल, 2017 को रिज पर राष्ट्रीय कलाकारों की कार्यशाला में भाग लिया, जिसे हिमाचल प्रदेश सरकार के कला और भाषा संस्कृति विभाग द्वारा प्रथम हिमाचल कला महोत्सव मनाने के लिए आमंत्रित और आयोजित किया गया।

15. शिमला में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में "हिमाचल प्रदेश के समकालीन कला इतिहास" पर एक प्रस्तुत करने के लिए एक संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया, ललित कला अकादमी नई दिल्ली और एच.पी. द्वारा आयोजित मेघदूत थियेटर। 11 मार्च 2017 को कला और संस्कृति अकादमी।

16. चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा 17 से 19 जनवरी 2017 को सेक्टर 17 में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला में भाग लिया।

17. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, शिमला में 19 से 22 अक्टूबर 2016 तक "द एसेंशियल टैगोर" पर राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला में भाग लिया।

18. 14 तारीख को एम.के.पी.(पी.जी.) कॉलेज, देहरादून और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में " कला में रामायण का प्रकटीकरण: हिमालयी परिप्रेक्ष्य" पर व्याख्यान देने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित - 15 मार्च 2016।

19. 4 अप्रैल 2016 को मनोविज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में "भारतीय कला परंपरा: वैश्विक कल्याण में योगदान" पर व्याख्यान देने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया।

20. स्कूल ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज एंड ट्रेनिंग, इग्नू, नई दिल्ली द्वारा 1-2 मार्च, 2016 को आयोजित 'इंटरमेडियल ट्रांसलेशन: वर्ड टू विजुअल एंड विजुअल टू वर्ड' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया।

21. हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी द्वारा आयोजित 24 जून से 27 जून 2015 तक शिमला, हिमाचल प्रदेश में समकालीन चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया। हिमाचल प्रदेश सरकार।

22. 16 जून से 23 जून 2015 तक शिमला, हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय चित्रकार शिविर में भाग लिया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला और ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित।

23. भोपाल, भारत भवन, मध्य प्रदेश में 25 मार्च 2 अप्रैल 2015 को राष्ट्रीय कला महोत्सव में भाग लिया। ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित।

24. मेकॉन लिमिटेड, इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 17 से 27 फरवरी, 2015 तक रांची में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मैत्री कला कार्यशाला सह प्रदर्शनी में भाग लिया।

25. एनडीएमसी, कन्वेंशन हॉल, नई दिल्ली में 21 दिसंबर, 2014 को तीसरे दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के आयोजकों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कलाकार की कार्यशाला में भाग लिया।

26. नगर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश में 28 मार्च 2 अप्रैल 2014 को ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कला महोत्सव में भाग लिया।

27. हिस्ट्री पैलेस, जयपुर द्वारा आयोजित 19 से 23 मार्च, 2014 तक जयपुर में दूसरे अंतर्राष्ट्रीय जयपुर कला महोत्सव में भाग लिया।

28. "भारत में कला शिक्षा" पर ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी में संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया और पेपर प्रस्तुत किया।

21 जनवरी से 24 जनवरी 2014।

29. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, शिमला में 25 से 28 अक्टूबर, 2013 तक मूड पर राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला में भाग लिया।

30. हिस्ट्री पैलेस जयपुर द्वारा आयोजित 18 से 22 मार्च, 2013 तक जयपुर में पहले अंतर्राष्ट्रीय जयपुर कला महोत्सव में भाग लिया।

31. पीजी कॉलेज, अंबाला, हरियाणा में यूजीसी प्रायोजित राष्ट्रीय कला कार्यशाला में भाग लिया, 16 फरवरी, 2013

32. 8 और 9 फरवरी, 2013 को आरआर बाबा डीएवी कॉलेज, बटाला, पंजाब में यूजीसी प्रायोजित राष्ट्रीय कला कार्यशाला में भाग लिया।

33. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, शिमला सितंबर 2012 में महाभारत पर राष्ट्रीय कलाकारों की कार्यशाला में भाग लिया

34. 28 से 31 अगस्त, 12 तक सीवीसी कॉलेज ऑफ आर्ट्स द्वारा आमंत्रित, अन्नाद, गुजरात में अखिल भारतीय कलाकार शिविर में भाग लिया

35. 9 मई, 2012 को शिमला में सेंट थॉमस स्कूल और उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, (एनजेडसीसी) द्वारा आमंत्रित बच्चों के टैगोर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

36. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज और सहपीडिया शिमला द्वारा आमंत्रित मैपिंग प्रोजेक्ट 23-25 अप्रैल 2012

37. बुद्ध, जम्मू और कश्मीर में राष्ट्रीय कलाकार की कार्यशाला में भाग लिया, जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा आमंत्रित, 3-8 दिसंबर, 2011

38. 19 अगस्त, 2011 को शिमला में पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन निदेशालय द्वारा आयोजित ग्रामीण पर्यटन पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला "हर गांव की कहानी" की प्रस्तुति। एच.पी. सरकार।

39. जिम कॉर्बेट में राष्ट्रीय कलाकार की कार्यशाला में भाग लिया, कृष्णा मारुति समकालीन कला और संस्कृति केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आमंत्रित 15-22 अप्रैल, 2011

40. अखिल भारतीय ललित कला और शिल्प समाज, (AIFACS) नई दिल्ली मार्च 2011 में राष्ट्रीय कलाकार की कार्यशाला में भाग लिया

41. चंबा फरवरी 2011 में राष्ट्रीय कला शिविर में भाग लिया। ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित

42. भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला अगस्त 2010 में राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला में भाग लिया और समन्वय किया

43. ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित शिलांग मार्च 2010 में राष्ट्रीय कला महोत्सव में भाग लिया

44. पहलगाँव, श्रीनगर में जून 2010 में डी.पी. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कलाकार शिविर में भाग लिया। थार ट्रस्ट

45. शाहाबाद, हरियाणा दिसंबर 2009 में कला और सौंदर्य शास्त्र पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

46. जेएनयू ठियोग, अक्टूबर और नवंबर, 2009 में कला में शिक्षा कार्यशाला में भाग लिया और आयोजित किया

47. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, शिमला जुलाई 2009 में चंबा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया

48. एचपीयू में राष्ट्रीय शिक्षा मिशन पर कार्यशाला में भाग लिया। शुमला

49. ललित कला विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ में मार्च 2009 में संसाधन व्यक्ति के रूप में भारतीय कला के विभिन्न आयामों में संगोष्ठी सह कार्यशाला में भाग लिया।

50. चंडीगढ़, सितंबर, 2008 में कला पाठ्यचर्या पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया

51. भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला जून 2008 में राष्ट्रीय कलाकारों की कार्यशाला में भाग लिया

52. आर्ट मॉल, नई दिल्ली द्वारा आयोजित नई दिल्ली जनवरी, 2008 में वरिष्ठ राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला में भाग लिया।

53. इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स, अमृतसर, अगस्त, 2007 द्वारा शिमला में आयोजित, राष्ट्रीय चित्रकारों के शिविर- अभिव्यक्ति में भाग लिया।

54. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय कला मेला (सेमिनार सह कार्यशाला) में भाग लिया दिसंबर-2006।

55. अमृतसर में 24-28 अक्टूबर, 2006 को दृश्य कला पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर यूजीसी द्वारा प्रायोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सह कार्यशाला में भाग लिया

56. दयालबाग डीम्ड यूनिवर्सिटी, आगरा में वर्तमान भारत में आधुनिक कला और कला विपणन पर विचार पर यूजीसी द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी सह कार्यशाला में भाग लिया, अक्टूबर- 2006

57. मुंबई की एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी द्वारा कंडाघाट में आयोजित "पाज" - भारत के 64 प्रमुख कलाकार आमंत्रित राष्ट्रीय कलाकारों के शिविर में भाग लिया, यूके मई -2006 में कार्यों की नीलामी की गई

58. अखिल भारतीय ललित कला और शिल्प समाज, नई दिल्ली सितंबर, 2002 की प्लेटिनम जयंती मनाने के लिए नई दिल्ली में राष्ट्रीय युवा कलाकार के शिविर में भाग लिया।

59. ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, मार्च - 2001 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित 'रचनात्मक प्रक्रिया - चित्रकारों और दर्शक' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

60. एकीकृत हिमालयी अध्ययन संस्थान (यूजीसी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस) एचपीयू, शिमला, अगस्त - 2002 द्वारा आयोजित हिमालयी संस्कृति पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

61. श्री सरदार शोभा सिंह कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश की जन्म शताब्दी मनाने के लिए अंद्रेटा में राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया। नवंबर-2001। (एन.जेड.सी.सी.)

62. दयानंद पीजी में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित 'आर्ट इन प्रेजेंट टाइम्स' पर संगोष्ठी में भाग लिया। कॉलेज अजमेर जनवरी 2001।

63. सितंबर 2001 में बिशप कॉटन स्कूल, शिमला में बी.सी.एस. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया।

64. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया, मार्च 2001, U.G.C द्वारा प्रायोजित और ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा द्वारा आयोजित।

65. पुष्कर, राजस्थान में जनवरी 2001 में यू.जी.सी. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया। और दयानंद कॉलेज, अजमेर।

66. राज्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित एचपीयू, अगस्त-1999 में विज्ञान चित्रण/कार्टून/दृश्य/ग्राफिक्स पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया। और राष्ट्रीय विज्ञान परिषद, प्रौद्योगिकी संचार (NCSTC), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, सरकार। भारत की।

67. जून-1997 में रोरिच आर्ट गैलरी, नग्गर, कुल्लू में राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया। (एन.जेड.सी.सी.)

68. चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्ट्स, 1997 में राष्ट्रीय ललित कला, लखनऊ द्वारा राष्ट्रीय चित्रकला कला शिविर में भाग लिया।

69. दिल्ली, पंजाब और हिमाचल ललित कला अकादमी द्वारा जून-1996 में आयोजित अंतर-राज्यीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान, कला-कार्यशाला, शिमला में भाग लिया।

70. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की 40वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा जनवरी 1996 में आयोजित राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला।

71. कलाग्राम में चंडीगढ़ में राष्ट्रीय कलाकार शिविर। (एन.जेड.सी.सी.) नवंबर-1995

72. राष्ट्रीय ललित कला केंद्र, लखनऊ-1993 द्वारा कुल्लू में आयोजित अखिल भारतीय कलाकार कार्यशाला में भाग लिया।

73. रोहतक, हरियाणा-1991 में 5 दिवसीय कलाकारों की कार्यशाला में काम किया।

74. हिमाचल प्रदेश होमगार्ड द्वारा आयोजित शिमला, 1991 में चित्रकला कार्यशाला।

75. आईटीबीपी-1991 द्वारा शिमला में "हिमालयी पर्यावरण" कला कार्यशाला।

76. 1991 में "हिमाचल प्रदेश में कला और उसके पहलू" पर संगोष्ठी, ललित कला अकादमी, एन. दिल्ली और हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित।

77. 1998 में आई.आई.ए.एस.

78. 1987 में "विजुअल आर्ट एंड इट्स योग" पर सेमिनार में भाग लिया और 1989 में शिमला में ललित कला अकादमी द्वारा भी भाग लिया।

हालिया समूह शो / प्रदर्शनी :-

1. 28 अप्रैल से 3 मई 2023 तक विजुअल आर्ट गैलरी इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में राष्ट्रीय प्रदर्शनी रंगायन में भाग लिया।

2. 18 जनवरी से 23 जनवरी 2023 तक ओपन पाम कोर्ट, इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी "वननेस" में भाग लिया।

3. WRI-ART में आमंत्रित कलाकार के रूप में भाग लिया; ग्रुप शो, लोकायता आर्ट गैलरी, हौज खास, नई दिल्ली में 16 मार्च से 20 मार्च 2022 तक।

4. निरंतर आर्ट ग्रुप, चंडीगढ़ द्वारा 26 जनवरी से 26 फरवरी 2021 तक आयोजित तीसरी अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन कला प्रदर्शनी में आमंत्रित कलाकार के रूप में भाग लिया। भारत।

5. 23 अक्टूबर 2020 से एके-एम कला संघ पठानकोट, पंजाब, भारत द्वारा आयोजित दूसरी अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन कला प्रदर्शनी में आमंत्रित कलाकार के रूप में भाग लिया।

6. 13 सितंबर से 5 अक्टूबर 2020 तक 3डी गैलरी, बर्लिन, जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में भाग लिया, जिसे मोइनुद्दीन अहमद आर्ट गैलरी और ललित कला विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, भारत द्वारा प्रस्तुत किया गया।

7. वाइट रोज़ केरल, भारत द्वारा आयोजित 6 अगस्त 2020 से राष्ट्र ऑनलाइन प्रदर्शनी- ब्लू स्काई- सीडोज़ ऑफ हिरोशिमा में भाग लिया

8. डी ग्रुप द्वारा चंडीगढ़, भारत में आयोजित राष्ट्र ऑनलाइन कला प्रदर्शनी- सावन के रंग में 5 अगस्त 2020 से भाग लिया

9. एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर, भारत द्वारा आयोजित 1 अगस्त 2020 से राष्ट्र ऑनलाइन कला प्रदर्शनी- चौथा राजेश्वरी कला महोत्सव 2020 में भाग लिया

10. बिरला कला एवं संस्कृति अकादमी में आमंत्रित कलाकार के रूप में वरिष्ठ कलाकारों की अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लिया। कोलकाता में 11 जून से 16 जुलाई 2019 तक अग्रीतम कला मंदिर द्वारा आयोजित।

11. गेयटी थियेटर, द मॉल, शिमला में 23 मई से 29 मई 2019 तक पेंटिंग्स की समूह प्रदर्शनी-कला की दूसरी वार्षिक प्रदर्शनी- एकता में अतिथि कलाकार के रूप में भाग लिया।

12. 1 फरवरी से 7 फरवरी 2019 तक AIFACS (ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसाइटी) नई दिल्ली में पेंटिंग्स की समूह प्रदर्शनी - एकता - में अतिथि कलाकार के रूप में भाग लिया।

13. छाप -2018, पेंटिंग्स और मूर्तियों की राष्ट्रीय प्रदर्शनी, 17 से 19 अगस्त 18, रघुनाथ गर्ल्स पीजी कॉलेज, मेरठ-यूपी भारत

14. सोलन में 26 अप्रैल से, शिमला में 26 मई से, नग्गर IRMT 2018 में 2 जून से समूह प्रदर्शनी-बनजेस में अतिथि कलाकार के रूप में आमंत्रित।

15. 12 मार्च से 16 मार्च 2018 तक संग्रहालय, ललित कला, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में कला उदय सोसाइटी, कुरुक्षेत्र, हरियाणा द्वारा दूसरी अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी-2018 में अतिथि कलाकार के रूप में आमंत्रित।

16. अंतर्राष्ट्रीय समूह प्रदर्शनी- डे नोवो- लखनऊ, यूपी में भाग लिया। भारत 20 जून 2017।

17. चंडीगढ़ में 19 से 26 सितंबर, 2016 तक "शीर्षकहीन" प्रदर्शनी में भाग लिया।

18. तीसरे दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव नई दिल्ली 2014 राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी 20 से 27 दिसंबर, 2014 में भाग लिया

19. 21 से 27 दिसंबर, 2013 तक द्वितीय दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह नई दिल्ली 2013 राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में भाग लिया

20. "स्क्वायर" 18 मार्च से 20 मार्च 2013 को विजन आर्ट्स द्वारा आयोजित पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में उत्तर भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रों की एक प्रदर्शनी

21. 10 नवंबर, 2012 को नेहरू युवा केंद्र, शिमला द्वारा बैचारी गांव में आयोजित " झाँटो का मेला" नामक एक ग्रामीण मेले में एक ग्रामीण कला शो

22. "पॉट फॉर जस्टिस" 9 नवंबर से 14 नवंबर, 2012 तक दिल्ली स्थित आर्ट गैलरी, निज्जे वर्ल्ड द्वारा आयोजित AIFACS, नई दिल्ली में एक समूह शो।

23. मेक्लोडगंज, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में "ए पाथ ऑफ सेल्फ रियलाइजेशन"; एक समूह प्रदर्शनी। 6 से 11 जून 2012 तक निजवर्ल्ड गैलरी, दिल्ली द्वारा क्यूरेट किया गया।

24. दूसरी अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, 25 फरवरी, 2012 चंडीगढ़ में, सोसायटी फॉर डेवलपमेंट ऑफ फिल्म्स एंड आर्ट्स, चंडीगढ़ द्वारा आयोजित

25. 05 नवंबर, 2011 से 09 नवंबर, 2011 तक चंडीगढ़ में भारत और कनाडा के कलाकारों की एक कला प्रदर्शनी "संगम" ।

26. जयपुर में 3 सितंबर 2011 को भारत के समकालीन कलाकारों द्वारा एक समूह प्रदर्शनी "अशक्तियां"

27. A.I.F.A.C.S गैलरी, नई दिल्ली, जुलाई 2011 में अखिल भारतीय कलाकार प्रदर्शनी।

28. क्षेत्रीय ललित कला केंद्र, लखनऊ में 23 से 28 मई 2011 तक भारत के समकालीन कलाकारों द्वारा एक सामूहिक प्रदर्शनी "अभिव्यक्तियां"

29. कला की अखिल भारतीय प्रदर्शनी 14 मई-22 मई, 2011 टैवर्न हॉल, गेयटी थियेटर, शिमला, सोसाइटी फॉर डेवलपमेंट ऑफ फिल्म्स एंड आर्ट्स, चंडीगढ़ और भाषा कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल सरकार द्वारा आयोजित।

30. 4 अप्रैल 2011 से द इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स द्वारा आयोजित आर्ट गैलरी अमृतसर में 77वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी 2011

31. 30 मार्च से 5 अप्रैल, 2011 तक ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में 12 समकालीन कलाकारों की "उत्साहात्मक अभिव्यक्ति" प्रदर्शनी

32. पहली अंतर्राष्ट्रीय ड्राइंग और ग्राफिक प्रिंट प्रदर्शनी 1 मार्च से 4 मार्च 2011 तक चंडीगढ़ में, सोसाइटी फॉर डेवलपमेंट ऑफ फिल्म्स एंड आर्ट्स, चंडीगढ़ द्वारा आयोजित

33. न्यूयॉर्क गैलरी बिल्डिंग, न्यूयॉर्क में "समकालीन कला: भारतीय कलाकार का चयन" की प्रदर्शनी। अगस्त 2010 को धूमिमल और आर्ट मॉल गैलरीज ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित किया गया

समूह शो :-

1. चंडीगढ़-2001 में 5वीं बैंक ऑफ पंजाब कला प्रदर्शनी।

2. राज्य स्तरीय कला प्रदर्शनी, का आयोजन ए.आई.एफ.ए.सी.एस. और हिमाचल प्रदेश के भाषा और सांस्कृतिक विभाग, नवंबर, 2001।

3. चंडीगढ़-1999 में तीसरी बैंक ऑफ पंजाब कला प्रदर्शनी।

4. कला की अखिल भारतीय प्रदर्शनी, 1984, 1986, 1987 1989,1991-1992,1996,1997 और 1999,2002,2003 हिमाचल प्रदेश राज्य संग्रहालय, शिमला द्वारा आयोजित।

5. राज्य स्तरीय कला प्रदर्शनी, ए.आई.एफ.ए.सी.एस. द्वारा आयोजित और हिमाचल प्रदेश के भाषा और सांस्कृतिक विभाग, जनवरी 2001।

6. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली और शिमला में हिमाचल भाषा और संस्कृति अकादमी द्वारा आयोजित कला मेला-2000,2003,2004,2005,

7. लखनऊ, यू.पी. में समूह कला प्रदर्शनी। राज्य ललित कला अकादमी, कला मेला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा शिमला-1998 में आयोजित।

8. सोलिड ग्रुप-1997 द्वारा चंडीगढ़ में कला प्रदर्शनी।

9. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली-1995 द्वारा आयोजित बैंगलोर में राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी।

10. विश्वकला प्रदर्शनी हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला-1994।

11. कर्नाटक और एचपी ललित कला अकादमी -1994 द्वारा आयोजित राज्य कला प्रदर्शनी, बैंगलोर।

12. राज्य संग्रहालय शिमला-1991 में ग्रुप शो।

13. वाइल्ड फ्लावर हॉल शिमला-1990 में कला प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति द्वारा किया गया।

14. पंजाब कला भवन-1989 में प्रदर्शनी, चंडीगढ़

15. पेंटिंग-89, देहरादून, उ.प्र.

16. Y.W.C.A.-1984.Shimla में प्रदर्शनी

आगामी शो :-

विश्व की यात्रा प्रदर्शनी "साइलेंट ब्लेसिंग" सार्वजनिक कलाओं का प्रदर्शन किया

भित्ति चित्र

1. पोंटासाहिब, सिरमौर से हिमाचल प्रदेश के प्रवेश द्वार पर एमएस और कंक्रीट भित्ति, 4 x 8 मीटर। जनवरी 2021।

2. परवाणू, सोलन से हिमाचल प्रदेश के प्रवेश द्वार पर एमएस और कंक्रीट भित्ति, 10x 30 मीटर। जनवरी 2021।

3. बैजनाथ, बिलासपुर से हिमाचल प्रदेश के प्रवेश द्वार पर एमएस और कंक्रीट भित्ति, 6x14 मीटर। जनवरी 2021।

4. हिमाचल प्रदेश स्टेट लोड डिस्पैचड सेंटर, टोटू, शिमला-2020 में विभिन्न कला कृतियाँ

5. तारों से बने भित्ति चित्र और एम.एस. कार्डिनल रॉयल रिट्रीट, शिमला में स्टील और तांबे के तार 5 x 9 फीट। मई 2019।

6. मई 2019 में वाराणसी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, वाराणसी में 5 फीट x 262 फीट लकड़ी और फाइबरग्लास के दो भित्ति चित्र और 5 x 83 फीट के चित्रित एक पारंपरिक जुलूस की स्थापना की गई।

7. आर्ट गैलरी, एसएएफ, शिमला के गेट पर भित्ति चित्र 12 फीट x 30 फीट, स्टील और कंक्रीट। सितंबर-अक्टूबर 17।

8. दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज, द्वारका, सेक्टर -3 नई दिल्ली 2016-2017 में स्थापित विभिन्न कला कार्य

9. शहीद सुखदेव कॉलेज, रोहिणी, दिल्ली 2016-2018 में स्थापित विभिन्न कला कार्य शहीद सुखदेव कॉलेज, रोहिणी, दिल्ली

10. नई दिल्ली-2015 में फ्लाईओवर पर विभिन्न स्थानों पर स्थापित विभिन्न कला कार्य

11. गोल्डन ट्यूलिप, कुफरी 12 x 15 फीट 2016 में लकड़ी का भित्ति चित्र

12. गोल्डन ट्यूलिप, कुफरी में हिमाचली संस्कृति के दो आयरन बार भित्ति चित्र, प्रत्येक आकार 5 x 150 फीट। 2016

13. होटल पाइन ब्यू, शिमला मई, 2016 में आइस बार का डिजाइन तैयार किया और कला कृतियों का निष्पादन किया।

14. हैलेट नालथेरा रिसॉर्ट में मिरर म्यूरल, शिमला आकार 11 x 36 फीट, जून 2014

15. गोयंका स्कूल, उत्तरी दिल्ली में स्टील म्यूरल स्थापित, आकार 10 x14 फीट, अप्रैल, 2013

16. नेशनल एकेडमी ऑफ ऑडिट एंड अकाउंट में स्थापित लकड़ी का भित्ति चित्र, आकार 10 x 8.7 फीट। 12 दिसंबर, 2011 को शिमला में उप, भारत के सीएजी द्वारा अनावरण किया गया।

17. मॉल, सोलन, हिमाचल प्रदेश में कंक्रीट भित्ति चित्र। आकार 80 फीट x 12 फीट जनवरी, 2010

18. नियंत्रक महालेखाकार कार्यालय, नई दिल्ली, 2008 कांसे और तांबे के 10 पैनलों का आकार 3 x 9 फीट।

19. इंटीग्रेटेड इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन स्टडीज, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमला में कंक्रीट म्यूरल साइज '4 x 8' , 2006

20. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में कंक्रीट भित्ति आकार '5 x 12' ; 2006

21. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला आकार 4' x 7.6'.2006 में कांच चित्रित भित्ति

22. ARTRAC ऑफिसर मेस, शिमला, 2006 में दो ठोस भित्ति चित्र आकार '4 x 4'

23. ARTRAC ऑफिसर मेस, शिमला, 2006 में कंक्रीट म्यूरल आकार '4 x 10'

24. ARTRAC ऑफिसर मेस, शिमला, 2006 में चार प्लास्टिक लकड़ी के भित्ति चित्र आकार 3 x 3

25. सैनेट नालदेहरा रिज़ॉर्ट, शिमला 2006 में 12 कंक्रीट भित्ति चित्रों के साथ एक स्पा सजाया

26. एनएसजी (राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड) मुख्यालय, नई दिल्ली, 2005 में 24 लकड़ी के पैनल भित्ति चित्र आकार 2 x 2 स्थापित

27. रैंड होटल, शिमला में, आकार 110'x 6-16' सीमेंट और रंगीन फिनिश के साथ -2005

28. इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कुफरी में मोज़ेक म्यूरल, आकार 5' x 3'-2005

29. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऑडिट एंड अकाउंट्स, शिमला -2004 की लॉबी में मोज़ेक म्यूरल, आकार 25 x 39

30. राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड संग्रहालय, मनसेर, एन.दिल्ली -2003 में, आकार 14 39 x 10 39; स्टील और प्लास्टिक शीट के साथ बनाया गया।

31. राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड संग्रहालय, मनसेर, एन.दिल्ली -2003 में स्टील से निर्मित 20 भित्ति चित्र,

32. रैंड होटल शिमला-2003 में 25 फीट x 6 फीट सीमेंट रिलीफ म्यूरल।

33. बामलोई, शिमला-2002 में अपशिष्ट पदार्थों के साथ विशाल भित्ति चित्र और एक थीम पार्क विकसित किया गया।

34. बामलोई, शिमला - 2001 में '3 x 15' स्टील म्यूरल स्थापित किया गया।

35. चोरा माथन, शिमला -2001 में '12 x 9' सीमेंट भित्ति स्थापित।

36. केंद्र सरकार के कार्यालय कॉम्प्लेक्स टाइल्स म्यूरल (आकार '8 x 9'), शिमला में। 2000

37. रिवोली सिनेमा, शिमला 1999 के लिए पेंटेड ग्लास पेंटिंग म्यूरल।

38. रिज व्यू होटल, शिमला-1994 के लिए मेड पेंटेड ग्लास म्यूरल साइज '4 x 8'

39. सचिवालय में, शिमला भित्ति चित्र, आकार '10' x '39' 1992।

जलप्रपात मूर्तियां

- एचपी विश्वविद्यालय में
- मुख्यालय एनएसजी, पालम, नई दिल्ली, आकार 15' x 20' 2004
- एनएसजी प्रशिक्षण केंद्र, मनसेर, 2003 में।
- रैंड होटल, शिमला में, साइज 24' x 39 ; 2002
- सीपीडब्ल्यूडी कार्यालय, शिमला में, आकार 30' x 39' ; 2000
- घर पर

मॉडल डिजाइन किया गया :-

- शिमला के विभिन्न प्रवेश बिंदुओं पर शिमला के तीन प्रवेश द्वार।
- राज्य के विभिन्न प्रवेश बिंदुओं से हिमाचल प्रदेश के चार प्रवेश द्वार
- नेशनल एकेडमी ऑफ ऑडिट एंड अकाउंट्स, शिमला, 2011 का प्रवेश द्वार
- शिमला के ग्रैंड होटल का गेट 2003।
- शिमला के प्रसिद्ध कृष्ण मंदिर का द्वार। 2000।
- घर पर

लिखित

- द मॉल, शिमला-2001 में वर्षा आश्रय को डिजाइन किया।
- सरकार के लिए झांकी डिजाइन करता है। हिमाचल से गणतंत्र दिवस तक, एन.दिल्ली 1993-2004।
- भारत सरकार की झांकी के लिए केंद्र सरकार से कांस्य पुरस्कार जीता। गणतंत्र दिवस 1993 में हिमाचल का
- शांति संग्रहालय, पुहापर्ती-1993 के लिए हिमाचल के मंदिरों का मॉडल तैयार किया गया।
- अखिल भारतीय शीतकालीन खेलों, मनाली - 1992 को बर्फ की गुड़िया से सजाया आरेखण कमीशन किया गया
- भारत के सेना प्रशिक्षण कमान के G.O.C द्वारा शिमला के मनोरम दृश्य का चारकोल चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया, दिसंबर 2013
- भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला मई 2013 द्वारा महात्मा गांधी के चारकोल जीवन आकार का चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, शिमला दिसंबर 2011 द्वारा टैगोर केंद्र के लिए रवींद्रनाथ टैगोर का चारकोल पोर्ट्रेट बनाने के लिए आमंत्रित किया गया।
- भारत में लेखापरीक्षा और लेखा अकादमी, शिमला अक्टूबर, 2011 द्वारा भारत में वर्तमान में महालेखाकार के कार्यालयों के रूप में "औपनिवेशिक भवनों" के चारकोल चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया
- "ए.जी." का चारकोल चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यालय, शिमला& पीएजी द्वारा मार्च 2011

- G.O.C द्वारा "द रिट्रीट" का पेन ड्रॉइंग बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। ARTRAC आकार 2 x 2 . 1998 सेनाध्यक्ष, भारत के लिए।
- महालेखाकार, हिमाचल प्रदेश आकार 22 x 15 द्वारा "द मॉर्टन कैसल" के चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। 1997.
- C.A.G के लिए पेन ड्रॉइंग बनाना। कार्यालय, नई दिल्ली, 1997।
- सीपीडब्ल्यूडी-1998 द्वारा शिमला की ऐतिहासिक इमारतों का पेन ड्रॉइंग बनाने के लिए आमंत्रित किया गया।
- डीजी के लिए पेन ड्रॉइंग बनाने के लिए। कार्यालय सी.पी.डब्ल्यू.डी. एन दिल्ली।
- चीफ पोस्ट मास्टर जनरल, हिमाचल प्रदेश-1999 द्वारा जीपीओ शिमला के पेन ड्रॉइंग बनाने के लिए आमंत्रित किया गया।
- सी.पी.आर.आई. के कलम चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। स्वर्ण जयंती समारोह-1999 के लिए।
- सी.पी.एम.जी., एच.पी.2000 द्वारा हिमाचल प्रदेश के हेरिटेज डाकघरों के चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया।
- राष्ट्रीय लेखापरीक्षा एवं लेखा अकादमी, शिमला,-2001 के नए भवन की पेन ड्राइंग बनाने के लिए आमंत्रित किया गया।

मेरे कार्यों पर जारी किए गए कैलेंडर :-

- हिमाचल प्रदेश के महालेखाकार द्वारा कैलेंडर- 2012
- भारत के डाक विभाग (पीएलआई) द्वारा जारी वर्ष 2000 कैलेंडर
- भारत के डाक विभाग (पीएलआई) द्वारा जारी वर्ष 2001 कैलेंडर
- कैलेंडर -1999, बैंक ऑफ पंजाब प्राइवेट लिमिटेड द्वारा।

संग्रह प्रदर्शित किया :-

1. यूजीसी मुख्यालय में नयी दिल्ली
2. संसद भवन, नई दिल्ली में
3. शिमला में नेशनल एकेडमी ऑफ ऑडिट एंड अकाउंट्स में चारकोल ड्रॉइंग का संग्रह।
4. आईआईएएस, शिमला में तीसरे राष्ट्रपति राधा कृष्णन और भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान के सभी पूर्व निदेशकों के चारकोल चित्रों का संग्रह।
5. नालथेरा सैनेट, नालथेरा, शिमला और में प्रदर्शित चित्रों और चित्रों का संग्रह, भित्ति चित्र

6. गोल्डन ट्यूलिप रिसॉर्ट्स, कुफरी-शिमला

7. न्यू रोल कॉमन कसौली, एचपीटीडीसी होटल में

- डीएवी प्रबंधन मुख्यालय। नयी दिल्ली
- मुख्यालय सेना प्रशिक्षण कमान भारत
- भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला
- नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कार्यालय, नई दिल्ली
- Semens Group of India
- श्री तुष त्रिगोतिया, कोलकाता के व्यक्तिगत संग्रह में
- हिमाचल प्रदेश के महालेखाकार का कार्यालय
- जम्मू और कश्मीर पुलिस
- कृष्णा मारुति समकालीन कला और संस्कृति केंद्र, नई दिल्ली
- अखिल भारतीय ललित कला और शिल्प सोसायटी, नई दिल्ली
- डी.पी.धर ट्रस्ट, कश्मीर
- एल.के.ए. नयी दिल्ली
- पी.जी. कॉलेज, शबद, हरियाणा
- कला मॉल, नई दिल्ली
- अध्यक्ष, वेस्टर्न यूनियन (अंतर्राष्ट्रीय) एमएसजी-मुख्यालय, पालम, नई दिल्ली।
- दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा
- क्रिएटिव आर्ट गैलरी, हौज़ काज़, एन। दिल्ली।
- अकादमिक स्टाफ कॉलेज, एच.पी.यू. शिमला
- बैंक ऑफ पंजाब, नई दिल्ली, चंडीगढ़।
- रैड होटल, शिमला
- पंजाब कला भवन, चंडीगढ़।
- कुफरी रिज़ॉर्ट प्राइवेट लिमिटेड, कुफरी, एच.पी.
- एन.जेड.सी.सी. पटियाला।
- एच.पी. राज्य संग्रहालय।
- कुल्लेव विश्वविद्यालय।
- एच.पी. सचिवालय।

- राजभवन कार्यालय, कुल्लू, एच.पी.
- राष्ट्रपति के सचिव कार्यालय, नई दिल्ली।
- मुख्य सचिव कार्यालय, एच.पी.
- श्री मैना देवी ट्रस्ट, बिलासपुर। एच.पी.
- सरकारी महाविद्यालय शिमला।
- ललित कला अकादमी, शिमला।
- उपाध्यक्ष, योजना आयोग, भारत।
- राष्ट्रीय हवाई अड्डा, जुब्बल हट्टी, शिमला।
- लेखापरीक्षा और लेखा सेवाओं की राष्ट्रीय अकादमी।
- राजभवन हाउस, राजस्थान।
- मुख्य चुनाव आयुक्त।
- आई.ए.ए.एस. शिमला।
- प्रधान महालेखाकार कार्यालय, शिमला।
- इंग्लैंड के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक।

भारत में कई निजी और सार्वजनिक संग्रह। रूस, फ्रांस, इंग्लैंड और यू.एस.ए. "सनत कला फाउंडेशन" -S.A.F"

शैक्षणिक शिक्षा :-

- प्रारंभिक प्रशिक्षण श्री सनत चटर्जी, पिता और गुरु, भारत के एक प्रसिद्ध कलाकार के तहत।
- स्नातकोत्तर ललित कला में स्नातक (टॉपर), बहुगुणा विश्वविद्यालय, उत्तराखंड 1989 शोध कला:
- हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से प्राचीन इतिहास में एम.फिल, 1991 निबंध: "किन्नौर की वास्तुकला और सजावटी कला"

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से 2003 में "किन्नौर की कला" पर डॉक्टरेट अनुसंधान परियोजना:

- हिमाचल प्रदेश के किले और महल: यूजीसी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, इंटीग्रेटेड इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन स्टडीज, शिमला से फेलोशिप, 2005-06
- हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण घर: यूजीसी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, इंटीग्रेटेड इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन स्टडीज, शिमला, 2007 से फेलोशिप।

प्रशिक्षण:

- अकादमिक स्टाफ कॉलेज, एच.पी. द्वारा आयोजित उन्मुखीकरण कार्यक्रम 1998 में भाग लिया। विश्वविद्यालय।

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम:

कंप्यूटर और आई.टी. में तीन सप्ताह के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया। A.S.A-H.P.U में जागरूकता कार्यक्रम 2000।

A.S.A में ललित कला में तीन सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम। गुरु नानक देव विश्वविद्यालय। अमृतसर, दिसंबर 2001।

A.S.A में ललित कला में तीन सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, जून-2006।

शिक्षण अनुभव:

- 1990 से 1991 तक कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में ललित कला के सहायक प्रोफेसर के रूप में पढ़ाया गया।
- ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय जनवरी, फरवरी 1996 में सहायक प्रोफेसर के रूप में दौरा।
- दृश्य कला विभाग में अध्यापन, पी.जी. केंद्र, एचपी विश्वविद्यालय, फरवरी 1994 से।

पुस्तकें :-

1. "हिमाचल प्रदेश के किले और महल", एक कॉफी टेबल बुक, सह-लेखिका उषा बंदे
2. "ए जर्नी फ्रॉम इंस्पिरेशन टू एक्सप्रेशन ऑन कैनवस" एक संपादित पुस्तक
3. "अभिव्यक्ति" एक संपादित पुस्तक
4. इमर्जिंग ट्रेंड्स इन आर्ट एंड लिटरेचर-एडिटेड बुक- सितंबर 2020
5. विकासात्मक अध्ययन में हालिया रुझान- संपादित पुस्तक- सितंबर 2020
6. भारतीय कला का इतिहास..सह लेखक, सीबीएसई के लिए पाठ्य पुस्तक-21 फरवरी

अनुसंधान प्रकाशन:-

1. "पेंटर निकोलस रोरिक की नज़रों से हिमालय के पहाड़ों का मास्टर" - 2 सितंबर 2022 को आउटलुक में प्रकाशित लेख।
2. "कला, संस्कृति और सामाजिक चेतना" - गुरु नानक जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, वॉल्यूम 33, नंबर 1. 2012 में स्वीकृत एक शोध पत्र
3. "द मिस्टिक मैट्रिक्स" - आर्टिस्टिक नैरेशन में स्वीकार किया गया एक शोध पत्र - विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स का एक जर्नल, 2012

4. "टेराकोटा परंपरा का पता लगाना" - कला परिवार में स्वीकृत एक शोध पत्र - कला और सौंदर्यशास्त्र पर एक राष्ट्रीय पत्रिका, 2012

5. "द वॉच आर्ट" - एक शोध पत्र एचपीयू जर्नल में अगले अंक 2012 के लिए स्वीकार किया गया।

6. एएसटीएआई-हिमालय में स्वीकार किया गया एक शोध पत्र "किन्नौर का शिवालय मंदिर" , यूरेशिया के टी काउंडेशन- एक अंतर्राष्ट्रीय मोनोग्राफ, - 2012

7. "कविता में कला या कला में कविता- एक नाइ कोण रवींद्रनाथ टैगोर" - कला परिवार में प्रकाशित एक शोध पत्र - कला और सौंदर्यशास्त्र पर एक राष्ट्रीय पत्रिका, 2012

8. हिमालयी वास्तुकला की गाथा: किन्नौर के पगोडा मंदिर "रूपा में प्रकाशित एक शोध पत्र, 2012

9. सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2013 द्वारा प्रकाशित हिमाचल हिमालय खंड -1 के विगनेट्स नामक पुस्तक में ग्रामीण हिमाचल में पारंपरिक आवासीय पैटर्न-एक सामाजिक-सांस्कृतिक, कलात्मक और स्थापत्य परिप्रेक्ष्य अध्याय

अनुसंधान पर्यवेक्षण :-

▯ दृश्य कला पर विभिन्न विषयों पर पर्यवेक्षित-150-शोध प्रबंध पी.जी. एचपीयू के विजुअल आर्ट्स विभाग के छात्र

▯ पर्यवेक्षण 24 पीएच.डी

▯ 6 पीएचडी विद्वानों का पर्यवेक्षण।

▯ एक डी. लिट. व्याख्यान

▯ पंजाब विश्वविद्यालय प्रबंधन विभाग द्वारा 25 मार्च से 8 अप्रैल 2023 तक ऑनलाइन भारतीय कला पर रूपा मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम व्याख्यान की श्रृंखला आयोजित की गई।

▯ भारत के विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों के लिए अकादमिक स्टाफ कॉलेज (एएसी), एचपी विश्वविद्यालय में आयोजित सभी ओरिएंटेशन कार्यक्रमों में संसाधन व्यक्ति का दौरा करना।

▯ राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, निफ्ट के लिए विजिटिंग रिसोर्स पर्सन

▯ राष्ट्रीय लेखापरीक्षा और लेखा अकादमी, शिमला में भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा सेवाओं के सभी बैचों के अधिकारी प्रशिक्षुओं को व्याख्यान देने के लिए विजिटिंग रिसोर्स पर्सन

▯ 1 से 5 दिसंबर, 2014 तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित थिएटर डायरेक्टर्स वर्कशॉप में निदेशकों को कला और सौंदर्यशास्त्र पर एक श्रृंखला में पांच व्याख्यान देने के लिए एक संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया।

▯ मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार, अक्टूबर 2014 के तहत विभिन्न नोवदेय स्कूलों से उत्तर भारत के सभी कला शिक्षकों को दृश्य कला पर व्याख्यान देने के लिए एक संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया।

▯ अकादमिक स्टाफ कॉलेज (एएससी), गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में ललित कला में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित, दिसंबर, 2012 भाषा कला और संस्कृति अकादमी, हिमाचल प्रदेश द्वारा धर्मशाला में टैगोर के 150वें समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित। दिसंबर 2012

▯ शेयरल ड्राइंग शिक्षक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम कार्यक्रमों के लिए हिमाचल सरकार के शिक्षा निदेशालय में नियमित संसाधन व्यक्ति

▯ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), मंडी से सौंदर्यशास्त्र और वास्तुकला पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रण।

▯ व्याख्यान सह प्रदर्शन और वाइल्ड फ्लावर हॉल, मशोबरा-शिमला में Cadbury International Ltd के विभिन्न देशों के C.E.O के लिए पेंटिंग की एक कार्यशाला आयोजित की।

C.P.W.D में IES प्रोबेशनर्स के लिए "सौंदर्यशास्त्र और संरचना" पर व्याख्यान। प्रशिक्षण संस्थान, गाजियाबाद, जून 2005।

▯ आईएएस परिवीक्षाधीनों और राष्ट्रीय लेखापरीक्षा और लेखा सेवाओं के संकाय सदस्यों के लिए कला की प्रशंसा पर व्याख्यान, शिमला अगस्त-2002,2003।

▯ आईएएस प्रोबेशनर्स और नेशनल ऑडिट एंड एकाउंट सर्विसेज, शिमला के फैकल्टी सदस्यों के लिए क्रिएटिव फोटोग्राफी पर व्याख्यान अगस्त-2002,2003।

▯ कला पर व्याख्यान- इसकी प्रशंसा, सेना के अधिकारियों के लिए, ए.आर.टी.आर.ए.सी. द्वारा आयोजित, सितंबर-1995।

हिम चटर्जी, बाहर का पता-
अध्यक्ष,
दृश्य कला विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला-5 (एच. पी.)
स्टूडियो / निवासी का पता-
रघून गांव,
पी.ओ. टोटो के माध्यम से रूरी,
समरहिल-शांति सीरीज-नेरी रोड,
शिमला-11. एच.पी.
मोबाइल : 9816060237
फोन-0177-2633136
ईमेल: himchatterjee@gmail.com

कलाकृतियों का विवरण

➢ चित्र संख्या 1 :–

यह चित्र हिम चटर्जी ने कैनवस पर बनाया जो कि एक्रिलिक रंग और तैल रंग से बनाया गया है। इस पेंटिंग का साइज जो कि 2 x 2 फीट रखा गया है और इस चित्र का शिर्षक "मुक आशीर्वाद" (Silent Blessings) रखा गया है। हिम चटर्जी ने चित्र में बहुत सुंदर रंगों का प्रयोग किया है। पहाड़ों का रंग पीला दिखाया गया है और पहाड़ के सामने मंदिर को दिखाया है उसको भी पीला दिखाया गया है। मानो मंदिर से "मुक आशीर्वाद" उन वादियों को मिल रहा है और पहाड़ों के पीछे का रंग नीला दिखाया गया है जो ठंडक का प्रतीक है। अंदर कई रंगों का बहुत सुंदर ढंग से दिखाया गया है। इस प्रकार इस चित्र को बहुत अच्छी विचारधारा के साथ पूरा किया गया है।

➢ चित्र संख्या 2 :–

इस चित्र में हिम चटर्जी ने लालिमा से बहुत सुंदर ढंग से ढक दिया है और चित्र को तैल रंग से बनाया गया है जो कि कैनवास पर बनाया गया है। इसका साइज 12 x 12 रखा गया है और इसका शीर्षक भी बहुत सुंदर शब्दों से दिखाया गया है जो कि इस प्रकार है "जीवन के अनंत क्षितिज है, इसे स्वीकार करें, इसे प्यार करें और आगे बढ़े"। इस चित्र में कुछ पीला तो कुछ संतरी और गेहरूम रंग से चित्र को दिखाया गया है और जीवन में अनंत क्षितिज तक जाने का रास्ता पीला, सफेद कुछ संतरी, कुछ भुरा रंग दिखाया गया है, जिससे चित्र में प्यार की बात को रखा गया है और आगे बढ़ने की बात कही गई है।

➢ चित्र संख्या 3 :–

इस चित्र में कलाकार ने माँ गंगा के अवतार की बात को रखा है और जो कि Mix Media में बनाया गया है। इसका शीर्षक "गंगा अवतार" रखा गया है। जिसमें माँ गंगा को आकाश से माँ धरती तक आते दिखाया गया है और इस चित्र में रंगों का बहुत सुंदर ढंग से प्रयोग किया गया है। चित्र के सबसे ऊपर के भाग को पीला, फिर मध्य भाग को लाल, सबसे नीचे के भाग को गहरा भूरा दिखाया गया है और चटक पीले और कहीं लाइट रंगों से गंगा की लहरों को दिखाया गया है। पीले और सफेद रंग से गंगा के वेग को दिखाया गया है। इस प्रकार चित्र में कलाकार ने गंगा अवतार को बहुत सुंदर ढंग से दिखाया गया है।

➢ चित्र संख्या 4 :–

हिम चटर्जी ने चित्र में नीले रंग का बहुत सुंदर पिघलता हुए असर दिखाया है। यह चित्र एक्रिलिक और तैल रंगों का बहुत सुंदर उपयोग किया है। यह चित्र कैनवास पर बनाया गया है। इस चित्र का साइज एक 1 x 1 फीट रखा गया है। इस चित्र में नीले रंग को पिघलते हुए पहाड़ों के रास्ते बहते हुए दिखाया गया है और कहीं–कहीं पीले, हरे, सफेद व सलेटी रंग का बहुत सुंदर उपयोग किया है। इस प्रकार यह चित्र कलाकार के द्वारा पूरा किया गया है।

➢ चित्र संख्या 5 :–

हिम चटर्जी ने इस चित्र में तैल रंग से कैनवास पर जो स्लेटी व हरे रंग का संगम दिखाया है जो चित्र को देखकर मन खुशी से झूम उठता है। पहाड़ों के बीच से सलेटी मे हरे रंग से राह को दिखाया है। इससे ही जीवन का आनंद मिलता है। इस चित्र में रंगों के माध्यम से पहाड़ों के छोटे बड़े, उतार–चढ़ाव को बड़े ही आनंद के साथ बनाया है।

➢ चित्र संख्या 6 :–

हिम चटर्जी ने इस चित्र में Mixed Media on Canvas पर काम किया है। इस चित्र का साईज 12 x 12 inch का है। हिम चटर्जी ने इस चित्र का शीर्षक "ज्ञान का आनंद ले" रखा है। इस चित्र में संतरी रंग से आकाश को दिखाया है और सफेद रंग से पहाड़ों को दिखाया है, जो बहुत शांत दिखाई दे रहे है। पहाड़ों के नीचे एक साधु जो उन पिघलते हुए पघलते हुए पहाड़ों को आनंद अपने ज्ञान से ले रहा है। इस प्रकार यह इसमें बहुत ज्ञान व आंनद दे रहा है।

➢ चित्र संख्या 7 :–

हिम चटर्जी का यह चित्र बहुत सुंदर दिखाई देता है। इस चित्र को देखकर मोक्ष मार्ग दिखाई पड़ता है। इस चित्र में Oil on Box Canvas का प्रयोग किया गया है। इसका साइज 2 x 2 फिट का है और जो इसका शीर्षक रखा गया है वह है "मोक्ष का मार्ग"। इस चित्र में रंगों का जो तालमेल बनाया गया है वह बहुत सुंदर है, मानो यह मार्ग व रंग अपने और खिंचती दिखाई पड़ती है। रंग में लाल, नीला, बैंगनी रंग से आकाश को दिखाया गया है। पत्थरों का बहुत सुंदर गेट बनाया गया है जिस पर सफेद रंग है व ऊपर से लाल रंग की लालीमा को दिखाया गया है। इस प्रकार इस चित्र को "मोक्ष का मार्ग" कहा गया है।

➢ चित्र संख्या 8 :–

जैसे कि हम हमें पता है कि हिम चटर्जी ने लैंडस्केप पेंटिंग के साथ ड्राइंग भी बहुत सी शृंखला में की है, तो इस प्रकार से ड्राइंग की कई श्रृंखलाओं में से यह भी एक है जो चारकोल और ड्राइंग करना भी बहुत पसंद है। तो इस ड्रॉइंग का शीर्षक "Fellow bufalo" Series पर किया है। इस ड्राइंग में एक व्यक्ति भैंसों को रस्सी के साथ खींच रहा है और अपना पूरा बल लगा रहा है।

चतुर्थ अध्याय

- हिम चटर्जी का भारतीय समकालीन कला में योगदान

हिम चटर्जी का भारतीय समकालीन कला में योगदान

हिम चटर्जी एक भारतीय समकालीन चित्रकार के रूप में अपना अहम स्थान रखते हैं। भारतीय समकालीन कला और उसके विकास में इनकी अहम भूमिका रही है, क्योंकि समकालीन समय में हिम चटर्जी ने चित्रकला को बहुत गहनता से लिया है।

हिम चटर्जी ने भारतीय समकालीन में इस प्रकार से योगदान दिया है– हिम चटर्जी ने कई सार्वजनिक कलाएं स्थापित की हैं, जिनकी संख्या 19 है। हिम चटर्जी एक अच्छे कलाकार के साथ, कलाकार भी हैं। जो 7 परियोजनाएं हैं, 4 बार पैनल बंद कला सलाहकार हैं और 18 बार पुरस्कार और सम्मान मिला है। और 4 बार ग्रहित पद पर हैं, और 29 विश्वविद्यालय के सदस्य हैं, और 9 एकल प्रदर्शनीयां की है। समूह प्रदर्शनीयां 46 हैं, और प्रतिष्ठित निमत्रण 58 है, 78 बार संगोष्ठी और कार्यशाला है। सार्वजनिक कलाओं का भित्ति चित्र 39 है और हिम चटर्जी ने एक शिक्षक के रूप में अच्छा योगदान दिया है।

यह विभिन्न कला महाविद्यालयों में जाकर कला का प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार विद्यार्थियों को प्रेरित कर कला के क्षेत्र को व्यापक बनाने में भी अपना अहम योगदान दे रहे हैं।

उनकी अनेकों कला कार्यशाला में प्रदर्शनीयों, कला शिविरों में सहभागिता रही। अनेकों चित्रकला प्रतियोगिताओं में एक निर्णायक की भूमिका निभा चुके हैं। उन्होंने राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निर्णायक की भूमिका निभाई है। शिमला विश्वविद्यालय को कला के स्तर पर बहुत सारी उपलब्धियां दिलाई हैं। हिम चटर्जी ने भित्ति चित्र में भी बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। हिम चटर्जी ने पेंटिंग माध्यम में लैंडस्केप को नए तरीके से बना कर एक नया योगदान दिया है।

हिम चटर्जी ने कला जगत में एस.ए.फ को लाकर एक नया योगदान दिया, जिसकी वजह से हमें बंगाल स्कूल के बारे कई नई बातों का पता चला। जिसकी वजह हममें रविंद्रनाथ टैगोर की पेंटिंग देखने को मिलती है और हिम चटर्जी की एस.ए.एफ में पेंटिंग का इतना बड़ा संग्रह है कि जिसकी वजह से बहुत अच्छा योगदान रहा है।

हिम चटर्जी ने विभिन्न माध्यम जैसे पेंटिंग, भित्ति चित्र, ड्रॉइंग, मूर्तिकला आदि बनाकर कला जगत को बहुत अच्छा योगदान दिया है। कई तरह की पेंटिंग में पहाड़ों में मानव चित्र का उपयोग करके नई तकनीकों का प्रयोग किया है।

हिम चटर्जी का नाम समकालीन चित्रकार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने देश-विदेश में अनेक प्रदर्शनीयां लगाई और कई कलाकारों पर इनके काम का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इन्होंने अपने लैंडस्केप में गतिशील मानव आकृतियों का चित्रण भी किया है। उन्होंने अनेक संख्या में चित्र बनाएं है। वह काफी लंबे समय से लैंडस्केपर काम कर रहे हैं। उन्होंने अनेक प्रयोग किए और कई तकनीक में कार्य किया है। इन्होंने लैंडस्केप के माध्यम से अपने काम को दर्शाया है। इनका मानना

है कि जो लैंडस्केप बनाए हैं, वह कहीं ना कहीं प्रकृति को दिखाती है। विद्यार्थियों को प्रेरित करने के साथ-साथ इन्होंने कला के क्षेत्र में जितने भी व्यक्ति जुड़े हैं, उन सब को प्रेरित कर कला के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः हम कह सकते हैं कि हिम चटर्जी ने कला जगत में बहुत से नए काम किया है और इनकी वजह से बहुत योगदान दिया है।

पंचम अध्याय

- हिम चटर्जी के साथ साक्षात्कार

हिम चटर्जी के साथ साक्षात्कार

प्रश्न 01 :- आप लघु शोध से क्या समझते हैं ?

उत्तर :- लघु शोध में पहले आप का टाइटल फाइनल होना चाहिए कि आप उसमें डैजिटेशन लिखना या लिखना चाहते हैं। किताब में सबसे पहले इफेक्ट पड़ता है कि कवर क्या है, उससे ही आपका पता चलता है कि अंदर क्या लिखा है। पहले पेज में हिम चटर्जी का कला संसार में एक टाइटल देने की कोशिश कर रही हूं, जैसे कि बहुत सारे केस में यह होता है जैसे कि कोई भी कलाकार का नाम या पता है जैसे श्याम शर्मा। जीवन और कला यात्रा है तो आपको पहले तो टाइटल ढूंढो, बड़े सारे आपको टाइटल मिलेंगे जो कि किसी के नाम के साथ जुड़ा होता है जैसे कि यहां पर शिव सिंह का प्रेक्षा है, अब तो वह रहे भी नहीं रहे हैं। चंडीगढ़ में एक जितने भी राउंड ऑफ सक्लपचर (मूर्तिकला) बने हैं वे सिर्फ श्याम सिंह जी के लगे हुए हैं। वो प्रोफेसर थे, होम साइंस में और पंजाब के सबसे बड़े सक्लपचर में गिने जाते हैं, शायद सबसे नंबर वन हो।

सबसे पहले आपको अपना टाइटल फ्रिज करना पड़ेगा, उसके बाद जैसे कि आपने इसमें लिखा है
आपने सबसे पहले आपने प्राथक्कन बनाया है, इसे कहते हैं फिर प्रिफेस । प्रिफेस में आपने यह बताना
है प्रोजेक्ट में क्या लिया जाए जाए है। एज ऐ टीचर मैं बता देता हूं, चार पांच प्रश्नों के उत्तर देने
होते हैं। ऐसे वह प्रश्न जो इस से रिलेटेड है। जैसे हम इंग्लिश में कहते हैं (फोर, फाइव, डबलू) For,
from, W, Who, When, Where, What ये यह करना है। आपने उन चीजों को कब किया, क्यों किया,
कैसे किया, इन प्रश्नों में इसके उत्तर होने चाहिए। अगर प्रिफेस में ये सब ठीक है, तभी आप इन प्रश्नों
के उत्तर दे पाओगे। तब आपका सारे का सारा उसका जो निचोड़ है, वह आपका इस प्राथक्कन में
आएगा। फिर प्रथम अध्याय जो आपने लिखा है। प्रथम अध्याय कला और संस्कृति में संबंध भारतीय
कला का इतिहास तो आपने इतना ज्यादा डिटेल नहीं देना है। अगर आप इस अध्याय को देखोगे तो
कला और संस्कृति में संबंध, तो क्या करते हैं टूडेंट ऑलमोस्ट कॉपी करते हैं, जो बना होता है पहलेसे
है किताबों का, सेम टू सेम उसे डाल देते हैं , जिससे कि इस से कोई संबंध नहीं बन पाता।

प्रश्न 02 :- सर आप अपने घर पर कला के माहौल के बारे में बताएं ?

उत्तर :- हमारे घर का माहौल बहुत ही अच्छा था। जैसे कि कोई भी बच्चा जब अपनी आंखें खोलता
है तो सबसे पहले अपने माता–पिता को देखता है। अपने आसपास देखता है। तो थोड़ी बहुत समझ
आनी शुरू हो जाती है। जब तब आंख खुल कर थोड़ा समझने की कोशिश की, तो अपने पिता को
पेंटिंग करते देखा है। वह बचपन से ही जब बच्चा 2 साल या 3 साल का तो आंख और कान चालू हो
जाते हैं। क्योंकि माता (मदर) गाना गाती थी, और पिता (फादर) रेडियो के दूरदर्शन में गाती थी, क्योंकि
उस समय एलपीच थे, वह भी काले काले रंग के रिकॉर्डर होते थे। वह भी एचवी वेल्वन सिंगर घर में
विद्यमान होगा और तो ना चाहते हुए भी उसमें ट्रेनिंग बच्चों में हो जाती है। जैसे कि बिजनस के घर में
सारा दिन बिजनेस की बातें होती हैं, पैसे के लेनदेन की बातें होती हैं। इसलिए हमारे घर में
सारा दिन आर्ट की बातें होती रहती हैं।

प्रश्न 03 :- आपकी कला शिक्षा कैसे शुरू हुई ?

उत्तर :- मेरी शिक्षा उसी दिन शुरू हो गई थी, जब आंखों से देखना और कानों से सुनना शुरू किया
था। हमारे घर में ज्यादा से ज्यादा आर्ट की बातें होती हैं। उनसे मिलने के लिए और यह भी शिक्षा थी
और जैसे कि घर की मुर्गी दाल बराबर हमें लगता कुछ नहीं था कि आर्ट है, यह नहीं कि कान भी
कच्चा कर लेते थे, लेकिन सारा समय यार–दोस्त होते थे तो किया। हमने कभी भी अपनी चीजों को
सेव नहीं किया। मैं भागा रहता था, दूसरे सब्जेक्ट में कच्चे किया। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं
कभी आर्ट में आऊंगा। मैटरीक जब मैंने की दसवीं पास की तब जब कॉलेज में गया। इतना पता था

कि मैं मेडिकल लूंगा तो डॉक्टर मना लूंगा और नॉन मेडिकल लूंगा तो इंजीनियर बनूंगा। जो आर्ट लेते हैं वह तो डफर होते हैं। स्कूल के दायरे में ऐसा होता है।

मैंने सिर्फ नॉन मेडिकल ले लिया। मैं तब की बात कर रहा हूं जब हम पास आउट हुए। उस समय ना ही इंटरनेट था। दसवीं मैंनें 1983 में की। उसके बाद कॉलेज में एडमिशन लिया। मेरे पिताजी उस समय कॉलेज में थे एज़ ए टीचर थे। उस समय वह भी कहीं ना कहीं चाहते थे कि मैं आर्ट लू और वह बोल नहीं सकते थे।

मेरे पिताजी का कहना था कि मैं इसके साथ जबरदस्ती भी नहीं कर सकता हूँ। उनके जितने भी रिश्तेदार उन्होंने मेरा – माईल्ड वॉश करना शुरू कर दिया। बेटा तेरे पिता के पास इतना पैसा भी नहीं है इतनी परसेंट आएगी। तभी इंजीनियर बनेगा। हमारे समय में तो नहीं होती थी। जब सीधा दसवीं के बाद कॉलेज जाते थे, तो वहां मेरा माइंड वाश कराया गया। मैं आर्ट में आ गया। ये सब इसलिए ठीक हुआ, साल बाद क्या हुआ कि मेरे पिता मेरे अध्यापक रहे और मैंने एक सब्जेक्ट पेंटिंग ले लिया। बाकी मैंने मैथ एंड इकोनॉमिक्स ली। फिर ग्रेजुएशन पास की। फिर पता है कि ग्रेजुएट करनी थी, कर ली। फिर दिमाग में आया कि एक नई टेक्नोलॉजी आई है एम.बी.एक, में भाग लिया। साथ के साथ पेंटिंग भी घर में चल रही थी। एक चीज जरूर थी कि पिता ने कभी जबरदस्ती नहीं की। जब देखा कि अब एम.बी.ए नहीं हुआ, बहुत लंबी कहानी है कि मैं कैसे वापस आया। फिर यही सोचा कि आर्ट ही करनी है। बाद में मास्टर करने के लिए देहरादून चला गया। एम.ए.फ से पेंटिंग करने के लिए चला गया, तो मैंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। तब यह लक्ष्य बना लिया कि यही करना है। बस फिर तो गोल्ड मेडल, जो–जो अचीवमेंट लेनी थी, वह लेता चला गया।

प्रश्न 04 :– सर आपको लेकर आपके पिताजी ने बरगद के पेड़ का उदाहरण क्यों दिया था ?

उत्तर : मेरे पिताजी का मानना था कि किसी भी बड़े बरगद के पेड़ के नीचे पौधा नहीं पनपता। तो वह हमेशा मुझे अपने से दूर रखते थे। वे इतने बड़े थे कि उनको पता था कि वह मेरी छाया में रहा तो कभी भी अलग से खड़ा नहीं होगा पाएगा। पेड़ के नीचे नहीं पनपेगा, वही रह जाएगा। तो वह चीजें आज हमें समझ आती हैं। उनकी वह कहावत अब समझ आती है।

प्रश्न 05 :– आप का एस.ए.फ. के साथ क्या अनुभव रहा ?

उत्तर :– S.A.F. "सुनत कला फाउंडेशन" 2008 में स्थापित हुई। भारत के महान कलाकार संग्रह कला निवास का घर है। इस गैलरी में देखोगे तो मेरे अलग काम है और मेरे पिताजी के अलग। यहां पर बंगाल स्कूल का भी निचोड़ है, (लिटरेजर है, इंडिया का), जो मेरे पास अभी भी है। जिसकी वजह से मैंने जंगल के बीचो बीच यह गैलरी बनाई। इसे देखने दुनिया भर के लोग देखने आते हैं। कल 3 घंटे

जतिन दास जी यहीं पर थे। आप जतिन दास जी को जानते होंगें बहुत फेमस है। 7:00 बजे से लेकर रात बजे तक यहीं थे। तो यह एक कहानी है जो कि सनत कला फाउंडेशन से जुड़ती है।

प्रश्न 06 :– आपका बंगाल स्कूल से क्या संबंध रहा है ?

उत्तर :– मेरे पिताजी बंगाल स्कूल के लास्ट स्टूडेंट थे। वह बहुत अच्छे पेंटर थे। बंगाल स्कूल के इतिहास में बहुत बड़ा नाम आता है। इतिहास पढ़ोगे तो उसमें अजीत कुमार हलदर के मानक पुत्र थे, मानक की गोद लिया हुआ। मैं उनका पोता हूं। जिन्होंने अजंता के बाग बजमी की कॉपी की थी। शांति निकेतन के वह पहले प्रधानाचार्य थे, तो मेरा इतिहास वहां से चला है और अवनींद्र नाथ टैगोर के भांजे हैं, बहन के बेटे हैं। मेरे पिताजी उनके घर में 14 साल थे। मेरे पिताजी को उन्होंने ही यहां भेजा था। 1960 में आर्ट करने के लिए, जैसे कि उनके गुरु ने अवनींद्र नाथ टैगोर ने अजीत कुमार हलदर को लखनऊ भेजा था। आर्ट स्पीट करने के लिए नेशनल स्पीट करने के लिए, उन्होंने अपने शिष्य नंदलाल बोस को शांति निकेतन में रखा और अजीत कुमार हलदर को लखनऊ और फिर इंग्लैंड भेजा और फिर लखनऊ और फिर जयपुर में आर्ट कॉलेज बनाने के लिए भेजा।

आर्ट कॉलेज उन्होंने वहां बनाया। असित कुमार हलदर ने मेरे पिताजी को गोद लिया। 13 साल की उम्र में। फिर 14 साल सिखाया पेंटिंग में। फिर उन्होंने वहां से हिमाचल और पंजाब में आर्ट स्पीट करने के लिए भेजा गया।

प्रश्न 07 :– सर आपके पिताजी वहां से क्यों और कब आए ?

उत्तर :– मेरे पिताजी वहां आए नहीं थे, भेजे गए थे। मेरे पिताजी 1960 में यहां आ गए थे और मेरे पिताजी को (मार के) डांट के भेजा गया था, कि तूने गुरु दक्षिणा नहीं दी। तुम यहां नहीं रहोगे। तुम पहाड़ में जाकर तपस्या करेगा। तो वह शिमला चले गए।

प्रश्न 08 :– आपने हिमालय को ही क्यों चुना ?

उत्तर :– जब मेरे पिताजी को यहां भेजा गया था, तो हिमाचल से उनको इतना प्यार हुआ कि पहाड़ों से इतना लगाव हुआ तो मेरे पिताजी हिमालय पेंट शुरू किया। मेरा नाम हिम रखा। हिम का मतलब बर्फ, हिमालय का मतलब घर बर्फ का बना घर। हिमालय बना तो मेरा नाम बर्फ। इसलिए मेरा नाम हिम मैं रखा, तो पार्वती हिमालय की है तो इसलिए मेरी बहन का नाम हिमा रखा। हिम पार्वती का नाम है। इन्हीं से नाम रखा तो कहानी यहां शुरू होती है सब। फिर मेरे पिताजी नाहन चले गए। वहां मैं और मेरी बहन पैदा हुए।

प्रश्न 09 :– आप की कला यात्रा का अनुभव कैसा रहा ?

प्रश्न :– कला यात्रा में आप कह सकते हो कि मेरी "ब्लू सिरज" की ड्राइंग बड़ी फेमस रही है, जो इसकी बड़ी लंबी कहानी है। मैंने लैंडस्केप भी किए हैं और अलग–अलग जगह की पेंटिंग की हुई है और मैं सीरीज में काम करता हूं। गैलरी फाउंडेशन, यह मेरा नया काम है, जो दिल्ली की दिल्ली में 10 काम किए हुए हैं। 28 को मेरा शो है तो अलग–अलग फेस में। इसमें अलग–अलग काम किए हैं इसके अलावा पीछे तकरीबन 20 सालों से या 25 सालों से पब्लिक आर्ट में हूं कि वह आर्ट जो लोगों के लिए है, वह कला जो हम दूसरों के लिए करते हैं, मैंने जो अभी पेंटिंग की है, वह पब्लिक के लिए की है, कला की है, जो कि मैंने समाज के लिए की है।

प्रश्न 10 :– सर आपका म्यूरल से क्या अनुभव रहा ?

उत्तर :– मेरा अनुभव म्यूरल को लेकर, मेरा अनुभव यह रहा कि एक डैडिटेशन कंपलीट कर सकते हैं, जिसमें कि मेरे म्यूरलस ही 200 से 300 मेरे म्यूरलस ही हैं। कई म्यूरलस चल रहे हैं और जैसे कोटिंग में पब्लिश हुए, और शिमला में भी पब्लिश हुए हैं, और जो दिल्ली में पब्लिश हुआ, जिसका इनोगरेशन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। जो कि सबसे बड़ा म्यूरलस नई दिल्ली में इंटरनेशनल एयरपोर्ट कॉरिडोर में 28,991 वर्गमीटर क्षेत्र में एक गिल्ली म्यूरल बना जो कि वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है। वर्ल्ड रिकॉर्ड बुक में दर्ज है। जो वर्ल्ड की नंबर वन बुक है।

अभी भी मेरे म्यूरल हैं, अभी जब आपने एंटर किया था, शिमला में एक वाईट गेट होगा, अभी कल मैंने इंस्टॉल (लॉन्च) किया है, ऐसे तीन गेट इंस्टॉल हुए हैं। शिमला में एंट्री करते हुए तो आप हेरिटेज साइड में म्यूरल आया होगा टोल से पहले, वह मेरा है, तो ऐसे बड़े–बड़े म्यूरल हैं, जो मैंने बड़े–बड़े बनाए हैं और एक म्यूरल तो द्वारिका में चल रहा है।

प्रश्न 11 :– समकालीन आर्ट में आपके साथ किन कलाकारों ने काम किया ?

उत्तर :– इन लोगों का समकालीन में बहुत बड़ा योगदान है जैसे कि – जतिनदास, श्याम शर्मा, शिव सिंह, हेमंत त्रिवेदी, विजय डोरे, मदनलाल। इन्होंने हिम चटर्जी के साथ समकालीन में काम किया है और समकालीन कलाकार जैसे – कालीचरण गुप्ता, राम निरंजन और हेम चटर्जी दोनों बहुत अच्छे पेंटर हैं। प्रिंटमेकर – डॉक्टर राकेश बनी, और मूर्तिकला – सुबोध गुप्ता ।

प्रश्न 12 :– आप कला के बारे में क्या समझते हैं ?

उत्तर :– कला ने प्राचीन काल में हमारे समय को अपने अंदर समेटा हुआ है। आज भी बहुत सारे कलाकार अपनी अपनी जगह पर अपने अपने समय को बांध रहे हैं। अपनी कला के साथ ही जी रहे हैं। इसमें हर कलाकार जो है, उसकी अपनी शैली और अपना समय को बांधकर रखना अलग अलग होता है, चाहे तो आप हेमन द्विवेदी को उदयपुर में देख लो, रामनिरंजन को कुरुक्षेत्र में देख लो, विजय

ताजमहल को आगरा में देख लो, हैदराबाद में चरमिनार को देख लो, कि सारे के सारे अलग–अलग कलाकार समकालीन में अलग–अलग स्टाइल से काम करते हैं।

एक कलाकार जो होता है वह यह कोशिश में रहता है कि उसकी एक अपनी भाषा हो, अपना स्टाइल हो। आप कभी भी कला के क्षेत्र में आते हैं आप किसी और भाषा नहीं बोलते हैं। आप अपनी भाषा बोलते हैं और आपके अपने शब्द होते हैं, आपकी अपनी फीलिंग होती है और आपके अपने एक्सपेंसे होते हैं। आप किसी भी की कॉपी नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न 13 :– हिम चटर्जी कला की किस शैली के लिए जाने जाते हैं ?

उत्तर :– हिम चटर्जी ब्रश के साथ अपने मास्टर स्ट्रोक और भित्ति चित्र रेखा चित्र और रेखा चित्र में अपनी विशेषज्ञता के लिए जाने जाते हैं।

वे कैनवस और पैन ड्राइंग पर अपने अमूर्त परिदृश्यों के लिए भी जाने जाते हैं।

प्रश्न 14 :– आपके किन किन जगहों पर प्रदर्शनयाँ या शो हुए हैं ?

उत्तर :– मेरे इन वर्षों में उनकी समूह शो 33 व प्रदर्शनीयाँ 35 की है। जैसे कि दिल्ली, चंडीगढ़, पठानकोट, पंजाब, अलीगढ़, मुस्लिम यूनिवर्सिटी, वाइट रोज केरल, जालंधर, कोलकाता, शिमला, मेरठ, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़, लखनऊ, धर्मशाला।

एकल प्रदर्शनीयाँ – कुल्लू, शिमला, कोलकाता, उदयपुर, अजमेर, जयपुर, चंडीगढ़ और भी उन्होंने 16 समूह शो किये थे।

प्रश्न 15 :– शिखर सम्मान पुरस्कार क्या है ? यह हिम चटर्जी को कब और क्यों दिया गया ?

उत्तर :– शिखर सम्मान पुरस्कार कला, संस्कृति और भाषा को बढ़ावा देने के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार है। यह मध्य प्रदेश सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। यह पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण योगदान के लिए व्यक्तियों को भी दिया गया है। हिम चटर्जी को 2016 में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा दृश्य कला में उनके योगदान के लिए शिखर सम्मान में सम्मानित किया गया था।

उपसंहार

हिम चटर्जी जैसे समर्पित कलाकार कभी–कभी इस दुनिया में जन्म लेते हैं, या यूं कहें कि अवतार लेते हैं, तो गलत न होगा। वह शीर्ष ख्याति के कलाकार होने पर भी बिल्कुल सादे हैं। कला जगत में उनकी भूमिका एक मील के पत्थर की तरह बनी रहेगी।

बेशक हिम चटर्जी के चित्र व कविताओं को समझने के लिए हिम चटर्जी के व्यक्तित्व के अलग–अलग रूप मान सकते अन्यथा मूल्यतः तो वह एक चित्रकार ही हैं। अगर हम उनको एक कवि चित्रकार कहें, तो यह कहना बिल्कुल भी गलत न होगा। उनकी कविताएं देखें तो ऐसे लगता है मानव शब्द चित्रित कर दिए हैं। बुनियादी तौर पर वे एक चित्रकार हैं और बात करते वक्त वह शब्दों के भी चित्र बना देते हैं।

हिम चटर्जी ने इस बात पर भी जोर दिया है कि एक कलाकार के लिए संवेदनशील होना बहुत आवश्यक है। जो दूसरों के दुख को देख कर दुखी हो और सुख में मुस्कुराएं वही एक संपूर्ण कलाकार है। उनका मानना है कि कैनवस पर जो कुछ भी हम बनाते हैं, वह हमारे भावों की अभिव्यक्ति होती है। इन्होंने कभी भी बंधनों में बंद कर कार्य नहीं किया। ये हमेशा स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं और जैसे कि आजकल के कलाकारों में पैसे की होड़ लगी है, हिम चटर्जी ने कभी भी ऐसा कुछ नहीं किया। वह हमेशा आनंद एवं संतुष्टि के लिए चित्रकारी करते हैं, ना कि पैसे के लिए। वे हमेशा दूसरों के हित की बात सोचते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने 'आर्ट' सूत्रा के नाम से ऑनलाइन आर्ट गैलरी बनाई जिसमें उन्होंने सजीव कार्य करते हुए देखा जा सकता है। उन्होंने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है। इनकी अपनी खुद की शैली है, जिसमें वह कार्य करते हैं। इनकी अधिकतर कलाकृतियों में गतिशील मानव आकृतियां होती हैं, जो किसी न किसी खोज में रहती हैं। यह इनके चंचल मन को प्रदर्शित करती हैं और इनकी बचपन की घटनाओं से जुड़ी हैं।

हिम चटर्जी के कला कार्य पर शोध कर के अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि हिम चटर्जी ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने कला जगत में अपनी अलग पहचान बनाई। उनके कार्य करने का तरीका बहुत अनोखा है। इनकी रचनाओं को देखने से पता चलता है कि वह स्वतंत्र होकर कार्य करना पसंद करते हैं। प्रकृति की गोद में रहकर कार्य करना उन्हें बेहद पसंद है। कला के क्षेत्र तथा अध्यापन के क्षेत्र में उनके अनुभव के कारण कला तथा दर्शन के प्रति उनके विचार अत्यंत स्पष्ट हैं। उनके पास मार्गदर्शन के लिए आए छात्र सदैव ही उनसे लाभ वंचित होते हैं।

चित्रकार होने के साथ एक अच्छे कवि भी हैं। हिम चटर्जी सृजनात्मक कलाकृतियों का निर्माण कर चुके हैं और निरंतर सृजन कर रहे हैं। उन्होंने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है। उन्होंने कई श्रृंखलाओं को आधार बनाकर काफी कार्य किया है। तथा निरंतर इस प्रयास में हैं कि इसमें आगे भी और कुछ नवीनतम लाई जा सके। उनकी अनेकों कला कार्यशालों, प्रदर्शनीयों, शिविरों में सहभागिता

है। अनेकों चित्रकला प्रतियोगिताओं में वह निर्णायक की भूमिका निभा चुके हैं। तथा वर्तमान में भी
क्षेत्र में सक्रिय हैं। कला जगत में रहते हुए हिम चटर्जी ने इतना कार्य किया है और अभी भी कर
है कि भावी कलाकारों के लिए वह निश्चय ही मार्गदर्शक बनेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अशोक कला सौंदर्य और समीक्षा शास्त्र पृ सं. 34
- क्षीरेश्वर डॉ. प्रकाश, शर्मा डॉ. नुपुर, कला दर्शन Publishing ISBN- 9788182832060, प्रथम संस्करण 2008
- चतुर्वेदी डॉ. ममता, समकालीन भारतीय कला, Publishing ISBN- 9788713784712, प्रथम संस्करण 2008
- राम विरंजन, समकालीन भारतीय कला , Publishing ISBN- 81867240712, प्रथम संस्करण 2003
- खन्ना प्राण नाथ, भारत की समकालीन कला, Publishing ISBN- 788123748173, प्रथम संस्करण 2006
- शर्मा लोकेश चन्द्र, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, Publishing ISBN- 9788182830982 प्रथम संस्करण 1970
- भारतीय कला का इतिहास, Publishing ISBN- 9789351550289
- रवि. सारस्वतकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, Publishing ISBN- 97871377411, संत्रहवा संस्करण 2009
- रवि. सारस्वतकर, कला के अन्तदर्शन तहास, Publishing ISBN- 97871376865, द्वितीय संस्करण 1995
- सोनवानी डॉ. प्रेमचन्द, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, Publishing ISBN- 8180971273, पहला संस्करण 2009

Web Site:

- https://www.himchattarjee.in
- https://sanat.in

Youtube:

- https://me//imagetoday/in
- https://www.youtube.com/channel/ucdz5
- https://www.youtube.com/@anuroopchattergee1746
- https://www.yuoutube.com/@chattergeechattergee.5065
- https://www.youtube.com/@pratibhaspandansociietyshim8491

News Paper:

- m.tims of india.com/city/
- https://inkd.in/dands.puh
- https://hpuniv.ag.in

चित्र सूची

चित्र संख्या		शीर्षक		माध्यम
01	–	मूक आर्शीवाद	–	एकेलिक और तेल रंग और कैनवास
02	–	जीवन के अन्त क्षितिज	–	तेल रंग और कैनवास
03	–	गंगा अवतार	–	मिक्स मीडिया पेंटिंग
04	–	पिघला हुआ नीला	–	एकेलिक और तेल रंग और कैनवास
05	–	ग्रे से हरा	–	तैल और कैनवास
06	–	ज्ञान का आनंद ले	–	मिक्स मीडिया और कैनवास
07	–	मोक्ष का द्वार	–	तैल और कैनवास
08	–	"Fellow buffalo" Series	–	चारकोल ड्राईंग
09	–	भेस श्रृखला	–	चारकोल ड्राईंग
10	–	भेस श्रृखला	–	चारकोल ड्राईंग
11	–	भेस श्रृखला	–	चारकोल ड्राईंग
12	–	भेस श्रृखला	–	चारकोल ड्राईंग
13	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और कैनवास
14	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और कैनवास
15	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और कैनवास
16	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और कैनवास
17	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और कैनवास
18	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और कैनवास
19	–	अनटाइटल	–	तैल रंग और कैनवास
20	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और तैल रंग और कैनवास
21	–	अनटाइटल	–	तैल रंग और कैनवास
22	–	अनटाइटल	–	एकेलिक और तैल रंग और कैनवास
23	–	अनटाइटल	–	तैल रंग और कैनवास
24	–	अनटाइटल	–	तैल रंग और कैनवास
25	–	अनटाइटल	–	तैल रंग और कैनवास

मूक आर्शीवाद

एकेलिक और तेल रंग और कैनवास

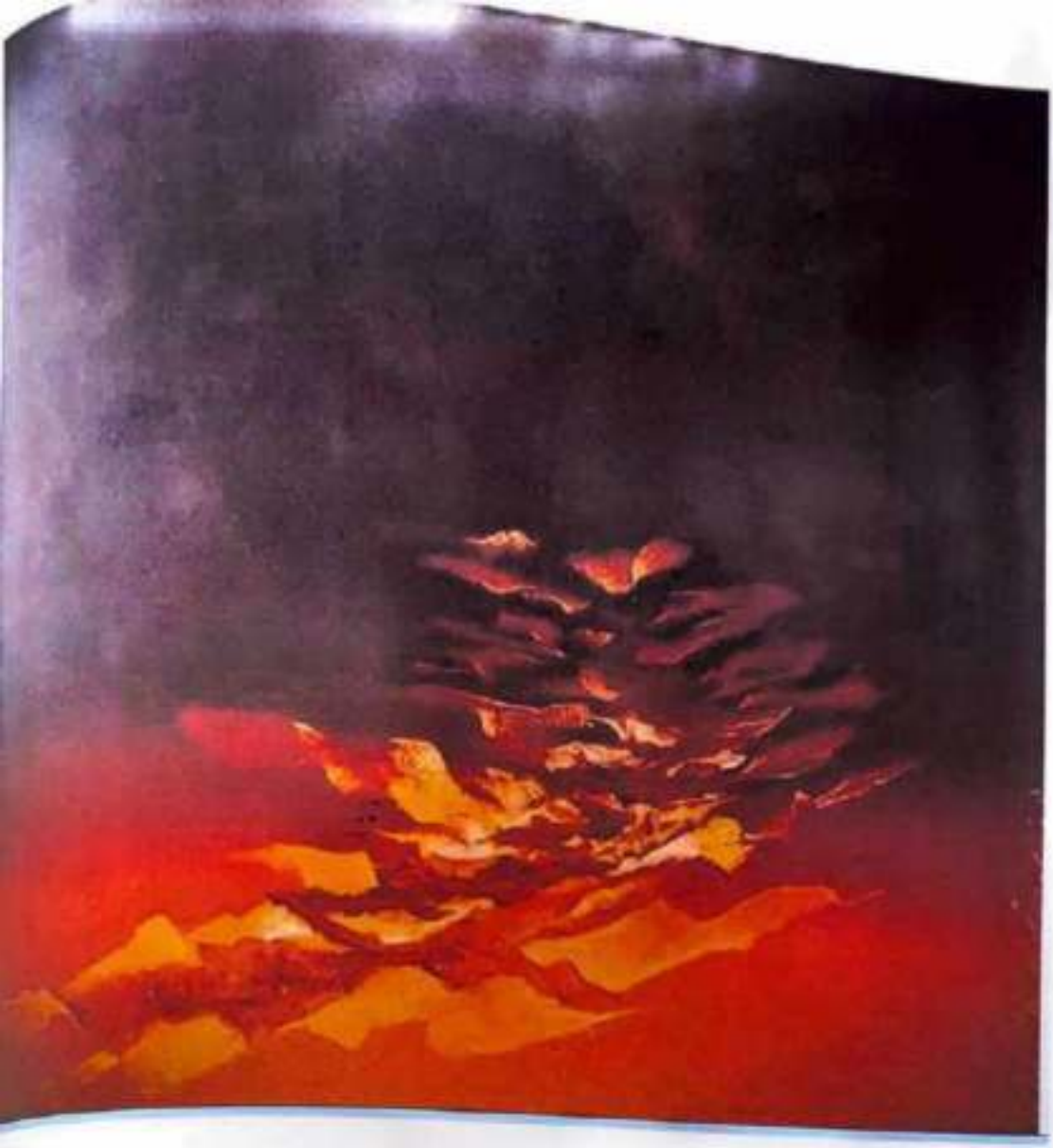

जीवन के अन्त क्षितिज

तेल रंग और कैनवास

गंगा अवतार

मिक्स मीडिया पेंटिंग

पिघला हुआ नीला

एकेलिक और तेल रंग और कैनवास

ग्रे से हरा

तैल और कैनवास

ज्ञान का आनंद ले

मिक्स मीडिया और कैनवास

मोक्ष का द्वार

तैल और कैनवास

"Fellow buffalo" Series

चारकोल ड्राईंग

भैंस शृंखला
चारकोल ड्रॉइंग

भैस श्रृखला

चारकोल ड्रांईग

भेस शृंखला
चारकोल ड्रॉईंग

मेस शृंखला
चारकोल ड्रॉईंग

अनटाइटल

एकेलिक और कैनवास

अनटाइटल

एकेलिक और कैनवास

अनटाइटल

एकेलिक और कैनवास

अनटाइटल

एकेलिक और कैनवास

अनटाइटल

एकेलिक और कैनवास

अनटाइटल

एक्रेलिक और कैनवास

अनटाइटल

एकेलिक और कैनवास

अनटाइटल

एकेलिक और तैल रंग और कैनवास

अनटाइटल

तैल रंग और कैनवास

अनटाइटल

एकेलिक और तैल रंग और कैनवास

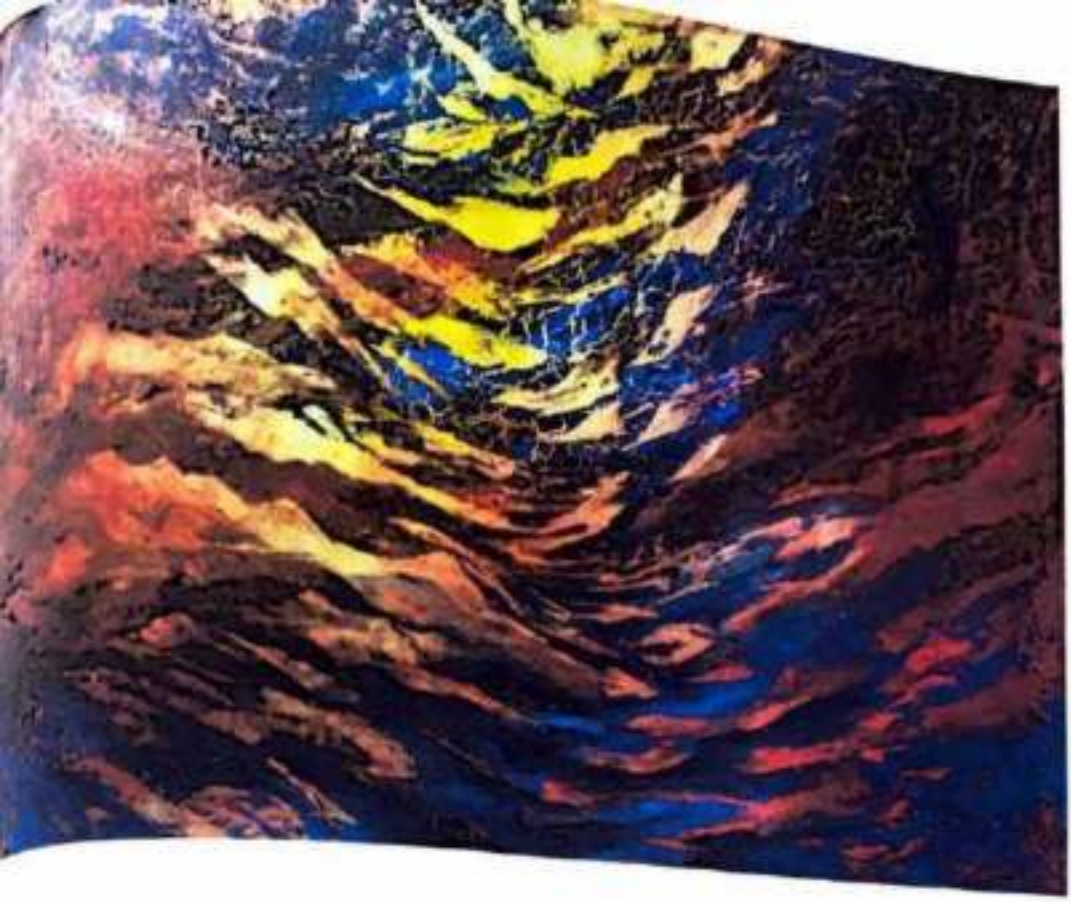

अनटाइटल

तैल रंग और कैनवास

अनटाइटल

तैल रंग और कैनवास

अनटाइटल

तैल रंग और कैनवास

"कला के संदर्भ में वस्त्र छपाई"

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

Examined
01/06/2023

शोधार्थी
रीना रानी
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

निर्देशिका
किरण खेवरिया

विभागाध्यक्षा
श्रीमती संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा०)

Estd. 1968

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्डा)

2022–2023

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा०)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि रीना रानी, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **"कला के संदर्भ में वस्त्र छपाई"** शीषर्क पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

संतोष

एसो. प्रोफेसर

दिनांक : 01/06/2023

श्रीमती संतोष

प्रमाण पत्र

मैं रीना रानी यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध **"कला के संदर्भ में वस्त्र छपाई"** मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नही किया गया है।

यह अप्रकाशित कृति है। लेखन के कम में प्रस्तुत आवश्यक सामग्री निदर्शित कर दी गई है।

Kiran

निर्देशिका

श्रीमती किरण खेवरिया

Reena Rani

शोधकर्त्री

रीना रानी

Roll. No -

आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा०)
कुरुक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि रीना रानी, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **"कला के संदर्भ में वस्त्र छपाई"** शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

दिनांक: 1/6/23

प्राचार्य
डॉ. श्रीमती आरती त्रेहन

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	पृष्ठ संख्या
आभार	
प्रथम अध्यायः परिचय	01 – 07
– कला व वस्त्र का संबंध	
द्वितीय अध्याय :	08 – 25
– वस्त्र का इतिहास	
– प्रसिद्ध वस्त्र छपाई उद्योग निर्माण	
तृतीय अध्यायः वस्त्र उत्पादन का संक्षिप्त विवरण	26 –43
– वस्त्र का निर्माण	
– वस्त्र छपाई की सामग्री	
– वस्त्र छपाई की तकनीक	
चतुर्थ अध्यायः	44 – 54
– शहरों में वस्त्र उद्योग	
– उद्योगों में स्व–स्वेंक्षण	
– उपसंहार	55 – 55
– संदर्भ ग्रंथ सूची	56 – 56
– चित्र संग्रह सूची	57 – 57
– चित्र सूची	58 – 75

प्राक्कथन

कला के संदर्भ में वस्त्र छपाई का संक्षिप्त वर्णन किया है। कला एक कौशल है, कला एक तकनीक है, कला एक ज्ञान है, कला एक शिल्प है, कला अनुकृति है, कला कल्पना है, कला क्रीड़ा है, कला एक उड़ान है, कला सोच है, कितने ही प्रश्न उठते हैं, मानव के जेहन में। इन्हीं का निवारण छिपा है कला को (आर्ट) ART कहते हैं। इटली में (ले – आर्ट) 'LAY ART' भाषा में आ शब्द से हुआ है।

वस्त्र छपाई और प्रिंटिंग भारत की सबसे पुरानी या प्राचीन कला में से एक है, जो हर छोटे शहर में विभिन्न पारंपरिक स्पर्श के साथ पाई जाती है। वस्त्रों के ऊपर निश्चित पैटर्न या डिजाइन के अनुसार रंग चढ़ाने की प्रक्रिया को वस्त्रों की छपाई कहते हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान इसकी शुरुआत एक औद्योगिक प्रक्रिया के रूप में हुई जिसका इस्तेमाल मुख्य रूप से झंडे और बैनर छापने के लिए किया जाता था। वस्त्रों पर डिजाइन बनाना, सजावट की आवश्यकता को पूरा करने का तरीका है, जो कि आदिम लोगों के बीच भी मौजूद था। जैसे–जैसे यह कला विकसित हुई और विभिन्न विधियों के साथ अधिक से अधिक उपयोग की जाने लगी।

- प्रथम अध्याय में परिचय "कला व वस्त्र का संबंध" के बारे में चर्चा की गई है।
- द्वितीय अध्याय में "वस्त्र का इतिहास" से संबंधित है प्रसिद्ध वस्त्र छपाई उद्योग निर्माण
- तीसरे अध्याय में वस्त्र का निर्माण "छपाई की सामग्री" एवं 'वस्त्र छपाई की तकनीक' का वर्णन किया गया है।
- चतुर्थ अध्याय में, "शहरों में वस्त्र उद्योग व उद्योगों में स्व–सर्वेक्षण" का वर्णन किया गया है।
- अंत में उपसंहार का वर्णन है।

वस्त्र छपाई में महिलाओं का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा श्रमिकों का भी बहुत महत्व रहा है। महिलाएं वह हैं जिसके चारों और परिवार, समाज और पूरा समुदाय चलता है। शिक्षा के प्रसार प्रौद्योगिकी की उन्नति और शहरीकरण ने भी महिलाओं में पुरुषों के बराबर शिक्षा प्राप्त करने और परिवार की आय को पूरा करने के लिए सामाजिक जागृति पैदा की है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ सूची और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध प्रबंध में मैंने वस्त्र छपाई की महत्वता को समझने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को बड़ी ही सावधानी पूर्वक करने की कोशिश की गई है, फिर भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करें। इस शोध प्रबंधन में जो त्रुटियां रह गई हैं उनके लिए मैं दोषी हूं। अतः इसके लिए विद्वान जनों से क्षमा प्रार्थी भी हूँ।

रीना रानी

शोधकर्त्री

आभार

कला भावनाओं को प्रकट करने का सबसे सरल माध्यम है। इसी कारण मेरी इस विषय के अध्ययन के प्रति अनुराग की भावना प्रकट होती गई। मेरी अभिरुचि व क्षमता के अनुकूल मुझे यह विषय प्रदान किया गया। इसके लिए मैं अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरा यह शोध कार्य संपूर्ण नहीं हो सकता। मैं सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। जिनकी प्रेरणा से मैंने इस कार्य को पूरा किया है।

सर्वप्रथम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित "आर्य कन्या महाविद्यालय", शाहबाद मारकंडा, के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया।

इसके साथ – साथ में अपने परिवारजनों का भी ह्रदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही में इस शोध कार्य को संपूर्ण करने के समक्ष में पाई।

इसके साथ मैं अपने गुरु आदरणीय श्री महेश धीमान में आदरणीय सहायक प्रोफेसर श्रीमती किरण खेवरिया के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

अंत में, मैं अपने वर्तमान प्राचार्य महोदय आदरणीय डॉ0. आरती त्रेहन जी का भी आभार प्रकट करती हूँ जो ललित कला विषय को सुचारू रूप से चलाने में ललित कला विभाग का सहयोग कर रही हैं।

मैं अपने सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य संपन्न हो सका। यदि इस लघु – शोध प्रबन्ध से पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी।

शोधकर्त्री

रीना रानी

प्रथम अध्याय

- परिचय
- कला व वस्त्र का संबध

परिचय

कला शब्द आज के समाज के विभिन्न वर्गों में पृथक अर्थों में प्रचलित है। जनसाधारण में कला शब्द को अत्यंत व्यापक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। बल्कि यह कहा जाए कि यह शब्द हमेशा रबर की तरह अपना अर्थ फैलाता चलता है। कला का अर्थ तो अनंत रूप में फैलता ही जा रहा है और कब इस शब्द का अर्थ क्या होगा, कोई नहीं कह सकता। इस शब्द के साथ नए अर्थ जुड़ते ही जा रहे हैं। इसका कारण यही है कि कला खुद कुछ नहीं मानव के हाथ में पड़कर जैसा रूप या अर्थ उसे दिया जाता है, उसे ही ग्रहण कर लेती है।

कला उतने ही प्रगतिशील और विकसित है, जितना आज का मानव। कला मानव की क्रियाओं चेष्टाओं, आकांक्षाओं, अनुभूति, कल्पना, बुद्धि तथा योग्यता का प्रतिफलन है। इसलिए इसे मानव जीवन का दर्पण या प्रतिबिम्ब कहा गया है। कला एक प्रकार की भाषा है। कलाकार अपने भावों को व्यक्त करता है, कला मानव जीवन से उत्पन्न होती है और उसे प्रत्येक रूप से प्रभावित करती है। कला उन सारी बातों का जिवन्त विवरण है जिसे मनुष्य ने देखा है, सोचा है। वह मनुष्य की उस सुसंस्कृत प्रतिक्रिया से उत्पन्न होती है जो उसे पशु सामान्य धरातल से ऊपर उठाकर मनुष्यत्व के महान आसन पर बैठाती है। कला मानव की सहज अभिव्यक्ति है।

हमारे विचारों का एक दृश्य रूप है। वह हमारी कल्पना शक्ति, आदर्श – प्रियता एवं सृजन शक्ति से युक्त है। 'कला' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के विद्वानों ने 'कल्' धातु से मानी है, जिसका अर्थ सुंदर, मधुर, कोमल या सुख लाने वाला है। क – कामदेव। कुछ विद्वानों ने इसे क अर्थात् आनंद को लाने वाला माना है। "क – लाति ददातीति कला" शिल्प, हुनर या कार्य कौशल आदि के अर्थ में कला शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम भारत मुनि ने नाट्यशास्त्र में पहली शताब्दी के लगभग हुआ है। क्षेमराज की 'शिवसूत्र विमर्षिणी' में वस्तु कला के लिए कहा गया है।

"कलयति स्वरूप, आवेशयति वस्तूनि वा।"

अर्थात – वस्तु का वह रूप सँवारने वाली विशेषता को कला कहते हैं।

वात्सायन के कामसूत्र तथा शुक्रनाति आदि अन्य ग्रंथों में 64 प्रकार की कलाओं का वर्णन मिलता है। कुछ जैन ग्रंथों में 72 प्रकार की कलाओं का वर्णन मिलता है। प्रारंभ में 13वीं शताब्दी में अंग्रेजी में भी कला शब्द का अर्थ कौशल ही था, परंतु 17वीं शताब्दी में कला का प्रयोग संगीत, मूर्ति, चित्र, नृत्य, काव्य तथा भाषण आदि के लिए हुआ। कला मानव की दिव्य सृजन प्रतिभा का परिणाम है।

"कला मानव – मस्तिष्क की वह क्रिया है जहाँ वह अपने अनुभवों को किन्ही निश्चित कला तत्वों एवं सौंदर्य – सिद्धांतों के आधार पर अभिव्यक्त करता है।

"कला भावों को व्यक्त करने के माध्यम हैं"। कुछ लोग कला को भावों की भाषा कहते हैं। कहा जाता है कि "कला प्रकृति की अनुकृति है"। ऑक्सफोर्ड जूनियर एनसाइक्लोपीडिया में यह बात कही गई है कि यद्यपि कला एक शाश्वत मानव क्रिया है, परंतु इसकी परिभाषा करना दुनिया भर में सबसे कठिन कार्य है।

सभ्यता की शुरुआत के बाद से वस्त्र मनुष्य के जीवन का एक मूलभूत हिस्सा रहा है और उन्हें बनाने के तरीके और सामग्रियों में अत्यधिक विस्तार हुआ है, जबकि वस्त्रों के कार्य समान ही रहे हैं। वस्त्र कला में उन तकनीकों को भी शामिल किया गया है जो वस्त्रों को रंगने और छपाई करने के लिए, वस्त्रों को सजाते या सजाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। वस्त्र या कपड़ा एक मानव – निर्मित चीज है जो प्राकृतिक या कृत्रिम तत्वों के नेटवर्क से निर्मित होती है। भारत में कोरी, बलाई, जुलाहे, मोमिन, खत्री प्रमुख जातियां हैं, जिन्होंने कपड़ा बनाने की कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वस्त्रों के ऊपर निश्चित पैटर्न या डिजाइन के अनुसार रंग चढ़ाने की प्रक्रिया को वस्त्रों की छपाई कहते हैं। एक अच्छी छपाई वह है जिसमें रंग सूत के साथ एकाकार हो जाया जाए ताकि घर्षण से या धुलाई करने पर भी रंग न छूटे। छपाई, रंजन से संबंधित तो है किंतु दिन कार्य है। रंजन की क्रिया में संपूर्ण सूत को एक ही रंग से समान रूप से रंग दिया जाता है, जबकि छपाई की प्रक्रिया में एक से अधिक रंग केवल कुछ चुने हुए स्थानों पर ही लगाए जाते हैं। छपाई की क्रिया में काष्ट के ठप्पे, स्टेसिले, नक्काशी की हुई। धातु की प्लेटें, रोलर या सिल्कस्क्रीन आदि का उपयोग किया जाता है। छपाई में प्रयुक्त रंजक कितने गाढ़े बनाए जाते हैं कि वह सूक्ष्मनलिका – क्रिया द्वारा पसर न सके।

स्क्रीन छपाई को पहले सिल्कस्क्रीनिंग के रूप में जाना जाता था जो छपाई तकनीक को संदर्भित करता है, जो एक तेज धार वाली छवि बनाने के लिए एक स्टैसिल या झरझर कपड़े का उपयोग करता है। आजकल यह वाणिज्यिक मुद्रण और ललित कला दोनों क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय है। इसकी कम लागत और कई माध्यमों पर छपाई करने की क्षमता के कारण इसे डाई उच्च बनाने की क्रिया या इंकजेट छपाई जैसी अन्य प्रक्रियाओं से अधिक पसंद किया जाता है।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इसकी शुरुआत एक औद्योगिक प्रक्रिया के रूप में हुई जिसका इस्तेमाल मुख्य रूप से झंडे और बैनर छापने के लिए किया जाता था। गाय मैक रॉए स्क्रीन छपाई तकनीक के अग्रवी थे। स्क्रीन छपाई का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसमें किसी भी अन्य पारंपरिक

छपाई तकनीकी तुलना में अधिक बहुमुखी प्रतिभा है। पारंपरिक वस्त्र छपाई तकनीकों को मोटे तौर पर चार शैलियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

➢ सीधी छपाई :–

प्रत्यक्ष मुद्रण, जिसमें रंजक युक्त रंग पिगमेंट और कपड़े पर रंग लगाने के लिए आवश्यक पदार्थ या पदार्थ वांछित पैटर्न में मुद्रित होते हैं।

वस्त्र को रंगने से पहले वंछित पैटर्न में रंगबंधन की छपाई रंग केवल वही चिपकता है जहां चुंबक मुद्रित किया गया था।

यूरोप महाद्वीप पर केलिको छपाई के व्यवसायिक महत्व को लगभग तुरंत ही पहचान लिया गया लगता है और इसके परिणाम स्वरुप यह इंग्लैंड की तुलना में वहां बहुत तेजी से फैला और विकसित हुआ। 17वीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों के दौरान और 18वीं शताब्दी के पहले के नए कार्यों को फ्रांस, जर्मनी, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रेलिया में शुरू किया गया था, लेकिन यह केवल 1738 में था कि केलिको छपाई पहली बार स्कॉटलैंड में प्रचलित थी, और 26 साल बाद तक नहीं प्रेस्टन के पास बंबर ब्रिज के मेसर्स क्लेटन ने 1764 में लंकाशायर में पहला छपाई – कार्य स्थापित किया और इस तरह नींव रखी। कपड़ा छपाई और डिजाइनिंग विभिन्न प्रकार के कपड़े बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली प्रसिद्ध पद्धति में से एक है। छपाई की कला में प्रयुक्त होने वाली यह तकनीक बदलते समय के साथ काफी हद तक बदली और विकसित हुई है।

वस्त्रों पर डिजाइन बनाना सजावट की आवश्यकता को पूरा करने का एक तरीका है जो कि आदिम लोगों के बीच भी मौजूद था। जैसे–जैसे यह कला विकसित हुई और विभिन्न विधियों के साथ अधिक से अधिक उपयोग की जाने लगी। 18वीं शताब्दी तक इसे बढ़ावा मिला। कपड़े पर छपाई जो शुरू में ब्रश और ब्लॉक के माध्यम से हाथों से की जाती थी, मशीनें से नहीं की जा सकती थी, क्योंकि छपाई मशीनों का विकास औद्योगिक क्रांति के दौरान हुआ था।

उस समय लोग प्रिंट में रंग जोड़ने के लिए अर्थ पिगमेंट का इस्तेमाल करते थे। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक प्राकृतिक सब्जियों के रंगों का उपयोग किए जाने वाले डिजाइन मुद्रण के लिए रंग बनाने के लिए तम्बाकू के पौधो का पुनरूत्पादन करते हैं। इसमें छपाई के लिए प्रयुक्त डिजाइन हाल के दिन, हालांकि पहले के दिनों से भिन्न है, लेकिन चित्रात्मक डिजाइन बहुत कम दिखाई देते हैं और पुष्प रूपांकनो का उपयोग किया जाता है, लेकिन नए मोड़ पहले से ही धुंधले पैटर्न के साथ दिए गए हैं। ये बदलाव उपभोक्ताओं की बदलती मांगो और यहां तक की छपाई के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बदलती तकनीकों के कारण हैं। छपाई की इन तकनीकों को ग्रामीण कारीगरों द्वारा अपनाई गई ब्लॉक प्रिंटिंग से लेकर ट्रांसफर प्रिंटिंग की नवीनतम तकनीक तक विकसित किया गया है।

कपड़ा कला कला का एक बहुत पुराना रूप है जो पीढ़ियों से चली आ रही है। कपड़ा कला को पौधों, कीड़ों, जानवरों, या अन्य सिंथेटिक सामग्री जैसे स्रोतों से तंतुओं का उपयोग करके कुछ बनाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। कपड़ा कला मानव जीवन की रीढ़ रही है जब से सभ्यता शुरू हुई और कपड़े, टेपेस्ट्री और बहुत कुछ बनाने के लिए इसका इस्तेमाल किया गया। उदाहरण के लिए, वे सभी कपड़े जो आप किसी स्टोर में खरीद सकते हैं, तकनीकी रूप से एक प्रकार की कपड़ा कला है, क्योंकि उपयोग की जाने वाली सामग्री या तो जानवरों या सिंथेटिक स्रोत से आती है।

वस्त्र कला के ये चार मुख्य स्रोत हैं:

- पौधा – कपास, सन, जूट, बांस
- सिंथेटिक – नायलॉन, रेयान, पॉलिएस्टर, एक्रिलिक
- पशु – ऊन, रेशम
- खनिज – फाइबर ग्लास, अभ्रक

पशु, पौधे और खनिज सभी प्राकृतिक स्रोत हैं, जो उन्हें इस तरह से कला के लिए एक स्थायी विकल्प बनाते हैं। कपड़ा कला के उदाहरणों में शामिल हैं: –

सिलाई , बुनना, क्रोशिया , सिलाई , रजाई, प्रसन्न करना, बुनाई।

आप यह भी पाएंगे कि कपड़ा कला किसी भी चीज की तुलना में पैटर्न और आकृतियों पर अधिक केंद्रित है। इसका उपयोग प्रत्येक व्यक्ति के बजाय समग्र रूप से कुछ सुंदर बनाने के लिए किया जाता है।

कपड़ा कला वह कला है जो सजावटी, कलात्मक वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए विभिन्न सामग्रियों और तंतुओं का उपयोग करती है। यह इतिहास में कला के सबसे पुराने रूपों में से एक है और इसने सैकड़ों हजारों वर्षों से व्यावहारिक और सजावटी मानव निर्मित वस्तुओं में भूमिका निभाई है।

प्राचीन वस्त्र कला :–

सबसे पहले, बहुत सारी कपड़ा कला कार्यात्मक थी – लोगों को जीवित रहने और आराम प्रदान करने में मदद करने के लिए कंबल, कपड़े और गलीचा व्यावहारिक वस्तुओं के रूप में उपयोग किया जाता था, जो हमारी कुछ सबसे बुनियादी जरूरतों के लिए महत्वपूर्ण है। वर्षों से, कपड़ा अधिक से अधिक चुनौतीपूर्ण, रोमांचक, उज्ज्वल और कलात्मक बन गया है, और रूप इतिहास के माध्यम से

कलात्मक रचनात्मकता को व्यक्त करने के लिए मनुष्यों के लिए सबसे लोकप्रिय तरीकों में से एक बन गया है।

इतिहासकारों और मानवविज्ञानियों ने 500,000 साल पहले तक कपड़ा कला का पता लगाया है, जिसमें पौधों, फर और अन्य पशु उत्पादों से बनी वस्तुओं की खोज की जा रही है। यह स्पष्ट है कि कपड़ा मानव सभ्यता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और जो कला इससे आती है वह आसपास की सबसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से मूल्यवान कला है।

जैसे–जैसे सभ्यताएँ विकसित हुईं, वस्त्र और कला बनाने के लिए वे जिन सामग्रियों का इस्तेमाल करते थे, वे बदल गए। जानवरों की खाल और फर से बने शुरुआती वस्त्रों से, लोगों ने अंततः जानवरों के रेशों से ऊन बनाने के लिए फेल्टिंग की प्रक्रियाओं का उपयोग करना शुरू कर दिया। इसी से मानव ने बुनाई, बुनाई और धागों के उपयोग की प्रक्रियाओं की खोज की।

यह कपड़ा कला के विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि इन प्रक्रियाओं से आप अधिक जटिल और जटिल कलात्मक पैटर्न बुन सकते हैं, जिसने बड़े पैमाने पर प्रभावित किया कि हम खुद को कैसे अभिव्यक्त करते हैं।

प्राचीन दुनिया से कपड़ा कला का एक विविध इतिहास है। प्रारंभिक इस्लामी सभ्यता में, वस्त्रों ने लक्जरी कला बनाने के लिए जटिल डिजाइन और दुर्लभ और महंगी सामग्रियों के उपयोग के साथ, समाज के ताने–बाने के विकास में एक बड़ी भूमिका निभाई। ओटोमन साम्राज्य में कढ़ाई से लेकर फारसी साम्राज्य में महंगे और शानदार वस्त्रों के उपयोग तक, पूरे ग्रह के प्राचीन साम्राज्यों के लिए भी यही कहा जा सकता है। फारस और तुर्की में भी कपड़ा कला के माध्यम से बहुत सारे कलात्मक कपड़े और सजावटी अंदरूनी भाग बनाए गए थे।

अफ्रीकी महाद्वीप में, विशिष्ट देशों और क्षेत्रों की व्यक्तिगत संस्कृतियों और शैलियों को दर्शाने में कपड़ा कला ने एक बड़ी भूमिका निभाई है। अफ्रीकी कपड़ा कला में पैटर्न, रंगाई, कढ़ाई और बीडवर्क का रचनात्मक उपयोग दुनिया भर में बेहद प्रभावशाली रहा है, जो आज भी समकालीन कला के दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। प्राचीन चीन में रेशम कला का एक इतिहास भी है, जो 3500 ईसा पूर्व तक का है! प्राचीन चीनी कला में बुनाई और कढ़ाई के जटिल उपयोग ने इसे प्राचीन काल में भी दुनिया भर में प्रसिद्ध बना दिया। कपड़ा कला की व्यापक प्रकृति इसकी अंतर्निहित मानवता के बारे में कुछ कहती है, और रंग, पैटर्न और कला को व्यावहारिक उपयोग से परे बनाने के लिए मानव झुकाव के बारे में कुछ कहती है।

एंड नोटस :-

- सिंह डॉ राकेश कुमार, चित्रण के सिद्धान्त, इलाबाद सन् 2015 पृ0 सं 1, 2, 3
- **Neelima Printing and Washing of Textile, Ansari Road Darya Gang, New Delhi, Publishing : ISBN – 97881841112184** पृं सं. 1, 2, 4, 9, 10
- **Tyagi Anita, Textile Design Colours and Textile, New Delhi Publishing, ISBN : 9788184113099,** सन् 2011 पृं स0. 99, 100,101, 102, 103, 104, 105, 1, 2
- **https://www.twinkl.co.in**
- **https://caralinaoneto.com**

द्वितीय अध्याय

- वस्त्र का इतिहास
- प्रद्विस वस्त्र छपाई उद्योग निर्माण

भारत में वस्त्रों की कहानी दुनिया की सबसे पुरानी कहानियों में से एक है तथा प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही है। मध्यपाषाण युग की गुफा चित्रकारियों में कमर परिधानों को दर्शाने वाले उदाहरण मिले हैं, लेकिन वस्त्र के उत्पादन और उद्योग के ठोस साक्ष्य, इतिहासोन्मुख काल यानी तीसरी सहस्त्रावदी ईशा पूर्व से ही दिखाई देना शुरू होते हैं। हड़प्पा और चन्हूदड़ो में मिलने वाला जंगली देसी रेशम कीट प्रजाति का साक्ष्य, मध्य तृतीय सहस्त्रवादी ईसा पूर्व में रेशम के उपयोग का संकेत देता है। दुखद रूप से प्राचीन भारतीय वस्त्र विनिर्माण से संबंधित कोई भी ठोस सबूत नहीं बचा है, लेकिन मूर्त साक्ष्य की यह कमी पुरातात्विक खोज और साहित्यिक संदर्भों की बहुतायत से प्रतिसंतुलित होती है।

मोहनजोदड़ो के स्थल पर हुई खुदाई में, चाँदी के बर्तन पर लिपटे हुए, बुने और मजीठ (एक जड़ी बूटी रंजक) से रंगे हुए, कपास के टुकड़ों के साथ रंजक कुंड की मौजूदगी का पता चलता है। इससे पता चलता है कि यहाँ कपड़े पर पक्का रंग चढ़ाने की प्रक्रिया की उन्नत समझ थी, जिसमें रंगबंधक का उपयोग किया जाता था, जो कि एक कार्बनिक ऑक्साइड होता है, जो रंजक में घुलकर कपड़े के रंग को पक्का कर देता है। इसके अलावा खुदाई से मिली नक्काशी में उकेरी गई एक पत्थर की मूर्ति बहुत ही स्पष्ट रूप से आकृति को रूपकानो वाले कपड़े में लिपटे हुए दर्शाती है। ये दोनों सबूत, प्राचीन भारतीय सभ्यता में विद्यमान एक परिपक्व वस्त्र शिल्पकारिता के स्पष्ट परिसाक्ष्य हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता काल :–

सिंधु घाटी के घरों में तकलियो और तकली चक्रों की खोज ने साबित कर दिया है कि कपास और ऊन की कताई करना बहुत आम बात थी। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, सुरकोतदा और कालीबंगा जैसे सिंधु सभ्यता के स्थलों से पत्थर, चिकनी मिट्टी, धातु, टेराकोटा अथवा लकड़ी के तकली चक्रों के सबसे पुराने नमूने मिले हैं। माना जाता है कि हड़प्पा की वाणिज्यिक फसलों में कपास का प्रमुख स्थान था। पुरातात्विक साक्ष्यों से, हमें हड़प्पा सभ्यता के दौरान पहने जाने वाले वस्त्रों की झलक मिलती है। मातृ – देवी की मूर्तिकाएँ, जो कमर तक नग्न हैं, हमें बताते हैं कि महिलाएं घुटने तक की लंबाई वाले बहुत ही छोटे निचले वस्त्र पहनती थी। मोहनजोदड़ो से प्राप्त, तिपतिया रूपांकन युक्त वस्त्र पहने पुरोहित – नरेश की मूर्ति से ऐसा प्रतीत होता है कि कढ़ाई अथवा बिना कढ़ाई वाला चोगा, बाएं कंधे पर और दाएं हाथ के नीचे पहना जाता था।

हड़प्पा में पाए गए बर्तन के टूटे हुए टुकड़े पर एक व्यक्ति की आकृति, जांघिया अथवा विपकी हुई धोती पहने हुए दिखाई देती है।

प्राचीन भारत में सिलाई की कला भी प्रचलित थी जैसा कि स्थल पर पाई गई सुईयों की संख्या से स्पष्ट है। सिंधु घाटी के प्राचीन स्थलों के पतन के बाद 1000 वर्षों के लिए वस्त्रों के साक्ष्य का अभाव है, लेकिन 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में यूनानी चिकित्सक सीटीयिजन के लेखन में फारसी लोगों के बीच चमकीले रंग के भारतीय वस्त्रों की लोकप्रियता का उल्लेख है, जो दर्शाता है कि सिंधु सभ्यता की अवधि के बाद भी भारतीय कपड़ों का निर्यात जारी रहा।

हमें वैदिक काल 1500 – 800 ईसा पूर्व से कपड़े की सामग्रियों और शैलियों के उद्धरण मिलते हैं जो प्राचीन भारत के वस्त्र इतिहास के विकास को इंगित करते हैं।

ऐसा लगता है कि अच्छे कपड़े पहन कर तैयार होने की सामान्य रिवाज थी और कपड़े विभिन्न रंगों के होते थे और इतिहास में इस समय तक कपड़ों का उपयोग बहुत दृढ़ता से स्थापित हो गया था और ऋग्वेद में कपड़ों के रूपकों का उपयोग भी बहुत बार होता है। छपाई वाले कपड़े का सबसे पहला उद्धरण वैदिक युग के आपस्तम्ब श्रोतसूत्र के चित्रंत से मिलता है। यज्ञोपवित, ब्राह्मणों द्वारा पहना जाना पहने जाने वाला पवित्र धागा, कपास के सूत से बनाया जाता था।

वैदिक काल के बाद, वस्त्र के लिए प्रयोग किए जाने वाले कपड़ों की प्राकृतिक अथवा स्त्रोत के संबंध में, दो अलग–अलग पद्धतियाँ स्थापित हुई। पशु बलि के वैदिक मत का अनुसरण करने वालों ने खाल को कपड़ों का प्रमुख स्त्रोत माना, जबकि अन्य, विशेष रूप से बौद्ध और जैन मत के लोगों ने कपास को मुख्यता दी।

संस्कृत महाकाव्य, महाभारत 400 ईसा पूर्व, 400 ईसवी में, हिमालयी क्षेत्रों के सामंती राजकुमारों द्वारा युधिस्टर के लिए लाए गए उपहारों में, रेशमी कपड़ों का उल्लेख है। ऋग्वेद के बाद से बुनाई के कई उद्धरण पाए जाते हैं। पूर्वत्तर समय से ही महिला बुनकर हुआ करती थी। महाभारत में छपाई वाले कपड़ों का भी उल्लेख है। छपाई वाले कपड़ों के लिए प्रयोग किया जाने वाला प्रचलित शब्द चित्र वस्त्र है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि प्राचीन भारत में कपड़ों पर छपाई भी की जाती थी। महाभारत में 'मणि चीर' का उद्धरण है, जो संभवतः दक्षिण भारतीय कपड़ा था जिसकी किनारियों पर मोतियों को बुना जाता था।

वाल्मीकि की रामायण 5वीं व 6 वीं तीसरी शताब्दी ईस्वी के अनुसार, सीता के वधू साज – समान में ऊनी कपड़े, पशुखाल के कपड़े, कीमती पत्थर, विविध रंगों के महीन रेशमी वस्त्र, राजसी और सजावटी तथा विभिन्न प्रकार के भव्य रथ सम्मिलित थे। महाकाव्यों रामायण और महाभारत, में घूंघट, चोली और शारीरिक कपड़ों का बार–बार उल्लेख किया गया है। शादी के समय दुल्हन के साथ–साथ

दूल्हे द्वारा उपयोग किए जाने वाले ऊपरी और निचले कपड़े हंस रूपकानों से सुसज्जित, रेशमी कपड़े के बने होते थे। रामायण में छपाई वाले कपड़ों के कई उदाहरण हैं। रावण के घर की स्त्रियाँ विभिन्न रंगों के वस्त्र पहनती थी। छपाई वाले कालीन, छपाई वाले कंबल और छपाई वाले कपड़े उपहार के रूप में वितरित किए जाते थे।

लकड़ी के ठप्पे के मुद्रण (प्रिंटिंग) के लिए एक तकनीक है – मुद्रण पाठ, चित्र या पैटर्न के दौरान व्यापक रूप से इस्तेमाल पूर्व एशिया और शायद में होने वाले चीन पर मुद्रण की विधि के रूप प्राचीन काल में वस्त्र और बाद में कागज। कपड़े पर छपाई की एक विधि के रूप में चीन से सबसे पहले जीवित उदाहरण 220 से पहले के हैं।

वस्त्र (कपड़ा) छपाई यूरोप में, इस्लामी दुनिया के माध्यम से, लगभग 12वीं शताब्दी से जानी जाती थी और व्यापक रूप से उपयोग की जाती थी। हालांकि, यूरोपीय रंगों में द्रवीकरण की प्रवृत्ति थी, जिसने मुद्रित पैटर्न के उपयोग को प्रतिबंधित कर दिया। काफी बड़ी और महत्वकांक्षी डिजाइन इस तरह दीवार के पर्दे के रूप में से सजावटी प्रयोजनों के लिए प्रिंट की गई थी।

आदिवासियों की छीपी कला :–

तेज रफ्तार से आगे बढ़ती दुनिया में कितना कुछ पीछे छूट रहा है। इसका हमें एहसास ही नहीं है। सब कुछ पाने की दौड़ में फुर्सत के पल गुम हो गए। मशीनें आई तो हाथ का काम करने वाले पीछे छूटने लगे। ऐसे ही मध्य प्रदेश के सतपुड़ा के जंगलों में रहने वाले 'छीपा' आदिवासियों की नायब कला को सब ने बिसरा दिया।

अंग्रेजी और छपाई ने सदियों से हमारे देश में और विदेशों में भी जगह बनाई हुई है। तरह तरह के कपड़े और किस्म किस्म की छपाई की अपनी दुनिया है, जो कला और व्यवसाय को बड़े जतन से जुड़े हुए हैं।

छपाई का संबंध सिंधु घाटी की सभ्यता से ही पाया जाता है। 'छापा' शब्द उतना ही पुराना है, जितना रंगाई और छपाई का इतिहास। रंगाई और छपाई की कला का जन्म भारत से होकर दुनिया के तमाम देशों तक प्रचलित हुआ। पुरातन समय में सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठा के साथ छीपा शिल्पी न केवल अपनी कला में निखार ला रहे थे, बल्कि अच्छा व्यवसाय भी कर रहे थे।

अपने शानदार अतीत, आर्थिक वैभव और सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ छीपा समुदाय अपनी पारंपरिक हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग की कला को विस्तार देते रहे, पर आजादी के बाद औद्योगिक क्रांति के दौर के साथ आती हुई मशीनों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाने के कारण इस कला को बचाने में असफल रहे।

समय के साथ बढ़ती लागत और बाजार के अभाव में छीपा समुदाय की इस पारंपरिक कला को लगभग 35 वर्ष पूर्व गोंडवाना अंचल से मुक्त कर दिया। परिवार के भरण–पोषण के लिए समुदाय के अधिकतर शिल्पी, रोजी–रोटी के अन्य कामों में लग गए और इस अंचल से जेहन से एक समृद्ध पारंपरिक कला की पहचान ही खो गई। खोए जो खोज लाना, भूले को याद करने वाले लोग अभी संसार में हैं, शायद इसलिए यह दुनिया इतनी सुंदर और रंगीन है।

मौर्य काल :–

मौर्य वंश 322 – 185 ईसा पूर्व के दौरान महिला कपड़ों के साक्ष्य यक्ष की मूर्तियों से उपलब्ध है। प्रजनन के समय प्रतीक उस समय के लोगों का सबसे आम पोशाक अंतरीय था, जो वे कम वस्त्र के रूप में पहनते थे। आम तौर पर कपास, सनी या मलमल से बने होते है और रत्न के साथ सजाए जाते हैं। यह लूपिंग गाँठ में बंधे हुए कमर के केंद्र में लगाया जाता है। एक कपड़ा ट्यूबलर स्कर्ट बनाने के लिये कूल्हे के आसपास लहंगा शैली में कवर किया गया था। कमर के चारों और लपेटे हुए कपड़े पर लटका हुआ कपड़े का एक लंबी टुकड़ा, अंतरीया में लगाया जाता है, जिलसे पेटका कहा जाता है।

मौर्य साम्राज्य में देवियों अक्सर एक कढ़ाई कपड़े कमरबंद पहनने के लिए इस्तेमाल होता है। एक ऊपर वस्त्र के रूप में लोगों का मुख्य भोजन कर लिया था, एक लंबी दुपट्टा अंतर पहनने के तरीके में ही अस्तित्व में था, कभी–कभी एक छोर एक कंधे पर फेंक दिया जाता और कभी–कभी यह कंधों दोनों पर ही लिपटा जाता है।

वस्त्रों में, मुख्य रूप से कपास, रेशम, लिलन, ऊन, मलमल आदि फाइबर के रूप में उपयोग किया जाता है। गहने इस युग में एक विशेष स्थान पर भी चले गए थे।

गुप्त अवधि :–

गुप्ता काल को स्वर्ण युग का नाम दिया गया है। इंडिया 320 ईस्वी से 550 ईसवी तक चली चंद्रगुप्त इस साम्राज्य के संस्थापक थे। सिले वस्त्र तक इस अवधि में केवल बहुत लोकप्रिय हो गए। सिले हुए कपड़े रॉयल्टी का संकेत बन गई महिलाओं द्वारा पहना गया अंतरीया गगरी में बदल गया, जिसमें कई घूमता हुआ प्रभाव उसके कई परतों के ऊंचे हैं। इसलिए नर्तकियों ने इसे बहुत कुछ पहनना चाहा जैसा कि कई लोगों से स्पष्ट है।

गुप्त काल में वस्त्र मुख्य रूप से कट गया था और कपड़ों पर सीधा था। एक लंबी आस्तीन वाली दाढ़ीदार अंगरक्षक प्रतिष्ठित लोगों के लिए रईसों और दरबारियों जैसे मुख्य पोशाक बन गए।

राजा के लिए मुख्य पोशाक सबसे अधिक बार एक 'ब्लू' छपाई पैटर्न वाला ब्लू बारीकी से रेशम अंतरीया बुना था।

गुप्ता अवधि के दौरान, पुरुषों को सुंदर कर्ल के साथ लंबे बाल होते थे और इस शैली को लोकप्रिय रूप से गन्ना कुन्तला शैली के रूप में जाना जाता था। अपने बालों को सजाने के लिए वे कभी-कभी टोपी डालते थे, उनके बालों के आसपास कपड़े का एक बैंड व दूसरी तरफ, महिलाओं ने अपने बालों को शानदार रिंगलेट या एक गहने का बैंड या फूलों का एक कुदाल के साथ सजाते थे।

मुगल काल :-

मुगल वंश में लक्जरी कपड़े शामिल थे, जो कला और कविता में रुचि रखते थे। दोनों पुरुषों और महिलाओं के आभूषण के शौकीन थे। मुगल शाही कपड़े में कई हिस्सों में शामिल थे।

➢ पुरुषो जामा :-

यह मुगल सम्राटों के मुख्य शाही वस्त्र के रूप माना जाता था। यह शरीर के दायी तरफ घुटने की लंबाई तक छिपी स्कर्ट के साथ एक तंग फिटिंग फ्रॉक कोट है।

➢ पटक :-

जामा की कमर के चारों और जोहरी तलवार रखने के लिए प्रयुक्त हुआ। पेटका एक प्रकार का कवच है जो एक अच्छे फाइबर से बनाया गया है। जो हाथ से पेट छपाई या कढ़ाई है।

➢ चोगा :-

ये कढ़ाई, लंबे समय तक लेटे हुए कोट्स हैं, जिन्हें आमतौर पर जाम, अंग्रक्ष और अन्य वस्त्रों पर पहना जाता है। यह आमतौर पर घुटने की लंबाई तक है और सामने से खुला है।

महिलाओं :-

मुगल महिलाएं सिर से पैर की उंगली तक कई तरह के गहने थे उनके वस्त्र में, आमतौर पर पेशवाज, येलक, पा-जामा, चुरूदिदर, शैलवार, ढिलिजा, गर्रा और फरशी शामिल थे।

मुगल काल के दौरान अलौकिक चमड़े के साथ कढ़ाई वाले जूते पहने, औधी की कला से सजाया जाने वाला एक व्यापक परंपरा थी। लखनऊ जूते आमतौर पर रईसो और राजाओं द्वारा इस्ट थे।

राजपूत अवधि :-

क्षत्रिय लोगों के एक नए समुदाय के रूप में 7वीं और 8वीं सदी में राजपूत उभरा। राजपूतों ने जीवन शैली के लिए एक पारंपरिक जीवन शैली का पालन किया जो उनके मार्शल आत्मा जातीयता और शताब्दी भव्यता को दर्शाता है।

➢ पुरुषों :-

राजपूतों के मुख्य वस्त्र कुलीन कपड़े (कोर्ट – ड्रेस) थे, जिसमें अंगारखी, पगड़ी, चुदिदर पायजामा और कंबरबार (बेल्ट) शामिल थे। अंगारखी (लघु जैकेट) कपड़ों का लंबा ऊपरी भाग है जो वे बिना आस्तीन के करीब फिटिंग कपड़े पहनते थे। राजपूतों के रईसों ने आमतौर पर जामा, शेरवानी में से एक ऊपरी वस्त्र और सलवार, चुरुदिर – पायजामा (एक आकार की पतलून की जोड़ी) के रूप में कम कपड़ों में परिधान किया। धोती उस समय परंपरा में था, लेकिन शैली इसे पहनने के लिए अलग थी।

➢ महिलाओं :-

राजपूत पेंटिंग में महिला आंकड़ों की कामुकता पर कब्जा करने के लिए महिलाओं को उनके शरीर के चारों और लपेटे हुए पारदर्शी कपड़े पहनकर चित्रित किया गया। राजपूत महिलाओं की मुखिय पोशाक थी साड़ी या राजस्थान की पारंपरिक पोशाक के साथ संबंधित लेनघा। युवा लड़कियां पुथिया को शुद्ध सूती कपड़े से बना ऊपरी वस्त्र के रूप में पहनती थी। महिलाओं द्वारा पसंद की गई आभूषण शैली या डिजाइन में उत्तम थे।

➢ टेक्सटाइल केमिस्ट्री का आगमन :–

19वीं शताब्दी के दौरान डाई केमिस्ट्री ने कपड़ा छपाई में उतने ही क्रांति ला दी, जितने कि मशीन के आने से आई थी। उत्पादों और प्रक्रियाओं दोनों की बेहतर समझ हासिल की गई। इसके बाद इनमें सुधार किया गया और विविधतापूर्ण रसायन विज्ञान एक विज्ञान बन गया और 1860 और 20वीं शताब्दी की शुरुआत के बीच तेजी से उत्तराधिकार में नई खोजों का अनुसरण किया गया। 19वीं शताब्दी की दूसरी जय के दौरान, अनुसंधान और नवाचारों ने 1856 में कपड़ा छपाई में रसायन विज्ञान की प्रमुख भूमिका की पुष्टि की। अंग्रेजी रासायनिक पर्किन ने पहली सिंथेटिक डाई, मौवे की खोज की और 1902 तक लगभग 700 सिंथेटिक रंग उपलब्ध थे।

➢ भारत में टेक्सटाइल उद्योग :–

भारत में कपड़ा और परिधान के सबसे बड़े उत्पादों में से एक है। दुनिया भर में उपभोक्ता उच्च गुणवत्ता वाले कपड़े और सस्ती कीमत के कारण भारत से कपड़ा आयात करते हैं। नीचे हमने भारत में कपड़ा उद्योग के बारे में कुछ तथ्य हैं।

- एक अध्ययन के अनुसार, 2021 तक भारतीय कपड़ा उद्योग का मूल्य 223 बिलियन डॉलर है।
- टेक्सटाइल उद्योग कपास और जूट का सबसे बड़ा उत्पादक है, रेशम में दूसरा सबसे बड़ा और विश्व स्तर पर हाथ से बुने हुए कपड़ों का 95 प्रतिशत भारत से है।

कपड़ा उद्योग कृषि उद्योग के बाद भारत में दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है।

कपड़ा मशीनरी प्रसंस्करण के विकास में कपड़ा उद्योग के वैश्विक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हाथ की तकलियों से कताई का जन्म हुआ और हथकरघे से बुनाई का जन्म हुआ। बिजली से चलने वाली मशीनरी की शुरुआत में आज की कताई, बुनाई, रंगाई, छपाई और फर्निशिंग मशीनरी का मार्ग प्रशस्त किया। मोटे तौर पर 1760 से लेकर 1820 और 1840 के बीच के किसी समय तक, औद्योगिक क्रांति नई निर्माण प्रक्रियाओं के संक्रमण की अवधि थी। कपड़ा उद्योग वह उद्योग है जिसमें वस्त्र, कपड़े और कपड़ों के रिसर्च, डिजाइन, विकास, निर्माण और वितरण जैसे बड़े–बड़े खंड शामिल है। भारत का कपड़ा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे पुराने उद्योगों में से एक है जो कई सदियों पुराना है। कपड़ा उद्योग का कृषि से घनिष्ठ संबंध और वस्त्र के मामले में देश की प्राचीन संस्कृति और परंपराओं ने इसे देश के अन्य उद्योगों की तुलना में अद्वितीय बना दिया है।

भारत के कपड़ा उद्योग में भारत के भीतर और दुनिया भर में विभिन्न बाजार क्षेत्रों के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रकार के उत्पादों का उत्पादन करने की क्षमता है, लेकिन अगर हम आज के युग की बात करें तो यह वस्तुओं का निर्माण उद्योग की क्रांति के समय इंग्लैंड में शुरू हुआ था। जब 1733 में पहली बार फ्लाइंग शटल, फ्लायर एंड बॉबिन प्रणाली और 1738 में रोलर स्पिलिंग मशीन के क्रांतिकारी अविष्कार से टैक्सटाइल बिजनेस यानी वस्त्र उद्योग को बढ़ावा देने का सुदृढ़ कार्य किया गया। 1738 में स्पिलिंग मशीन के अविष्कार के बाद लुइस पॉल ने 1748 में कार्डिंग मशीन और 1764 में कतई जेनी को भी विकसित किया। फिर ठीक 20 सालों बाद 1784 में पावर लूम का आविष्कार हुआ। इसलिए 18 वीं सदी को औद्योगिक क्रांति की वजह से टेक्सटाइल इंडस्ट्री को काफी बल मिला और आज दुनिया भर में इतनी समृद्ध इंडस्ट्री है।

➢ भारत में टैक्सटाइल इंडस्ट्री का इतिहास :–

हम इतिहास की बात करें तो वैसे तो सन् 1818 में ही कोलकाता के पास एक करोड़ की मिल शुरू हो गई थी लेकिन असल में देखा जाए तो कपड़ा उद्योग में रफ्तार पकड़ी। 1850 के बाद जब 1854 में एक पारसी व्यापारी ने बॉम्बे कॉटर्न मिल की स्थापना की उसके बाद तो 20वीं सदी आते–आते भारत में लगभग 178 कपड़ों की मिल शुरू हो गई और यह टेक्सटाइल इंडस्ट्री बढ़ती गई।

➢ टेक्सटाइल इंडस्ट्री वर्तमान में कहां खड़ा है :–

अगर हम अगर आपको आंकड़ों के तौर पर बताएं तो भारत के टेक्सटाइल इंडस्ट्री में आज 4.5 करोड़ से ज्यादा लोग काम कर रहे हैं। इसमें 35 लाख से अधिक हथकरघा के श्रमिक हैं। साल 2018–19 में भारत की टेक्सटाइल इंडस्ट्री ने जीडीपी में 5 प्रतिशत और निर्यात में 12 प्रशित का सहयोग किया है। टेक्सटाइल का निर्यात अप्रैल 2021 से अक्टूबर 2021 तक 22.80 बिलियन डॉलर रहा, जिसमें सभी प्रकार के रेडीमेड कपड़े शामिल हैं। अगर भविष्य की बात करें तो यह टेक्सटाइल इंडस्ट्री का बाजार 2029 तक लगभग 209 बिलीयन अमेरिकन डॉलर से भी ज्यादा बढ़ जाएगा, जिसका सीधा सा मतलब यह होगा कि हमारी विश्व में टेक्सटाइल हिस्सेदारी 5 प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत हो जाएगी।

➢ भारतीय कपड़ा उद्योग की संरचना और विकास :–

भारत का कपड़ा उद्योग अर्थव्यवस्था के सबसे बड़े उद्योगों में से एक है। 2000/01 में कपड़ा और परिधान उद्योगों का जीडीपी का लगभग 4 प्रतिशत औद्योगिक उत्पादन का 14 प्रतिशत, औद्योगिक रोजगार का 18 प्रतिशत और निर्यात आय का 27 प्रतिशत था।

भारत का कपड़ा उद्योग वैश्विक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है, सूती धागे और कपड़े दोनों के उत्पादन में चीन के बाद दूसरा और सिंथेटिक फाइबर और यार्न के उत्पादन में पांचवें स्थान पर है। भारतीय कपड़ा उद्योग की अनूठी संरचना टैक्स, श्रम और अन्य नियामक नीतियों की विरासत के कारण है जिन्होंने बड़े पैमाने पर, अधिक पूंजी – गहन संचालन के साथ भेदभाव करते हुए छोटे पैमाने पर, श्रम – गहन उद्यमों का हमेशा समर्थन किया है। संजना विश्व बाजार के बजाय भारत के मुख्य रूप से कम आय वाले घरेलू उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐतिहासिक नियमों के कारण भी है। नीतिगत सुधार जो 1980 के दशक में शुरू हुए और 1990 के दशक में जारी रहे, विशेष रूप से कताई क्षेत्र में तकनीकी दक्षता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त हुए हैं।

➢ भारत के कपड़ा उद्योग की संरचना :–

अन्य प्रमुख कपड़ा उत्पादक देशों के विपरीत, भारत के कपड़ा उद्योग में ज्यादातर छोटे पैमाने पर गैर एकीकृत कताई, बुनाई, फिनिशिंग और परिधान बनाने वाले व्यापक शामिल है। यह अनूठी उद्योग संरचना मुख्य रूप से सरकारी नीतियों की विरासत है, जिसने श्रम केंद्रित, छोटे पैमाने के संरजना को बढ़ावा दिया है और बड़े पैमाने पर फर्मों के साथ भेदभाव किया है। अपेक्षाकृत बड़े पैमाने पर मिले जो कताई, बुनाई और कभी–कभी कपड़े की फिनिशिंग को एकीकृत करती है, अन्य प्रमुख कपड़ा उत्पादक देशों में आम है।

भारत में हालांकि, इस प्रकार की मिलों का अब कपड़ा क्षेत्र में उत्पाद का लगभग 3 प्रतिशत हिस्सा है। लगभग 276 मिश्रित मिले अब भारत में काम कर रही हैं, जिनमें से अधिकांश सार्वजनिक क्षेत्र के स्वामित्व में है और कई आर्थिक रूप से बीमार मानी जाती हैं।

➢ कताई :–

कताई कपास या मानव निर्मित फाइबर को बुनाई और बुनाई के लिए उपयोग किया जाने वाले धागे में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है। मोटे तौर पर 1980 के दशक के मध्य में शुरू हुए विनियम में कारण, कताई भारत के कपड़ा उद्योग में सबसे समेकित और तकनीकी रूप से कुशल क्षेत्र है। हालांकि अन्य प्रमुख उत्पादकों की तुलना में औसत पौधे का आकार छोटा रहता है और तकनीक पुरानी हो जाती है।

सन् 2022/03 में, भारत के कताई क्षेत्र में लगभग 1,146 छोटे पैमाने की स्वतंत्रत फर्में और 1,599 बड़े पैमाने पर स्वतंत्र इकाइयां शामिल थी।

➢ बुनाई :–

बुनाई, कपास, मानव निर्मित या मिश्रित धागों को बुने हुए या बुने हुए कपड़ों में परिवर्तित करती है। भारत का बुनाई क्षेत्र अत्यधिक खंडित, छोटे पैमाने पर और श्रम प्रधान है। इस क्षेत्र में लगभग 3.9 मिलियन हथकरघा, 3800000 "पावरलूम" उद्यम शामिल है जो लगभग 1.7 मिलीयन करघे संचालित करते हैं और विभिन्न मिश्रित मिलों में सिर्फ 137,000 करघे हैं।

"पावरलूम" छोटी फर्म हैं जिनकी औसत करघा क्षमता स्वतंत्र उद्यमियों या बुनकरों के स्वामित्व में चार से पांच हैं। आधुनिक शटललेस करघे की क्षमता 1 प्रतिशत से भी कम है।

➢ फैब्रिक फर्निशिंग :–

फैब्रिक फिनिशिंग जिसमें कपड़ों के निर्माण से पहले रंगाई, छपाई और अन्य कपड़ा तैयार करना शामिल है, पर भी बड़ी संख्या में स्वतंत्र, छोटे पैमाने के उद्यमों का वर्चस्व है। कुल मिलाकर, लगभग 2,300 प्रोसेसर भारत में काम कर रहे हैं, जिनमें लगभग 2,100 स्वतंत्र इकाइयां और 200 इकाइयां शामिल हैं, जो कताई, बुनाई या बुनाई इकाइयों के साथ एकीकृत हैं।

पश्चिमी देशों में टेक्सटाइल का कार्य :–

गुजरात का समृद्ध राज्य, राजस्थान के रियासत की भूमि और पाकिस्तान में पड़ोसी प्रांत सिंध मुख्य रूप से शुष्क क्षेत्र है जहां वार्षिक मानसून की बारिश की अनियमितता के अनुसार कृषि फल – फूल या विफल हो सकती है। यह क्षेत्र लंबे समय के कपास और इंडिगो की खेती के लिए और मॉर्डेंटेड रंजक के उपयोग के लिए प्रसिद्ध है। वास्तव में नदियां स्वयं अपने रासायनिक गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि रंगाई और रंगाई प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त रंगों को एक विशेष चमक प्रदान करते हैं।

पश्चिमी भारत का भूभाग नाटकीय है, लेकिन वर्ष के अधिकांश समय के लिए यह पीले और भूरे रंग के रंगों के साथ चित्रित एक परिदृश्य है, जो समृद्ध हरे रंग के सिंचित क्षेत्रों से टूटा हुआ है। और कुओं और मौसमी से सटे कांटो और अन्य कठोर पेड़ों के समूह द्वारा विरामित है। झीलो इन सुस्त, स्वरों की एकरसता को राहत देने के माध्यम से, क्षेत्र के लोगों को रंग की गहरी आवश्यकता होती है, जो उनके कपड़ों, जानवरों के जाल और घर की सजावट की जीवंतता में निहित होती है। क्षेत्र की कपड़ा संस्कृति की समृद्धि वास्तव में आगंतुक के साथ–साथ पश्चिम में फैशन के अनुयाई के लिए भी स्पष्ट है। अधिकांश हाथ और स्क्रीन – मुद्रित यार्डेज – चमकीले रंग और पैटर्न वाली कपास

जो पश्चिम में गर्मियों की पोशाक, ब्लाउज और स्कर्ट के कपड़े के लिए उपयोग की जाती है, राजस्थान से आती है।

हाल ही में, हालांकि, लंदन में दिल्ली की तरह, कढ़ाई के टुकड़ों से बने सजे हुए हैंडबैग, छोटे रुकसाक और होल्डॉल का प्रसार हुआ है और इस अल्पकालिक फैशन बाजार की आपूर्ति गुजराती महिलाओं के दहेज से की गई है। पश्चिमी भारत, ईरान, मध्य पूर्व, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के करीब हैं और इस बड़े पैमाने पर मुस्लिम दुनिया के साथ मजबूत सांस्कृतिक संबंध है। सदियों से, इन पड़ोसी देशों के अप्रवासी और आक्रमणकारी यहां बस गए हैं। आत्मसात हो गए हैं और भारतीय सामाजिक संरचना के भीतर जातियां बन गई हैं। कपड़ा कला के संरक्षक और व्यवसाय के दोनों के रूप में कपड़ा डिजाइन और उत्पादन तकनीकों पर उनके प्रभाव को गहराई से महसूस किया गया है। इस क्षेत्र को हमेशा व्यस्त बंदरगाहों से नवाजा गया है।

सूरत भड़ौच और कैम्बे मुगलकाल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे और अन्य ऐतिहासिक बंदरगाहों में सिंधु के महाने पर कच्छ और तट्टा में मांडवी शामिल हैं। कराची और मुंबई अंग्रेजों द्वारा निर्मित बंदरगाह, और काडला कच्छ में एक गहरे पानी का बंदरगोहो की अरब की खाड़ी, यमन और अरब प्रायद्वीप सहित महत्वपूर्ण निर्यात बाजारों तक पहुंच चुकी थी। लाल सागर के माध्यम से मिस्त्र तक, यहां काद्विरा यूरोप के साथ–साथ के तट पर पारगमन के लिए माल का भंडार था।

पूर्वी अफ्रीका, दक्षिण और पूर्व की ओर से नौकाओं ने इंडोनेशिया और चीन के साथ व्यापार करने के लिए केप कॉमौरिन और श्रीलंका का चक्कर लगाया। प्रागैतिहासिक काल से ही समुद्री नौकायान नौकाओं और तटीय जहाजों ने पश्चिमी भारत के वस्त्रों को विश्व के सभी बिंदुओं तक पहुंचाया है। सूती कपड़ा ग्रीक और रोमन साम्राज्य को भेजा गया था, 17वीं शताब्दी तक यूरोप के लिए उत्तम वाणिज्यिक कढ़ाई और दक्षिण – पूर्व एशिया के लिए सम्मानित डबल इकत कपड़े थे।

➢ कढ़ाई :–

17वीं शताब्दी के दौरान, गुजरात शायद दुनिया में बेहतरीन व्यवसाय के कढ़ाई का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था। आज कच्छ और सौराष्ट्र को मिलाकर उत्तरी गुजरात में पश्चिमी राजस्थान तक और पाकिस्तान में सिंध के थार पारकर जिले में लोक कढ़ाई का दुनिया का सबसे समृद्ध स्रोत है। शादी की पोशाक, दीवार पर लटकने वाली चीजें, रजाई, पालने के कपड़े और जानवरों के समान पर कशीदकारी की जाती है, तालिया बनाई गई हैं, मनके के काम से सजाया जाता है और दर्पण, सेक्विन, बटन और गोले से सजाया जाता है।

प्रत्येक जाति पीढ़ी दर पीढ़ी अपरिवर्तित रूप से अपनी अलग–अलग डिजाइन, रंग और टांके की रेंज से गुजरती हैं, जो उनके कपड़ों के कट और उनके अपने विशेष टाई – एंड – डाई और ब्लॉक – प्रिंटेड के साथ मिलकर एक प्रमुख दृश्य भाग बनाते हैं। जाति की संस्कृति पहचान।

➢ चिनाई कढ़ाई :–

19वीं और 20वीं सदी की शुरुआत में, एक था दक्षिण गुजरात के सूरत में रहने वाले चीनी काशीकदारी समुदाय, जिन्होंने डिजाइन और तकनीक दोनों में पूरी तरह से चीनी काम का उत्पादन किया। उनकी कढ़ाई को चिनाई के काम के रूप में जाना जाता था और वे या तो कपड़े के टुकड़े और शॉल को महीन फ्लॉस सिल्क, या साड़ी, चोली, बच्चों के कपड़े और बॉर्डर के साथ काशीदकारी करते थे, जो दो प्लाई रेशम से कसी हुई कशीदाकारी होती थी।

➢ घरेलू कढ़ाई :–

कच्छ, सौराष्ट्र, पश्चिमी राजस्थान और पाकिस्तान में सिंध के निकटवर्ती प्रांत शुष्क झाड़ियां के क्षेत्र हैं। जिनमें से कुछ खेती योग्य है, लेकिन इनमें से अधिकांश भेड़ों, मवेशियों और ऊंटों के झुंडों और झुंडों के लिए केवल मौसमी चरागाह प्रदान करते हैं। इस प्रकार नगरों में व्यापारी और कारीगर समुदायों के साथ निवासी मुख्य रूप छोटे किसान या पशुपालक हैं। ये जाति से विभाजित हैं, जो शेष भारत की तरह हैं। यहां आमतौर पर एक वंशानुगत व्यवसाय के साथ बराबरी की जाती है। ये जातियां एक सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं जो सदियों से ईरान और मध्य एशिया दोनों के माध्यम से लोगों की आमद का परिणाम है। बदले में इसका असर पश्चिमी भारत में घरेलू कढ़ाई की परंपरा पर पड़ा है। इस क्षेत्र में रहने वाले लोग दहेज प्रथा को सांझा करते हैं। गहने और घरेलू बर्तनों के सामान्य उपहारों के अलावा एक दुल्हन अपने पति के घर बड़ी संख्या में बड़े पैमाने पर कढ़ाई वाले वस्त्र लाएगी, जो उसने और उसके परिवार की महिलाओं ने काम किया है। इस दहेज में दूल्हा और दुल्हन के लिए पोशाक उसके नए घर के लिए हैंगिंग और उसके घरेलू पशुओं के लिए साथ साज – सामान शामिल होंगे, तभी जटिल कढ़ाई या तालियां और अक्सर छोटे दर्पण को शामिल करना।

भारत के इस हिस्से में पोशाक को कढ़ाई और शीशे के काम से सजाया जाता है और जितना संभव हो सके उतना रंगीन बनाया जाता है, ताकि आमतौर पर रंग बिरंगे रंगों के विपरीत सुखद विपरीत प्रदान किया जा सके।

➢ घरेलू कढ़ाई की शैलियां :–

यह शैली थार पारकर और सिंध के आसपास के जिलों, बन्नी कच्छ और पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर और जैसलमेर जिलों में प्रचलित है। डिजाइन मुख्य से साटन सिलाई का उपयोग करके प्राथमिक रंगों में काम किए गए फूलों और पत्ते के अमूर्त या बहुत औपचारिक प्रतिनिधित्व है। इस शैली की सबसे विपुल व्यवसायी मेघवाल की महिलाएं हैं जो पैसे और जाति के चमड़े के श्रमिक हैं, जो सिंध के थार पारकर जिले में केंद्रित हैं, लेकिन राजस्थान में, जोधपुर के पश्चिम में और बन्नी कच्छ में पाई जा सकती है। उनका सबसे रमणीय काम शादी की चोली, पर्स और बुखानी को सुशोभित करता है। उनका काम दो प्रकार का होता है, या तो अत्यधिक कढ़ाई वाले पुष्प और प्रच्छन्न पक्षी डिजाइन, ज्यादातर लाल जमीन पर, दर्पण और मनके पोम्पोम के साथ पूरक, या फिर काले रंग की पृष्ठभूमि पर काउच धातु के धागे का काम।

सिंधी शैली के सभी कार्यों में बारीक सिलाई और अलंकरण की जीवंतता और रंग – मिलान की एक बड़ी श्रृंखला की विशेषता है। दुखद की बात यह है कि कशीदाकारी करने वाली जातियों की अनेक स्त्रियां जो खुशी–खुशी और प्रेम पूर्वक अपनी शादियों के लिए इस तरह के बेहतरीन काम का उत्पादन करती हैं, उन्हें पैसे की अर्थव्यवस्था में खींचा गया है।

➢ महत्वपूर्ण केंद्र ब्लॉक प्रिंटिंग के :–

गुजरात क्षेत्र भारत के महान कपड़ा निर्यात क्षेत्रों में से एक था। कपड़ा पैटर्न आमतौर पर ब्लॉक प्रिंटिंग द्वारा लागू किया गया था, और गुजरात के ब्लॉक – प्रिंटेड मॉल के काछिरा के पास कोस्टैट में खुदाई किए गए हैं, जिनमें से सबसे पुराना 15वीं शताब्दी या उससे पहले का है। ये कपड़ा टुकड़े आज के क्षेत्र के हाथ से मुद्रित वस्त्रों के विशिष्ट अपरिष्कृत अभी मनभावन डिजाइनों के साथ मुद्रित किए गए हैं। यह विधि पैटर्न के काफी बोल्ड चित्रण का समर्थन करती है। ब्लॉक प्रिंटिंग के सबसे महत्वपूर्ण केंद्र राजस्थान में सांगानेर, जयपुर, बगरू और बाड़मेर और गुजरात में अंजार, दिसा, अहमदाबाद, जेतपुर, राजकोट, पोरबंदर, और भावनगर है। गुजरात और आसपास के राज्यों सिंध, राजस्थान और मध्यप्रदेश में हाथ से छपे कपड़े हिंदू और मुस्लिम खत्रियों द्वारा बनाए जाते हैं। इनमें से कई खत्रियों का दावा है कि आठवीं शताब्दी ईस्वी में अरबों द्वारा सिंध पर विजय प्राप्त करने के बाद उनके पूर्वजों ने सिंध क्षेत्र छोड़ दिया था। आज, मशीनीकृत मिल कपड़ा उद्योग द्वारा छोड़ी गई जगह को ब्लॉक – प्रिंटेड कपड़े भरते हैं, जो उपमहाद्वीप के सूती यार्डेज उत्पादन पर हावी हैं।

19वीं सदी की तिमाही लेकिन मुख्य रूप से ब्लॉक – प्रिंटेड आमतौर पर बिना सिले कपड़ों, जैसे लेंग साड़ी, अंक, पगड़ी और जेजाम फ्लोर स्प्रेड की स्थानीय मांग बनी रही, इस तरह के

हस्तनिर्मित व्यवसायिक उत्पादन को गुजरात और राजस्थान में एक तैयार बाजार मिलना जारी है। क्योंकि विभिन्न ग्रामीण जातियों की अपनी विशेष वेशभूषा के लिए हाथ से बने वस्त्रों को प्राथमिकता है। गुजरात और पश्चिमी राजस्थान में तीन मुख्य प्रकार के हस्त मुद्रित वस्त्र है:-

- अजरकब, जिसे मुसलमानों द्वारा पहना जाता है, के बारे में माना जाता है कि उसकी उत्पत्ति सिंध से हुई है और पैटर्निंग में पूरी तरह से ज्यामितीय है। अजरख का कपड़ा एक या दोनों तरह ब्लॉक प्रिंट किया जाता है। यह नाम सम्भवतः अजराक से लिया गया है, अरबी शब्द 'ब्लू' के लिए निश्चित रूप से इंडिगो ब्लू इन कपड़ों के लिए प्रमुख रंग है। अजरक का कपड़ा मुस्लिम पुरुषों द्वारा शादी के वस्त्र के रूप में उपयोग किया जाता है। पश्चिमी राजस्थान में हिंदू और सिंध के थार पारकर जिले में मुख्य रूप से लाल रंग का एक समान पैटर्न वाला कपड़ा पहनते हैं, जिसे मालिर कहा जाता है। अजरख का उत्पादन सिंध में, खावड़ा और धमडखा में, कच्छ में और बाड़मेर, राजस्थान में होता है।

- मुख्य रूप से लाल पृष्ठभूमि पर अहमदाबाद निर्मित स्क्रीन – प्रिंटेड और ब्लॉक – प्रिंटेड क्लोरल सुप्रो और सिम्युलेटेड बांधनी के डिजाइन।

- उत्तरी गुजरात के दीसा और पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर और जैसलमेर क्षेत्रों में फारसी संघों के साथ पुष्प प्रिंट बनाए गए।

19वीं और 20वीं सदी की शुरुआत में, मारवाड़ी राजस्थान के व्यापारी और भारत के प्रमुख व्यापारी समुदाय, अपने विशिष्ट चिन्ह के रूप में विस्तृत रूप से बंधे, चमकीले रंग की धारीदार पगड़ी पहनते थे। इन पगड़ियों को लेहरिया तकनीक द्वारा बनाया गया थ और यह प्रक्रिया आज भी जारी है। जोधपुर, जयपुर, उदयपुर और नाथद्वारा लाइबेरिया के राजस्थानी शहरों के रंगाई क्वार्टरों में अभ्यास किया जाता है।

उत्तर – पश्चिम सीमा प्रांत और उत्तर :-

यह मुख्य रूप से पाकिस्तान का पश्तून प्रांत सिंधु और पंजाब के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। NWFP के वस्त्रों के पड़ोसी आपके अफगानिस्तान के साथ बहुत मजबूत संबंध है और पारंपरिक रूप से यात्रा करने वाले समूहों ने बड़े पैमाने पर अनिश्चित सीमा पर आगे और पीछे यात्रा की। बुनाई और कढ़ाई प्रमुख क्षेत्रीय तकनीकी हैं। लाल, क्रिमसन या मैजेंरा रेशम की सीमाओं और छेरों के साथ इंडिगो

– रंगे कपास के लंबे बुने हुए शॉल स्वात में, हजारा जिले के एबटाबाद के आसपास और मनसेहरा में बुने जाते थे। इसी तरह के शॉल पंजाबी शहर चकवाल में NWFP बाजार के लिए भी बुने गए थे।

➢ बलूचिस्तान :–

एक विशाल पाकिस्तान प्रांत बलूचिस्तान बहुत कम आबादी वाला है। इलाका शुष्क पहाड़ और रेगिस्तान है और स्वदेशी जनजातीय आबादी बलूच या ब्राहुई है जो प्रांत के उत्तर में कुछ पुश्तू और अन्य पुश्तून समुदायों के साथ है। बलूचिस्तान में कढ़ाई की शैलियाँ पड़ोसी अफगानिस्तान और ईरान के सिस्तान प्रांत से संबंधित हैं। बलूच महिलाएँ एक विशिष्ट लबादा जैसी पोशाक पहनती हैं।

पंजाब और हरियाणा :–

पंजाब और हरियाणा के समृद्ध कृषि राज्य फुलकारी शॉल सोल के लिए प्रसिद्ध है जो कि तंग – फिटिंग चोली और गारू के साथ पहना जाता है, इस क्षेत्र के ग्रामीण महिलाओं की पारंपरिक पोशाक का निर्माण करता है। एक परिवार की महिला सदस्य फुर्सत में इकट्ठा होती। दोपहर के घंटों एक चरखे के पहिए और कसीदाकारी के साथ कातना, हालांकि फुलकारी के लिए एक सामान्य था कि टांके की एकरूपता बनाए रखने के लिए एक महिला अकेले काम करें। फुलकारी परिवार के उपयोग के लिए या उपहार के रूप में बनाई जाती थी, बहुत कम ही उन्हें बेचा जाता था। युवा लड़कियां अपनी मां और दादी से सिलाई और डिजाइन सकती थी और फिर एक फुलकारी सिलाई करना शुरू कर देती थी जिसे बाद में वे खुद पहनती थी।

जम्मू और कश्मीर :–

जम्मू और कश्मीर राज्य में जम्मू प्रांत, कश्मीर की घाटी और लद्दाख शामिल है। जम्मू प्रांत एक उप – पर्वतीय क्षेत्र है, जो पूर्व में रावी नदी और पश्चिम में झेलम से घिरा है और चिनाब द्वारा विभाजित है। जम्मू के उत्तर में पहाड़ों की पीर पंजाल श्रृंखला है जो कश्मीर की सुंदर जंगली और उपजाऊ घाटी को शेष भारत से अलग करती है। कश्मीर पूर्व से लद्दाख से ऊंची दर्रों की श्रृंखला से जुड़ा हुआ है। जम्मू हिमालय की तलहटी में स्थित है, पड़ोसी पंजाब और हिमाचल प्रदेश के लिए आसान संचार के साथ और इसकी कपड़ा परंपरा कपड़ा परंपरा पड़ोसी राज्यों के साथ बहुत आम है। संरचना और तकनीक में पंजाब के समान फुलकारी जम्मू में बनाई गई थी, जैसे कि चंबा शैली में अंक थे।

जम्मू प्रांत के सबसे उल्लेखनीय रेप्टाइल उत्पाद अभी भी सांबा के ब्लॉक – प्रिंटेड कैलको हैं, जो जम्मू से लगभग 30 मील दक्षिण में एक गांव है जहां वस्त्रों की हाथ से छपाई एक बहुत लंबे समय

से स्थापित उद्योग है। दरअसल, सांबा को कई अन्य प्रसिद्ध भारतीय कपड़ा शहरों से बहुत पहले कपड़ा उत्पादन का केंद्र माना जाता था। जिसमें सोना – चांदी की छपाई एक विशेषता थी।

हिमाचल प्रदेश :–

हिमाचल प्रदेश एक पहाड़ी राज्य है जो हिमाचल की तलहटी और ऊंचे पहाड़ों पर फैला हुआ है। इस राज्य के हिल स्टेशन विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं क्योंकि शिमला ब्रिटिश भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। विशेष रूप से कुल्लू घाटी भी शॉल बुनाई से जुड़ी हुई है, लेकिन राज्य अपनी कढ़ाई कला के लिए सबसे अच्छी तरह से जाना जाता है। चंबा के छोटे शहर के आसपास केंद्रित है।

➢ चिकन का काम :–

लखनऊ खूबसूरत इमारतों का एक सुसंस्कृत शहर है जो उत्तर प्रदेश के केंद्र में स्थित है। जब राज्य की राजधानी 1775 में यह अवध राज्य बन गया था, अब इसमें कारीगरों और संगीतकारों को आकर्षित करना शुरू किया, जिन्हें दरबार का संरक्षण प्राप्त था। विकसित शिल्पो में से एक चिकन – कारी या टीकन वर्क कढ़ाई, एक प्रकार का सफेदी का काम था। मुख्य रूप से फूलों के डिजाइन वाले पैटर्न को कपड़े की तरह पर बिना मुड़े सफेद सुती या रेशम का उपयोग करके सिला जाता है। लखनऊ चिकन – कारी उद्योग की शुरुआत। बंगाली चिकन के काम में मुख्य रूप से व्यापार के लिए टुकड़ा माल शामिल था। आमतौर पर, चिकन काशीदारी के लिए महीन सफेद रेशेदार कपास का उपयोग किया जाता है।

एड नोटस :-

- Kapoor Seema, Dying of Textile Material, New Delhi Publishing ISBN : 9788184114911
- सन् 2012 पृं सं 29, 162, 163, 167, 166, 165
- Gillow John, and Barnard Nicholas., Indian textile, New Delhi Publishing ISBN : 9788187108702, सन् 2008, पृं सं 58, 59, 60, 63, 64, 65, 84, 134, 143, 150, 153, 161
- उची एच – 2002, टेक्सटाइल एजुकेशन इन डिजिटल इकंलेट फैब्रिक प्रिंटिंग एन आई बी – 18 सैन डिरगो कैलिफोर्निया – यू. एस.
- https://indianculature.gov.in
- https://goanconnction.com

तृतीय अध्याय

कपड़ा उत्पादन का संक्षिप्त विवरण

- वस्त्र का निर्माण
- वस्त्र छपाई की सामग्री
- वस्त्र छपाई की तकनीक

वस्त्र या कपड़ा एक मानव निर्मित चीज है जो प्राकृतिक या कृत्रिम तंतुओं के नेटवर्क से निर्मित होती है। इन तंतुओं को सूत या धागा कहते हैं। धागे का निर्माण कच्चे ऊन, कपास या किसी अन्य पदार्थ को कत्ते की सहायता से ऐंठकर किया जाता है। एक फ्लैक्सिबल सामग्री है जिसमें कृत्रिम फाइबर धागों का समावेश रहता है। लंबे धागे का उत्पादन करने के लिए ऊन, फ्लेक्स, सूती अथवा अन्य कच्चे तंतु कपाय्या से तैयार किए जाते हैं।

कपास का उपयोग कई कपड़ा उत्पादों को बनाने के लिए किया जाता है। इन में अत्यधिक शोषक नहाने के तौलिये और वस्त्र के लिए टेरीक्लॉथ शामिल हैं। नीली जींस के लिए – डेनिम, सैम्बे लोकप्रिय रूप से ब्लू वर्क शर्ट के निर्माण में उपयोग किया जाता है और कॉरडरॉय, सीर्सकर और कॉटन टवील। मौजे, टी–शर्ट, अधिकांश कपास से बने होते हैं। बिस्तर की चादरे अक्सर कपास से बने होते हैं। कपास का उपयोग कोशिया और बुनाई में उपयोग किया जाने वाले धागे बनाने के लिए भी किया जाता है। कपड़े को पुनः – नवीनीकरण या पुनर्प्राप्त कपास से भी बनाया जा सकता है, अन्यथा कताई, बुनाई या काटने की प्रक्रिया के दौरान फेंक दिया जाएगा। जबकि कई कपड़े पूरी तरह से कपास से बने होते हैं। कुछ सामग्री कपास को अन्य रेशों के साथ मिलाती है, जिसमें रेयॉन और पॉलिस्टर जैसे सिंथेटिक फाइबर शामिल हैं। यह या तो बुने हुए या बुने जाने वाले कपड़ों में इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि इसे इलास्टिन (प्रोटीन) के साथ मिश्रित किया जा सकता है, ताकि बुने हुए कपड़े के लिए स्ट्रेचियर धागा बनाया जा सके और वस्त्र जैसे स्क्रैच, जींस।

कपड़ा उद्योग के अलावा, कपास का उपयोग फिशनेट, कॉफी फिल्टर टैंट, गन पाउडर, कॉटन पेपर और बुकबाइंडिंग में किया जाता है। पहला चीनी कागज कपास के रेशों से बना था। अग्निशमन पेपर भी कपास से बने होते थे।

लोगों के बीच लोकप्रिय कपड़ा :–

कॉटन सबसे लोकप्रिय कपड़ों में से एक है, जिसे लोग पहनते हैं। यह उन कपड़ों को दुकानदारों के लिए एक मानक विकल्प बन गया है जो सबसे अच्छा दिखाने वाला, सबसे सनसनीखेज कपड़ा चाहते हैं। लोगों ने कई हजारों वर्षों से कपास पहनी है, और वह इसे पहनना जारी रखेंगे क्योंकि इसे पहनना वांछनीय है।

पर्यावरणीय कारण :–

उपभोक्ता तेजी से अपने पर्यावरण पदचिन्हों के बारे में जागरूक हो रहे हैं, यही एक कारण है कि वे कपास चुनते हैं। यह बायोडिग्रेडेबल प्राकृतिक और एक नवीनीकरण फाइबर है, कॉटन यूएसए के अनुसार ग्लोबल वॉर्मिंग में सहायता करने वाली ग्रीन हाउस गैसों को कम करने में इसकी भूमिका है। कपास के पौधे पर्यावरण के लिए उपयोगी होते हैं क्योंकि वह हवा से Co_2 लेते हैं। और वातावरण में ऑक्सीजन छोड़ते हैं, कपास खरीदने से अधिक कपास के पौधों को लगाने और खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो कुछ पर्यावरणीय क्षति को उलट सकता है।

आराम :–

कॉटन एक मुलायम कपड़ा है जो छूने से हल्का होता है और लोगों को ठंडा रखता है। अस्पताल बच्चों की पहली पोशाक के लिए कपास पर भरोसा करते हैं, क्योंकि वह चिकनी होती है कॉटन उनकी त्वचा कॉटन के साथ अच्छा करती है और सूती कपड़े के डायपर की भी सराहना करती है। कपास अद्वितीय है क्योंकि है सांस लेता है, जिसका अर्थ है कि यह हवा को परिचलित करने के लिए हवा को कम करती है। यह कभी भी नमी को नहीं फँसाता, जो इसे गर्म के गर्मी के दोनों के लिए एकदम सही बनाता है। यह लोगों को ऐसे कपड़े प्रदान करता है जो प्रतिबंधात्मक नहीं लगते हैं। जो इसे मौजूद सबसे आरामदायक कपड़ों में से एक बनाता है।

अर्थव्यवस्था में मदद करता है :–

राष्ट्रीय कपास महिला समुदाय के अनुसार, कपास उद्योग ने 2001 में संयुक्त राज्य अमेरिका में उगाई गई कपास के उत्पादन और प्रसंस्करण के लिए लगभग 400,000 अमेरिकियों को रोजगार दिया था। कपास अमेरिका में एक प्रमुख फसल है, जिसका अर्थ है सूती वस्त्रों पर खर्च किया गया पैसा नहीं जाता है। दूसरे देशों में लोगों को कपास उत्पादन आउटसोर्स करने की दिशा में। अमेरिका में उगाए गए 100 प्रतिशत सूती कपड़े खरीदना यह सुनिश्चित करके अधिक सुधार को प्रोत्साहित करता है कि यहाँ सूती उद्योग के कर्मचारियों के पास नौकरी की सुरक्षा है।

संवेदनशील त्वचा के लिए अच्छा है :–

कपास एक हाइपोएलजैविनक कपड़ा है, जिसका अर्थ है कि इससे एलर्जी की प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए जो कुछ अन्य कपड़ों के कारण हो सकती है। कॉटन प्रमोशन लेख "कपास के लाभ" के अनुसार त्वचा विशेषज्ञ अत्यधिक शुष्क त्वचा वाले लोगों को 100 प्रतिशत सूती कपड़े पहनने की सलाह

हैं। संवेदनशील त्वचा और दम के रोगियों के साथ असहज समस्याओं के बारे में चिंता किए बिना इसे पहन सकते हैं। यह स्पर्श करने के लिए खरोंच नहीं है जो लोगों को चकत्ते और जलन होने से रोकता है।

कॉटन लिंटर्स :-

ये महीन, रेशमी रेशे होते हैं जो ओटाई के बाद कपास के पौधों के बीजों से चिपक जाते हैं। ये पुराने फाइबर आमतौर पर 1/8 इंच से कम लंबे होते हैं। यह शब्द लंबे समय तक भी लागू हो सकता है। टेक्सटाइल फाइबर स्टेपल लिंट के साथ-साथ कुछ अपलैंड प्रजातियों के छोटे कर्जी फाइबर। लिंटर्स पारंपरिक रूप से कागज के निर्माण में और सैलूलोज के निर्माण में कच्चे माल के रूप में उपयोग किए जाते हैं। यू.के. में लिंटर्स "कॉटन पूल" कहा जाता है। यह एक परिष्कृत उत्पादक भी हो सकता है, जिसमें चिकित्सा, कॉस्मेटिक और कई अन्य व्यवहारिक उपयोग हैं। इंग्लैंड के बर्मिंघम में सेंट के अस्पताल में कपास, ऊन का पहला चिकित्सा उपयोग डॉक्टर जोसेफ सैम्पसन गमनी द्वारा किया गया था।

प्राकृतिक फैब्रिक :-

सूती कपड़ा एक बहुत ही बहुमुखी प्राकृतिक कपड़ा है। यह पहनने वाले को अत्यधिक आराम देता है और बहुत टिकाऊ होता है। सभी प्रकार के मौसम के लिए उपयुक्त, यह कपड़े की संरचना के भीतर हवा को फँसाता और थर्मल इंसुलेशन प्रक्रिया में मदद करता है। अपनी मजबूती सोखने की क्षमता और धोने योग्य गुणों के कारण कपास दुनिया का प्रमुख कपड़ा बन गया है। इसकी बहुमुखी प्रतिभा के साथ सूती कपड़े से कई बनावट बनाई जाती है, प्रत्येक बनावट कपास की अंतिम गुणवत्ता में योगदान करती है।

1. कॉरडरॉय फैब्रिक :- नरम पाइल की विशिष्ट ऊर्ध्वाधर पंक्तियों के साथ चिकना और मखमली।
2. डेनिम फैब्रिक :- कीज, तनाव या हेम किनारों के बिंदुओं पर फीका सफेद पैच।
3. डिमीटी फैब्रिक :- इसमें एक उठा हुआ ताना होता है जो कपड़े को एक सिट्रप्ड इफेक्ट देता है। इसकी एक कुरकुरा बनावट है।
4. ड्रिल फैब्रिक :- इसमें घने निर्माण में मोटे धागों से बनी एक मजबूत पूर्वाग्रह टवील बुनाई होती है।

फैब्रिक :– यह कॉम्पैक्ट, फॉर्म और कसकर बुना हुआ कपड़ा है। कैनवस की तुलना में हल्का है।

फलालैन कपड़ा :– एक नरम और फर्जी कपड़ा। ऊन या कपास के मिश्रण से भी बना है।

गाउज फैब्रिक :– गाउन एक पतला, साफ और ढीला – ढाला सादा बुना हुआ फैब्रिक है जो कपास, ऊन या एसीटेट से बना होता है।

ब्रोन फैब्रिक :– यह नरम, कुरकुरा और बारीक बुना हुआ कपड़ा है। मैटेलस फैब्रिक का पैटर्न रिवल्ट विवल्वेट एफ इफेक्ट देता है।

मलमल का कपड़ा :– एक सुस्त, कपड़ेदार प्रभाव प्रदान करने के लिए एक शुद्ध स्टार्च या हैकफिल्ड फिनिश के साथ एक सादा बुना हुआ सूती कपड़ा।

शीटिंग फैब्रिक :– एक चिकना सपाट और बारीकी से बुना हुआ कपड़ा। गुणवत्ता इसकी थ्रेड काउंट द्वारा इंगित की जाती है और टेरी फैब्रिक – यह ढेर बुनाई या जेकक्वार्ड पैटर्न है कपड़ा। ढेर या तो हुए हैं या बिना कटे हुए हैं।

मखमली कपड़ा :– घने छोरों से निर्मित एक नरम, मजबूत चेहरे वाला एक ताना – ढेर कपड़ा जो कट हो सकता है या नहीं भी हो सकता।

पॉपलिन फैब्रिक :– स्पष्ट क्षैतिन रिब के साथ एक मोटे ब्रॉडक्लॉथ (कपड़ा) ।

सेनील फैब्रिक :– शैम्ब्रे फैब्रिक से बुने हुए फजी का मुलायम गुच्छेदार रेशम या कपास का रेशा।

टेक्सचर वाला फैब्रिक :– हल्के से माध्यम वजन का प्लेन एक रंगीन खाना और सफेद के साथ बुना हुआ कपास या लिलन सूत भरना यह फैब्रिक को फर्स्ट लुक देता है।

कपास की पुरानी खेती :–

कपास एक नरम, मुलक्कड़, स्टेपल फाइबर है जो जीन्स गॉसिपियम के कपास के पौधे के बीजों के चारों ओर एक बॉल या सुरक्षात्मक कैप्सूल में बढ़ता है। यह पौधा अमेरिका, अफ्रीका, भारत और पाकिस्तान सहित दुनियाभर के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है। फाइबर को अक्सर सूत या धागे मे काता जाता है और एक नरम, सांस लेने वाला कपड़ा बनाने के लिए उपयोग किया जाता है, जो आज कपड़ों में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला प्राकृतिक फाइबर कपड़ा है। फूड्स एंड न्यूट्रिशन एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार अब तक अमरीका में खोजी गई कपास की सबसे पुरानी खेती करीब 8,000 साल पहले मैक्सिको में हुई थी। स्वदेशी प्रजाति गॉसिपियम हिर्सुटम में हुई थी, जो आज दुनिया में कपास की सबसे व्यापक रूप से लगाई जाने वाली प्रजाति है

ने दुनिया भर में कुल उत्पादन का लगभग 89.9 प्रतिशत है। जंगली कपास की प्रजातियों की सबसे बड़ी विविधता मेक्सिको में पाई जाती है। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका का स्थान आता है।

सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों द्वारा 7,000 साल पहले पुरानी दुनिया में कपास की खेती की गई थी, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी हिस्से का एक बड़ा हिस्सा शामिल था, जिसमें आज पूरी पाकिस्तान और उत्तर–पश्चिमी हिस्से शामिल हैं। सूती कताई और निर्माण के उपयोग की जाने वाली कुछ विधियों का उपयोग तक जारी रहा।

कपास और कपड़ा :–

भारत का आधुनिक औद्योगिकरण – सामान्य युग में काफी पहले सूती वस्त्रों का उपयोग भारत से भूमध्यसागरीय और उससे आगे तक फैल गया था।

ग्रीक और अरब स्पष्ट रूप से सिकंदर भारत के बारे में अभिनज्ञ थे, जैसा कि उनके समकालीन मेगस्थनीज थे 'इंडिका' में सेल्यूकस निकेटर को वहां पेड़ है जिस पर ऊन उगता बताया ऐतिहासिक का कालका से युद्धों तक कपास काता, बुना और रंगा जाता रहा है। इसने प्राचीन मिस्र और चीन के लोगों को कपड़े पहनाए। ईसा से सैकड़ों वर्ष पूर्व भारत में सूती वस्त्र बेजोड़ कुशलता से बुने जाते थे और उनका उपयोग भूमध्यसागरीय देशों तक फैल गया। पहली शताब्दी में अरब व्यापारी इटली और स्पेन में बढ़िया मलमल और केलिको लाते थे। 9वीं शताब्दी में मूरों ने स्पेन में कपास की खेती शुरू की। **Fustions और Dimities** वहां और 14वीं सदी में वेनिस और मिलान में सबसे पहले लेनिन के ताने–बाने के साथ बुने गए थे। 15 वीं शताब्दी से पहले इंग्लैंड में छोटे सूती कपड़े का आयात किया जाता था, हालांकि मुख्य रूप से कैंडलविक्स के लिए छोटी मात्रा में प्राप्त किया जाता था। 17वीं शताब्दी तक, ईस्ट इंडिया कंपनी दुर्लभ कपड़े भारत से ला रही थी। अमेरिकी मूल – निवासी कुशलता से सूत कातते और बुनते हुए बढ़िया वस्त्र और रंगे हुए पोस्टर बनाते थे। पेरू के मकबरों में पाए जाने वाले सूती कपड़ों के बारे में कहा जाता है कि वे पूर्व – इकां संस्कृति के हैं।

आधुनिक कपड़े :–

पारंपरिक और मानव निर्मित दोनों सामग्रियों से निर्मित कई प्रकार के आधुनिक वस्तुओं को उनकी संरचना के अनुसार वर्गीकृत (उदाहरण) किया जाता है। इंटरलेसिंग द्वारा बनाए गए कपड़ों में बुने हुए और बुने जाने वाले प्रकार, फीता, जाल और चोटी शामिल हैं। रेशम से बने कपड़ों में बंदुआ प्रकार, ऊनी फेल्ट और सुई से बुने हुए प्रकार शामिल हैं। मिश्रित कपड़े विभिन्न प्रकार की परतों को मिलाकर तैयार किए जाते हैं।

पारंपरिक बुनाई और बुनाई के तरीके वर्तमान में प्रमुख कपड़ा निर्माण तकनीकें हैं, लेकिन नए निर्माण तरीके स्वीकृति प्राप्त कर रहे हैं और कुछ लंबे समय से स्थापित उत्पादों को प्रतिस्थापित कर सकते हैं, क्योंकि पारंपरिक वस्त्रों की लागत में वृद्धि जारी है और तेजी से तकनीकी विकास लगातार नई सामग्री विकसित कर रहे हैं। कपड़ों को कई मानदंडों द्वारा आंका जाता है। वांछित (पर्याप्त) उपयोग के लिए लचीलापन और पर्याप्त ताकत आम तौर पर प्रमुख आवश्यकताएं हैं।

कपड़ा उद्योग तेजी से गुणवत्ता नियंत्रण के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को रोजगार देता है। समकालीन शिल्प गिल्ड अन्य गुणवत्ता मानकों को बनाए रखने के लिए चिंतित थे और बाद में कपड़ा मिलों ने निरीक्षण की कठोर प्रणाली स्थापित की। यह महसूस करते हुए की दोषमुक्त वस्तुओं की आपूर्ति के लिए एक प्रतिष्ठा में बार–बार आदेश को प्रोत्साहित किया। फाइबर, यार्न और कपड़े के गुणों का आकलन करने के लिए तकनीकों और मशीनों के विकास से आधुनिक गुणवत्ता नियंत्रण में सहायता मिलती है। कई औद्योगिक देशों में गलत बयानी के संबंध में कानून की शुरुआत से और खरीदारों की बढ़ती संख्या द्वारा कठोर विशेषताओं की स्थापना के द्वारा।

रेशम का कपड़ा :–

रेशम एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ़ तंतु या ऐसा रेशा जिससे कपड़े बुने जाते हैं। यह तंतु कोश में रहने वाले एक प्रकार के कीड़े तैयार करते हैं। रेशम के कीड़े 'पिल्लू' कहलाते हैं, और बहुत तरह के होते हैं, जैसे – विलायती, मद्रासी या कनारी, चीनी, अराकनी, आसमानी इत्यादि।

रेशा किसी प्राकृतिक या कृत्रिम पदार्थों से बने पतले तंतु को कहते हैं। यह ऊन, कपास, सनाज, पेड़ों की छाल, पॉलिस्टर (एक प्रकार का बहुलक पॉलीमर है इससे कपड़े बनाए जाते हैं, तकियों में रुई की जगह से भरा जाता है) और कई अन्य सामग्रियों के हो सकते हैं। आमतौर पर पतले तंतु को ही रिशा कहा जाता है।

चीनी, बूलू और बड़े पिल्लू का रेशम सबसे अच्छा होता है। ये कीड़े तितली की जाति के हैं। इनके कई क्रियाकलाप होते हैं। अंडा फूटने पर ये बड़े पिल्लू के आकार में होते हैं और रेंगते हैं। इस अवस्था में ये पत्तियाँ बहुत खाते हैं। शहतूत की पत्ती इनका सबसे अच्छा भोजन है। उस समय इन्हें 'कोश' कहते हैं। कोश के भीतर ही यह कीड़ा यह वह तंतु निकालता है, जिसे रेशम कहते हैं। कोश के भीतर रहने की अवधि जो पूरी हो जाती है, तब कीड़ा रेशम को काटता हुआ निकल कर उड़ जाता है। इससे कीड़े पालने वाले निकलने के पहले ही कोयों को गर्म पानी में डालकर कीड़ों को मार डालते हैं और तब ऊपर का रेशम निकालते हैं।

कपड़ा छपाई कपड़ा सजावट की प्रक्रिया में से एक है। कपड़ा छपाई के लिए सर्वोत्तम परिणामों के उत्पादन के लिए छपाई मशीनरी समर्थन और मानव कौशल के बीच सही समन्वय की आवश्यकता होती है। टेक्सटाइल प्रिंटिंग विभिन्न प्रिंटिंग तकनीकों का उपयोग करती है जिनमें से स्क्रीन प्रिंटिंग सबसे प्रमुख है।

कपड़ा छपाई निश्चित पैटर्न नया डिजाइन में कपड़े पर रंग लगाने की प्रक्रिया है। उचित रूप से मुद्रित कपड़ों में रंग फाइबर के साथ जुड़ा होता है ताकि धुलाई और संघर्ष का विरोध किया जा सके। कपड़ा छपाई, रंगाई से संबंधित है, लेकिन उचित रंगाई में पूरे कपड़े को समान रूप से एक रंग से रंगा जाता है। छपाई में एक या एक से अधिक रंगों को केवल कुछ हिस्सों में स्पष्ट रूप से लागू किया जाता है।

छपाई में, कपड़े पर रंग लगाने रंग लगाने के लिए कपड़े के ब्लॉक, स्टेलसिल, उत्कीर्ण, प्लेट, स्क्रीन या सिल्कस्क्रीन का उपयोग किया जाता है। छपाई में उपयोग किए जाने वाले रंगों में पैटर्न या डिजाइन की सीमा से परे कोशिका आकर्षण द्वारा रंग को फैलने से रोकने के लिए गाढ़ी रंग होते हैं।

रंगाई, जिसमें एक मोम या अन्य पदार्थ को मुद्रित किया जाता है, जिसे बाद में रंगा जाता है। लकोटा क्षेत्र डाई को स्वीकार करते थे, एक लाल जमीन के खिलाफ बिना रंग के पैटर्न छोड़ते हैं।

एक प्रिंटिंग जिसमें कुछ या सभी रंगों को हटाने के लिए अत्यधिक रंगे कपड़े पर ब्लीचिंग एजेंट को प्रिंट किया जाता है। पहली और डिस्चार्ज तकपरके विशेष रूप से पहली शताब्दी में प्रचलित थी, जैसे संयोजन तकनीके थी जिनमें इंडिगो ब्लॉक – प्रिंटिंग रंगों से पहले नीली पृष्ठभूमि बनाया था। अधिकांश आधुनिक औद्योगिकृत छपाई प्रत्यक्ष छलनी का उपयोग करती है।

1676 में एक शरणार्थी द्वारा इंग्लैंड में जो पेंटिंग की शुरुआत की गई थी, जिसने उस वर्ष लिस्बन के पास ई.एस. के तौर पर काम शुरू किया था। दिलचस्प बात यह है कि यह पहला प्रिंट – स्टोर है लेकिन इसके संस्थापक की राष्ट्रीयता और राजनीतिक स्थिति यह साबित करने के लिए थी कि छपाई वाले जर्मनी में भी की जाती थी, कपड़ा छपाई इंग्लैंड में फैलने से पहले अच्छी तरह से होने की संभावना थी, क्योंकि ऑगसबर्ग जिले के.रे के अंत की ओर से इसकी मुद्रित प्रतिष्ठा के लिए मनाया गया था। जिसकी संभावना नहीं थी कि उद्योग 1676 से बाद में उत्पन्न हुआ था।

कामूषण एक तरह से व्यापक, सरल और प्रत्यक्ष, कलात्मक और पूरी तरह से उन साधनों के अनुरूप है जिनके द्वारा इसे पुनः पेश किया जाता है, इसका परिणाम यह हुआ कि एक ओर, उनके फैलाने की चौड़ाई सपाटपन उपचार की अस्पष्टता और टिंट की शुद्धता के उन गुणों द्वारा सही रूप

[illegible] सूची और दूसरी और प्रकृतिवादी प्रक्षेपण के उन प्रभावों से उनकी संपूर्ण स्वतंत्रता द्वारा [illegible] दिया गया। और मंदी इतनी प्रिय आधुनिक मन और इतनी पूरी तरह से सिद्धांतों के विपरीत [illegible] करता है।

छपाई का कपड़े पर पैटर्न बनाने के लिए वर्तमान में उपयोग की जाने वाली छह अलग–अलग [illegible] है।

छपाई के लिए कपड़ा तैयार करना :–

कपड़े को धोकर और ब्लीच करके तैयार किया जाता है। रंगीन जमीन के लिए इसे फिर रंगा [illegible] है। कपड़े को हमेशा ब्रश करना पड़ता है। इसे ढीले झपकी, झुंड और धूल से मुक्त करने के लिए [illegible] इसे संग्रहित करते समय उठाता है। अक्सर इसे एक धुरी के चारों और सर्पिल रूप से व्यवस्थित [illegible] से घूमने वाले चाकू के ऊपर से गुजारा जाता है, जो तेजी से और प्रभावी रूप से सभी तत्वों और [illegible] को काट देता है जिससे कपड़ा पूरी तरह से चिकना और साफ हो जाता है और इस स्थिति में [illegible] प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त होता है। सबसे नाजुक नक्काशी – कुछ कपड़ों को प्रिंटिंग मशीनों [illegible] काटने के लिए सुविधाजनक आकार के रोल में खोखले लकड़ी या लोहे के केंद्रों के चारों और [illegible] करने से पहले एक स्टेंटर पर बहुत सावधानी से खींचने और सीधा करने की आवश्यकता होती [illegible]।

[illegible] की तैयारी :–

रंग ज्ञात सबसे पुरानी लकड़ी के ब्लॉक मुद्रण तीन रंगों से मुद्रित हान राजवंश से रंग चीनी [illegible] में है। कागज पर रंगीन ब्लॉकों के साथ यूरोपीय वुडकट प्रिंट का आविष्कार जर्मनी में 1508 में [illegible] गया था और इससे चिररेस्कोरो वुडकट के रूप में जाना जाता है।

कागज पर एशियाई वुडब्लॉक प्रिंटिंग में रंग बहुत आम है। चीन में पहला ज्ञात उदाहरण 1341 [illegible] एक हीरा सूत्र है, जो आधुनिक हुबेई प्रांत में मंदिर में काले और लाल रंग में छपा है। दो से [illegible] रंगों में छपी सबसे पुरानी दिनांकित पुस्तक चेंगशी मोयुआन 1606 में छपी इंक–जेक पर एक [illegible] है और 17वीं शताब्दी के पहले छमाही में प्रकाशित कला पर किताबों में तकनीक अपनी ऊंचाई [illegible] पहुंच गई। उल्लेखनीय उदाहरण 1633 के दस बांस स्टूडियो की पेंटिंग और लेखन पर ग्रंथ, और [illegible] और 1701 में प्रकाशित मस्टर्ड सीड गार्डन पेंटिंग मैनुअल।

जापान में, एक बहु – रंग तकनीक जिसे निशिकी – ए कहा जाता है, अधिक व्यापक रूप से [illegible] हुई है और 1760 के दशक से प्रिंट के लिए इसका इस्तेमाल किया गया था। जापानी वुडकट

मुख्य कलात्मक रूप बन गया, हालांकि उस समय इसे पेंटिंग की तुलना में बहुत कम दर्जा दिया था।

यूरोप और जापान दोनों में, किताबों के चित्र आम तौर पर केवल काली स्याही में मुद्रित होते थे या व्यक्तिगत कलात्मक प्रिंटों के लिए आरक्षित होते थे। चीन में, इसका उल्टा सच था और रंग का उपयोग मुख्य रूप से कला और प्रेमकाव्य पर पुस्तकों में किया जाता था।

पेंटिंग पर रंगीन पैटर्न बनाने के लिए वर्तमान में उपयोग में आने वाली सात अलग–अलग विधियां हैं।

हाथ की छपाई :-

यह प्रक्रिया हालांकि कुछ लोगों द्वारा सबसे कलात्मक मानी जाती है। छपाई के सभी तरीकों में आर्थिक सरल और धीमी है। इस प्रक्रिया में एक तैयार लकड़ी के ब्लॉक पर एक डिजाइन तैयार जाता है या स्थानांतरित किया जाता है। डिजाइन में प्रत्येक विशिष्ट रंग के लिए एक अलग की आवश्यकता होती है।

एक अवरोधक लकड़ी को पहले भारी द्रव्यमान के चारों ओर तराशता है जिससे महीन और नाजुक का आखिरी तक रहता है, ताकि मोटे हिस्सों को काटने के दौरान इसे घायल करने के की जोखिम से बचा जा सके। जब समाप्त हो जाता है, तो ब्लॉक फ्लैट रिपीट नक्काशी का रूप करता है, जिसमें डिजाइन बाहर खड़ा होता है।

लकड़ी में बारीक विवरण काटना बहुत मुश्किल होता है और सफलतापूर्वक काटने पर भी बहुत से खराब हो जाता है या छपाई में टूट जाता है। इसलिए वे लगभग हमेशा पीतल या तांबे की से निर्मित होते हैं, आकार देने के लिए मुड़े होते हैं और ब्लॉक की सपाट सतह में किनारे से होते हैं। इस विधि को कॉपरिंग के रूप में जाना जाता है।

कपड़े पर डिजाइन को प्रिंट करने के लिए प्रिंटर ब्लॉक पर रंग लगाता है और इसे कपड़े पर लकड़ी से और स्थिर रूप से दबाता है। लकड़ी के हथौड़े से पीठ पर चलाकी से प्रहार करके एक प्रभाव सुनिश्चित करता है। दूसरी छाप उसी तरह बनाई जाती है, प्रिंटर यह देखने के लिए सकता है कि यह पहले के लिए बिल्कुल फिट बैठता है, एक बिंदु जिसे वह उन पिनों के माध्यम सुनिश्चित कर सकता है जिसके साथ प्रत्येक कोने पर ब्लॉक प्रदान किए जाते हैं और जो व्यवस्थित है इस तरह से कि जब दाएं और या ब्लॉक के शीर्ष पर बाई और या पिछले छाप के निचले भाग मिलते हैं तो दो छपाई बिल्कुल जुड़ जाती है और बिना ब्रेक के पैटर्न को जारी रखती है। कपड़े की पूरी तरह से मुद्रित होने एक प्रत्येक बाद की छाप ठीक उसी तरह से बनाई जाती है। जब यह किया जाता है तो इसे सुखाने वाले रोलर्स पर लपेटा जाता है, इस प्रकार एक नई लंबाई को आगे लाया जाता है ताकि समान व्यवहार किया जा सके।

यदि पैटर्न में कई रंग होते हैं तो कपड़े को आमतौर पर पहले एक के साथ प्रिंट किया जाता फिर सुखाया जाता है और दूसरे के साथ प्रिंट किया जाता है जब तक सभी रंग प्रिंट नहीं हो जाए तब तक यही ऑपरेशन दोहराया जाता है।

हाथ से ब्लॉक प्रिंटिंग एक धीमी प्रक्रिया है हालांकि, यह अत्यधिक कलात्मक परिणाम देने से सक्षम है, जिनमें से कुछ किसी अन्य विधि से अप्राप्य हैं

> स्क्रीन छपाई :-

स्क्रीन छपाई आज सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक है। इसके दो प्रकार मौजूद हैं - रोटरी स्क्रीन प्रिंटिंग और फ्लैट स्क्रीन प्रिंटिंग। एक ब्लेड कपड़े पर स्क्रीन में खुलने के माध्यम से स्याही को निचोड़ता है।

> डिजिटल छपाई :-

डिजिटल टैक्सटाइल प्रिंटिंग जिसे अक्सर गवर्नमेंट प्रिंटिंग, डी.टी.जी. प्रिंटिंग और डिजिटल फ्लैट प्रिंटिंग के रूप में संदर्भित किया जाता है। विशेष या संशोधित इंकजेट तकनीक का उपयोग करके टेक्सटाइल और गारमेंट्स पर प्रिंटिंग की एक प्रक्रिया है। रिमूवेबल पेपर बैकिंग के साथ फैब्रिक शीट का उपयोग करके इंकजेट प्रिंटर के साथ फैब्रिक पर इंकजेट प्रिंटिंग संभव है। आज प्रमुख फ्लैट प्रोटोटिक निर्माता वस्त्रों पर सीधे छपाई के लिए डिजाइन किए गए विशेष उत्पादों की पेशकश कर सकते हैं न केवल नमूने के लिए बल्कि थोक उत्पादन के लिए भी।

1990 के दशक की शुरुआत से इंकजेट तकनीक और विशेष रूप से विकसित जल आधारित स्याही ने सीधे पॉलिएस्टर कपड़े पर छपाई की संभावना की पेशकश की है। यह मुख्य रूप से खुरदुरा और हाई प्रचार में दृश्य संचार से संबंधित हैं। एसिड स्याही का उपयोग करके नायलॉन और रेशम पर छपाई की जा सकती है। प्रतिक्रियाशील स्याही का उपयोग और लिलन जैसे सैलूलोज आधारित फाइबर के लिए किया जाता है। डिजिटल टैक्सटाइल प्रिंटिंग में इंकजेट तकनीक का उपयोग सिंगल पीस, मेड - टू प्रोडक्शन और यहां तक कि स्क्रीन प्रिंटेड फैब्रिक के लिए लंबे समय तक चलने वाले डिजाइन की अनुमति देता है।

> रोलर प्रिंटिंग सिलेंडर प्रिंटिंग या मशीन प्रिंटिंग :-

इस सुरुचिपूर्ण इस सुरुचिपूर्ण और कुशल प्रक्रिया का पेटेंट कराया गया था और 1785 में बेल द्वारा वस्त्रों पर उत्कीर्ण प्लेट के आवेदन के 15 साल बाद ही काम किया गया था। बेल का पहला प्रिंट एक मशीन के लिए एक बार में 6 रंगों को प्रिंट करने के लिए था, लेकिन शायद इसके अधूरे डिजाइन के कारण, यह तुरंत सफल नहीं हुआ। हालांकि पूरी तरह से संतोषजनक परिणामों के साथ एक रंग की छपाई द्वारा विधि के सिद्धांत को व्यवहारिक दिखाया गया था। कठिनाई छह रोलर्स को रखने की थी, जिनमें से प्रत्येक में पैटर्न का एक हिस्सा था, एक दूसरे के साथ सही रजिस्टर में। मैनचेस्टर के एडम पार्किंसन द्वारा इस दोष को जल्द ही दूर कर दिया गया था और 1785 में अपने आविष्कार के लिए पार्किंसन के सुधार के साथ बेल्स मशीन को बंबर ब्रिज, प्रेस्टन के मेसर्स लिवेसी, हार्ग्रेव्स, हॉल

[illegible] द्वारा सफलता पूर्वक नियोजित किया गया था, मुद्रण के लिए के लिए केलिको दो से में एक [illegible] ऑपरेशन में छह रंग में।

अन्य समकालीन प्रक्रियाओं की तुलना में रोलर प्रिंटिंग के लाभ तीन थे। सबसे पहले इसकी [illegible] उत्पादकता 10,000 से 12,000 गज आमतौर पर एक रंग मशीन द्वारा 10 घंटे के एक दिन से [illegible] किया जा रहा था, दूसरे डिजाइन की हर शैली के पुनरुत्पादन पर लागू होने की इसकी क्षमता [illegible] उत्तकीर्णन की बारीक नाजुक रेखाओं से लेकर छोटे–छोटे दोहराव और पेरोटीन के सीमित [illegible] से लेकर ब्लॉक प्रिंटिंग के व्यापक प्रभाव और बार–बार अलग अलग पैटर्न तक एक से अस्सी इंच [illegible] तक अद्भुत सटीकता जिसके साथ एक विस्तृत बहुरंगी पैटर्न के प्रत्येक भाग को पुनरावृत्ति के [illegible] पर दोषपूर्ण जोड़ों के बिना उसके उचित स्थान पर फिट किया जा सकता है।

> ब्लॉक प्रिंटिंग :–

प्रिंटिंग शब्द का तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से है जो दबाव का उपयोग करती है, जो लैटिन शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है प्रेस करना। प्रिंट के लिए जर्मन शब्द ड्रक का अर्थ दबाव भी [illegible] है। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि पहली कपड़ा छपाई तकनीक (छाप बनाना) यह थी कि [illegible] हुई छपाई तसतहों वाले ब्लॉकों का उपयोग किया जाता था, जिन पर स्याही लगाई जाती थी [illegible] फिर उन्हें कपड़े पर दबाव दिया जाता था। कुछ शुरुआती ब्लॉक मिट्टी या टेराकोटा से बने थे, [illegible] नक्काशीदार लकड़ी के मकबरे में डिजाइन के रुपांकनों वाले लकड़ी पर ब्लॉक पाए गए।

ब्लॉक नक्काशी इसकी अपनी कला है और ब्लॉक नक्काशी करने वाले शिल्पकार बहुत विशिष्ट [illegible] हैं। सबसे अच्छा ब्लॉक सागौन के पेड़ के तने के चिकने क्रॉस सेक्शन से आता है। लकड़ी को [illegible]-कभी 2 सप्ताह तक तेल में भिगोया जाता है, चिकना किया जाता है और फिर चॉक से सफेद [illegible] जाता है। नक्काशीदार निशान सतह पर डिजाइन करता है और फिर हथोड़ा और छेनी और एक [illegible] उपकरण का उपयोग करता है, लकड़ी में छोटा पैटर्न।

एक अच्छी तरह से बनाया गया ब्लॉक 1000 मीटर से 1500 मीटर कपड़े तक कहीं भी छपाई [illegible] माध्यम से रह सकता है, इससे पहले कि इसके महीन किनारे खराब हो जाए। विशेष रूप से बढ़िया [illegible] के लिए कुछ ब्लॉक बनाए जाते हैं।

पंजाब में ब्लॉक प्रिंटिंग कपड़ा श्रमिकों के एक समूह द्वारा की जाती है जिससे चिंबा के नाम से [illegible] जाता है। पुष्प और ज्यामितीय डिजाइन बहुत लोकप्रिय हैं। पारंपरिक डिजाइनों को विस्थापित [illegible] दिया गया है और वनस्पति रंगों ने रसायनिक रंगों का स्थान ले लिया है। लाइट और पेस्टल [illegible] का इस्तेमाल किया गया है। ब्लॉक प्रकाशित डिजाइन मोहक हैं। सामग्री से प्रेरित होने पर छापे

[illegible] के लिए एक मजेदार आकर्षण अपलोड करती है। गद्दा लिनन हो, कपड़ों के लिए सामग्री या [illegible] दीवार पर पर्दे, भारतीय हथकरघा उद्यम में भीतर अनगनित वर्षों के लिए हेड ब्लॉक प्रिंटिंग [illegible] फैशन है। फुलकारी या अधिकतम विभिन्न लेआउट प्रवृत्तियों के विपरीत, हाथ ब्लॉक प्रिंटिंग [illegible] डिजाइनों जैसे कला के प्राचीन आकार और सारांश डिजाइनों से अपना संकेत लेती है। लेआउट [illegible] एक विशाल रेंज और एक कपड़ा व्यवसायी की अभिनव क्षमता आसान लहरों और हलकों से लेकर [illegible] जटिल डिजाइनर तक कई शैलियों को अनुमति देती है।

छोटी शैलियों को एक समय में चिन्ज के रूप में मान्यता दी गई थी। 'बूटी', 'बूटा', 'शाल', [illegible] हर ब्लॉक प्रिंट के एडिटिव्स बने। डेस्क नैपकिन से लेकर कैनोपीज, लाइट – बल्ब तक, इन [illegible] हर चीज पर ब्लॉक प्रिंट का एक टुकड़ा देखा जा सकता है। हेड ब्लॉक प्रिंटिंग एक तकनीक के [illegible] हर व्यवसाय को छुआ है, और एक आवश्यक प्रवृत्ति बनाने के लिए इसकी जड़ों में छिद्रित है। [illegible] प्रिंट बहु – जातीय है। उनकी अंतरराष्ट्रीय और भारतीय मांग इस तथ्य से उपजी है कि प्रिंट [illegible] शैली और आंतरिक सज्जा का एक अनिवार्य हिस्सा है, जलवायु नहीं है।

➢ वुडब्लॉक्स के साथ वुडब्लॉक प्रिंटिंग :–

छपाई करने के लिए विभिन्न प्रकार की लकड़ियों का उपयोग किया जाता है। और लकड़ी का [illegible] छपाई के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सबसे पुरानी विधि है। यह हाल के दिनों में सबसे सरल [illegible] पारंपरिक तरीका है। कपड़े पर एक प्रिंट के लिए, कई ब्लॉक प्लेट्स का उपयोग किया जाता [illegible] क्योंकि हर अलग ब्लॉक अपने नक्काशीदार डिजाइन के अनुसार अलग–अलग रंग देगा। अतिरिक्त [illegible] एक ब्लॉक कटर भी भारी है।

लकड़ी की विभिन्न श्रेणियां हैं जिनका उपयोग वस्त्रों पर छपाई के लिए किया जाता है। नरम लकड़ी, सॉफ्टवुड आमतौर पर पाइन और स्प्रूस के साथ जिम्नोस्पर्म लकड़ी से बनी लकड़ी होती है, जो [illegible] शंकु और कभी–कभी नेट के उपयोग को पुनः उत्पन्न करती है।

सॉफ्टवुड के रूप में वर्गीकृत इमारती लकड़ी से सुई या शल्क जैसी पत्तियां होती हैं, कुछ के [illegible] अपवाद, वर्ष के दौरान पेड़ पर बने रहते हैं। सॉफ्टवुड आम तौर पर विकास उद्यम द्वारा अधिकतम [illegible] किए जाते हैं और पेपर पल्स और कार्ड उत्पादों की आपूर्ति के लिए भी उपयोग किए जाते हैं। [illegible] आमतौर पर दृढ़ लकड़ी की तुलना में तेजी से विकसित होते हैं और सख्त और नरम और [illegible] करने में कम जटिल होते हैं। सॉफ्टवुड के सामान्य उदाहरणों में शामिल है – पाइन, प्राथमिकी, [illegible], लर्च और देवदार। इस लकड़ी का उपयोग कागज पर छपाई के लिए किया जाता है। यह [illegible] के लिए बहुत कोमल है और वास्तव में वजन कम करता है।

उपरकण सामग्री :-

➢ उपकरण :-

प्रिंटर के मुख्य उपकरण के ब्लॉक होते हैं जो डिजाइन और आवश्यकता के अनुसार विभिन्न [illegible] और आकार में उपलब्ध होते हैं। ब्लॉक बनाने वाले मुख्य रूप से दो प्रकार के ब्लॉक बनाते हैं।

1. लकड़ी का ब्लॉक।
2. धातु का ब्लॉक।

➢ लकड़ी का ब्लॉक :-

ये ब्लॉक आमतौर पर सागौन या शीशम की लकड़ी पर बनाए जाते हैं। कारीगर यह सुनिश्चित करते हैं कि लकड़ी समर्थक है और फिर उस पर रूपांकनों को करते हैं। लेआउट को पहले कागज पर [illegible] किया जाता है और लकड़ी के ब्लॉक पर तय किया जाता है। कारीगर फिर विभिन्न चौड़ाई की [illegible] फ्लोर की धातु की छेनी से लकड़ी को तराशना शुरू करते हैं। रूपांकनों को तल पर [illegible] गया है जबकि शिखर पर एक हत्था है। ये हैंडल या तो एक ही लकड़ी से उकेरे गए हैं या [illegible] की मदद से फर्श से जुड़ी कम लागत वाली लकड़ी का उपयोग करके बनाए गए हैं। प्रत्येक [illegible] में या अतिरिक्त बेलनाकार छेद बिना किसी लागत वायु मार्ग के ब्लॉक में ड्रिल किए जाते हैं और [illegible] रंग के प्रक्षेपण की अनुमति देते हैं।

बने ब्लॉक में ड्रिल आयताकार, वर्गाकार, अंडाकार, अर्धगोलाकार, गोले आदि आकार के होते हैं। एक बार ब्लॉक बन जाने के बाद इसे मीलो तक तेल में 10 से 15 दिन तक भिगोया जाता है ताकि [illegible] गल जाए। उन ब्लॉकों का अस्तित्व लगभग 600 से 800 मीटर छपाई का है। परिभाषित ब्लॉकों को [illegible] रेखा के रूप में जाना जाता है और भराव ब्लॉकों को दत्ता के रूप में जाना जाता है।

➢ मेटल ब्लॉक :-

कठिन स्टाइल बनाने और प्रिंट में उच्च स्तर की पठनीयता प्राप्त करने के लिए स्टील ब्लॉक का उपयोग किया जाता है। इन ब्लॉकों को लकड़ी के ब्लॉकों में हल्के ढंग से काम करने वाली स्टील की सीटों की उत्कीर्णन पतली चादरों का उपयोग करके बनाया जाता है। स्टील की पट्टियों को [illegible] करने के लिए कुचला जाता है इसके बाद पट्टियों को समान लंबाई में काट दिया जाता है। लेआउट को लकड़ी के ब्लॉक पर खींचा जाता है और हल्के हथौड़े से स्टील पर पट्टियों को लेआउट पर ठोका जाता है।

डिजाइनों को भरने का कार्य केंद्र से किया जाता है, बाहर के लिए एक बार ब्लॉक बनने के बाद यह देखने के लिए जांच की जाती है कि स्ट्रिप्स लकड़ी के आधार से समान शीर्ष हैं। धातु ब्लॉक लंबे हैं तब लोग वाले हैं, लेकिन लंबे समय तक चलने वाले हैं।

उत्कीर्ण ताम्रपत्र मुद्रण :–

उत्कीर्ण ताम्रपत्रों से वस्तुओं की छपाई पहली बार 1770 में थॉमस बेल द्वारा यूनाइटेड किंगडम में की गई थी। पहली इस्तेमाल की जाने वाली प्रेस सामान्य लेटरप्रेस प्रकार की थी, उत्कीर्ण प्लेट दो प्रेस के स्थान पर तय किया जा रहा था। बाद के सुधारों में प्रसिद्ध सिलेंडर प्रेस कार्यरत था, प्लेट को मानक रूप से स्याही लगाया गया था और स्टील के एक तेज ब्लेड के नीचे से गुजर कर साफ किया गया था, और कपड़े को प्लेट पर रखने के बजाय प्रेशर सिलेंडर के चारों ओर घुमाया गया। प्लेट को सिलेंडर के साथ घर्षण संपर्क में उठाया गया था और इसके नीचे गुजरते पर इसकी स्याही को कपड़े में स्थानांतरित कर दिया गया था।

प्लेट प्रिंटिंग में बड़ी कठिनाई है थी कि विभिन्न छापों को सटीक रूप से जोड़ा जा सके और यह किसी भी निश्चितता के साथ कभी नहीं किया जा सकता था, प्रतिक्रिया अंततः एक रंग में पूर्ण पैटर्न तक ही सीमित थी, और रोलर प्रिंटिंग द्वारा ऐप प्रचलित कर दिया कई गई थी।

कपड़ा डिजाइन बनाने की प्रक्रिया :–

टेक्सटाइल डिजाइन बुने, बुने हुए या प्रिंटेड कपड़ों के लिए डिजाइन बनाने की प्रक्रिया है। एक कपड़ा डिजाइनर उत्पादन के तकनीकों पहलुओं और फाइबर, यार्न और रंगों के गुणों की गहराई से समझ के साथ एक तैयार कपड़ा जैसा कैसा दिखेगा इसकी रचनात्मक दृष्टि से शादी करते हैं। बुने हुए और मुद्रित वस्त्र दोनों के लिए डिजाइन अक्सर तैयार डिजाइन के ड्राइंग या वाटरकलर स्केच से शुरू होते हैं।

परंपरागत रूप से, बुने हुए वस्त्र पैटर्न के चित्रों को ग्राफ पेपर के विशेष रूपों में अनुवादित किया जाता था, जिन्हें पॉइंट पेपर कहा जाता था, जिनका उपयोग बुनकरों द्वारा अपने करघे स्थापित करने में किया जाता था। आज अधिकांश पेशेवर टेक्सटाइल डिजाइनर इस उद्देश्य के लिए स्पष्ट रूप से बनाए गए कंप्यूटर एडेड डिजाइन सॉफ्टवेयर के कुछ रूपों का उपयोग करते हैं। कपड़ा उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में अग्रणी क्षेत्रों में से एक है क्योंकि यह कुल औद्योगिक उत्पादक में लगभग 14 प्रतिशत का योगदान देता है। भारत में कपड़ा उद्योग को भारत में अन्य सभी औद्योगिक क्षेत्रों के बीच विदेशी मुद्रा के मामले में सबसे बड़ा राजस्व अर्जक होने का दावा किया जाता है। यह उद्योग लगभग

[illegible] लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है, जिसने इसे देश के सबसे लाभप्रद औद्योगिक [illegible] में एक बना दिया है।

कपड़ा एक लचीली सामग्री है जिसमें प्राकृतिक या कृत्रिम रेशों का एक नेटवर्क होता है जिसे [illegible] धागा या धागा कहा जाता है। कच्चे ऊन के रेशों, ऊन, कपास या अन्य सामग्री को कताई चक्र [illegible] लंबे किस्से बनाने के लिए सूत का उत्पादन किया जाता है। कपड़ा बुनाई, क्रोचेट, [illegible] या लूपों को एक साथ दबाने से बनता है।

[illegible], भारत में वस्त्रों को कैलिको संग्रहालय देश का प्रमुख कपड़ा संग्रहालय है, और [illegible] कलाकृतियों के अपने विशिष्ट और व्यापक संग्रह के लिए दुनिया में अपनी तरह का सबसे [illegible] संस्थान है।

कपड़ा डिजाइन द्वि – आगामी डिजाइन बनाते हैं, जो कर सकते हैं, बुनाई के उत्पादन में [illegible] दोहराए जाने वाले डिजाइन के रूप में उपयोग किया जाता है, बुनाई और मुद्रित कपड़े या [illegible] उपयोग।

औद्योगिक और गैर – औद्योगिक दोनों स्थानों पर काम करते हुए, वे अक्सर कपड़ा उद्योग के [illegible] विशेषज्ञ या विशेषज्ञ संदर्भ में काम करते हैं। दो प्रमुख क्षेत्र हैं :–

> आंतरिक सज्जा ।

> फैशन या विशेषज्ञ उदाहरण के लिए फायर – प्रूफ

[illegible] टेक्सटाइल डिजाइनर संबंध उद्योग कार्यों में भी काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, रैपिंग पेपर, [illegible], ग्रीटिंग कार्ड और सिरेमिक डिजाइन करना। कई कपड़ा डिजाइनर स्व – नियोजित हैं, [illegible] अन्य डिजाइन टीम के हिस्से के रूप में काम करते हैं। विशिष्ट कार्य गतिविधियों में शामिल हैं।

। [illegible] की योजना बनाने और विकसित करने के लिए ग्राहकों और तकनीकी, विपणन और खरीद [illegible] के साथ संपर्क करना।

। ग्राहकों के विचारों की सटीक व्याख्या और प्रतिनिधित्व करना।

- टेक एस – 2002, इकजेट टेक्नोलॉजी कार्ल्स वैड कैलिफोर्निया यू. एस. टोरी पाइस सिर्च।
- लोपर बी – 2004, स्पाई 2003 में नवीनतम प्रौद्योगिक विकास टेक्सटाइल
- Kassia Ste clair, The Golden Thread, How Fabric changd History, John Murray Publishing ISBN : 9781473659032
- https://eoanconnection.com
- https://ib.jotbloglindia.com

चतुर्थ अध्याय

- शहरों में कपड़ा उद्योग
- उद्योगों में स्व–सर्वेक्षण

चंडीगढ़, हरियाणा आज स्वर्ण जयंती मना रहा है। पानीपत जिला बनने के 27 सालों के सफर में न केवल हरियाणा बल्कि विश्व के नक्शे पर उद्योग जगत में अपनी धाक जमाई है। सालाना 4200 करोड़ के कारोबार से हरियाणा की आर्थिक मजबूती में योगदान देने वाला पानीपत आज वेस्ट को बेस्ट बनाने में दुनियाभर में अव्वल है। दुनिया के 30 देशों का वेस्ट कपड़ा पानीपत आता है जो बेस्ट बनाकर देशों में निर्यात होता है।

लेकिन इसका आधुनिक रूप 21 वर्ष पहले आया। जब कॉटन वेस्ट की रिसाइकिलिंग होने लगी प्लास्टिक और ई-वेस्ट की रीसाइकिलिंग 5 साल पहले ही शुरू हुई है।

वेस्ट का कारोबार 4200 करोड़ सालाना

चेंबर ऑफ इंडस्ट्रीज एंड इंजीनियर अनिल शर्मा ने बताया कि आज पानीपत में वूलन, आर्केलिक, पॉलिस्टर व कॉटन वेस्ट के रिसाइकिल का सालाना कारोबार 4200 करोड़ का है। आर्केलिक गारमेंट हब लुधियाना और होजरी हब तमिलनाडु के तिरपुर से भी यहां पर वेस्ट आता है। यूरोप, अमेरिका, कनाडा, बांग्लादेश, पाकिस्तान सहित अन्य देशों का वेस्ट भी पानीपत रिसाइकिल करता है।

65 हजार को रोजगार

कपड़ों के वेस्ट से 65 हजार को रोजगार मिल रहा है। कपड़ों को खोलने से लेकर धागे और धागा बनाने में यूपी, बिहार, पश्चिम बंगाल के साथ ही पानीपत के आसपास के गांव से भी महिलाएं बड़ी संख्या में रोजगार कर रहे हैं। यहां 45 ओपन एंड स्पिनिंग यूनिट लगी है। जहां 1500 टन रोजाना पुराने कपड़े रिसाइकिल हो रहे हैं।

कपड़ों पर बलाई कैंची

यूरोप और अमेरिका जैसे देशों में कपड़ों की डाई क्लीनिंग महंगी है। इसलिए वहां से आ रहे कपड़ों को यहां डाई क्लीनिंग कर बेचा जाने लगा। विरोध के बाद केंद्र सरकार ने कानून बनाया कि देशों से कटे हुए कपड़ों वेस्ट ही देश में लाए जा सकते हैं। कारोबार 500 करोड़ का रोजगार दो हजार को

ई-वेस्ट की रीसाइकिलिंग का सालाना 500 करोड़ रुपए का कारोबार है। जिसमें 2 हजार युवाओं को रोजगार मिला हुआ है। सैमसंग, एबोट हेल्थ केयर, एपल, पीएनबी, ओबीसी, मन्नीपुरम फाइनेंस और रिलायंस जैसी कम्पनियों का वेस्ट आता है। 10 लाख टन प्लास्टिक वेस्ट रीसाइकिल

प्लास्टिक वेस्ट को यहां अभी तक पूरी तरह रिसाइकल करने का काम तो नहीं होता, लेकिन वेस्ट का प्रयोग कर बिजली की फिटिंग का सामान, कुर्सी, बेंच और खिलौने आदि बनाकर बाहर

[illegible] है। प्रति वर्ष 10 लाख टन से ज्यादा प्लास्टिक वेस्ट का प्रयोग हो रहा है। 2 हजार से [illegible] को कारोबार मिला है।

[illegible] का पानीपत शहर टैक्सटाइल नगरी के नाम से जाना जाता है। आजादी के बाद स्थापित [illegible] इकाइयों ने तेजी से विस्तार करते हुए आधुनिक टैक्सटाइल उद्योग का रूप लिया [illegible] की इस इंडस्ट्री में सूक्ष्म और लघु इकाइयों का है। इन इकाइयों की संख्या करीब आठ [illegible] है। इनमें डोमेस्टिक में बैडशीट, पर्दे, सोफा कवर, मैट, रजाइयां, कवर व कंबल तैयार होते हैं [illegible] में कारपेट, दरियां, मैट, बाथमैट, पर्दे व कंबल बनाए जाते हैं। विश्व युद्ध से भी पुराना है [illegible] की कंबल मार्केट का इतिहास, विदेशों तक है यहां के कंबलों की छाप।

[illegible] के कंबल मार्केट का इतिहास काफी साल पुराना है. जिसकी वजह से आज पानीपत के [illegible] की विदेशों तक में डिमांड है. साथ ही पूरे देश में कंबलों की रेट भी पानीपत के कंबल मार्केट [illegible] तय होती है. जिले के कंबल मार्केट के इतिहास को लेकर पढ़ें ये खास रिपोर्ट. विश्व युद्ध से भी [illegible] पानीपत की कंबल मार्केट का इतिहास, विदेशों तक है यहां के कंबलों की छाप

पानीपत के कंबल मार्केट का इतिहास काफी साल पुराना है. जिसकी वजह से आज पानीपत के कंबलों की विदेशों तक में डिमांड है. साथ ही पूरे देश में कंबलों की रेट भी पानीपत के कंबल मार्केट से ही तय होती है. जिले के कंबल मार्केट के इतिहास को लेकर पढ़ें ये खास रिपोर्ट.

...पर डिजिटल प्रिंटिंग इन दिनों काफी लोकप्रिय हो रही है। इस अध्याय में मैंने ...उद्योग के बारे में लिखा है। पंजाब में लुधियाना सबसे बड़ा शहर है, जो हर प्रकार के ...का उत्पादन करता है। डिजिटल मीडिया में तकनीकों के विकसित होने के बाद, ऐसे कई ...उन्नत तकनीक के कारण डिजिटल प्रिंटिंग में अपना काम शुरू किया। गुरु क्रिएशन ...है जो न्यू सुभाष नगर लुधियाना में स्थित है, जहां विभिन्न प्रकार के कपड़ों पर ...प्रिंट की जाती है।

...में ज्यादातर पॉलिएस्टर कपड़े का इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि डिजिटल प्रिंटिंग के ...आसान होता है। गुरु क्रिएशन के मालिक के अनुसार स्याही कई प्रकार की होती है ...आधारित स्याही डिजिटल प्रिंटिंग के लिए उपयोग की जाने वाली जैकेट प्रिंटिंग के लिए ...सॉल्वेंट स्याही, पानी आधारित स्याही और पीवीसी स्याही। लेकिन शीतकालीन कंबल छपाई के ...छपाई के लिए पानी आधारित स्याही का इस्तेमाल किया।

...डिजिटल टेक्सटाइल प्रिंटिंग के लिए उपयोग की जाने वाली मशीनों और सॉफ्टवेयर के ...बताता है। उनके पास अलग–अलग आकार की दो से तीन मशीनें हैं और उनमें से सबसे ...की कंबल छपाई के लिए है और बाकी मशीनें महिलाओं के सूट और अन्य सामग्री जैसे ...शर्ट की छपाई के लिए उपयोग में आएंगी।

...के मालिक भी एक ग्राफिक डिजाइनर थे। उन्होंने फोटोशॉप में ग्राफिक डिजाइनिंग की ...की और प्रिंटिंग के लिए खुद डिजाइन तैयार करते हैं।

• इंकजेट :–

...इंकजेट एक ऐसी तकनीक है जो तरल स्याही को एक माध्यम तक पहुंचाने में सक्षम बनाती है ...स्याही की बूंदे ही माध्यम से संपर्क बनाती हैं। इसलिए यह एक गैर – प्रभावकारी मुद्रण ...है। इंकजेट में तीन बुनियादी घटक होते हैं, जिनमें से सभी को स्वीकार्य आउटपुट देने के लिए ...तरह से काम करने की आवश्यकता होती है। ये टुकड़े प्रिंट, हेड स्याही हैं और माध्यम। इस ...का उद्देश्य प्रिंट हेड के दृष्टिकोण से स्याही जेट की आधुनिक स्थिति की समीक्षा करना है। हम ...में स्याही जेट प्रौद्योगिकी वर्गों का वर्णन करके और दो सबसे प्रचलित तकनीकों के फायदे ...नुकसान की व्याख्या करके शुरू करते हैं।

स्याही जेट प्रौद्योगिकियां – इंक जेट प्रौद्योगिकियों को आम तौर पर दो बड़े वर्गों में वर्गीकृत

- गर्म इंक जेट
- ठंडी – ऑन – डिमांड इंकजेट

स्याही को एक स्थिर दबाव लगाकर एक स्थिर गति से नोजल के माध्यम से छिड़का जाता है। [illegible] स्वाभाविक रूप से अस्थिर होता है और नोजल छोड़ने के तुरंत बाद बूंदों में टूट जाता [illegible] प्रिंट की जा रही छवि के आधार पर पुन पुनरावर्तन के लिए गटर में विक्षेपित कर दिया जाता [illegible] पर विद्युत रूप से बूंदों को चार्ज करने के और प्रक्षेपवक्र को नियंत्रित करने के [illegible] को लागू करके प्राप्त किया जाता है। 'निरंतर' नाम की उत्पत्ति इस तथ्य से हुई है कि [illegible] निकलती रहती हैं।

डीओडी स्याहीशाही जेट में बूंदों को केवल छवि बनाने के लिए आवश्यक होने पर बाहर [illegible] जाता है। ड्रॉप्स उत्पन्न करने के लिए उपयोग किए जाने वाले दो मुख्य ड्रॉप इंजेक्टर [illegible] पीजोइलेक्ट्रिक इंक जेट (PUJ) और थर्मल इंकजेट हैं। पी.आई.जे., नोजल के अंदर एक [illegible] की मात्रा पीजोइलेक्ट्रिक एक्टयूएटर के माध्यम से जल्दी से कम हो जाती है, जो स्याही [illegible] बूंद को निचोड़ लेती है। नोक से बाहर (TIJ) में प्रत्येक नोजल के अंदर स्थित एक [illegible] का उपयोग स्याही के तापमान को बबल न्यूक्लिएशन के बिंदु तक बढ़ाने के लिए किया [illegible]।

डिटल कालीन मुद्रण :–

[illegible] के दशक के शुरुआत में स्पार्ट नबर्ग, साउथ कैरोलिना, यूएसए के मिलिके ने एक [illegible] कालीन प्रिंटर विकसित किया, जिसे 1975 में मिलिकेन मिलिट्रॉन के रूप में लांच किया गया। [illegible] पूरी तरह से नोजल की एक सारणी से डाई की निरंतर धाराओं को आग लगाता है। [illegible] प्रिंट चौड़ाई के डिजिटल प्रिंटिंग का विकसित और प्रगति। वायु विक्षेपण बूंदों की लक्षित [illegible] छवि में योगदान नहीं करती हैं, उन्हें पुनःनवीनीकरण किया जाता है। सफेद कालीन के एक [illegible] प्रहार करने के लिए अविचलित बूंदे जारी हैं।

मिलिकेन ने इस तकनीक को अपने शुरुआती 10 डीपीआई रेजोल्यूशन 700 डीपीआई से अधिक [illegible] किया। 1976 में, जिमर ने अपने कालीन प्रिंट की घोषणा की। आज अधिकांश मुद्रित [illegible] गलीचे डिजिटल रूप से मुद्रित होते हैं।

➢ मशीन और सॉफ्टवेयर :-

- मशीनें।
- कपड़े पर डिजिटल प्रिंटिंग की विभिन्न प्रकारों की मशीनें हैं। हर मशीन के अलग-अलग उद्देश्य होते हैं।
- उच्च बनाने की क्रिया डिजिटल प्रिंटिंग मशीन।
- गर्मी हस्तांतरण मशीन।
- डायरेक्ट डिजिटल प्रिंटिंग मशीन

➢ डाई उच्च बनाने की क्रिया प्रिंट :-

डीसीसी डाई – सब्लिमेशन प्रिंटर को उच्च फैशन, तेज फैशन और प्रदर्शन परिधान प्रिंटिंग के लिए तैयार किया गया है, जिसमें एक मजबूत प्रिंट तंत्र, उच्च – प्रदर्शन प्रिंट, हेड तकनीक और उन्नत स्याही प्रौद्योगिकी शामिल हैं। DCC, EPSON और DGI सहित ब्रांडो के प्रिंटर प्रदान करता है। डाई – उच्च बनाने की क्रिया मुद्रण और प्रकिया का उपयोग पॉलिएस्टर या अन्य सिंथेटिक कपड़ों पर प्रिंट करने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग टी–शर्ट, बैनर, टेबल कवर, आईडी कार्ड, सपोर्ट सर्विस और झंडे आदि अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है।

सच्ची उत्पादन दक्षता और वर्कफ्लो में आसानी के लिए, परिधान, व्यक्तिगत, उपहार और कस्टम ग्राहक उत्पादों के लिए डाई – सब्लिमेशन समाधान आवश्यक है। कोई भी अन्य सिस्टम हमारे उच्च बनाने की क्रिया प्रिंटर की तरह सामान्य गुणवत्ता वाले परिणाम और स्वामित्व में आसानी आसानी प्रदान नहीं करता है।

डाई उच्च बनाने की प्रक्रिया के साथ कपड़े और अन्य पदार्थों पर छपाई सबसे अधिक टिकाऊ हो जाती है, इसके द्वारा प्रदान की जाने वाली गुणवत्ता को न भूलें। इस प्रक्रिया में स्याही को कपड़ों में सोख दिया जाता है और न केवल कपड़े के ऊपर बैठ जाता है। लंबे समय तक चलने के साथ–साथ यह प्रक्रिया छपाई के बाद कपड़ों को एक नरम स्पर्श देती है। चूँकि रंग बाहरी प्रकाश व्यवस्था और बाद धुलाई के बाद भी मजबूत रहता है। यह खेलो और स्कूलों के कपड़ों के लिए आदर्श प्रक्रिया है।

➢ लुधियाना में स्क्रीन प्रिंटिंग के उद्योग में सर्वेक्षण :-

[illegible] बुनाई के क्षेत्र में तकनीकों, बिक्री के उत्पादन तरीकों और सिल्क स्क्रीनिंग के उद्देश्य से [illegible] एक जानकारी लेने के लिए मैं लुधियाना गई थी। मुझे स्क्रीनिंग के बारे में जानने के लिए [illegible] मिली।

[illegible] उचित उद्योग नहीं था। एक लड़का नौशाद अली स्टूडियो का मालिक था। वह अपने घर [illegible] से अपना स्टूडियो चलाते हैं, क्योंकि उनके पास अपनी कला और प्रतिभा को एक्सप्लोर [illegible] के लिए बड़ा क्षेत्र नहीं है। 2 साल पहले उन्होंने बुनाई और बुनाई का काम किया क्योंकि बुनाई [illegible] प्रसिद्ध नौकरियों में से एक है जो पंजाब हरियाणा में लगभग लोगों द्वारा की जाती है।

भारत में स्क्रीन प्रिंटिंग :–

प्रिंट – मेकिंग, सेरीग्राफी या सिल्क स्क्रीन – प्रेटिंग के सबसे पुराने रूपों में से एक में एक [illegible] को दुरुह पेश करने के लिए बुने हुए जालीदार कपड़े पर एक स्याही अवरुद्ध स्टैंसिल को ठीक [illegible] शामिल है। भारत में, सेरीग्राफी को मूल चित्रों की तुलना में कम मूल्य का माना जाता था, और [illegible] माना जाता था क्योंकि वह बड़े पैमाने पर उत्पादित किए जा सकते थे।

हुसैन ने इस विरोधाभास के खिलाफ लड़ाई लड़ी, उनकी दृष्टि हर किसी के लिए अपनी कला [illegible] करना था और कला की दुनिया के अभिजात वर्ग के भीतर प्रदान पदानुक्रम का तोड़ना था। [illegible] कई समकालीनों की तरह पेंटिंग की विविध प्रयोगात्मक शैलियों का स्वागत करते हुए, हुसैन ने [illegible] जनजातीय और पौराणित कला के विभिन्न विषयों का उपयोग करते हुए अपनी भारतीय जड़ों की [illegible] की। मदर टेरेसा सीरीज से लेकर हॉर्स सीरीज तक, हुसैन ने अपनी प्रमुख कृतियों को सीरीग्राफ [illegible] उपलब्ध कराया है। एचएस रजा ही एक ऐसे कलाकार थे जिन्होंने सेरीग्राफी माध्यम में इतने सारे [illegible] किए। यहां उनकी सेरीग्राफी की रचनाएं हैं जिन्होंने कई कलाकारों को इस माध्यम में काम करने [illegible] प्रेरित किया।

सामग्री और उपकरणों की संभावनाएं और सीमाएं :–

नए विचार और नई तकनीके हमेशा रोमांचकारी और यह स्वाभाविक है कि स्क्रीन प्रिंटिंग में [illegible] रोमांच और अनुभव लगभग पूरी तरह से तकनीक उपकरण और सामग्री से संबंधित होगा। इस [illegible] को जितनी जल्दी हो सके पारित किया जाना चाहिए। क्योंकि यह तब तक नहीं है जब तक [illegible] की तकनीक दूसरी प्रकृति नहीं बन जाती है कि किसी भी प्रकार के प्रिंट या डिजाइन का [illegible] होने की संभावना है।

प्रत्येक शिल्प और कला के अपने विशिष्ट गुण और सीमाएं होती हैं। स्क्रीन जैसा प्रिंटिंग अपवाद है। लेकिन ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे कोई आपको उनकी समझ दे सके। एक ऐसा अनुभव जो सामग्री, उपकरण और प्रक्रियाओं के साथ काम करके ही होना चाहिए और प्राप्त किया जा सकता है। अनुभव को सहज बनाने के लिए काम काफी व्यापक होना चाहिए। यह दूसरी प्रकृति बन जाना चाहिए। यह डिजाइनर की रचनात्मक शब्दावली का आसानी से काम करने वाला हिस्सा बनना चाहिए। प्रमुख सामग्री कागज और कपड़े, पेंट और डाई हैं। दोनों एक दूसरे से अलग हैं और तकनीकी तौर से अलग है। कागज सपाट और आमतौर पर सफेद और चिकना होता है। लेकिन कपड़ा ऐसा नहीं होता।

कपड़ों में एक अजीबोगरीब लचीलापन होता है जिसे समझना और इस्तेमाल करना चाहिए। साथ ही कोई सेरीग्राफी किसी कपड़े की तरह या कपड़े की सेरीग्राफी की तरह दिखता है। रंगों और उनका संपूर्ण अध्ययन एक विशाल कार्य है जो निश्चित रूप से किसी भी व्यक्तिगत प्रिंटर के दायरे से बाहर है। लेकिन दृश्य और रासायनिक प्रतिक्रियाओं की न्यूनतम विशेषताओं को सीखना चाहिए। यह महत्वपूर्ण होता है जब एक सेरीग्राफर या फैब्रिक डिजाइन देखता है कि उसके पहले रंग के ओवरप्रिंटिंग के बाद क्या होता है। रंगों के सूखने के तरीकों में कितनी अप्रत्याशित विविधता है क्योंकि वे अलग-अलग सतहों पर अलग-अलग डिग्री के प्रवेश के साथ मुद्रित होते हैं।

➢ फैब्रिक प्रिंट बनाना :-

• द टेक्सटाइल प्रिंटिंग फ्रेम एंड प्रिंटिंग बोर्ड :-

टेक्सटाइल प्रिंटिंग फ्रेम ठीक उसी तरह से बनाए जाते हैं जैसे सेरीग्राफी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले फ्रेम होते हैं। यहां तक कि आर्गेन्डी के साथ कार्डबोर्ड बॉक्स का उपयोग 1 बच्चे द्वारा सस्ता कपड़ा छपाई के लिए किया जा सकता है। दो प्रक्रियाओं के बीच का अंतर मुख्य रूप से यह तरीका है जिसमें फिटिंग फ्रेम का उपयोग किया जाता है। जबकि सेरीग्राफिक प्रिंटिंग फ्रेम है स्थिर और एक फ्लैट बोर्ड पर टिका हुआ कपड़ा छपाई प्रेम एक गद्देदार बोर्ड के साथ ले जाया जाता है, क्योंकि डिजाइन की प्रत्येक इकाई मुद्रित होती है जो एक प्रमुख रेल पर गेज बोर्ड द्वारा निर्देशित होती है।

➢ पंजाब में कपड़ा छपाई में महिलाओं का योगदान :-

महिलाएं वह धुरी हैं जिसके चारों और परिवार, समाज और पूरा समुदाय चलता है। शिक्षा के प्रसार, प्रौद्योगिकी की उन्नति और शहरीकरण ने भी महिलाओं में पुरुषों के बराबर शिक्षा प्राप्त करने

[illegible] की आय को पूरा करने के लिए सामाजिक जागृति पैदा की है। आर्थिक स्वतंत्रता और [illegible] स्थिति की खोज ने महिलाओं को स्वरोजगार और उद्यमिता के लिए मजबूर किया है।

[illegible] बाद एक बहु-आयामी चुनौतीपूर्ण कार्य है और अनिवार्य रूप से एक रचनात्मक गतिविधि [illegible] संसाधनों को जुटाना और उन्हें उत्पादन में प्रारंभिक परिवर्तन के साथ जोड़ना और इस तरह [illegible] रिटर्न शामिल है। सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरी के अवसरों की कमी और निजी क्षेत्र में कम [illegible] के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा ने आधुनिक महिलाओं को हाल के दिनों में रोजगार के नए नए अवसर [illegible] के लिए मजबूर किया है। महिलाओं के उद्यमों को पुनर्गठित करने के कारणों में उनके कौशल [illegible] व्यापार में उनकी प्रतिभा और क्षमता और कुछ सकारात्मक करने की जबरदस्त इच्छा है। [illegible] समाज के सभी वर्गों की अधिक से अधिक महिलाएं उद्यमी बन रही हैं।

ऐसे कई उद्यम है जो महिला उद्यमियों द्वारा सफलतापूर्वक चलाए जा रहे हैं। हालांकि महिलाओं [illegible] शुरू किए गए और चलाए जा रहे उद्यमी अब केवल पारंपरिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं। बड़ी [illegible] में महिला उद्यमियों को लगता है कि पैसा बनाने और रोजगार प्रदान करने का एक अच्छा [illegible] है। भारतीय बुटीक खासकर पंजाब में तैयार होने वाले उत्पाद मुख्य रूप से महिलाओं के सूट, [illegible], फुलकारी आदि होते हैं। उचित मूल्य पर उत्पाद बनाने के लिए हमेशा ग्राहकों की जरूरतों [illegible] अपेक्षाओं को ध्यान में रखना एक महत्वपूर्ण बात है। डिजाइनर सामग्री और श्रम इनपुट उत्पादों [illegible] कीमत के महत्वपूर्ण निर्धारण है। ये बुटीक आवासीय में स्थित थे। इलाके हो या व्यापारिक इलाके, [illegible] उद्यम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि लक्ष्य बाजार की कितनी सही पहचान क [illegible] है।

➢ श्रमिकों का महत्व :-

पंजाब के कपड़ा उद्योग की बड़े पैमाने की इकाइयों ने महिला श्रमिकों को विनिर्माण कार्यों पर [illegible] करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि अंतिम उत्पादों का उत्पादन करने के लिए कुशल कार्य [illegible] जा सके। बड़े पैमाने की इकाइयों ने कपड़ा उद्योग में महिला श्रमिकों को रोजगार के अवसर [illegible] किए। घंटों की शिफ्टिंग में कुशल और बढ़ी हुई मात्रा में उत्पादन प्रदान किया जिससे अंतिम [illegible] के निर्माण से उत्पन्न लागत में और कमी आई।

बाजारों में उपभोक्ताओं की मांगों को पूरा करने के लिए पंजाब का कपड़ा उद्योग बाजारों में [illegible] और माल की उत्पादन क्षमता का सबसे बड़ा क्षेत्र बन गया। बड़े पैमाने की इकाइयों ने पंजाब [illegible] कपड़ा उद्योग में महिला श्रमिकों को छात्रावास और चिकित्सा सुविधाएं देकर सुविधाएं प्रदान की।

पंजाब में कपड़ा इकाईयों में महिला श्रमिकों की कुशल शक्ति को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने राज्य की अर्थव्यवस्था में समान रूप से रोजगार प्रदान किया। मंदी ने उद्योग की बड़े पैमाने की इकाइयों को उत्पादन क्षमता को कम करके, बाजारों में वस्तुओं की मांग और आपूर्ति को कम करके और कर्मचारियों को कम करके प्रभावित किया, जिससे उन्हें कमाई की तुलना में कार्य बल को कम वेतन देना पड़ा।

विकास दर की सामान्य अवधि में पंजाब के उद्योग ने नौकरी छोड़ने के लिए कार्य बल पर मंदी का प्रभाव पड़ा जब कुछ इकाइयों ने लंबे समय तक मंदी के संकट से प्रभावित व्यवसायिक गतिविधियों को बंद कर दिया। अर्थव्यवस्था में बेहतर रोजगार पैदा करने के लिए विनिर्माण कार्यों की नई इकाइयों की स्थापना की। माल का उत्पादन करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों पर अनिवार्य रूप से काम करने वाले कार्य बल को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले उत्पादों के निर्माण और उन्हें विकसित करने के लिए सर्वोत्तम प्रशिक्षण और कौशल की आवश्यकता होती है। इस कारण लेबर टर्नओवर डूब गया।

मैन्युफैक्चरिंग यूनिट ने लगातार काम किया। मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स को बंद नहीं किया क्योंकि लोहे की बड़ी यूनिट्स में बड़ी संख्या को मजदूर काम कर रहे थे। इसने उत्पादन में वृद्धि को और लोहे में उच्च लाभप्रदता प्राप्त की ताकि भविष्य के व्यापक संचालन और क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों के पैमाने का विस्तार किया जा सके।

- Gail Baugh, The Fashion Desighers Textile Directary : The creatine use of Fabric in Desig, The Thames & Hudson Publication ISBN -13 : 9780500289228
- Isaac Carl, Bowles Melenie, Digital Textile Design Second edition, Laurence King Publishing : ISBN – 9781780670027
- https://block.printing.com
- https://hmoob.in/Textile- printing

वस्त्र छपाई एक प्राचीन तकनीक है, जिसकी शुरुआत ब्लॉक प्रिंटिंग से हुई थी। अपने विषय में [illegible] और वस्त्र छपाई के बारे में चर्चा की है। वस्त्र का इतिहास तथा निर्माण के बारे में भी वर्णन [illegible]। हर शहर का अपना एक खास माध्यम होता है। इस काम में महिलाओं के योगदान की [illegible] अच्छी तरह से चर्चा की गई है। ब्लॉक प्रिंटिंग कपड़े पर एक छवि छापने के लिए लकड़ी के [illegible] टुकड़े अन्य प्रकार के ब्लॉक का उपयोग कर रही है।

छपाई के शुरुआती दिनों में इसका इस्तेमाल किताबें छापने के लिए किया जाता था। आज [illegible] प्रिंटिंग को एक कला का रूप माना जाता है। उदाहरण के लिए इस तकनीक का उपयोग स्थिर [illegible] से लेकर अनुकूलित जूते तक कुछ भी बनाने के लिए किया जा सकता है। अनिवार्य रूप से [illegible] एक मुद्रांकन तकनीक है, जहां स्याही को कस्टम – नक्काशीदार ब्लॉक पर घुमाया जाता है।

टेक्सटाइल पर प्रिंटिंग टेक्सटाइल से प्रिंटिंग पैटर्न की प्रक्रिया है। आमतौर पर लिनेन की। [illegible] या रेशम, लकड़ी के ब्लॉकों के माध्यम से, यह कपड़े पर छपाई की सबसे पुरानी तकनीक है। [illegible] पर कपड़ा छपाई करने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल किया गया है। कपड़े पर [illegible] के लिए विभिन्न प्रकार के ब्लॉक का उपयोग किया जाता है – जैसे लकड़ी का ब्लॉक, स्क्रीन [illegible], डिजिटल मीडिया।

हर ब्लॉक में अलग–अलग तकनीक और टेक्सटाइल पर अलग–अलग प्रभाव पैदा होते हैं। और [illegible] है हर माध्यम में स्याही का इस्तेमाल भी अलग अलग होता है। सभी माध्यम एक ही पृष्ठ पर नहीं [illegible] सभी गुणवत्ता में अंतर है और छपाई पर खर्च होने वाली लागत में भी बड़ा अंतर होगा। लकड़ी के [illegible] और स्क्रीन प्रिंटिंग मुद्रण के लिए उपयोग की जाने वाली सस्ती विधि है।

हम मुद्रण के क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों और सफलता के बारे में बात करते हैं, बनाने के लिए बहुत [illegible] तकनीकें और विधियां विकसित हो चुकी है और अब हम कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर के माध्यम से [illegible] प्रिंट कर सकते हैं।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि पुरानी तकनीक के उपयोग में नहीं आ रही है। हर [illegible] अभी भी ठीक से उपयोग कर रहा है।

[illegible] में कपड़ा छपाई का भविष्य उस बिंदु से काफी प्रभावशाली दिखता है जहां उद्योग आज [illegible] है।

[illegible] ब्लॉक प्रिंटिंग और स्क्रीन प्रिंटिंग, दोनों एक मुकाम पर पहुंच गए हैं, जबकि डिजिटल [illegible] भी हर किसी के जीवन में अपनी जगह बना रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- रोर्ड डॉ राकेश कुमार, चित्रण के सिद्धान्त, इलाबाद सन् 2015 पृ0 सं 1, 2, 3
- ग्रगी एच – 2002, टेक्सटाइल एजुकेशन इन डिजिटल इकंलेट फैब्रिक प्रिंटिंग एन आई वी – 18 सैन डिएगो कैलिफोर्निया – यू. एस.
- कैन्ड एस – 2002, इंकजेट टेक्नोलॉजी कार्ल्स बैड कैलिफोर्निया यू. एस. टोरी पाइस सिर्च।
- लोवर बी – 2004, स्याही 2003 में नवीनतम प्रौद्योगिक विकास टेक्सटाइल
- Neelima Priting and Washing of Textile, Ansari Road Darya Gang, New Delhi, Publishing : ISBN – 97881841112184 पृ सं. 1, 2, 4, 9, 10
- Tyagi Anita, Textile Design Colours and Textile, New Delhi Publishing, ISBN : 9788184113099, सन् 2011 पृ सं0. 99, 100,101, 102, 103, 104, 105, 1, 2
- Kapoor Seema, Dving of Textile Material, New Delhi Publishing ISBN : 9788184114911, सन् 2012 पृ सं 29, 162, 163, 167, 166, 165
- Gillow John, and Barnard Nicholas., Indian textile, New Delhi Publishing ISBN : 9788187108702, सन् 2008, पृ सं 58, 59, 60, 63, 64, 65, 84, 134, 143, 150, 153, 161
- Kassia Ste clair, The Golden Thread, How Fabric changd History, John Murray Publishing ISBN : 9781473659032
- Gail Baugh, The Fashion Desighers Textile Directary : The creatine use of Fabric in Desig, The Thames & Hudson Publication ISBN -13 : 9780500289228
- Isaac Ceri, Bowles Melenie, Digital Textile Design Second edition, Laurence King Publishing : ISBN – 9781780670027

Web Sites :-

- https://www.twinkl.co.in
- https://caralinaoneto.com
- https://indianculature.gov.in
- https://goanconnction.com
- https://goanconnection.com
- https://lo.lolbloglindia.com
- https://block printing.com
- https://hmoob.in/Textile- printing

News Paper:-

- ग्रेट भारत टाइम्स 6 मार्च 2002

चित्र संग्रह सूची

पद्मापानी गुफा की चित्र

1 प्राचीन पहनावा

2 राजस्थानी छपाई

3 हाथ की कढ़ाई

4 वस्त्र हस्तशिल्प कला

5 प्राचीन छपाई

6 रंगाई

7 हाथ की छपाई

8 स्क्रीन छपाई

9 डिजिटल छपाई

10 ब्लॉक छपाई

11 ब्लॉक

12 वुड ब्लॉक छपाई

13 कंबल छपाई

14 डिजिटल छपाई

15 स्क्रीन डिजाइन

16 स्क्रीन छपाई मशीन

17

पद्मापानी गुफा की चित्र

प्राचीन पहनावा

राजस्थानी छपाई

हाथ की कढ़ाई

वस्त्र हस्तशिल्प कला

प्राचीन छपाई

रंगाई

हाथ की छपाई

स्कीन छपाई

डिजिटल छपाई

ब्लॉक छपाई

ब्लॉक

वुड ब्लॉक छपाई

कंबल छपाई

कंबल छपाई

डिजिटल छपाई

स्कीन डिजाईन

स्कीन छपाई मशीन

Art Relation with Shree Krishna Museum: An Overview

KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA

A

Dissertation submitted for the degree

MASTER OF ARTS IN FINE ARTS

Researcher

Saloni

MA Fine Arts

Final Year

Supervisor

Mrs. Santosh

Associate Professor & H.O.D

Arya KanyaMahavidyalya,

Shahabad (M)

DEPARTMENT OF FINE ARTS

ARYA KANYA MAHAVIDYALYA,

SHAHABAD MARKANDA

2022-23

TO WHOM IT MAY CONCERN

It is certified that **Ms. Saloni,** Roll no 210155507,student of M.A Final year has made research on the title "**Art relation with Shree Krishna Museum: An Overview**". It is her original work. She has completed this with full devotion and hard work. We wish for her successful a bright future.

Date: **Principal**

Dr. Aarti Trehan

CERTIFICATE

It is certified that **Saloni**, final year student of master of Fine Arts (Drawing & Painting) has completed a short dissertation under my guidance on the title **"Art relation with Shree Krishna Museum: An overview".**

Date:

Mrs. Santosh

Associate Professor

Head of Department

DECLARATION

This research is the study of artifacts collected in Vishnalaya. This topic has also been chosen because Shree Krishna Ji has a special relationship with the land of Kurukshetra. The war of Mahabharata also took place on this land and it was on the holy ground of Kurukshetra that Shree Krishna preached the Gita to Arjuna. In Kurukshetra itself, there is a place named DraupadiKund in the middle of Brahmasarovar where Dweepadi washed her hair with the blood of Dushasan and completed her wait. Due to living in this land of great men, I was inspired to write on this subject so that my readers get information about Mahabharata from my article.

In this dissertation, I have discussed in brief about the 'Shree Krishna Museumin reference to art. It was established in 1986 by Bharat Ratna Shree Gulzari Lal Nanda. In 1991 and 1995, it increased by two more segments. Lord Shree Krishna is the focal point of all the artifacts collected in the Shree Krishna Museum.

Date: **Saloni**

M.A Final Year

PREFACE

Art is important to religion in many different ways. The use of images of God became widespread after the second century. This religious art has defiantly been around for centuries and plays an important role to the history of religion as well as the future. Both religion and art are capable of enlightening people. It can be concluded that religion and art have always directed their activities for the benefit of society. Religious art helps people that are looking for security and hope. Today society is looking for peace and an anchor to hold onto. This religious art lifts the spirit and brings peace within through a beautiful way.

My dissertation is on Krishna Museum, Kurukshetra in which I have discussed about the paintings, sculptures, three dimensional installations on Krishna leelas in Museum that is divided into three parts.

In the first chapter, I have introduced the art and its relation to religion in our culture and how the god of art 'Shree Krishna' is connected to people's faith.

In second chapter, I have mentioned the introduction of Krishna Museum.

In the third chapter, I have discussed about the paintings. There are different types of paintings in museum for example PattaChitra paintings, Kangra Miniature paintings, Pahari and Rajasthani miniature Paintings, and Tanjore paintings are found. Apart from this many examples of Pichwai, Deewardari, Kalamkarai, and madhubani are also found there.

In the forth chapter I discussed about the sculptures made of wood, metal, ivory, brass, bronze, iron etc.

In the fifth chapter I had mentioned three dimensional installations related to Shree Krishna which have been obtained from the exploration of his leelas.

ACKNOWLEDGEMENT

I would like to thank my Principal **Dr. Aarti Trehan** for allow me to visit the Kurukshetra University and Shree Krishna Museum in Kurukshetra for the research purpose.

I am very thankful to the Department of Fine Arts of Arya Kanya Mahavidyalya from where I got an opportunity of writing a book to reach a wide range of readership.

Ms. Santosh, Head of Department who undertook to act as my supervisor despite her many other academic & professional commitments.

Mr. Mahesh Dhiman, for his valuable time, guidance, cooperation and encouragement throughout the entire course.

A very special thanks to **Ms. Kiran Khevaria**, who gave her precious time & kind advice regarding the topic of my research. Her wisdom, knowledge & commitment to the highest standards inspired & motivated me.

I would like to thank College Library for providing me books related to my research. I would like to express my sincere thanks to all the staff members and my classmates who helped me in writing this topic in every possible way. Also, I am thankful to my family members who gave me enough time to collect information for writing on this topic. Lastly, I express my gratitude to all those who have directly or indirectly helped or guided me in this work. I am thankful to all the staff

of Shree Krishna Museum, Library, who helped me in my research work and provided art materials.

This short dissertation will prove to be useful for the connoisseurs of art, as well as provide more information to those who want to know more and more about the Shree Krishna Museum and the artifacts stored there. If this small research benefits the readers even a tiny bit, then I will consider that my effort has been successful.

INDEX

Preface

Acknowledgement

Chapter No.	**Page No.**
Chapter 1: Introduction	09-16
• Introduction of Art • Role of art in society • Relation of art with Religion	
Chapter 2: Shree Krishna Museum: An Introduction	17-24
• Life of Krishna in Art • Introduction of Museum • Interior in Krishna Museum • Artifacts in Krishna Museum	
Chapter 3: A Brief description of archived images	25-48
• Types of Paintings • Paintings in Museum	
Chapter 4: A Brief description of Sculptures	49-62
• What is Sculpture • Types Of sculptures • Sculptures of Museum	
Chapter 5: Study of three-dimensional installations Artifacts	63-68
• What is 3D installation • 3D Installations of Museum	
Conclusion	69
Bibliography	70-71
List of images	72

Chapter -1

Introduction

Art is any creative work of a human being, a form of expressing oneself, resides in the quality of doing, an act of making something visually entertaining, an activity that manifests the beauty (what is beauty in art?), the mastery, an ideal way of doing things, not a thing — it is a way (Elbert Hubbard),the most intense mode of individualism that the world has known, discovery and development of elementary principles of nature into beautiful forms suitable for human use.

It is also called (to distinguish it from other art forms) **visual art**, a visual object or experience consciously created through an expression of skill or imagination.

The term art encompasses diverse media such as painting, sculpture, printmaking, drawing, decorative arts, photography and installation any creative work of a human being.

In our modern society, art is a universal way for people to express themselves and share their feelings with the world. Art is an important avenue through which to connect with others, especially in times of crisis.

Ultimately, Art is a platform for people to express themselves and live out their dreams. It helps them deal with tough times and create something beautiful out of them. Art allows you to express your feelings, emotions, and thoughts in ways that are not always possible in words or actions. Art helps you to better understand how you feel about certain things.

Role of art in Society

Art is a reflection of society and culture. It helps us understand what we are as human beings and influences how we relate to each other. Art is an expression of our inner thoughts, feelings, and experiences. It's also an expression of creativity that can be used for self-reflection or social influence.

Art is important to religion in many different ways. Perhaps none has analyzed how art and religion have influenced and affected each other through the ages. Pictures painted of past events that help to bring back the feeling and importance of the past have been forgotten by some.

To the one’s that haven’t forgotten are able to see the events as the Hinduism says they happened. Not only can you see the events, but it also allows the younger students of the Temple to understand the events.

The use of images of God became widespread after the second century. This religious art has defiantly been around for centuries and plays an important role to the history of religion as well as the future.

The concepts of religion and art have always been closely related. Both religion and art improve a person's spirituality; help him to enter the spiritual world, to feel the essence of being. Religion and art are one of the most important factors in the development of any civilization. Both religion and art are the main regulating part of the social structure of society, where the state of affairs varies depending on the nature of the religion to which it belongs.

Art is also an instrument of human nature, and a creative person uses it to embody his inner world. Religious art occupies a high place in human life. The main purpose of religion is to make people understand that God exists, that God created you for a specific purpose, and that this purpose is beyond this limited world.

It examines the relationship between religion and art. Many of the links that have existed to date between religion and art have sometimes been mutually exclusive. Historically, some masters of the arts supported the religion, while others opposed it. And in our time, many creative people turn to religious themes and create brilliant examples of religious art. In the modern world, art and religion are often intertwined in different spheres. Both art and religion contribute to the development of human creativity.

Both religion and art are capable of enlightening people. It can be concluded that religion and art have always directed their activities for the benefit of society.

Religious art helps people that are looking for security and hope. Today society is looking for peace and an anchor to hold onto. This religious art lifts the spirit and brings peace within through a beautiful way. It helps reassure people that there is a life after this one. One needs not fear the power of God but to understand his actions and the way one should live his or her life.

Works of art are the focus of their worship. With proper ritual care, some images and structures become a home for the deity itself. The more decoration at a temple or shreene, the more pleased the god honored there will be.

Art also helps worshippers imagine the world beyond the one they know. All three religions teach that the physical world is just an illusion. Studying an image can help one learn truths that cannot be grasped in the world we know. It is this knowledge that is most valuable to a believer, not the work of art itself.

Religious texts provide precise descriptions of how gods and the cosmic world they inhabit should appear. A work of art that does not follow these descriptions accurately cannot serve its purpose.

Hindu art represents a plurality of beliefs and has deeply influenced the painting, sculpture, and architecture of the Indian subcontinent. Architecture and sculpture are inextricably linked in Hindu temples, which are usually devoted to a number of different deities.

Various cities in India have strong connections with Lord Krishna and each of these have beautiful temples dedicated to him. Explore the places in India that are connected to Lord Krishna.

Mathura

Mathura is the birthplace of Lord Krishna and this is the reason, the town grandly celebrates his birthday. Situated at the heart of Braj or Brij-bhoomi, Mathura is mostly called as Shree Krishna Janma-Bhoomi. It is one of the most important places associated to Lord Krishna. Janmashtami is celebrated in Mathura with much devotion and enthusiasm. There are several temples of Lord Krishna in this holy town where people can be seen in festive attires and happy mood. Rasleela is one of the most performed activities of Mathura that depicts the story of Lord Krishna.

Gokul

As per the legends, Lord Krishna was born in a prison of Mathura and was taken to Gokul by his father Vasudeva. At this place, Lord Krishna spent his childhood andkilled many demons sent by his maternal uncle Kansa. This is the reason; the place has great association with Lord Krishna. He also performed several miracles at this place. Gokul has many important temples dedicated to Lord Krishna and Janmashtami is celebrated here on grand scale.

Vrindavan

Vrindavan is another beautiful destination that enjoys a great connection with Lord Krishna. He spent his adolescence at this place and the famous raas-leela between Radha-Krishna started here. The small yet beautiful religious site features many temples dedicated to Radha-Krishna, where Janmashtami is grandly celebrated. On this occasion, the entire town becomes involved into the holy songs of Lord Krishna and music.

Dwarka

Dwarka is a popular city of the state of Gujarat that mostly recognized with Dwarka Kingdom – kingdom of Lord Krishna. It is believed that the holy place was constructed by Vishwakarma in two days on the orders of Lord Krishna. Lord Krishna spent a big time at this place. He migrated from Mathura to Dwarka after defeating evil king Kansa. The festival of Janmashtami is celebrated with great eagerness and dedication.

Barsana

Barsana also holds a special position when it comes to Lord Krishna. This is a village 45 km away from Mathura and surrounded with hills from four sides. Barsana is the birthplace of Radha – Krishna's favorite consort whom he didn't marry. As per the stories, Krishna spent some childhood moments in Barsana with Radha. There are temples in Barsana that are dedicated to Radha Krishna. So, Barsana is also having strong connection with Lord Krishna.

Kurukshetra

Located in the state of Haryana, Kurukshetra is the place where the epic Mahabharata battle was fought. At this place only, Lord Krishna preached entire

Bhagawad Gita to Arjuna. The city has played an important role in the life of Lord Krishna. The city is named after King Kuru who was ancestor of Pandavas and Kauravas. It is also known as Dharmkshetra and there are many sites in this place that depict about its connection with Lord Krishna.

The Life of Krishna in Indian Art

The main aim of this volume is to present the life of Krishna as delineated in Indian art. The life of Krishna and his teachings have had a profound influence on the minds of the Indian people and as such the theme was popular not only with the saints and the poets, but also with the artists.

Krishna's pervades the whole Indian life, its religion, philosophy and art. The material for the study of the subject is enormous and diffused all over India in a varying degree. This volume includes most of the best examples of Indian art to represent the episodes of his life.

This volume is broadly divided into two parts: the text and illustrations. The text portion describes Krishna's life as portrayed in the Puranas, the Harivamsa and the Mahabharata, and discusses the antiquity. It may be mentioned here that Krishna is a composite character, and many religious ideas and thoughts have contributed to the development of the Krishna legend.

The life of Krishna from childhood to his last days has been a source of perennial inspiration to the poets and the artists, as he represents the perfection of human character, and Endeavour. He is the embodiment of the intellectual and spiritual glory. Krishna era permeates the entire Indian culture and thought.

No other single individual or idea has so much influenced the course of India's religion, philosophy, art and literature as the life and personality of Krishna.

As a child, he was a wonderful child, an object of love to all, as a youth, he was physically most perfect and beautiful (nobody, not even Balarama or Bhima or Kichaka or Salya was as strong as Krishna was), his physical charm was beyond a parallel and the only desire Bhishma had at his death-bed was to see the most beautiful face of Krishna.

Shree Krishna Museum established by KurukshetraVikas Mandal expresses the artistic skill of the divine and mythological narrative of Shree Krishna in strange and diverse mediums. Shree Krishna Museum located in the Kurukshetra district of Haryana is dedicated to Lord Shree Krishna.

This museum is a saga based on the Bhagavad Gita. In 1986, a small Shree Krishna Museum was established by Bharat Ratna Shree Guljari Lal Nanda, former chairman of the Kurukshetra Development Board.

Shree Krishna Multidimensional Personality Publication, the Year 1997 Each museum has its own unique form in which it is identity and characteristic feature lies.

Shree Krishna Museum was established in the year 1987 with the aim of moral and cultural upliftment of the people with the thoughts and ideals of Lord Shree Krishna and to make them aware of the local history.

In the year 1991, it was converted into the present first section seum, in which the second section was added in the year 1995. Therefore, at present, this museum has a total of six galleries in two building blocks.

At present, the bipartite three-storey building of Shree Krishna Sangrahalaya has a total perimeter of twenty thousand square yards.

The first section was inaugurated on 28 July 1991 by the then President of India Shree R. Venkataraman and the second section was dedicated to the people of India on 21 October 1995 by Shree Mahavir Prasad, His Excellency Governor, Haryana and Chairman Kurukshetra Development Board.

Six different galleries constructed in Kurukshetra Museum today who protects the ideals associated with Lord Shree Krishna. Its main attraction is the battle of Mahabharata that took place on the land of Kurukshetra. Shree Krishna Museum reflects the spiritual and cultural nature of Kurukshetra.

The museum is located on the National Highway to PipliPehowa Highway between the holy Brahmasarovar and the adjacent lake located on the part. Lord Shree Krishna is the main focal point of this collection.

It is such a subject that attracts the mind of the common people, which has affected the entire human race one way or the other. Shree Krishna is the central character of Mahabharata.

Lord Shree Krishna had given the eternal message of 'Shreemad Bhagavad Gita' to humanity in the battlefield Kurukshetra itself. The remains found from the seabed of Shree Krishna's city Dwarka are also displayed in this museum. Here the life character and philosophy of Shree Krishna has been highlighted through Pachitra, Madhubani, Kalamkari, various mediums of painting, wood and metal and folk arts.

End Note:

- Prabhupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. KRSNA The Supreme Personality of Godhead. Mumbai: The Bhaktivedanta Book Trust, 2018.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvad Gita as it is, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1986.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvan Shree Krishn, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1982.

Chapter -2

Shree Krishna Museum: An Introduction

The Life of Krishna in Indian Art

The main aim of this volume is to present the life of Krishna as delineated in Indian art. The life of Krishna and his teachings have had a profound influence on the minds of the Indian people and as such the theme was popular not only with the saints and the poets, but also with the artists.

Krishna's pervades the whole Indian life, its religion, philosophy and art. The material for the study of the subject is enormous and diffused all over India in a varying degree. This volume includes most of the best examples of Indian art to represent the episodes of his life.

This volume is broadly divided into two parts: the text and illustrations. The text portion describes Krishna's life as portrayed in the Puranas, the Harivamsa and the Mahabharata, and discusses the antiquity. It may be mentioned here that Krishna is a composite character, and many religious ideas and thoughts have contributed to the development of the Krishna legend.

The life of Krishna from childhood to his last days has been a source of perennial inspiration to the poets and the artists, as he represents the perfection of human character, and Endeavour. He is the embodiment of the intellectual and spiritual glory. Krishna era permeates the entire Indian culture and thought.

No other single individual or idea has so much influenced the course of India's religion, philosophy, art and literature as the life and personality of Krishna. As a

child, he was a wonderful child, an object of love to all, as a youth, he was physically most perfect and beautiful (nobody, not even Balarama or Bhima or Kichaka or Salya was as strong as Krishna was), his physical charm was beyond a parallel and the only desire Bhishma had at his death-bed was to see the most beautiful face of Krishna.

Shree Krishna Museum established by Kurukshetra Vikas Mandal expresses the artistic skill of the divine and mythological narrative of Shree Krishna in strange and diverse mediums. Shree Krishna Museum located in the Kurukshetra district of Haryana is dedicated to Lord Shree Krishna.

This museum is a saga based on the Bhagavad Gita. In 1986, a small Shree Krishna Museum was established by Bharat Ratna Shree Guljari Lal Nanda, former chairman of the Kurukshetra Development Board. Each museum has its own unique form in which it is identity and characteristic feature lies.

Shree Krishna Museum was established in the year 1987 with the aim of moral and cultural upliftment of the people with the thoughts and ideals of Lord Shree Krishna and to make them aware of the local history.

In the year 1991, it was converted into the present first section seum, in which the second section was added in the year 1995. Therefore, at present, this museum has a total of six galleries in two building blocks.

At present, the bipartite three-storey building of Shree Krishna Sangrahalaya has a total perimeter of twenty thousand square yards.

The first section was inaugurated on 28 July 1991 by the then President of India Shree R. Venkataraman and the second section was dedicated to the people of India on 21 October 1995 by Shree Mahavir Prasad, His Excellency Governor, Haryana and Chairman Kurukshetra Development Board.

Six different galleries constructed in Kurukshetra Museum today who protects the ideals associated with Lord Shree Krishna. Its main attraction is the battle of Mahabharata that took place on the land of Kurukshetra. Shree Krishna Museum reflects the spiritual and cultural nature of Kurukshetra.

The museum is located on the National Highway to Pipli Pehowa Highway between the holy Brahmasarovar and the adjacent lake located on the part. Lord Shree Krishna is the main focal point of this collection.

It is such a subject that attracts the mind of the common people, which has affected the entire human race one way or the other. Shree Krishna is the central character of Mahabharata.

Lord Shree Krishna had given the eternal message of 'Shreemad Bhagavad Gita' to humanity in the battlefield Kurukshetra itself. The remains found from the seabed of Shree Krishna's city Dwarka are also displayed in this museum. Here the life character and philosophy of Shree Krishna has been highlighted through Pachitra, Madhubani, Kalamkari, various mediums of painting, wood and metal and folk arts.

Introduction of Shree Krishna Museum

Shree Krishna, the incarnation of intellectual and spiritual light, has been the subject of people's reverence and worship since his divinity. His diverse character made him a deity. There is certainly a feeling of ecstasy in being enveloped by the mysteries of Shree Krishna, because with each revelation, also a new dimension is added to it. It is rare in the history of human civilization to meet another personality like Shree Krishna because of holding both Manu and Dev together.

The works on display in the museum depict Shree Krishna as a deity, an avatar of Vishnu, a great philosopher, epic hero, a skilled politician and a lover. The personality of Shree Krishna and his teachings are a matter of national pride.

His folk- pleasing and awe- inspiring pastimes have been a source of inspiration for the art and craft world of the entire country. On this subject, the artists have portrayed the story of Krishna with the help of various mediums in traditional folk and classical style.

Six different galleries have been constructed today in the Kurukshetra Museum, which preserves the idols associated with Lord Shree Krishna. Its main attraction is the battle of Mahabharata that took place on the land of Kurukshetra. The first art gallery has artifacts related to wooden artifacts, ivory carvings etc. dedicated to Lord Krishna. Since ancient times, wood or timber has been used in India for building construction and decoration. Keeping in view the characteristics of wood, the craftsmen adopted a special style. A large collection of wooden sculptures from Orissa, Karnataka, Tamil Nadu and Andhra Pradesh is on display in this gallery.

In the second art gallery, archaeological objects related to Lord Shree Krishna have been kept. In this Art Vidhika, there are replicas of material obtained from Kunal, Banawali etc. and pottery, antiquities found from Dwarka (Gujarat), many parts of Haryana based on Vishnu- Krishna story and stone sculptures found from Mathura.

The third art gallery has miniature paintings, palm leaf artifacts, Pahari and Rajasthani paintings, frescoes and illustrated manuscripts. Among the main attractions of this Vidhi is a group of 26 Kangra miniature paintings, which mainly depict the teachings of Shreemad Bhagwadgita and some episodes of the Mahabharata war.

Among other displayed items here, the depiction of Krishna Leela and Vishnu's Dasavatars on palm leaves obtained from Orissa is prominent.

On the octagonal wall built above the central part of this gallery, eight Pattachitras based on the episodes of Bhagwat and Mahabharata are displayed. Pattachitra is a folk painting of Odisha.

The cloth used for making these paintings should be neither too thin nor too thick. Fine powder of stone and gum of tamarind seed is applied on top of the cloth.

The important events of the life of Shree Krishna are depicted in the fourth gallery shown in the charts of south India in PanchamVodhika in Thanjavur Paintings.

Gold leaves are used for colors and ornaments. The main theme of this painting is the child Krishna. In this museum, the episodes of Mahabharata were shown in the last gallery. This bodhika depicts the Vasant Rasleela performed by seven human figures.

The Shree Krishna Museum of Kurukshetra is a unique concept. It entertains as well as educates the various forms of Lord Shree Krishna through various models and tableaux of arts and crafts, which have been collected from every nook and corner of the country.

Indian sculpture and painting, drama and theatre, dance and songand various mediums of folk art are filled with the Leela character of Krishna. Shree Krishna is the hero of the Mahabharata as well as the preacher of the Bhagavad Gita.

There were also sources of Karma Marg, Gyan Marg and Rashi where another god in the universal form of Krishna, the entire world, all the gods and demons and all the Vibhutis were synthesized. On the other hand, there is no genre of fine arts in which Shree Krishna is not portrayed as a mischievous hero.

Shree Krishna is seated in Rajput pen, Kangra pen, Pichhwai by Shree Nath, Tanjore's artistic paintings etc. All raga mala and barah masa hero- heroine distinction, son's literature and folk songs, kirtans of Bengal and Orissa, speeches of medieval saint poets and Kathak, Orissa and Manipuri dance styles and movements, all these are Krishnamay. GeetGobind is a unique lyric poem of Krishna character, in which there is a unique combination of love and devotion along with Shreengar Ras.

Foreword Apart from this, stone sculptures from 1st century AD to 11th century AD based on Krishna Katha received by Haryana Archeology and Museum Department have also been included in this museum.

Being an individual characteristic, pottery plays an important role in the assessment of ancient cultures. We can also call them the context of cultures. The museum has a collection of pottery from the Harappan period (2400-1750 AD), gray painted pottery (11-8th century BC) and historical period pottery obtained from the land of Kurukshetra, including Kushan period, later Gupta period, Rajput period, Sultanate period and Mughal period pottery.

Hastinapur, Sonipat, Panipat, Indraprastha, Baghpat, who came in 'Mahabharata'Excavation work has been done in Tilpat, Mathura, Kurukshetra and Dwarka. The pottery found from Hastinapur has been linked by Prof. B.B. Lal to the culture of the Mahabharata period. The extent of this pottery is from Taxila in the north to Kanyakumari in the south.

Exploration and Excavations of National Center for Marine Archeology National Oceanography is done by the institute. Dr. S. R. Rao, consultant archaeologist of this institute, excavated the verandah of the Dwarkadhish temple and informed that there were seven settlements of that time under it. Near Dwarka, the anchors found

from the sea (exploration) of Bet Dwarka, the ancient and bright red pottery of the fort and other antiquities indicate that Dwarka was an important and prosperous port city in the 15th century AD.

In this Krishna Museum, pottery and conch shell items obtained from different pre-historic periods and ancient times, North Harappan period seal (in which goat, unicorn and Taurus are inscribed) and langar are found in this Krishna Museum.

In this first gallery of the Krishna Museum, there is a collection of some idols from Mathura from the first century AD to the fifth century AD. These idols are mostly in fragmented condition. In these, the majestic on the Kushan period panel Lion and Garuda boat fight important on devotee, Vedika medallion. Thus, we can say that Shree Krishna Museum is such a place was standing at one place we can get to know more about the life of Shree Krishna. The description of stories related to Mahabharata is seen.

Interior of Shree Krishna Museum in Kurukshetra

This multimedia show is quite popular among the locals and tourists alike. They enjoy it thoroughly while cruising past the significant events of history represented in an effective manner. This gallery was started by Haryana Tourism with collaboration of Ministry of Tourism, India.

Artifacts displayed in Shree Krishna Museum Kurukshetra

Beautiful sculptures housed in Shree Krishna Museum in Kurukshetra, Krishna Museum houses some of the rarest artifacts related to the history of this land.

It is based on the theme of Shree Krishna, Mahabharata, and Kurukshetra. These themes are thoughtfully illustrated in the galleries of museum. Many antiquities related to these events and themes are displayed here.

These include pottery, miniature paintings, sculptures, terra cotta items, palm leaf etchings, ivory castings, tableaux, bronze castings, etc. Lord Krishna has been depicted as the war hero, astute philosopher, an incarnation, godhead, benevolent lover, and a statesman par excellence. The museum has fine collection of Madhubani, Kangra, and Pattachitra folk styles of paintings displayed to allure the visitors.

The newly added third block of this museum explains the values and beliefs of great personalities like Lord Krishna, Vidur, Bhishma, and many other prophets who touched this holy land of Kurukshetra.

End Note:

- Prabhupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. KRSNA The Supreme Personality of Godhead. Mumbai: The Bhaktivedanta Book Trust, 2018.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvad Gita as it is, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1986.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvan Shree Krishn, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1982.

Chapter -3

A Brief description of archived images

When we talk about art, many people's minds will jump first to paintings. Paintings are some of the most well-known, highest valued, and recognizable artworks inexistence. But as art has moved into mixed media and digital art, the definition of what a painting is has become blurred. Painting is defined as the process of applying paint, or another medium, to a solid surface – usually a canvas. Paints or other forms of color are commonly applied to using a paintbrush. However, artists do use different tools such as sponges, spray paint, or even knives. In the art world, the term "painting" is used to describe both the act of painting and the resulting artwork created by the action. An artist can both be painting as action and create an object known as a painting.

Types of Paintings

There is a huge range of different styles that are incorporated into art, with some having subtle differences between them to bold, striking changes that are easy to spot. These are some of the most popular types of painting art styles you will see in the modern day.

- Realism
- Photorealism
- Expressionism
- Impressionism
- Abstract
- Surrealism

- Pop Art

Though there are many styles of painting art, there are also many different mediums through which artists express themselves. Depending on the technique and effect required, different mediums can be used to heighten the artist's vision. Here are some of the most popular types of painting mediums you'll find in the modern day.

Oil

Oil paintings are one of the oldest forms of painting and remain one of the most popular painting medium types to this day. When painting in oils it's easy to blend colors, but can be difficult to erase mistakes meaning it can be a difficult medium to master. Some of the world's most famous paintings were painted in oils, with portraits being a particular specialty of many artists who work in this medium.

Watercolor

Watercolor paints tend to be inexpensive to purchase but, similar to oil paints, difficult to master. Paints are diluted with water meaning they can go a long way from a single tube, but once the paints are on the canvas there is little that can be done to correct mistakes. Watercolor paintings work beautifully with light and are often used to paint landscapes.

Acrylic

Only dating back to 1940, acrylic is a relatively new painting medium. It dries quickly, is versatile, and can be very durable. If you make a mistake using acrylic paints you can even scrape them off if you act quickly. Many pop artists used acrylic in their works, with the famous Campbell Soup Can a particular example of acrylic art.

Gouache

Gouache is a form of watercolor which has been modified to be opaque which differentiates it from more traditional watercolor paints. As a painting medium, it dries quickly and dries to a slightly different color than when it was wet. Many commercial artists work in gouache, as it is vibrant and can block out colors quickly.

Pastel

Pastels differ from many of the other types of painting art mediums in some key ways. Most pastels come in the form of a stick of powdered pigment which is then pressed onto the canvas to apply the color, with several different varieties available. When using pastels, you'll get strong colors that are close to the natural pigmentation inside the pastel, and with few barriers to creating art, it's possible to get a canvas and some pastels and get creating quickly.

Encaustic

Encaustic painting is an ancient method of infusing colour into a surface, usually wood, canvas, or even tile. Pigments are added to a wax which is then heated and added to the surface, giving a luminous colour with strong dimensional qualities.

Fresco

Frescoes are traditionally a quite large-scale painting medium, as they are usually applied over a layer of freshly laid lime plaster. This method allows the paint and pigment to bond with the plater, making the image integral to the surface. Many famous frescoes have been painted throughout history, including The Creation of Adam and The Last Supper.

Spray Paint

Spray paint, or aerosol paint, is a modern form of painting and has become associated with street art or graffiti. The paint is held in a sealed can and released in an aerosol spray, allowing smooth, even coats to be applied to a surface. This makes it ideal when speed is of the essence and allows large areas to be painted in one sitting.

Digital

Lastly, the modern age has brought us a new medium of painting, in digital format. Using digital painting tools which include virtual brushes of different sizes and textures as well as a range of colours that would be difficult to procure in reality, digital artists are able to create paintings that can push the boundaries of their imagination. Digital painting has swiftly become a painting medium all by itself, as digital artists continue to explore what's possible with this new medium.

Panel paintings in Krishna Museum, Madhubani, Kalamkari, Rajasthani, Pahari and many pictures related to Tanjore painting are seen. All these pictures are related to Lord Shree Krishna. Many incidents related to the life of Shree Krishna are described in these paintings whose combination has been done very beautifully. The description of Pattachitras collected in the Krishna Museum is as follows:

PattaChitra

PattaChitra mainly belongs to a folk-art form of Orissa. In Sanskrit, patta means cloth and chitra means picture. It is about hundred years old art whose ancient samples are collected from the temple of JagannathPuri.

PattaChitra are specially paintings made on cloth. This cloth should neither be thick nor too thin. Before making a picture on the cloth, a background is prepared, in which white stone powder and tamarind seeds are mixed. Colors range from white to conch shell, yellow from turmeric to black from lamp soot.

From, red color is made from hugul and blue color is made from vegetable; indigo and brown color is made from wheat. After making the picture, lacquer is applied over it so that it does not get spoiled.

Paintings displayed in Museum

The main theme of the panel paintings is religious, which includes Rasleela etc. based on Jagannath Shree Krishna Katha. The themes of the panel paintings are mainly religious, taken from the stories of the Bhagavad Ramayana and the Mahabharata. The PattaChitra style is a mixture of classical and folk art. In these paintings, long eyes, pointed nose and sharp chin were made. Some of the Pattachitras collected in the Krishna Museum are as follows:

- ***Battle scene between Jarasandha and Bhima:***

This painting was made in 20th century AD. Its size is 180x300 cm. This picture is made on cloth and pasted on a wooden sheet. The literature of this picture is related to Mahabharata, Harivabhansa Purana and Bhagavata Purana.

- ***DraupadiChir Haran:***

This pattachitra is also made on cloth and on a wooden sheet. Its size is 152x183 cm. It was made in Odisha in the early 20th century AD. This picture is also related to Mahabharata. It is shown in this picture that Yudhishthira loses everything in the chess game of Kaurava Pandavas, then in the hope of winning in the end, he puts Draupadi at stake and ultimately loses. Dushasana forcibly drags Draupadi by her hair to Dhritarashtra's court with utmost cruelty.

At the behest of his brother Duryodhana, Dushasana starts snatching Draupadi's clothes. Saddened by her helplessness and her humiliation, Draupadi starts remembering Lord Krishna. Then Lord Shree Krishna indirectly present there keeps increasing Draupadi's saree due to which Dushasan gets tired of pulling the saree but that saree does not finish and Dushasan's intention of making Draupadi naked in the gathering is not fulfilled. In this way Lord Krishna is present there even though he is absent and protects Draupadi.

- ***Rukmani Haran:***

This plate painting is also taken from Orissa. This 20th century BC Made in. This picture is made on cloth and this picture is pasted on a piece of wood. This picture is also related to Mahabharata, Bhagavadpuran and HarivabhansaPuran. Rukmaniji was the daughter of the king of Vidarbha and sister of Rukma. Her marriage was arranged with Shishupala who was the king of Chedi. But Rukmani did not want Shishupala. She loved Shree Krishna and wanted to make him her husband. That's why he sent a message to Shree Krishna that you should drive me away from here and take me to Dwarka.

Now she somehow escapes from her palace and reaches the temple of the Goddess and from there Shree Krishna chases her away and takes her to Dwarka. Knowing this, Rukma gets angry and declares a war against Krishna, in which he is defeated

by Balarama, and then Shree Krishna goes to Dwarka with Rukmani and marries Rukmani there with full rituals.

- ***Krishna meeting Radha on the occasion of solar eclipse***:

This picture is also taken from Orissa. This picture is also made on cloth; its size is 180 x 300 cm. This picture is related to Bhagavadpuran. This Pattachitra shows Shree Krishna and Radha meeting on the occasion of solar eclipse. Krishna ji comes to Kurukshetra from Dwarka with his family. People of all religions are seen gathering at this place. All the gopis from Vrindavan also come here to bathe in the pond of Kurukshetra. When Krishna ji left Vrindavan, he was very young. Gopis see Shree Krishna after a very long gap.

Some devotees are also shown taking a dip in the water in this picture. Temple, tent and carts are shown standing in the back of the picture. In this picture, everyone's eyes are fixed on the union of Radha and Krishna.

- ***Madhubani:***

Madhubani situated in North India has been a major center of folk art. Local Brahmins and Karan Kayastha families have contributed from the very beginning in making Madhubani paintings. In fact, this art is an art of Mithila region, which was made in the form of murals on the mud walls of the house, in which cosmic beliefs and beliefs, customs and traditions are visible. But today in the present era this art has developed a lot and now these paintings are made on paper or even on cloth. There have also been major legends and fantasies of this folk art.

The melodious philosophy of rural life is reflected in the depiction of village life, animals, birds, ponds and aquatic creatures, rural men and natural scenes. In religious paintings, it is based on the texts 'Ramayana', 'Mahabharata' and 'Bhagavata Purana'.

Vegetable colors are used in this painting, in which pink, yellow, vermilion and green are prominent. Desi paintbrushes are used for painting.

In this style first sketch is not made but pictures are made directly with colors. In the pictures of Madhubani painting, the nose was made pointed, the eyes open and wide, long neck, narrow forehead and long hands and feet.

The Krishna Museum has a vast collection of Madhubani paintings on paper, out of which eight paintings have been produced by the artists of the Shree Niwas Malaiya Memorial Theater Crofts Trust, Delhi.

These paintings made on the background of papier- mâché made by mixing clay wall and clay, narrate all the stories from the childhood stories of Shree Krishna to the slaughter of Kansa.

- ***GopiVastraharan:***

This picture is made of paper pulp and wood. Its size is 113 X 86.5 cm. It has been obtained from Bihar. In this picture there is a scene of Gopis being stripped of their clothes. In this picture, Shree Krishna is shown sitting on top of a tree playing the flute. Gopis taking bath in the Yamuna are shown below whose clothes were stolen by Shree Krishna. Very fine work has been done in this picture, cows, goat, horse, duck etc. are also depicted in the picture.

Many animals and birds etc. have been depicted. Snakes and tortoises are also shown peeping out of the waters of the Yamuna. All living beings are engrossed in watching the pastimes of Shree Krishna. Ornamentation has been used more in this picture. Shree Krishna ji has been shown in black. Gopis are depicted standing below asking for their clothes. Madhubani painters mostly used vegetable colours. This picture is related to 'Mahabharata'.

This picture is made of paper pulp and wood. Its size is 113 X 86.5 cm. It has been obtained from Bihar. It depicts the scene of Putna slaughter. In this picture, on one side, Putana is depicted as a demonic form whereas, the scene of Gokul has been shown in this whole picture.

Yashoda is swinging Shree Krishna on a swing. On the other hand, many anthropomorphic figures are shown doing their daily chores. Cows, goats etc. are also depicted in the picture. At the behest of Kansa who was Krishna's maternal uncle, a demon named Putana disguises herself to kill Krishna and seeing Krishna playing alone, takes him to the forest and there she starts feeding Krishna with her breast which is poisonous.

It was so that Krishna would die after drinking it. But Shree Krishna knows from his illusion that it is a demon. He breastfeeds her so forcefully that Putna starts writhing in pain and dies. In this way, Krishna ji had killed such a big demon in his childhood.

- ***PutnaVadh:***

This picture is made of paper pulp and wood. Its size is 113 X 86.5 cm. It has been obtained from Bihar. It depicts the scene of Putna slaughter.

In this picture, on one side, Putana is depicted as a demonic form whereas the scene of Gokul has been shown in this whole picture. Yashoda is swinging Shree Krishna on a swing. On the other hand, many anthropomorphic figures are shown doing their daily chores. Cows, goats etc. are also depicted in the picture.

At the behest of Kansa who was Krishna's maternal uncle, a demon named Putana disguises herself to kill Krishna and seeing Krishna playing alone, takes him to the forest and there she starts feeding Krishna with her breast which is poisonous. It was so that Krishna would die after drinking it.

But Shree Krishna knows from his illusion that it is a demon. He breastfeeds her so forcefully that Putna starts writhing in pain and dies. In this way, Krishna ji had killed such a big demon in his childhood.

- ***Karna Vadh:***

This painting was made in the 20th century and has been obtained from Bihar. It is made on paper. The incident of Karna's slaughter is shown in this picture. During the war of Mahabharata, Pandavas and Lord Krishna knew that Karna had 'Brahmastra', which he could use only once. can use. Then Lord Krishna who already knew everything sent Bhima's son Ghatotkacha to fight first in the battlefield because he was so strong that the Kaurava army could not stand before him. Due to which Karna had to use his Brahmastra.

After this, Shree Krishna disguised himself as Brahma etc. and asked Karna to take the armor and coils attached to his body by birth. Due to which Karna had to give all this to him because Karna used to donate gold every morning. Now he did not have any such weapon with which he could defend himself. Then this is how Karna was killed by Arjuna in the war of Mahabharata, which was done by deceit.

- ***Rajasthani painting:***

Rajasthani is not only famous for its forts, palaces, festivals, camels and kings but also famous for its Murals and Miniature art. The ancient tradition of Indian painting before the 10th century AD is represented (example) in mural paintings. Rajasthani miniature paintings also seem to have been inspired by these murals. Initially, two styles of miniature paintings called Western Indian and Kalhadar were prevalent in Rajasthan. Rajput rulers had special interest in music, painting, literary and religious fields. Inspired by the revival of Vaishnavism in the medieval period and the devotees of the Krishna Bhakti branch of Vallabhacharya, the

creation of both worship- oriented and adornment- oriented paintings of Shree Krishna was especially prevalent in the Rajasthani style.

The main subjects of Rajasthani painting have been 'Ramayana' and 'Mahabharata'. Apart from this, Ragamala, NayakNayika and Barhamasa etc. have been the main subjects of secular art.

Mewad, Bundi and Kishangarh have been the main areas of Rajasthan. Mewar style forms the point of view of adjustment of colors, constitution and drawing and collective marking.

It has its own place. In this style the trees are made very rhythmically and the light seems to filter through the trees. In the early days, bright colors were used in the Mewar style. In the Kishangarh style, the figures have been made very slim and thin. The depiction of female form in this style is very unique and unique. The combination of colors in this painting is amazing. In terms of decoration of clothes, ornaments, the necklaces hanging over the cholis express the beauty of many in depth.

Shree Krishna Museum has a very good collection of Mewar, Bundi and Kishangarh style paintings. The museum here also includes an 18th- century Bikaner style 'Rajamnama', a painting related to the Mahabharata, one of which depicts Krishna and Draupadi in conversation. This picture has been created by Sultan Singh Nakliwal, New Delhi. Some of the main paintings of this style are as follows

- ***Rajasthani Miniature Paintings:***

The scene depicts the slaying of Aghasura by Krishna. This painting has been made on paper. Its size is 24 x 14.5 cm. It is derived from Malwa (Madhya Pradesh and Rajasthan). And its time has been taken from around 18th century. This picture is related to Bhagavata Purana and Harivambsha Purana.

This picture describes the killing of a demon named Adhasur. Kansa was afraid that Devaki's eighth child would kill him. Because of this Kansa killed all the seven children of Devaki. Kansa tried many ways to kill Krishna, the eighth child of Devaki, but he did not get success. Kansa sent many demons to Gokul and Vrindavan so that those demons could disguise themselves and kill Krishna. These demons used to take many different types of birds, animals and many other forms.

A demon named Adhasura also comes in the form of a snake and hides in a cave near the way of the shepherds. To kill Krishna, Adhasur sat down with his mouth spread wide so that all the villagers who were going back forgot their way and entered his mouth.

- ***Bhishmapitamah lying on the ground:***

This picture is also made on paper. Its size is 26.7x18.4 cm. It is taken from Bikaner 'Rajasthan'. This picture is from the 18th century. This picture is also related to Mahabharata.

In this picture Bhishma Pitamah is shown lying on the ground. Kauravas and Pandavas are shown sitting near him. In another similar miniature, Bhishma's arrows are shown lying on a bed. In this picture Bhishma's body is shown as blue as that of Shree Krishna and his devotee Arjuna.

This color has been given to Bhishma because he was the biggest worshiper of Lord Shree Krishna. A big flower garland was seen around his neck. Yudhishthira is shown sitting near his feet. In the back part of this picture, some soldiers are shown riding on elephants that are holding colorful colors in their hands. And who are being followed by some soldiers who are walking. This picture is very beautiful.

- ***Subahukrishna:***

This picture is made on paper. Its size is 26.5x18.5 save m. This is a 19th century painting taken from Rajasthan. It is also related to Bhagwat Purana. In this miniature, Shree Krishna is shown playing the flute standing in the window of a building.

In this, his face is made with blue color. Sandal paste has been applied on his forehead, on which tilak has been shown in red color which represents the letter 'U' of the English language.

He is wearing a jewel- studded crown on his head, which is shown tied with strings of fine pearls. Two peacock feathers are visible attached to his crown. He is wearing sky blue colored clothes on the upper part of the body and yellow colored pajama. They have a red color.

She is also wearing a chunri with white dots on it. He is wearing earrings, bracelets, necklaces, bangles and rings in which many precious stones are attached.

A long garland is visible around his neck, which is made of flowers. On the platform a row of flowers and lotus flower petals are shown engraved on the saffron colored ground, which is called Vanamala.

- ***Shree Krishna stealing butter and girls doing makeup:***

This picture has been made on paper. It is based on the Rajasthani Isardarah style. Their size is 21 x 31 cm. Its period is believed to be the 19th century. This painting is based on the Bhagavad Gita.

This picture is divided into two parts. On one side of the painting, Shree Krishna and his friends are shown stealing butter. In this, Krishna is shown taking out butter from a pot and Yashodha is watching him.

In the lower part of the picture, two women are shown applying makeup. In this, a young woman is shown holding a mirror in her hand and the other looking in the mirror is combing her hair.

- ***Radha Krishna:***

This miniature painting was made in Rajasthan; its time is believed to be 19th century. Its size is 18.5 x 13.3 cm. This picture is related to BrahmavaivartaPurana.

In this picture, Radha and Krishna are shown standing on two very beautiful lotus flowers. Dense forest and hilly scenery are seen in the background of this picture. Krishna ji is standing cross- legged and holding Radha by the arm. Radha is seen standing very close to Shree Krishna.

He is holding a bowl full of berries in his hand. Krishna ji is picking fruits from it. He is wearing a crown which looks like a huge fan, in the center of which is a stone bracelet, bangles, armlet necklace and a long rosary. A jewel named Kaustubh is visible on his chest. Krishna is shown in gray color in this miniature as compared to other miniatures. He is wearing yellow clothes, which is called pyjama. Radha is wearing chauli- lehenga and chunri. They both wore necklaces, earrings; small ornaments are put on the head and many more.

- ***Radha and Krishna sitting in the coach:***

This picture is made on miniature paper. The size of this picture is 14.2 X 21.5 cm. It is taken from Rajasthan and dates back to the 19th century.There are a picture. This picture is also related to BrahmavaivartaPurana.

In this picture Radha and Krishna are shown sitting on the throne on the roof of the palace. A headboard is visible behind him. A maid standing near him is swinging a fan with her hands. Krishna ji is holding Radha in his left arm and holding a flower in his right hand. He is wearing a fan- like crown and a long pajama. Radha is wearing a yellow-colored choli and ghagra.

After the disintegration of the Mughal Empire, Mughalia painters went to hill states like Kangra, Chamba, Guler, Nurpur, Jasrota, Mandi, Kullu, Nahan etc. Like Rajasthan, many centers of miniature painting had been established in many hill states of North India from 17th to 19th century.

All these centers were influenced by Vaishnavism. First of all, it was born in the form of folk art in Pahari style. Pahadi was born mainly in Guler around 1760 AD. In the paintings of the Pahari style, the heroine and the hero are depicted as a symbolic representation of the union of the soul with the divine. The number of Pahari paintings is believed to be around 50,000. The most popular king of Kangra was Sansar Chand.

The main subjects of paper is miniature. Revealed but Krishna's pastimes with Radha was probably the favorite subject of Pahari painting. The natural environment in the background also supports the expressions of Radha- Krishna.

The depiction of Krishna's charming and abstract pastimes in ChirharanLeela, Makhanleel, Danleela, Manleela, Rasleela etc. gives a pleasant feeling to the art lovers. The collection of miniature paintings of Kangra is quite good. Narrow

forehead, high nose, lotus like eyes etc were the characteristics of Basauli style. Beauty has been expressed in transparent clothes and ornaments.

In this style, men are shown wearing loose- fitting robes and women in tight pyjamas. Bright and bright colors have been used in Basauli style. The main themes of Basauli miniature paintings are RasManjari, Ragamala, Ramayana and GeetGovind. Nature love has been shown in Kangra style.

The individual characteristics of the Pahari style are quite different from those of the Mughal style. In this the human figures were made small, the face round, the eyes deep and the eyebrows very pointed and the forehead semicircular from Kangra and Arki painting in Shree Krishna Museum.

There are 26 pictures related and all these pictures are related to the 19th century. Some of the main paintings of this style are as follows:

- ***Krishna's feet:***

This is a Pahari miniature painting. It is made on paper. Its size is 28.5 x 16 cm. It is based on the Bhagavad Gita. In this picture both the right and left feet of Shree Krishna are shown. It depicts many symbols related to Shree Krishna.

Generally, many types of shapes are made in the feet and palms of every human being. Sometimes they are seen in various shapes like triangle, rectangle, circle etc. But in this picture, we can see sword, elephant, horse, goat, tortoise, fish, and triangle, round surface, mace, and bow in the right leg inside the feet of Shree Krishna.

Pitcher, leaves, moon, sun, mace, temple, and deer, cross sign, arrow and snake are all visible in the left leg. All these shapes are considered as sixteen arts.

- ***Radha Krishna under the Kadamba tree:***

This is a paper made in Basauli style. This is a miniature picture. Its size is 13 x 21.5 cm. This picture is related to BrahmavaivartaPurana.

Its time has been considered as 19th century. This is a very attractive and beautiful painting made in Pahari style. It depicts Krishna and Radha dancing under the Kadamba tree. Krishna is shown holding Radha by his left arm. He also has a flute in his hand. He is holding Radha's chest with his right hand. She is looking at Krishna ji with very sensual eyes.

- ***Surya Narayan:***

This painting is a miniature painting in the Bansauli style. It is made on paper. Its size is 23 x 13.4 cm. It is of 18th century.

It is related to Puranas. Surya Narayana is a form of Surya in which seven heads have been shown. In fact, Surya rides on a chariot with seven horses. Both Arun and Surya Narayana are shown in yellow clothes.

- ***Viratarupa:***

This is a miniature painting on paper in Araki art of Himachal Pradesh. Its size is 20.5 x 27.5 cm. This picture is from around the 18th century. This picture is related to Bhagwat Purana.

During the war of Mahabharata, when Arjun refuses to fight in despair, Lord Krishna takes him a little far from the battle site and preaches which is called Geetopadesh. Arjun refuses to fight seeing his family members and teachers in front of him in the battlefield, and then Shree Krishna shows him his great form, seeing which Arjun is surprised. In the eleventh chapter of Gita, his great form has been described.

Arjun says that he got scared seeing the huge form of Shree Krishna. He is not able to calm himself and he saw that many gods are coming and going inside his body. He saw the children of Dhritarashtra, Bhishma, Karna and Drona all being swallowed in his mouth and their heads being pressed by his teeth.

The painter has also shown sun, moon and nature in the body of Shree Krishna in this picture. Vishnu and Lakshmi lying on the rest of the bed inside his stomach are shown sitting close by. And in many ways the figures of men, women, animals, birds etc. are seen lying in the circle of crowns placed on their heads.

Eighteen heads of Shree Krishna are shown in it. It is a magic number and has 18 books of Mahabharata and 18 chapters of Bhagavad Gita. And in the war of Mahabharata, there were eighteen Akshohini army. Eighteen is such a number whose sum becomes 8+19 and 9 is the only number which when multiplied by any number, its pair becomes the same.

In Difference of soul:

This miniature painting belongs to Aski art of Himachal Pradesh. Its time has been considered as 18th century. This is taken from the Bhagavad Purana. This miniature painting depicts the second chapter of the Bhagavad Gita.

Vasansi JirnaniYathaVihay, NawaniGrihanatiNaro'parani

And ShariraniVihayJirna.Nayanyanisanyatinavanidehi.

A soul leaves the human body and wears a new body in the same way as a man discards old clothes and wears new clothes. In this picture, discarding the old clothes in a very beautiful way, wearing new clothes is shown. In this picture humans are shown free from human desires, greed etc. In addition to this, Arjuna is shown standing on a high place with folded hands. He is standing near his four-

horse cart. He is looking towards the sky where Shree Krishna is shown in an avatar of Vishnu.

- ***Krishna blowing the conch shells:***

This painting is made on paper; its size is 20.5 x 27.5. It is cm. It belongs to Himachal Pradesh (Araki) art. Its time has been considered as 18th century. This picture is related to Mahabharata.

This painting depicts the tenth day of the war of Mahabharata. Krishna and Arjuna are shown sitting in a horse drawn cart which is shown being harnessed by four horses. The army is also visible around the horses.

The Kaurava army is visible on the right side of the picture. In the same picture, Bhishma is shown in a cart harnessed by two black horses, whose driver is shown falling down. Shree Krishna and Arjuna are blowing their respective conch shells. Panchajanya and Devvrata showing their victory over Bhishma.

He is holding conch, chakra, mace and lotus in his hands and he is sitting on a parrot like bird.

This picture of Krishna ji applying paste on the feet of Radha is a miniature picture of Himachal Pradesh nirst. It is built in the 19th century. This picture is related to Brahmavaivarta and GeetGovind.

Here in this painting made in Kangra painting style, Krishna is applying color to the feet of Radha. Radhaji has been shown sitting on a generation. A pillow can also be seen lying behind him. Krishna ji is wearing a crown with peacock feathers. He is wearing yellow clothes. The picture was made very attractive by applying very fine and beautiful lines.

- ***Kalamkari:***

(Paintings made by pen) is a special example of the painting of South India. These pictures are made on cloth which is hung in temples. 'Kalahasti' located in Andhra Pradesh is the main center of Kalamkari. Vegetable colors are used in making these paintings. Brown or black lines are applied on the outer edges.

For which pen or stick is used. Sketches are written absolutely freely. The main theme of these paintings is epic. In this style the background colors are filled first. After these other drawings are raised.

Whereas the masterpieces portray the whole story while the smaller masterpieces highlight one or two episodes of the story. In Kalamkari, women are depicted in yellow, deities in blue and demons in red or orange colors. The Krishna Museum has a good collection of Kalamkari, depicting many episodes of the Mahabharata.

In order to understand the incident completely in one picture, the names of the incidents have also been given in Telugu script. His main picture is:

- ***Yudhishthira's assembly:***

This picture is made on cloth. Its size is 244 by 602 by 0 meters. It has been obtained from Andhra Pradesh and its time is around 20th century BC. This picture is related to Mahabharata.

This picture depicts Yudhishthira sitting on the throne of Hastinapur after the war of Mahabharata. King Yudhishthira and his wife Draupadi are shown sitting on the throne in the center of this picture. Krishna and the other four Pandavas are seen standing on the other side. In this picture, Krishna ji is seen as a very ordinary person, as in the midst of many people, his eyes are also looking at Yudhishthira

and Draupadi. It refers to other episodes of many other Mahabharata which were written in Telugu.

- ***GeetaUpdesh:***

Lord Krishna and Arjuna are shown in this picture giving sermons from the Gita. It is made on cloth. To make this, pen and colors were used. The horses are beautifully depicted in this picture. Shree Krishna has been made in blue due to which he seems to be different from the general public.

Arjuna is depicted in a state of great distress. He is holding a bow in his hand. Shree Krishna is seen blowing the conch. Very fine work has been done on the fabric. The design of the chariot has become very good. In this, colors are first applied on the background. Later colors were added to other shapes. Overall picture composition very nice

- **Tanjore style**

Tanjore art has a special place in the styles of the 19th century. In this art, there is coordination of art craft with painting, in which the picture is decorated with gold and precious stones. Mostly such images were placed in the places of worship in the middle-class houses of Tanjore, in which the bronze idols have been replaced by these jeweled beautiful images of gods and goddesses. These types of pictures are also there in the courts and temples, but mostly the pictures of Ram, Krishna and other deities are made.

Tanjore fine arts and materials for the development of kings were famous in which ivory work, silk cloth, and different types of brass. There are ornate samples and musical instruments etc. Tanjore painting also has a close relationship with craft art. There is an experiment of adding gold and gems to it.

The beginning of this art is believed to be from the Bhakti paintings of the TyagarajaSwamy temple at Tiruvarur. But the qualities of sculpture in came later. It is also related to folk art. Later this style is also visible on mica and glass.

The artists of the Tanjoreschool spoke Kannada. Tanjore style paintings are generally made on wood and mostly on a plank of karahal. Earlier, a board was used to write with tamarind glue, a cloth layer was pasted over it for a month or two. After this the cloth was coated with lime. When several thick layers of lime are deposited, it is rubbed with a stone or conch shell. After that, marks were marked by drawing on it with a brush, on which gems were later studded.

Where gold was applied, first a coating called Sukhan was applied, then after this the same coating was applied all around so that the ground becomes high and the gems stick firmly. After this gold leaves were pasted on 'Sukhan'. The gold leaf was earlier fully decorated. In this way the paintings of Tanjore style were prepared in advance.

The main subjects of the Tanjore style of paintings are mythology, portraits of kings, and thirdly paintings in which only one deity is depicted. Balkrishna has also been the main subject of this style. Krishna Katha is there in the museum. There is also a good collection of these pictures based on Brief History of Indian Painting.

- **Navneet Krishna:**

This picture is made on glass and cloth. Its size is 89x72 save mm. This is taken from a Tanjore painting from Tamil Nadu. It is related to Bhagwat Purana. Navneet Krishna is shown holding a pot of butter in this picture.

In this, child Krishna is seen sitting with the support of his left knee. He is holding a pot of butter in his left hand. He is seen surrounded by two female servants on

either side of him. One is holding the fan and the other is standing with a parrot in her hand. In the lower part, two Navneet Krishnas are shown kneeling close to them. A Tulsi is also shown the edges of the picture.

Decorated with designs in golden color. In this picture of this Tanjore painting, Krishna's complexion is shown like any other human complexion. While in other Rajasthani or Pahari paintings, Shree Krishna is made with blue color. This picture of Krishna playing flute under the Kadamba tree is also made on glass. It is made in the Tanjore style in Tamil Nadu. Its time has been considered as 19th century. Its relation is also from the BhagavataPurana.The very famous image of Shree Krishna is the image of Venugopal. Venu means flute and Gopal means cowherd girl like Venugopala Sri Krishna is seen with his cows and playing flute. In this Tanjore painting, Shree Krishna is seen standing on a lotus flower in art, his right foot is above the left foot. A Kadamba tree with fruits is visible behind them. In this, two concubines are seen standing on either side of them, out of which one is seen standing with a fan in her hand, while the other maidservant is seen holding a musical instrument and a beaker.

Shree Krishna is wearing Pitambar. And he is wearing a long chunri. He is wearing many types of ornaments including armbands, necklaces, bangles etc. In this also, like other Tanjore paintings, Sri Krishna is shown in human colour instead of blue and black.

This picture is made from the back side of the glass and the outer line always applied from the front. A large cow is shown behind Krishna, leaning to the right, facing towards his leg, and a small calf is shown drinking cow's milk. In this picture all the cows and calves are standing facing upwards. The whole combination is depicted on a mountain and the blue sky is visible above.

- ***Shreenathji:***

Shreenathji's idol was brought to Rajasthan from Govardhana near Vrindavan to protect it from the hands of the Mughal emperor Aurangzeb who in 1665 was bent upon vandalizing the area of Vrindavan by widespread destruction of Hindu temples.

When the Mughal army came to Govardhana, the devotees of the Lord showed them the titles and gifts given to the temple by the previous Mughal rulers. The army commander then ordered the deity to be taken away from Govardhana. For almost six months the statue stayed in Agra after which the custodians of the idol of Shreenathji left that place with the idol in search of a new heaven.

While several other princes were diffident, it was Maharana Rajsingh of Mewar who dared to provide refuge. The idol went on a journey to Mewar which took 32 months to complete. The decision to settle the Lord here at Nathdwara involves an interesting story.

When the wheel of the chariot carrying the Lord got stuck in the mud at a place called Sihar, the Rana saw it as a divine sign that Lord Krishna wished to settle here, and thus a temple was built at this spot and the holy township of Nathdwara grew around the temple.In 1672 Lord Shreenathji was placed in a new Temple built in village Sihad, now called Nathdwara, on the banks of river Banas.

End Note

- Prabhupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. KRSNA The Supreme Personality of Godhead. Mumbai: The Bhaktivedanta Book Trust, 2018.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvad Gita as it is, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1986.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvan Shree Krishn, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1982.

Chapter -4

Analysis of Sculptures

Sculpture, an artistic form in which hard or plastic materials are worked into three-dimensional art objects. The designs may be embodied in freestanding objects, in reliefs on surfaces, or in environments ranging from tableaux to contexts that envelop the spectator. An enormous variety of media may be used, including clay, wax, stone, metal, fabric, glass, wood, plaster, rubber, and random "found" objects. Materials may be carved, modeled, molded, cast, wrought, welded, sewn, assembled, or otherwise shaped and combined.

Sculpture is not a fixed term that applies to a permanently circumscribed category of objects or sets of activities. It is, rather, the name of an art that grows and changes and is continually extending the range of its activities and evolving new kinds of objects. The scope of the term was much wider in the second half of the 20th century than it had been only two or three decades before, and in the fluid state of the visual arts in the 21st century nobody can predict what its future extensions are likely to be.

Certain features which in previous centuries were considered essential to the art of sculpture are not present in a great deal of modern sculpture and can no longer form part of its definition. One of the most important of these is representation. Before the 20th century, sculpture was considered a representational art, one that imitated forms in life, most often human figures but also inanimate objects, such

as game, utensils, and books. Since the turn of the 20th century, however, sculpture has also included nonrepresentational forms. It has long been accepted that the forms of such functional three-dimensional objects as furniture, pots, and buildings may be expressive and beautiful without being in any way representational; but it was only in the 20th century that nonfunctional, nonrepresentational, three-dimensional works of art began to be produced. Sculpture may be either in the round or in relief. A sculpture in the round is a separate, detached object in its own right, leading the same kind of independent existence in space as a human body or a chair. A relief does not have this kind of independence. It projects from and is attached to or is an integral part of something else that serves either as a background against which it is set or a matrix from which it emerges.

The actual three-dimensionality of sculpture in the round limits its scope in certain respects in comparison with the scope of painting. Sculpture cannot conjure the illusion of space by purely optical means or invest its forms with atmosphere and light as painting can. It does have a kind of reality, a vivid physical presence that is denied to the pictorial arts. The forms of sculpture are tangible as well as visible, and they can appeal strongly and directly to both tactile and visual sensibilities. Even the visually impaired, including those who are congenitally blind, can produce and appreciate certain kinds of sculpture. It was, in fact, argued by the 20th-century art critic Sir Herbert Read that sculpture should be regarded as primarily an art of touch and that the roots of sculptural sensibility can be traced to the pleasure one experiences in fondling things.

All three-dimensional forms are perceived as having an expressive character as well as purely geometric properties. They strike the observer as delicate,

aggressive, flowing, taut, relaxed, dynamic, soft, and so on. By exploiting the expressive qualities of form, a sculptor is able to create images in which subject matter and expressiveness of form are mutually reinforcing. Such images go beyond the mere presentation of fact and communicate a wide range of subtle and powerful feelings.

The aesthetic raw material of sculpture is, so to speak, the whole realm of expressive three-dimensional form. A sculpture may draw upon what already exists in the endless variety of natural and man-made form, or it may be an art of pure invention. It has been used to express a vast range of human emotions and feelings from the most tender and delicate to the most violent and ecstatic.

All human beings, intimately involved from birth with the world of three-dimensional form, learn something of its structural and expressive properties and develop emotional responses to them. This combination of understanding and sensitive response, often called a sense of form, can be cultivated and refined. It is to this sense of form that the art of sculpture primarily appeals.

This article deals with the elements and principles of design; the materials, methods, techniques, and forms of sculpture; and its subject matter, imagery, symbolism, and uses for the history of sculpture in antiquity, see art and architecture, Anatolian; art and architecture, Egyptian; art and architecture, Iranian; and art and architecture, Mesopotamian. For the development of sculpture in various regions, see such articles as sculpture, Western; and African art. For related art forms, see mask and pottery.

Vishnu :

Vishnu stone idol (kaithal) is taken from Rasain. Its time has been considered as 10th century. It is related to Vishnu DharmottaraPurana.In the very center of this idol, the work of Vishnu has been made, in whose hands conch, chakra, mace and right left hands are shown in Abhaya Mudra. On the left side of the aura of Vishnu's head, Shivji is shown sitting in Padmasan and on the right side, Brahma is shown, on the lower side of Vishnu ji, a conch shell is shown. He is being identified by the chakra held in his hand.

Two male and one female servant are seen standing around them, in the central part of this idol, a figure made by joining two giant elephants and a lion is seen. This figure is visible on both sides of the idol. In the center the idol of VI is shown standing on the Saptaratha.

- ***Ganesha:***

Ganesha idol is made on stone. It is derived from Pehwa (Kurukshetra). Its time has been considered as 9th century BC. It is related to Vishnu is from the DharmottaraPurana and the Shiva Agamas.

This idol displays the picture of Ganesha. He is seen sitting in Lalitasan. This is his idol with four arms, which is very rare, because most of his idols and pictures show two arms. He is holding a padam (lotus flower) in his upper right hand and a bowl of sweets in his lower right hand.

His trunk is seen bent towards the left. She is seen leaning towards sweets. He is wearing a crown and Yajnopavit around his neck, but his vehicle rat is not visible in this idol.

- ***Yoganarayan:***

Yoganarayan is built on sand stone. Its time has been considered as 9th century. Its literature Vishnu DharmottPurana is considered.

Yoganarayan is shown sitting in the upper part of this artwork. The exterior of the place where he is shown sitting looks like a house. Two idols are shown in the lower part of this artwork.

Vishnu is shown sitting in the posture of Padmasana with both his hands folded together near the stomach, in the middle of which Yoganarayan is shown. Two pillars and two vyals are made on either side of them. In this artwork the whole combination is looking like miniature paintings.

- **Metal craft**

There has been an ancient tradition of metal craft in India, examples of which we find from the time of the Harappan culture. Krishna Katha has been given a special place in the metal crafts of South India.

In this, incidents related to the life of Sri Krishna such as Valakrishna, Yashodakrishna, Navaneetha Krishna, Venugopala, Krishna Rukmani with Gopis and Krishna with Satyabhama are prominent examples from Tamil Nadu. Most of the examples collected here are from Tamil Nadu.

Yashoda and Varahavatar with Balarama and Krishna are the best examples of metal craft art of Ganjam district of Orissa.Good collection of ivory artifacts in Shree Krishna Museum.

There is a collection. In which the image of Govardhandhari Krishna made on an ivory plate. Uktar is a very attractive picture of the Mughal style. Along with the

engravings of Yashoda, Krishna, Nanda Balram etc. made on the bonesare also excellent examples of this art.

But we are thankful to the environmentally conscious people who finally put a stop to the use of ivory to make jewelry so that we can save the elephants as well.

- ***Krishna in the posture of dance:***

This idol is made on bronze (burrow). It is derived from Tamil Nadu. It is related to Bhagavadpuran and Harivambhasa. It is very important to mark the dance posture in the idol of Krishna made in bronze. In this Krishna's masterpiece was made very beautifully.

Looking at Kriti, it seems that the whole weight is falling on the thighs while dancing. Here too, Shree Krishna is standing on the platform of a lotus. His legs are seen slightly bent from the knees. He is wearing a forest- like crown, which looks like a South Indian coiffure. With his flute and tilak like the English letter 'U' on his forehead, he looks like Krishna.

- ***Boar:***

Boar is a work made on brass. It is derived from Orissa. Its time has been considered as 19th century. It is related to Puranas. One of the incarnations of Vishnu in this work is shown in the form of Varaha. He is shown standing in 'Abhidha Mudra'. In this his left leg is shown bent at the knee. He is standing on a lotus flower.

It depicts Vishnu in human body and head with Varaha form (buffalo) with four hands. He is holding Chakra, conch, mace in his hands and lotus flower in one hand. Bhudevi is shown sitting on his elbow with folded hands. The Lord with the head of a boar is wearing a crown.

A long ponytail has been made. He is wearing Makara coils in his ears. He has also carried a chunri on his shoulders. He is wearing a long forest garland, Yajnopavit, necklace, armlet, bangle etc. This work is very beautifully expressing Mahapuran. In 'Padma Purana', there is mainly a story of killing the demon by Varaha, in which Brahma is also seen with him.

- ***Child Krishna and Balarama with Yashoda:***

This masterpiece is made on bronze. It is derived from Orissa. Its time is around the 19th century. This picture is also related to God and is from the Harivambsha Purana.

Mata Yashoda, Balarama and Krishna are shown in this masterpiece. Yashoda is holding Krishna in her lap and Balarama is standing below holding Yashoda's finger. Balarama is looking like an elder brother because he is holding his conch and Krishna is looking younger because he is in his mother's lap.

He is seen holding a flute in his hand. With Yashoda's clothes and hair, he becomes the capital of Andhra Pradesh. This idol is taken from the Ganjam region of Orissa, which is on the border of Andhra Pradesh.

This is a valuable idol of very large size made of bronze. The beak- like nose and cheeks represent the paintings of Orissa. Yashoda's ear ornaments, bangles and foot ornaments and Yashoda's clothes reflect the style of art of Andhra Pradesh.

- ***Putnavadh:***

This is an artwork made on wood. It is derived from Orissa. And its time has been considered as the 20th century. This figure is related to the Bhagavad Purana and the HarivambshaPurana.

Putna slaying is depicted in this picture, how child Krishna killed the demon named Putna. This figure has three- dimensional effect in which two figures are shown as Putna.

One is shown dead and the other alive. This whole combination is shown on a wooden throne. In this combination, the living Putna is shown emerging from the very middle of the dead Putna's body.

Jatana holds Balkrishna in a circle around her arm. And the female form is seen lying on the throne. In both the figures the bangles, ear- rings and other ornaments are made quite differently.

- ***Sri Krishna under the Kadamba tree:***

This idol is made on wood. Its size is 45 x 25.5 x 12.5 cm. It has been obtained from Orissa. Around the turn of the 20th century, It is also related to 'Bhagwat' and 'HarvimbhasaPurana'.In this idol, Krishna is shown standing under the Kadamba tree. He is seen standing in the posture of tribhang crossing his legs. His head is bowed on the right shoulder. Two musicians are shown playing the mridangam and the cymbal.

The leaves and fruits on the Kadamba tree are looking very beautiful. A cow is seen behind Shree Krishna who is standing with her head bowed at his feet. A peacock is seen sitting on the broken branch of the tree. Several cows are seen standing in the lower part of this masterpiece.

This whole combination is visible divided into three parts. Krishna and Lakshmi Narayan are shown seated in its front. In its rear part 'Gajendra Moksha' has been depicted. On the front side of this idol, a beautiful lotus has been made at the bottom. On which Garuda is shown, on which Narayan is sitting, in whose hand a

snake is seen holding. Lakshmi Narayan is depicted sitting on his shoulder. Brahma ji was made below on his right side.

A beautiful lotus has been shown blooming on the work of Lakshmi Narayan, in the middle of which Shree Krishna is seen playing the flute in tribhang posture. A vase is depicted above his head, which appears to blend into his crown. Two female figures are seen standing on either side of Shree Krishna. Krishna ji is depicted in the form of Vishnu. He is seen holding a conch and chakra in the back two hands and a flute in the front two hands.

The curtain has been shown on the back side of this work and Gajendra Moksha has been depicted. In it Vishnu saving the elephant from the mouth of the crocodile has been painted.

- ***Dashavatar of Vishnu:***

This idol is carved on wood. Its time has been considered in the 20th century. This masterpiece is taken from Tamil Nadu. It is related to Puranas.

The ten avatars of Vishnu are engraved on this piece of wood. The entire work is carved on a single piece of wood. In this ten incarnations of Vishnu are depicted as Matsya, Karma (Tortoise), Varaha, Narasimha, Vamana, Parashurama, Rama, Balarama, Krishna, Hayagriva.

- ***Krishna lifting the Govardhan mountain:***

This is a work of art made on ivory. This answer is taken from India. Its time has been considered as 18th – 19th century. Ivory is sometimes used for making miniatures. This painting is an example of pre- Mughal painting style, for which paper made of ivory has been used. In this picture Shree Krishna is shown lifting

the Govardhan mountain on the little finger ring finger of his left hand. His legs are slightly bent at the knees as if he is dancing.

He is standing on a lotus flower. He holds a flute in his right hand and wears a long garland of flowers around his neck, which is called Vanamala. Gopis, fan-wielding maidservants and musicians are seen standing on both sides of them. Two cows exactly in the middle of the picture standing up on the top of the Govardhan Mountain, can be seen from the Mughal era, which looks like miniatures

This episode is taken from 'Bhagavad' and HarivambshaPurana. It has been shown in this that when the Brajvasis started worshiping the Govardhan mountain. If there is, then Indra Dev gets angry.

God Indra wants people to worship him, because he gives them water, rain, but when Brajvasis refuse, he gets angry and rains heavily on Brajkshetra, then to save his Brajvasis, Lord Krishna moves Govardhan mountain on his left. The ring finger of the hand is raised on the finger and all the Brajvasi animals and birds find shelter under it. In this way Lord protects them from the wrath of Indra.

- ***Shree Krishna killing Agasura:***

This idol is also made on ivory. It has been imported from Odisha. Its time has been considered as 19th century. It is also related to 'Bhagavad' and 'HarivambshaPurana'.This is a three- dimensional round figure made on ivory depicting the Agasura slaying and the slaying of the demon Agasura by Sri Krishna. In this ivory Agasura is shown as a crocodile. Its mouth is open and a human figure is shown trapped in it.

Shree Krishna has been made in Vishnu avatar on the head of a crocodile. He has four arms and is holding conch shell, chakra in one hand and flute in his right hand.

- ***Krishnaji's legs seem to be stuck in the head of a demon named crocodile:***

This idol of Krishna playing the flute is taken from Orissa. Its time is believed to be 19th century. It is also related to the Bhagavad Purana and the HarivarbhasaPurana. This idol is made on ivory.

Krishna standing on a lotus flower is the best and most beautiful example of ivory sculpture. His figure and posture suggest that he is playing the flute. But the flute is not visible in his hand. Every part of his body, crown, clothes and ornaments all made very simply and carefully. In this, Krishna ji is standing with his legs crossed. He is wearing a long garland and Yajnopavit. Makarkundals are being adorned in His ears which together with His crown are showing a glimpse of a temple. Her body leaning to one side, thin waist, and the jewel inserted in her nose represent her as a dancing woman. A plait with flowers adorning his long and thick hair adorns his back.

- ***Krishna and Gopis dancing in different postures:***

This bas relief on bone is made; its time is believed to be 19th century. It is derived from Orissa also related to Bhagavad Purana and the HarivambhasaPurana.In this work, Krishna and the gopis are shown dancing in different postures shown to have happened. This work is divided into seven parts which looks semicircular. In this, the seven parts are beautifully decorated with flowers has been combined very beautiful lotus at the bottom has been created. Two girls dancing in the lower part of the figure showed doing. In the posture of lying on the ground, she has put her feet behind her head and is clapping her hands.

In the second part, Krishna is shown in Padmasana. His face is turned to the left and holding a flute in the right hand. Two female figures on either side of them are

shown in dance posture in Dhanushasana. A male figure is shown below the heads of both the figures.

In the third part of this figure, two figures are shown in a curved posture. This figure represents a sphere. Her legs are seen touching the head and she seems to be blowing a conch shell. The other figures are in dance posture. It is built on either side of the carving.

In the fourth part, female figures were shown in various dances postures. It is made while playing a variety of instruments.

In the fifth and sixth part, Krishna ji is shown in tribhang postures diagonally is shown. In this, Krishna is shown wearing a long garland crown and playing the flute. Crocodile head on the edge of his flute it is made up. Upstairs in the seventh part, various female figures are shown in dancing posture.

- ***Shree Jagannath:***

Puri is famous for the world-famous ShreeJagannath Temple & Longest Golden Beach. It is one of the Dhamas (Holiest of the holy place) out of four Dhamasi.e.,Puri, Dwarika, Badrinath&Rameswar, in India. Mahaprabhu Shree Jagannathalomg with sister Devi Subhadra and elder brother Mahaprabhu Shree Balabhadra are being worshipped in Puri (The PurusottamaKshetra).

The deities are seated on the Bejeweled Pedestal (RatnaSimhassana). Shree JagannathPuri Temple is one of the most impressing monuments of the Indian State Odisha, was constructed by a famous king of Ganga Dynasty Ananta Varman Chodaganga Deva dating back to 12th century at the seashore Puri. The main temple of Shree Jagannath is an impressing and amazing structure constructed in Kalinga architecture, with a height of 65 meters placed on an elevated platform.

There are so many festivals of Sri Jagannath during the year observed in Puri. Which are SnanaYatra, Netrotsava, RathaYatra (car festival), SayanEkadasi, ChitalagiAmabasya, SrikrushnaJanma, Dussehra etc. The most important festival is the World-famousRathYatra (Car Festival) &BahudaYatra. A large crowd is gathered to witness Mahaprabhu Shree Jagannath during this festival.

- ***Mahabharata war and the Pandavas:***

Lord Shree Krishna, who himself governs the world, became Arjuna's charioteer in the Mahabharata war and made the Pandavas the emperor of united India by giving victory to the Pandavas in the war. Sometimes, Arjuna is Lord Krishna's companion, and at others, it is said that Lord Krishna is Arjuna's companion.

This friendship grows out of equality, stability, and emotional support from both sides. Lord Krishna was always there to guide Arjuna throughout his life and to keep him on the path of his religious duties. Sometimes Arjuna needs Lord Krishna to show the path of Dharma, and he does the same through some stories from Mahabharata.

Lord Krishna shows Arjuna the path of such a religious path in the Bhagavad Gita when he tells Arjuna what to do in many different scenarios in battle.

- ***Crawling Krishna :***

Crawling symbolises the childhood phase of the supreme deity Krishna. In this aspect, he represents innocence and cuteness. Revering crawling Krishna and keeping his idol in the home or anywhere brings a calming and blissful aura. Benefits of Crawling Krishna Idol-Here are a few notable benefits of crawling Krishna figures: Crawling Krishna's idol brings the blessings of the commanding Lord Krishna. It enriches the devotee's life with prosperity and satisfaction. It brings immense peace and abundance to life.

The beautiful crawling Krishna figure brings glories and never-ending stability to life. The precious idol shatters all the negative energies and brings optimism to life. Cherish bliss and seamless melody with this beautiful idol.

- ***Dialogue between the warrior-prince Arjuna and the god Krishna*** *:*

The Bhagavad *Gita* ("Song of God" or "Song of the Lord") is among the most important religious texts of Hinduism and easily the best known. It has been quoted by writers, poets, scientists, theologians, and philosophers – among others – for centuries and is often the introductory text to Hinduism for a Western audience.

It is commonly referred to as the *Gita* and was originally part of the great Indian epic Mahabharata. Its date of composition, therefore, is closely associated with that of the epic – c. 5th-3rd century BCE – but not all scholars agree that the work was originally included in the *Mahabharata* text and so date it later to c. 2nd century BCE.

The *Gita* is a dialogue between the warrior-prince Arjuna and the god Krishna who is serving as his charioteer at the Battle of Kurukshetra fought between Arjuna's family and allies (the Pandavas) and those of the prince Duryodhana and his family (the Kauravas) and their allies. This dialogue is recited by the Kauravan counselor Sanjaya to his blind king Dhritarashtra (both far from the battleground) as Krishna has given Sanjaya mystical sight so he will be able to see and report the battle to the king.

End Note:

- Prabhupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. KRSNA The Supreme Personality of Godhead. Mumbai: The Bhaktivedanta Book Trust, 2018.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvad Gita as it is, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1986.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvan Shree Krishn, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1982.

Chapter 5

Study of three- dimensional installations Artifacts

Installation Art

Typically characterized by three-dimensional (3D) objects, the art movement known as installation art includes everything from life-size sculptures made of recycled materials and room-sized displays to light and sound experiences inside an art gallery. Many contemporary artists favor interactive installations that encourage the viewer to become part of the work of art.

While installation art is a close relative of performance art, the two are slightly different. Performance art sometimes includes elements of sound or video, but what sets performance art apart from installation art is that the artist is present and an integral part of creating a live performance for the audience.

Made from papier Mache and Thermakol in Krishna Museum Tableaus of Krishna Katha and episodes from Mahabharata were also shown in the figures. These human creations look very beautiful and alive as if will start talking all these tableaux were produced by Shree Niwas Malaya Theater Done by the artists of Crafts Trust, New Delhi. There is total 11 tableaux which are as follows.

1. Birth of Krishna
2. Bakasura slaughter
3. Stealing Butter
4. GovardhanDharan

5. Kaliamardan
6. Kanswadh
7. Abhimanyu Vadh
8. Maharas
9. Maharas Shree Krishna in Kurukshetra on the occasion of solar eclipse
10. Sermon
11. BhishmaSarashaiya

All these tableaux are in Rajasthani costumes and costumes. In the other two tableaus, the Manipuri Vasant Rasleela and in the other, Abhimanyu is killed in the Yakshagana style of Karnataka.

- ***Krishna birth:***

It is made on papiermache. It is made by Shree Niwas Malaiya Memorial Theater Crafts Trust, New Delhi. Its time is of the 20th century. Its literary connection is with the BhagavataPurana.

This three- dimensional installation depicts the birth of Shree Krishna, the eighth son of Devaki. Shree Krishna was the eighth child of Devaki and Vasudev. Devaki was the sister of Kansa. When Kansa was taking Devaki to her in- laws house, it was said in the sky that the eighth child of this Devaki would kill you.

Hearing this, he wanted to kill Devaki, but after Vasudev prayed and promised that he would give all his children to Kansa, Devaki and Vasudev gave birth to seven children, all of whom Vasudev gave to Kansa whom Kansa killed. But when Devaki When the eighth child was born, Krishna asked Vasudev to take him to Gokul.

When Vasudev was taking Krishna to Yashoda, all the gatekeepers fell into a deep sleep because of his glory. Krishna was born in the month of Bhadra. Vasudev

took Krishna out of the prison hiding him. Due to the glory of Shree Krishna, the locks opened automatically and all the doors of the jail opened.

In this present scene, Vasudev is seen crossing the river Yamuna by putting the child Krishna in a basket and keeping it on his head. It is raining very fast and there is lightning. Sheshnag, whose seven heads have been shown to protect the child from heavy rain, is united to Krishna.

After reaching Gokul, Vasudev replaced Shree Krishna with a girl Nanda and went back to the prison. On hearing the news of Devaki's ninth child, Kansa came to kill her. When he started hitting her on the stone, the girl slipped from his hands. Gone to the sky Then Kansa heard a voice in the sky that the one who killed you was born in Gokul.

- ***Bakasura slaughter:***

This three-dimensional installation is made on papiermache. It belongs to the 20th century. It is related to Harivambsha and Bhagavatapurana. This three-dimensional installation is depicting Bakasura slaughter. There was a demon named Bak, who had taken the form of a duck.

Kansa who seemed to be Krishna's maternal uncle sent Putana, Trinavarata, Vatsura, Shakasura and many other demons to kill Krishna. One day a demon came to Gokul in the guise of a heron and sat hiding in a herd of cows and waited for Krishna to appear so that he could kill him. Suddenly he tried to kill Krishna by expanding his body.

On seeing the demon, Shree Krishna pulled him by his hand and killed him. In this scene, Krishna is shown standing on Bakasura' schauch, holding the upper part of his chauch with his hand. This one is a beautiful composition, in which the child Krishna is killing a giant heron is.

- ***Maharas:***

This three- dimensional setting is also related to the BhagavataPurana and the HarivambhasaPurana. This is from the 20th century. In this tableau, Krishna and many gopis are shown performing Raslila. Shree Krishna promises the gopis that he will dance with them on some moonlit night. Seeing such a moonlit night, Krishna ji thought that today RaasLeela should be performed with the Gopis. Gopis loved Shree Krishna very much. She used to wait for him as if the husband was coming home after a long time. Krishna ji started playing his flute.

The tune of that mesmerizing flute attracted the mind of the Gopis so much that they forgot all their troubles and ran to meet Krishna. Some gopis even forgot to feed their children and some left cooking and went to participate in the dance with Krishna. In the moonlit night, all the gopis form a circle and dance with Shree Krishna. It is because of the glory of Krishna ji that Krishna is coming with each Gopi.In this tableau, Radha Krishna is seen exactly in the middle, one Krishna is seen with others. The main weight of its dance is the union of soul and body. In this tableau, the gopis are shown as the body and the other as the soul. The followers of Chaitanya believe that Hare Rama Hare Rama Rama Hare Hare. Hare Krishna Hare Krishna Krishna Krishna Hare Hare shows in which 16 words are used. Similarly, 16 dancing figures are exposed in the Raas.

- ***Bhishma on the bed***

This tableau is related to Mahabharata. Mahabharata war of Pandavas ended with. But Yudhishthira was having peace of mind because he had seen the huge bloodshed in the war. Because of this Yudhishthira was deeply shocked. Krishna Ji thought that Bhishma was the only person who could help Yudhishthira out of an

unusual situation. That's why he comes to everyone and he gives them knowledge about Rajdharma.

With this Bhishma was seen lying on a bed made of arrows, because Bhishma was killed in the battle of Mahabharata, instead of falling on the ground, he fell on a bed of arrows. Bhishma is known not only for his intelligence but also for his love for the truth. Bhishma's telling of Rajdharma to Yudhishthira was as important as Krishna's preaching to Arjuna during the battle of Mahabharata.

- ***Abhimanyu slaughter:***

This tableau is also related to the slaughter of Abhimanyu.The tableau of Abhimanyu Vadh in Krishna Museum is the most attractive to the audience Attracts. Abhimanyu is known for his soft existence; He was the youngest and was not yet fully versed in archery. Mahabharat on the thirteenth day of the war, he fought alone with the seven mighty Kauravas.

Dronacharya, Duryodhana, Karna, Shamya, Dushasana, Jayadratha and Kripacharya were there. He was trapped in the Chakravyuh created by the Kauravas, due to which he was killed when the Kauravas tricked him. Abhimanyu knew how to enter the Chakravyuh, but he did not know how to get out of the Chakravyuh.

This tableau has a dramatic effect. This entire tableau is a Yakshagana form, in which Karnataka's cinema, folk art along with dance, music lyrics are also there.

Similarly, on the occasion of Manipuri RaasLeela, Shree Krishna and Radha', Vadh', Kaliyamardan, Shree Krishna lifting the Govardhan mountain are also other human works with three- dimensional effect. All these tableaux are also related to Krishna's lifetime.

In order to save the people of Gokul from the wrath of Indra, Shree Krishna lifted Ni Parvat on the ring finger of his left hand.The residents of Gokul could escape from the heavy rain. In Kaliyamardan, Shree Krishna had killed a snake named Kaliya. Nya was a snake who lived in Kalindi (Yumna). The people there used to make animals and birds very sad. He was doing something with his poison. Once when Krishna and his friends were playing with a ball, suddenly their ball fell into the Yamuna. Krishna jumped into the Yamuna to fetch the ball. Kaliya took Krishna in her lap.

Then there was a lot of war between Krishna and Kaliya. Then Shree Krishna started dancing by climbing on the heads of Ya, which started happening then hiswives prayed to Shree Krishna to give him then Shree Krishna accepted their prayer and left him and ordered Kalia Gave that he should leave Yamuna and go somewhere else.

Similarly, in the next tableau 'Kansa Vadh', Shree Krishna is seen killing Kansa. Kansa gave control to Balarama and Krishna to take them to a festival in Mathura. But Kansa's intention was to kill Krishna. Kansa had hired a mad elephant and two wrestlers to kill Krishna. Chunara and Mustika were two wrestlers. But Krishna and Balaram killed both of them with his power. Then Shree Krishna full power rushed towards Kansa with the hand then by killing Kansa freed the people from his tyranny.

Meeting of Radha and Krishna on the occasion of solar eclipse is another beautiful. There is tableau. Many years after the Mahabharata war, on the occasion of a solar eclipse, Shree Krishna comes to bathe in 'Ramsar' with his family. Many kings, Queens, general public and many people from all over India used to gather here.

Conclusion

As we have discussed earlier, we come to conclusion that art and religion are interconnected to each other and connect be looked upon in isolation. In fact, Art is the external manifestation of the core theme of a religion.

Art makes it simple for an ordinary person to understand the complexities of religion in Hinduism particularly in Krishna's time period. Shree Krishna Museum has played a very important role in depicting the various aspects and leelas of Shree Krishna in the form of Painting, sculptures, three-dimensional installations Shree Krishna Museum presents a wonderful image of the spiritual and cultural form of Kurukshetra.

Art is a connectivity bridge between the soul of a devotee and his lord. Various temples and religious places of Hinduism prove the relation between art and religion. The glorying example of the relation between art and religion can be seen in Krishna Museum that is located at the land of Mahabharata, Kurukshetra. A visit to museum helps one to understand the various leelas of Shree Krishna during the different phases of his life. Our heritage is still preserved in the Krishna Museum so that we explore the past.

Bibliography

- Prabhupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. KRSNA The Supreme Personality of Godhead. Mumbai: The Bhaktivedanta Book Trust, 2018.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvad Gita as it is, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1986.
- Praphupada, A.C. Bhaktivedanta Swami. Bhagvan Shree Krishn, Published: the Bhaktivedenta book trust, 1982.
- Shreemad Bhgvad-Mahapuran, Published: Geeta Press Gorakhpur
- Vyas Girjia, Gita and Bible, Published: Hansa Publications
- Jayadayal Goyandka , Srimad Bhagvadgita As it is(With English Translation), Published: Gita Press Gorakhpur

Online Resources:

- https://www.researchgate.net/publication/353565519_ABOUT_RELATIONSHIP_BETWEEN_RELIGION_AND_ART
- -https://www.exoticindiaart.com/book/details/life-of-krishna-in-indian-art-nab072/
- -https://haryanatourism.gov.in/Destination/shree-krishna-museum
- -https://srikrishnamuseum.com/

- -https://www.kurukshetraonline.in/city-guide/shree-krishna-museum-in-kurukshetra
- -https://www.gosahin.com/places-to-visit/krishna-museum-kurukshetra/
- -https://www.dronahfoundation.org/sri-krishna-museum-kurukshetra/

List of images

1. Scene of battle between Jarasandh and Bhima
2. Rukmini haran
3. Radha krishna
4. Feet of Krishna
5. Krishna Leela's
6. The Assembly if Yudhishitra
7. Krishna and Arjun in yudhbhumi
8. Shreenath jii
9. Surya Narayana
10. Navneet Krishna
11. Ganesha
12. Vishnu
13. Balrama & Krishna with Yashoda
14. Vishnu Dashavatar
15. Krishna lifting the Govardhan Parvat
16. Shree Krishna playing the flute
17. Bakasur killed by Krishna
18. Krishna born
19. Boar
20. Bhishma on bed
21. Maharas
22. Abhimanyu Slaughter
23. Jagannath jii
24. Crawling Krishna
25. Krishna preaching Arjun

1. Scene of battle between Jarasandha and Bhima

2. Rukmini Haran

3. Radha Krishna

+

4. Feet of Krishna

5. Krishna Leelas

6. The assembly of Yudhishtra

7. Krishna & Arjun in Yudhbhumi

8. Shreenathjii

9. Surya Narayana

10. Navneet Krishna

11. Ganesha

12. Vishnu

13. Balrama & Krishna with Yashoda

14. Vishnu Dashavatar

1. **15.** Krishna lifting the Govardhan Parvat

16. Shree Krishna playing the flute

17. Bakasur killed by Krishna

18. Krishna Born

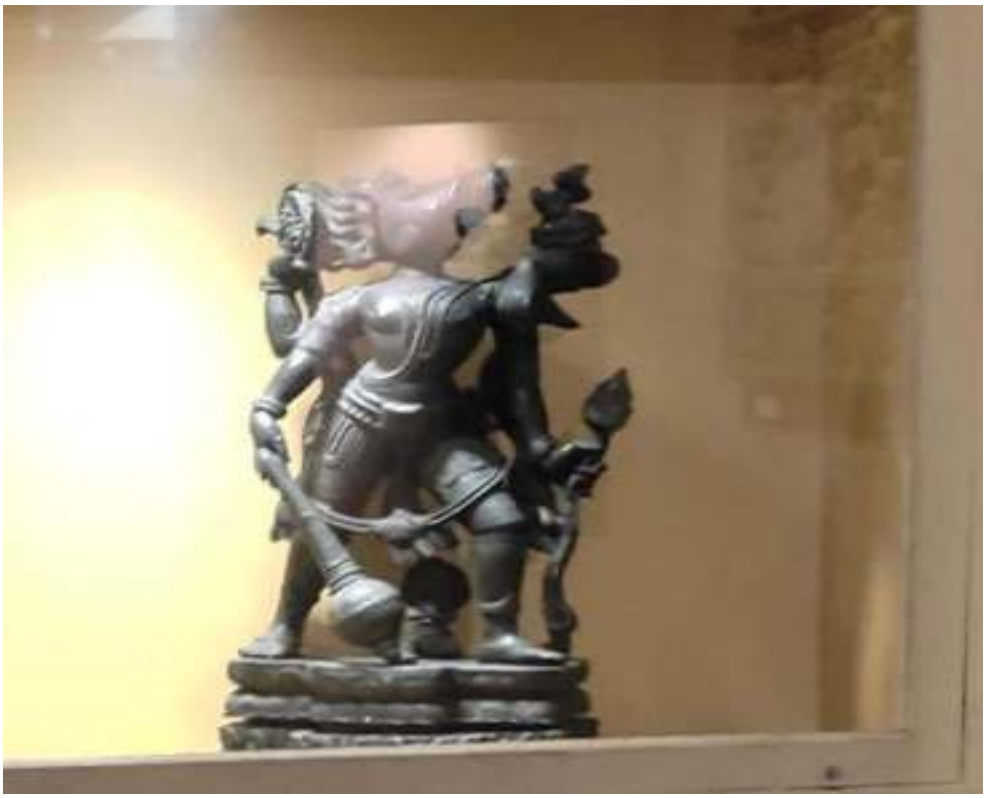

19. Boar

20. Bhishma on bed

21. Maharas

22. Abhimanyu Slaughter

23. Shree Jagannath jii

24. Crawling Krishna

25. Krishna preaching Arjun

Role of Collage Making in Art

KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

A

Dissertation submitted for the degree of

Master of Art in Fine Arts

Researcher	Supervisor	Head of Department
Simran Kaur	**Mrs. Kiran Khevaria**	**Mrs. Santosh**
M.A-Final year	Assistant Professor	Department of Fine Art

Department of Fine Art

Arya Kanya Mahavidyalya,

Shahabad Markanda

2022-23

To whom it may concern

It is certified that Ms. **Simran Kaur**, Roll no. 210155502, student of M.A-Fine Art final year has made research on the title **"Role of Collage Making in Art."** It is her original work. She has completed this with full devotion and hard work. We wish for her successful and bright future.

Date:

Principal
Dr. Aarti Trehan

DECLARATION

I certify that the work presented in the project report entitled, **"Role of Collage Making in Art"** for the award of degree of M.A Fine arts (Drawing & Painting) is an independent study carried out by me under the guidance of Mrs. Kiran Khevaria, Assistant Professor, Arya kanya Mahavidyalaya, Shahabad Markanda.

Date: -

Simran Kaur
M.A- Final Year

CERTIFICATE

It is certified that Ms. Simran Kaur, student of M.A-Fine Art of Final year has completed a dissertation under my guidance on the title **"Role of Collage Making in Art".**

Date

Supervisor
Mrs. Kiran Khevaria
Assistant Professor

PREFACE

Collage is a versatile medium that allow artists to experiment with different textures colours, and shapes. It is a practice that has been around for centuries and has been used by artists, writers, and designers a like to express themselves creatively. It offer endless possibilities for creativity and expressive, and each collage is a unique reflection of the artists perspective and imagination. In this dissertation, we explore the world of collage and showcase that works of some of the most talent and innovative collage artists.

Through the pages of this dissertation, you will discover the rich history of collage and its evolution over time. You will learn about the different techniques and tools used by collage artists and gain insight into to creative process behind their work. You will also find inspiration and guidance for creative you own collage, whether you're experienced artist or just starting out in this technique.

We hope the dissertation inspire you to explore the world of collage and discover the joy and beauty of this art form.

In the first chapter, the meaning of art and the different arguments that have been made throughout history about its definition. We will also delve into the world of collage, a unique art form that involves layering different materials to create a dynamic and textured image.

In the second chapter, we will explore the history and evolution of collage art, from its beginnings as a form of novelty art to its place in the modern and contemporary art world. We will also delve into the different movements and artists that have shaped collage art over the years. By the end of this chapter, you

will have a better understanding of what collage art is and how it has evolved over time.

In the third chapter, we will explore some of the most popular techniques for making collage art, as well as the supplies you will need to get started. We will also provide examples of famous artists who have used collage in their work and discuss the different types of collages in art. By the end of this chapter, you will have a better understanding of the techniques and tools you can use to create your own unique collage art.

In the forth chapter, we have compiled a list of topics that we will cover; the definition and history of collage art; the different materials you can use in collage art; Techniques for creating collage art, such as layering and assemblage. Famous artists have used different types of collages in their work of art, such as photomontage and digital collage. Tips for creating your own collage art, including selecting materials and experimenting with different techniques.

By the end of this dissertation, you will have a better understanding of what collage art is and how it can be used to create meaning.

ACKNOWLEDGMENT

As the study comes to its conclusive close, a pleasant task remains to sit back and acknowledge the sincere efforts of all those who have helped me to make this study see the light of the day. At the outset, I thank almighty God for blessing me with strength, dedication and patience to complete this work within the stipulated time.

It is my profound privilege to express my deep understanding of Guardian to Mrs. Kiran Khevaria, Assistant Professor in Arya Kanya Mahavidyalaya Shahabad Markanda for struggling to teach me this in what invitation study for her priceless and sagacious Guardian to steer me through many different movements in the conduct of these studies. She not only guided me throughout my Dissertation but also motivated me. I must say that she has been truly my teacher, guide and philosopher in the real sense. Words fail me in expressing my gratitude to him for having been a beacon of inspiration and guidance to me in the study.

I would also like to put on record her gratitude to my teacher Mr. Mahesh Dhiman, Arya Kanya Mahavidyalaya. I gratefully acknowledge heart valuable suggestions and Feedback regarding various aspects of my research. Suggestion was tremendously helpful in improving the quality of the writing of my dissertation. Before I finish, I often my and regards blessing to those who supported me and offered their gracious help for completion of this research work.

INDEX

CHAPTER	Page no.
Chapter-1 : Introduction	01 – 13
o Meaning of Art	
o Meaning of Collage Making	
Chapter-2 : History of Collage Making	14 – 30
o Beginning of Collage making	
o Collage Making in western art	
Chapter-3 : A brief description of Collage Making Technique	31 – 42
o Collage making with reference to Paper	
o Collage making with reference to Textile	
Chapter-4 : Contribution of artist towards collage making	43 – 49
o Contribution of Mahendra Singh Tillu	
o Contribution of Dr. Ravinder Sharma	
Chapter-5 : Conclusion	50 – 51
Bibliography	52 – 53
List of Images	54 – 54
Images	55 – 78

CHAPTER - 1

Introduction

Art is a term that has been used to describe a broad range of human activities and creative, from painting and sculptures to literature, music, films and beyond. However defining art is a notoriously difficult tasks has it encompassed so many different forms styles, and approaches, despite this challenges, there are certain aspects of art that are widely give organized and appraised such as its ability to inspire emotions and communication Complex ideas.

One common definition of art is that it is a form of human expression that is created with the intention of stimulating the scenes, emotions or intellect of the viewer or listeners. This definition highlights the role of artists in shaving expression of the audios as well as the importance of interpretation and context in understanding and appreciating art. It also struggles that art is not just a matter of skills and technique but also Creativity imagination and originality.

Another way to think about art is a form of communication. Like language, artist the means of conveying meaning and Idea, about it does so throat visual auditory, or other sensory channel rather than words. Are can be used to tell story, Express Emotions, or convey Social and political messages and it often doesn't so in ways that are more subtle and nuanced than traditional form of communication. This is way art is sometimes described has a Universal language one that transcends Cultural, linguistic and Geographical boundaries.

At its core, art is a reflection of human expression and imagination. it is a way from us the explore and understand ourselves, our world, and our deepest fair and Desire, our job and sorrows And our hopes and dreams we can also understand connect with other who share our experience and understanding across different of race, Gender, culture ideology.

Art can take many different forms, from representation to abstract, from traditional to experimental. Some art forms of art, such as painting, structures, and architecture, have been practical for thousands of years and have rich cultural histories and traditional other forms, such as performance art, video art, and digit art are more recent developments that reflect the changes in technology and culture landscape of that modern world. Regardless of its form or style, however, Art has the power to move use challenge us, and inspire us in ways that few other human activities can.

One of the most fascinating aspects of art is its ability to evolve and adopt overtime. Artistic movement and styles have emerged and disappeared throughout history each reflecting the social, political and cultural context in which they were created from the renaissance to the romantic era, from the modernist avant grade to the postmodernist deconstruction each period has brought its own innovations, challenges and critiques to the world of art.

Despite these changes, however, curtain themes and Motifs have remained constant in art throughout history. The human forms, the nature Worlds, and the relationships between the individual and Society are just a few of the timeless subjects the artists have explored in different ways and from different angles. These they reflect the fundamental questions and concerns that have preoccupied human beings for centuries and they continue to inspire artist audiences today. Art is a diverse and multifaceted concept that has been the subject of much discussion and interpretation throughout history. At its Core, art is meaning of expressing ideas, emotions and experiment through various medium, including painting, sculptures, music, literature, dance, theatres, and films.

One of the defining features of art is its ability a boiled range of emotional responsibilities from viewers and listeners. Whether it is the haunting beauty of the painting by Vincent van Gogh, The low energy of the live performance by Bayonne, all the heart wrenching lyrics of a song bob Dylan art has the power to move us in profound ways.

Artists use a variety of techniques and style to create their works often drawings on their own personal experience and cultures influence. For example the impressionist Moments of the 19th century was characterized by it use of bright color loose brushes strokes, on capturing the feeling effect of light and color in the nature world. In contrast the Abstract Expressionist movement of the 20th century was marked by its emphasis on spontaneity, gesture and the exploration of subconscious.

While art can be highly subjective and open to interpretation, there are certain fundamental elements they are commonly considered when evaluating the equality and effectiveness of a work. These include composition, color, form, line, texture and space.

Composition refer to the arrangement of elements within a work, such as a placement of figure or object within a painting or the structure of a musical compositions color, of course, refer to be used to color with in a work, and can be used to convey a wild range of emotion and Moods. Form refers to the physical shapes of an object or the all over structures of work while

lines refer to use of line to create visual interest and movement within a work. Texture, mean while, refer to the tactile quality of work, such as the rudeness of this sculpture for these smoothness of a painting finally, space refers to the way in which element are arranged with in a work to create a scene of depth or perspective. In addition to these formal element art is also often imbued symbolic or metaphorical meaning drawing for culture or history reference to convey deeper message for ideas art can be found in many aspects of daily life, from the clothes we wear to the object we use any environment habit there are few examples;

Visual art; Painting, sculptures, photograph, and other form of visual art formally found in houses, office and public space. people many decorated their leaving space with art that reflects their personality taste or culture background, and public space many features sculptures and mural that add beauty meaning of the environment.

Graphic design; Graphic design is used in advertisement packaging, and other form of visual Communication. Logos, products label and Billboard are just a few example of how graphic design is used in daily life.

Fashion; Fashion is a form of art that is worn on the body. Clothing, accessories and even hairstyles can be considered artistic expressions. Fashion designer often drawing inspired from art movement, historical period, and culture traditional.

Architecture; buildings and other structures and design with other function and aesthetic in mind architects you principal of art and design to create building that are visual appealing as well as functional and safe.

Music; Music is a form of art that is often experiment on a daily based. People listen to music on the radio, on their phones and in live performance. Music and emotions create atmosphere, and people together.

Literature; Literature, include novels, poem and other writing works; can also be considered a form of art. People read literature for environment, education are inspiration, and other use language to create imagery and Convent powerful messages. Prominent example for the art includes visual art (including ARCHITECTURE, drawing, Filmmaking, painting, photography and sculpture.

Literary Arts (including friction, drama, poetry and prose)

Performing Arts (including dance, music and theatre) there can impel skills and imagination to product object, performance, conveys insights and experiences, and construct new environment and space.

Importance of Art

Now that we have a reasonable understanding of what art is, and a definition that is ironically indefinable due to the ever-evolving and fluid nature of art, we can look at how the art that we have come to understand is important to culture and society. Below, we will outline some of the top reasons for the importance of art. Art does not need to explain in words how someone feels – it only shows. Almost anyone can create something that conveys a message on a personal or public level, whether it is political, social, cultural, historical, religious, or completely void of any message or purpose. Art becomes a universal language for all of us to tell our stories; it is the ultimate storyteller. Art connects us with others too. Whenever we view a specific artwork, which was painted by a person with a particular idea in mind, the viewer will feel or think a certain way, which is informed by the artwork (and artist's) message. As a result, art becomes a universal language used to speak, paint, perform, or build that goes beyond different cultures, religions, ethnicities, or languages. It touches the deepest aspects of being human, which is something we all share.

Touching on the above point, art touches the deepest aspects of being human and allows us to express these deeper aspects when words fail us. Art becomes like a best friend, giving us the freedom and space to be creative and explore our talents, gifts, and abilities. It can also help us when we need to express difficult emotions and feelings or when we need mental clarity – it gives us an outlet. Art is widely utilized as a therapeutic tool for many people and is an important vehicle to maintain mental and emotional health. Art also allows us to create something new that will add value to the lives of others. Consistently expressing ourselves through a chosen art modality will also enable us to become more proficient and disciplined in our skills. We might wonder why art is important to culture.

As a universal language and an expression of our deepest human nature, art has always been the go-to to keep track of everyday events, almost like a visual diary. From the geometric motifs and animals found in early prehistoric cave paintings to portrait paintings from the

Renaissance, every artwork is a small window into the ways of life of people from various periods in history. Art connects us with our ancestors and lineage.

When we find different artifacts from all over the world, we are shown how different cultures lived thousands of years ago. We can keep track of our current cultural trends and learn from past societal challenges. We can draw inspiration from past art and artifacts and in turn, create new forms of art. Art helps with human development in terms of learning and understanding difficult concepts, as it accesses different parts of the human brain. It allows people to problem-solve as well as make more complex concepts easier to understand by providing a visual format instead of just words or numbers. Other areas that art assists learners in (range from children to adults) are the development of motor skills, critical thinking, creativity, social skills, as well as the ability to think from different perspectives. Art subjects will also help students improve on other subjects like math's or science.

Various research states the positive effects art has on students in public schools – it increases discipline and attendance and decreases the level of unruly behavior. According to resources and questions asked to students about how art benefits them, they reported that they look forward to their art lesson more than all their other lessons during their school day. Additionally, others dislike the structured format of their school days, and art allows for more creativity and expression away from all the rules. It makes students feel free to do and be themselves. Art is versatile. Not only can it help us in terms of more complex emotional and mental challenges and enhance our well-being, but it can also simply add beauty to our lives. It can be used in numerous ways to make spaces and areas visually appealing. Art can lift a space either through a painting on a wall, a piece of colorful furniture, a sculpture, an ornamental object, or even the whole building itself, as we see from so many examples in the world of architecture. Sometimes, art can be just for art's sake.

Art can be socially and financially rewarding in so many ways. It can become a profession where artists of varying modalities can earn an income doing what they love. In turn, it becomes part of the economy. Thus, it could even become a beacon for improved tourism to a city or country. The best examples are cities in Europe where there are numerous art galleries and architectural landmarks celebrating artists from different periods in art history, from Gothic cathedrals like the Notre Dame in Paris to the Vincent van Gogh Museum in Amsterdam. Art can also encourage people to do exercise by hiking up mountains to visit pre-historic rock art caves.

The importance of art is an easy concept to understand because there are so many reasons that explain its benefits in our lives. We do not have to look too hard to determine its importance. We can also test it on our lives by the effects it has on how we feel and think when we engage with it as onlookers or as active participants – whether it is painting, sculpting, or standing in an art gallery. What art continuously shows us is that it is a constant in our lives, our cultures, and the world. It has always been there to assist us in self-expression and telling our story in any way we want to. It has also given us glimpses of other cultures along the way. There are many reasons that explain the importance of art. It is a universal language because it crosses language and cultural barriers, making it a visual language that anyone can understand; it helps with self-expression and self-awareness because it acts as a vehicle wherein we can explore our emotions and thoughts; it is a record of past cultures and history; it helps with education and developing different skill sets; it can be financially rewarding, it can be a powerful political tool, and it adds beauty and ambiance to our lives and makes us feel good.

Art and Culture

Art is important to culture because it can bridge the gap between different racial groups, religious groups, dialects, and ethnicities. It can express common values, virtues, and morals that we can all understand and feel. Art allows us to ask important questions about life and society. It allows reflection, it opens our hearts to empathy for others, as well as how we treat and relate to one another as human beings.

There are many different types of art, including fine arts like painting, drawing, sculpture, and printmaking, as well as applied arts like architecture, design such as interior, graphic, and fashion. Other types of art include decorative arts like ceramics, pottery, jewelry, mosaics, metalwork, woodwork, and fabrics like textiles; performance arts like theater, music, dancing; and Plastic arts that work with different pliable materials.

The definition of the word "art" originates from the Latin ars or artem, which means "skill", "craft", and a "work of art". The Merriam-Webster online dictionary offers several meanings, for example, art is a "skill acquired by experience, study, or observation", it is a "branch of learning", "an occupation requiring knowledge or skill", or "the conscious use of skill and creative imagination especially in the production of aesthetic objects". In our modern society, art is a universal way for people to express themselves and share their feelings

with the world. Art is an important avenue through which to connect with others, especially in times of crisis.

Ultimately, Art is a platform for people to express themselves and live out their dreams. It helps them deal with tough times and create something beautiful out of them. Art allows you to express your feelings, emotions, and thoughts in ways that are not always possible in words or actions. Art helps you to better understand how you feel about certain things.

Art is important to individuals for many different reasons. Art is highly subjective and also very personal and has long been a medium where individuals can express their feelings and emotions. Art has always been a part of their lives and is a core part of their personality or who they are. Art has the ability to help people get through some of the hardest times in my life. Art helps people connect with one another on a deeper level, whether that be by speaking your language or by visualizing your thoughts differently. Some artworks speak to someone more than others, and everyone will have a piece of art that is particularly important or special to them. Art has been a part of human culture for many centuries. It has been used to express emotions, to communicate ideas and it has been a way to pass down knowledge from one generation to another. Art is important in our cultural and social lives because it is the medium through which we process our emotions and ideas. It is also an important tool for learning, teaching, and communicating. Art plays a role in recording history, and many artworks help us paint a picture (literally) of what life was like in previous generations.

Art is also particularly important as a signifier of culture across the globe. Research has shown that art can affect the fundamental sense of self. Folk arts, for example, are highly unique to specific cultures and tell the history and rich traditions of a region. Painting, architecture, art sculpture, music, literature, and many other fine arts can be considered a repository of a given society's collective memory.

Importance of art in childhood

Art is a way to express one and it helps in developing cognitive skills. It also helps students to build creativity and problem-solving skills. Art has been present in schools for many decades and continues to be important. However, in the past, art was not valued in

education as much as it should have been. This may have been a result of class structure, as art history was only available to the upper classes. Today, art is being used more often in education and can help children learn valuable skills like critical thinking, empathy, and creativity.

Introduction of Collage Making

Collages is often the medium of associate with happy childhood memories cutting and stick swimming simple and contrast, playful and nostalgic but, From the vibrant cut-outs of Matisse to Robert mother well's enigmatic collages is a medium steeped in creative history, with fascinating past. One worth celebrating! With that in mind, we wanted to pay homage to the humble collage this month, and explore some of our affordable art artists who experiment and work with this underestimate medium.

What is Collage Making?

The term collage was coined by Picasso and Braque at the beginning of the 20th century, and comes from the French word coller, to glue. the technique where clipping from magazine or newspaper photographs or found object paper, portion of text or artwork, are cut out and blue to a piece of paper on Canvas can actually to traced back hundreds of years.

Today and established technique in the world of Modern Art after gaining population during 1950'S and 60s, as the late abstract expressionists in America took up the medium and made it their own . They play up the nature of college and make the final product often unusual, experimental and novel; chances are if you invest in the college peace, you won't See anything simply elsewhere.

Key Collage Terms

Occasionally you may come across a few more of the terms and phrases below, in relation to a peace collage to a piece Collage artwork, assembly or related technique. Here are some more explanation to help demystify them:

Papier colle: This branch term translate two taste papers on paste cut outs. A subcategory of collage, it's a applied to at work which only use paper opposed to the myriad of material and found object which the prime the cover. The gorgeous textural by pierre-francois Grimaldi, is a papiercol piece, using only paper and board to create this work.

Montage: A Montage is collage of image which is used in conjunction with each other to create a new fictional scene or work of art. These pieces are generally themed the work of Francesca lupo is a great example of Vintage in inspired montage.

Photomontage: Unsurprisingly, a photo Montage is a type of collage which only uses photographic images which are cut, glued and arranged together to create a new image. a killed artists can easily create a photo Montage that you into believing type a surreal and unlikely, but original photograph check out the work of Alexander Gallagher and pum.

Mixed media: This term is sometimes used within a description of collage works that described the use of multiple Medias to create an artwork. However, the term mixed medium describes an artwork which can create a wider range of materials- for instance, Layers of ink, paint, along with the Classic materials used within a collage.

Decollage: Decollage Is the opposition technique to collage being the process of removing material creating and artwork that comes to life as the layers on materials beneath are exposed.

Assemblage: You are created using three dimensional objects, artworks classified as assemblage pieces normally contain every day found objects. Within piece of assemblage artwork the materials are simply combined and arranged, as opposed to a montage where the materials are also manipulated in order to create a larger work.

Despite being nearly a country old and synonymous with innovative subject matter and revolutionary art material, paper collage painting still has a way to go before it will be considered mainstream art. Fortunately, there is forward thinking activity in the art community. Even hardened purest are beginnings see the light. Greater recognition of this art form seems to come from a growing interest of the public demanding handmade and original art as well as the need for artists to create something good from the growing pile of refuse the world produces. Not just the art form of elements children's it is not unusual collage artist in Juried art show or museum. As a medium, collage painting can be just as formidable as watercolors, oil painting, or sculptures. Some compositional puzzles challenge the collage artist.

Galat theory can be just as mysterious or elusive. In fact, when attempting collage it can be downright difficult to achieve signs of balance and harmony in form and content, much less have work knowledge of the wild assortment of material now accessible to create sound art.

The essential ingredient of collage in paper and collage artists Seem to the "paper pack rats" stuffed into drawers, stacked in piles. Hoarded In envelopes, boxes, and bags are the smallest bits of interesting paper. From Shiny candy wrappers and old maps to fabulous handmade French marbles, from movie tickets stubs to Elegant orbital lace papers, the remnants are carefully selected by Artist and used to translate personal commentary into the paper art.

Not for faint of heart, it takes a true collagist to decorate plain paper in a hundred different ways and then have the fortitude to tear them into thousands of tiny pieces and turn them into art.

To begin that collage process, at least a rudimentary understanding is needed of the dozens of both traditional and contemporary art material available to the collagist. I am proud to be among those who have become inventors, technique aficionados, and art material junkies. No longer are we satisfied with oil, turpentine, and canvas; or a jar of water, a piece of 300 lb. Paper, and a few tubes of pigment. There are those of us who Have gone beyond adhering Paper to paper and have made it our lives were to experiment with paper making, marbling, past paper making, Stamping, thermal embossing, dry embossing, using scanners, computers, color copies, and more; than expanding the title of collages to making media artisan listen to collage artist to hear and an interestingly Varied conversation topics of discussion are curiously wide in nature with an emphasis on the experimental archival Integrity computer becomes a subject of significant importance sounding futuristic Word such a reclaimed material Venus, fracture, and mail art Punctuate material Venues fractures, and mail art punctuate the conversation of the mixed - Media artists.

It seems that the collagists are Inquisitors by nature. that curiosity translate into art that is exceptionally diverse in subject and materials no more the simple Landscape or portrait artist, collagists seem to be more diverse in subject matter using the same newspaper that brings us a daily bombardment of the technological information mind blowing events; and light speed overload, mixed- media artist incorporate it into the very art that appears to cross all creative boundaries and break every artist' Rule.

Collage is a form of artwork that is made by assembling different pieces to create a new, finished work of art. Collages can be made from a variety of materials such as paper and fabric. There are so many different styles of collage. Some collagists create abstract artwork while others make artwork that tells a story with people in different settings. There are also lots of different collage techniques. A technique is the way an artist puts together a work of art. This includes the materials used, the way they were glued together, and the way the pieces were cut.

A common way to make collages is by cutting out different objects from photographs and magazines to glue them together to make a finished scene. You can also make abstract collages by tearing and cutting paper. Megan Coyle has made a few abstract landscape collages. Abstract artists like to focus more on colors and shapes in their work. Some artists also make collages by using several different materials. Collages can be made with paper, paint, string, and objects from nature like leaves, just to name a few. Some artists look for materials that were thrown away like cardboard and newspapers. The process of affixing objects to a surface is probably as old as paper itself, but it didn't become popular in the art world until about the 1920s. Artists including Pablo Picasso, Hannah Hoch, Henri Matisse and Romare Bearden each implemented this method. They began using collage as a more modern approach to making art. By cutting and pasting, they were able to deconstruct the subject they were depicting. They could then reassemble and glue it back together again in an entirely new way.

Cubism, a style of art with origins in the early 20th century, explored underlying shapes behind an object, often deconstructing it into basic and abstract structures. Collage worked well to express the geometry of an artwork. As the artist cut out simple shapes from paper or journalistic scraps, he or she would overlap pieces, making compositions from the glued elements. Collage fused painting and sculpture, the flat and the 3-dimensional, into one complete image.

One of the first champions of Cubism was the famous Pablo Picasso, whose collage works include Guitar, Sheet Music and Wine Glass from 1912. In this collage, Picasso used seven different pieces of paper with different patterns and textures, all on a wallpaper background to suggest the rough shapes and countoures of these three objects.

Hannah Höch, a German artist, used collage to critique her government. Hoch was a member of the influential Dada movement. The Dada movement responded to emerging political

ideas following World War One. By creating avant-garde artworks that used humor, a playful tone and irony, Dada artists questioned their society and redefined art.

End Note

- Smith Terry, What Is Contemporary Art?, Publisher: University of Chicago Press, 2012, Author: Terry Smith.
- Freeland Cynthia, Art Theory: A Very Short Introduction, Published:13 February 2003, Publisher: OUP, Language: English, Author: Cynthia Freeland.
- Smith Terry, What Is Contemporary Art? Publisher: University of Chicago Press, Publisher year 2012, Author: Terry Smith,
- Janson H . W., Title: History of Art , Author: H. W. Janson, Anthony, Publisher year 29 June 2017 Publisher : Publikat Verlags und Handels , Language : English
- Freeland Cynthia, But Is It Art? An Introduction to Art Theory, Published:7 February 2002, Publisher: OUP Oxford, Language: English, Author: Cynthia Freeland
- Rothamel Susan Pickering, The Art of Paper Collage, Publisher: sterling publication: 30 June 2000.

CHAPTER-2

HISTORY OF COLLAGE MAKING

Most elementary children can recite the four items necessary to make a collage a few scraps of paper, same adhesive, surface for everything's to be adhered to, and an idea however, to produce a collage that is creatively inspired and enduring of color and construction-that is another things.

There are those who will argue that product knowledge is nearly wasted on the Beginning artist they believe that anyone can play with materials into the totally carefree manner and that one Learns through the exploration process while this may be true to a point it can also be argued that ark materials have their limitations and liabilities learning about art materials early on will enhance Creativity.

Collage, from the French: coller, "to glue" or "to stick together") is a technique of art creation, primarily used in the visual arts, but in music too, by which art results from an assemblage of different forms, thus creating a new whole. (Compare with pastiche, which is a "pasting" together.) A collage may sometimes include magazine and newspaper clippings, ribbons, paint, bits of colored or handmade papers, portions of other artwork or texts, photographs and other found objects, glued to a piece of paper or canvas. The origins of collage can be traced back hundreds of years, but this technique made a dramatic reappearance in the early 20th century as an art form of novelty. The term Papier colle was coined by both Georges Braque and Pablo Picasso in the beginning of the 20th century when collage became a distinctive part of modern art.

Beginning of Collage making

Techniques of collage were first used at the time of the invention of paper in China, around 200 BC. The use of collage, however, did not arise until the 10th century in Japan, when calligraphers began to apply glued paper, using texts on surfaces, when writing their poems. Some surviving pieces from this style are found in the collection of Nishi Hongan-ji— many volumes of the Sanju Rokunin Kasha. The technique of collage appeared in medieval Europe during the 13th century. Gold leaf panels started to be applied in Gothic

cathedrals around the 15th and 16th centuries. Gemstones and other precious metals were applied to religious images, icons, and also, to coats of arms. An 18th-century example of collage art can be found in the work of Mary Delany. In the 19th century, collage methods also were used among hobbyists for memorabilia (e.g. applied to photo albums) and books (e.g. Hans Christian Andersen, Carl Spitzweg). Many institutions have attributed the beginnings of the practice of collage to Picasso and Braque in 1912, however, early Victorian photo collage suggest collage techniques were practiced in the early 1860s.

Many institutions recognize these works as memorabilia for hobbyists, though they functioned as a facilitator of Victorian aristocratic collective portraiture, proof of female erudition, and presented a new mode of artistic representation that questioned the way in which photography is truthful. In 2009, curator Elizabeth Siegel organized the exhibition: Playing with Pictures at the Art Institute Chicago to acknowledge collage works by Alexandra of Denmark and Mary Georgina Filmer among others. The exhibition later traveled to The Metropolitan Museum of Art and The Art Gallery of Ontario.

Collage Making in Western Art

Despite the pre-twentieth-century use of collage-like application techniques, some art authorities argue that collage, properly speaking, did not emerge until after 1900, in conjunction with the early stages of modernism. For example, the Tate Gallery's online art glossary states that collage "was first used as an artists' technique in the twentieth century". According to the Guggenheim Museum's online art glossary, collage is an artistic concept associated with the beginnings of modernism, and entails much more than the idea of gluing something onto something else. The glued-on patches which Braque and Picasso added to their canvases offered a new perspective on painting when the patches "collided with the surface plane of the painting" In this perspective, collage was part of a methodical reexamination of the relation between painting and sculpture, and these new works "gave each medium some of the characteristics of the other", according to the Guggenheim essay. Furthermore, these chopped-up bits of newspaper introduced fragments of externally referenced meaning into the collision: "References to current events, such as the war in the Balkans, and to popular culture enriched the content of their art." This juxtaposition of signifiers, "at once serious and tongue-in-cheek", was

fundamental to the inspiration behind collage: "Emphasizing concept and process over end product, collage has brought the incongruous into meaningful congress with the ordinary."

Collage in painting

Collage in the modernist sense began with Cubist painters Georges Braque and Pablo Picasso. Snippets and fragments of different and unrelated subject matter made up Cubism collages, or papier collé, which gave them a deconstructed form and Appearance. According to some sources, Picasso was the first to use the collage technique in oil paintings. According to the Guggenheim Museum's online article about collage, Braque took up the concept of collage itself before Picasso, applying it to charcoal drawings. Picasso adopted collage immediately after (and could be the first to use collage in paintings, as opposed to drawings):

"It was Braque who purchased a roll of simulated oak-grain wallpaper and began cutting out pieces of the paper and attaching them to his charcoal drawings. Picasso immediately began to make his own experiments in the new medium."

In 1912 for his Still Life with Chair Caning (Nature-morte à la chaise cannée), Picasso pasted a patch of oilcloth with a chair-cane design onto the canvas of the piece. Surrealist artists have made extensive use of collage and have stayed away from the still-life focus of Cubists. Rather, in keeping with surrealism, surrealist artists such as Joseph Cornell created collages consisting of fictional and strange, dream-like Scenes. Cub mania is a collage made by cutting an image into squares which are then reassembled automatically or at random. Collages produced using a similar, or perhaps identical, method is called etrécissements by Marcel Mariën from a method first explored by Mariën. Surrealist games such as parallel collage use collective techniques of collage making. In 1912 for his Still Life with Chair Caning (Nature-morte à la chaise cannée), Picasso pasted a patch of oilcloth with a chair-cane design onto the canvas of the piece.

Surrealist artists have made extensive use of collage and have stayed away from the still-life focus of Cubists. Rather, in keeping with surrealism, surrealist artists such as Joseph Cornell created collages consisting of fictional and strange, dream-like scenes. Cub mania is a collage made by cutting an image into squares which are then reassembled automatically or at random. Collages produced using a similar, or perhaps identical, method is called etrécissements by Marcel Mariën from a method first explored by Mariën. Surrealist

games such as parallel collage use collective techniques of collage making. The Sidney Janis Gallery held an early Pop Art exhibit called the New Realist Exhibition in November 1962, which included works by the American artists Tom Wassermann, Jim Dine, Robert Indiana, Roy Lichtenstein, Claes Oldenburg, James Rosenquist, George Segal, and Andy Warhol; and Europeans such as Arman, Baj, Christo, Yves Klein, Festa, Mimmo Rotella, Jean Tinguely, and Schifano. It followed the Nouveau Realism exhibition at the Galerie Rive Droite in Paris, and marked the international debut of the artists who soon gave rise to what came to be called Pop Art in Britain and The United States and Nouveau Realism on the European continent. Many of these artists used collage techniques in their work.

Wesselmann took part in the New Realist show with some reservations exhibiting two 1962 works: Another technique is that of canvas collage, which is the application, typically with glue, of separately painted canvas patches to the surface of a painting's main canvas. Well known for use of this technique is British artist John Walker in his paintings of the late 1970s, but canvas collage was already an integral part of the mixed media works of such American artists as Conrad Marca-Relli and Jane Frank by the early 1960s. The intensely self-critical Lee Krasner also frequently destroyed her own paintings by cutting them into pieces, only to create new works of art by reassembling the pieces into collages.

Collage with wood

The wood collage is a type that emerged somewhat later than paper collage. Kurt Schwitters began experimenting with wood collages in the 1920s after already having given up painting for paper collages. The principle of wood collage is clearly established at least as early as his 'Merz Picture with Candle', dating from the mid to late 1920s.In a sense, wood collage made its debut indirectly at the same time as paper collage, since according to the Guggenheim online, Georges Braque initiated use of paper collage by cutting out pieces of simulated oak-grain wallpaper and attaching them to his own charcoal drawings. Thus, the idea of gluing wood to a picture was implicit from the start, since the paper used was a commercial product manufactured to look like wood. It was during a fifteen-year period of intense experimentation beginning in the mid-1940s that Louise.

Nevelson evolved her sculptural wood collages, assembled from found scraps, including parts of furniture, pieces of wooden crates or barrels, and architectural remnants like stair railings or moldings. Generally rectangular, very large, and painted black, they resemble gigantic paintings. Concerning Nevelson's Sky Cathedral (1958), the Museum of Modern Art catalogue states, "As a rectangular plane to be viewed from the front, Sky Cathedral has the pictorial quality of a painting..." Yet such pieces also present themselves as massive walls or monoliths, which can sometimes be viewed from either, side, or even looked through. Much wood collage art is considerably smaller in scale, framed and hung as a painting would be. It usually features pieces of wood, wood shavings, or scraps, assembled on a canvas (if there is painting involved), or on a wooden board. Such framed, picture-like, wood-relief collages offer the artist an opportunity to explore the qualities of depth, natural color, and textural variety inherent in the material, while drawing on and taking advantage of the language, conventions, and historical resonances that arise from the tradition of creating pictures to hang on walls. The technique of wood collage is also sometimes combined with painting and other media in a single work of art.

Frequently, what is called "wood collage art" uses only natural wood - such as driftwood, or parts of found and unaltered logs, branches, sticks, or bark. This raises the question of whether such artwork is collage (in the original sense) at all (see Collage and modernism). This is because the early, paper collages were generally made from bits of text or pictures - things originally made by people, and functioning or signifying in some cultural context. The collage brings these still-recognizable "signifiers" (or fragments of signifiers) together, in a kind of semiotic collision.

A truncated wooden chair or staircase newel used in a Nevelson work can also be considered a potential element of collage in the same sense: it had some original, culturally determined context. Unaltered, natural wood, such as one might find on a forest floor, arguably has no such context; therefore, the characteristic contextual disruptions associated with the collage idea, as it originated with Braque and Picasso, cannot really take place. (Driftwood is of course sometimes ambiguous: while a piece of driftwood may once have been a piece of worked wood - for example, part of a ship - it may be so weathered by salt and sea that it’s past functional identity is nearly or completely obscured.

Decoupage

Decoupage is a type of collage usually defined as a craft. It is the process of placing a picture into an object for decoration. Decoupage can involve adding multiple copies of the same image, cut and layered to add apparent depth. The picture is often coated with varnish or some other sealant for protection. In the early part of the 20th century, decoupage, like many other art methods, began experimenting with a less realistic and more abstract style. 20th-century artists who produced decoupage works include Pablo Picasso and Henri Matisse. The most famous decoupage work is Matisse's Blue Nude II.There are many varieties on the traditional technique involving purpose made 'glue' requiring fewer layers (often 5 or 20, depending on the amount of paper involved).

Cutouts are also applied under glass or raised to give a three-dimensional appearance according to the desire of decoupage, currently popular handicraft. The craft became known as decoupage in France (from the verb decouple, 'to cut out') as it attained great popularity during the 17th and 18th centuries. Many advanced techniques were developed during this time, and items could take up to a year to complete due to the many coats and standings applied. Some famous or aristocratic practitioners included Marie Antoinette, Madame de Pompadour, and Beau Brummell. In fact the majority of decoupage enthusiasts attribute the beginning of decoupage to 17th century Venice. However it was known before this time in Asia. The most likely origin of decoupage is thought to be East Siberian funerary art. Nomadic tribes would use cut out felts to decorate the tombs of their deceased. From Siberia, the practice came to China, and by the 12th century, cut out paper was being used to decorate lanterns, windows, boxes and other objects. In the 17th century, Italy, especially in Venice, was at the forefront of trade with the Far East and it is generally thought that it is through these trade links that the cut out paper decorations made their way into Europe.

Photomontage

Collage made from photographs, or parts of photographs, is called photomontage. Photomontage is the process (and result) of making a composite photograph by cutting and joining a number of other photographs. The composite picture was sometimes photographed so that the final image is converted back into a seamless photographic print. The same method is accomplished today using image-editing software. The technique is referred to Just what is it that makes today's

homes so different, so appealing? Was created in 1956 for the catalogue of the This Is Tomorrow exhibition in London, England in which it was reproduced in black and white. In addition, the piece was used in posters for the exhibit.

Richard Hamilton has subsequently created several works in which he reworked the subject and composition of the pop art collage, including a 1992 version featuring a female bodybuilder. Many artists have created derivative works of Hamilton's collage. P. C. Helm made a year 2000 interpretation. Other methods for combining pictures are also called photomontage, such as Victorian "combination printing", the printing from more than one negative on a single piece of printing paper (e.g. O. G. Rejlander, 1857), front-projection and computer montage techniques. Much as a collage is composed of multiple facets, artists also combine montage techniques. Romare Bearden's (1912–1988) series of black and white "photomontage projections" is an example. His method began with compositions of paper, paint, and photographs put on boards 8½ × 11 inches.

Bearden fixed the imagery with an emulsion that he then applied with hand roller. Subsequently, he enlarged the collages photographically. The 19th century tradition of physically joining multiple images into a composite and photographing the results prevailed in press photography and offset lithography until the widespread use of digital image editing. Contemporary photo editors in magazines now create "paste-ups" digitally. Creating a photomontage has, for the most part, become easier with the advent of computer software such as Adobe Photoshop, Pixel image editor, and GIMP. These programs make the changes digitally, allowing for faster workflow and more precise results. They also mitigate mistakes by allowing the artist to "undo" errors. Yet some artists are pushing the boundaries of digital image editing to create extremely time-intensive compositions that rival the demands of the traditional arts. The current trend is to create pictures that combine painting, theatre, illustration and graphics in a seamless photographic whole.

Digital collage

Digital collage is the technique of using computer tools in collage creation to encourage chance associations of disparate visual elements and the subsequent transformation of the visual results through the use of electronic media. It is commonly used in the creation of digital art using programs such as Photoshop.

Three-Dimensional collage

To form a 3D collage is an art of putting altogether three-dimensional objects such as rocks, beads, buttons, coins, or even soil new whole or a new object. Examples can include houses, bead circles, etc.

Associated Movements

Within the development and history of Collage Art, many other artistic movements had significant influence. The techniques of collage, which took inspiration from the Cubism movement, became a principal element within both the Dada and Surrealist periods of art. In addition to these areas of art, collage was later represented in the Neo-Dada and Pop Art movement, as different collage techniques were used to explore various subject matters.

Cubism

Within the contemporary sense, collage artwork was said to begin with Cubist painters Georges Braque and Pablo Picasso. Cubist collages began experimenting with fragments of different and completely unrelated subject matter to achieve a deconstructed appearance and form. Despite Cubism being mainly associated with paintings, the techniques that Braque and Picasso experimented with within their works allowed them to create collages that were essentially Cubist in nature.

Cubism was able to pair perfectly with the Collage Art movement, as it allowed artists to selectively piece together a picture of their choice from a range of different elements. Due to this style, collage artwork had the ability to refrain from appearing flat, unlike traditional two-dimensional painting. Thus, Cubist collages differ significantly from previous Cubist works, as the added element of collage was able to draw out areas of dimensionality and perspective.

Materials that were frequently utilized in collages by Cubist artists were painted cut-outs, patterned paper, and newsprint. Picasso demonstrated the use of these elements within his 1913 artwork titled Bottle of Vieux Marc, Glass, Guitar and Newspaper, in which he played around with these materials on his artwork. In addition to this work, Braque represented the typical materials used in his Violin and Pipe artwork that he created in 1913.

Dadaism

The Dada movement was inspired by the cutting-edge work that was produced by Picasso and Braque, with artists practicing within this group beginning to play around with collage in the 1920s. Dadaists strayed away from the favored still-life subject matter of Cubism and instead opted to create collages that integrated a wide range of imagery. In doing so, the subject matter in Dada collages typically tended to represent remained portraits and figures that were ingrained in fantasy. The Dada movement arose due to the political turmoil that had engulfed Europe after the First World War, with these anxieties manifesting themselves in the Dadaist collages that were created. Notable artists like Hans Arp, who arrived in Paris in 1914 to avoid being drafted into the German military, saw Picasso and Braque's collages which ultimately inspired him to create his own.

By 1915, Arp was exhibiting his Dadaist collage works in a gallery in Zurich. Dadaists integrated more materials in their collages than their Cubist colleagues. Through combining a variety of elements, artists who created collages within the Dada movement were celebrated for their creative use of presumably worthless and frequently disregarded objects. These items often included magazine cut-outs, candy wrappers, tickets, and various three-dimensional ornaments. Through transforming transient ideas and materials into more refined pieces, Dadaists were able to call into question traditional perceptions of art.

Surrealism

In the wake of the Dada movement, Surrealism also stepped away from the still-life focus of Cubism in favor of experimenting with the elements of collage. Artists began to make extensive use of collage within their works to create fictitious, unusual, and dream-like scenes. Surrealists adapted the cut-and-paste technique of collage to produce works that seemed to be a product of one's subconscious, which allowed truly unique pieces to be created.

These Surrealist collages made use of materials such as illustrations, photographs, colored paper, and paint to expand on the strange subject matter that was adopted within Dadaist collages. Thus, pieces that were reminiscent of strange dream sequences were created. This was seen in the works of Surrealist artists André Breton and Joseph Cornell, who made use of chaotic collage techniques to create coherent yet completely imaginary scenes.

Collage techniques that formed in the Dada era, such as photo-collage, relief assemblage, and over painting, heavily influenced the development of Surrealist collages. Due to this influence, "collage" no longer solely implied works created with paper and glue. Surrealist artists began expressing an enchantment with text, which they began to incorporate within their collages. The first notable collages examples of this visual and verbal blend are demonstrated in the works of Max Ernst**,** who used collage in the late 1920s.

Collage as Commentary

The reason that the style of collage differs so significantly from other artistic styles is that it allowed artists the opportunity to add commentary to their work through the inclusion of common images and objects. In doing so, dimension was added to collages, which had the ability to further demonstrate the idea that was being carried forth. Within contemporary art, many artists displayed a sudden interest in materials such as magazine and newspaper cut-outs, printed words, photographs, dirty cloths, and even metal pieces. This was due to the fact that the inclusion of these elements was able to successfully convey the criticisms and comments that the works implied, which was not previously possible in merely painted works. The method of collage made the historical and political contexts of the work inseparable from one another, due to the fact that collages typically incorporated mass-produced images within their works. Thus, collage artwork existed as an influential means of social commentary, as its ability to question society's assumptions and biases made it a worthwhile art form that was explored within a variety of other movements.

Notable Collage Artists and Their Collage Examples

Throughout Collage history, many significant collages painting pieces and works were made, which went on to greatly impact the direction of this cut-and-paste method of art creation. Some of the movement's more well-known artists have been listed below; along with their iconic collage works that helped shape the techniques within the movement.

Henri Matisse

Known for his various cut-out collages, Henri Matisse exhibited techniques of collage long after the initial success of the movement. During the late 1940s, Matisse made a significant

change in his approach to his artistry and began working with paper during the last decade of both his career and life. Labeling his new creations as “cut-outs”, his seemingly simplistic works managed to evoke great complexity as he used gouache paint to stick down different pieces of colored paper in sequences that would often resemble elements of the natural world.

Within his cut-out types of collages, Matisse was most inspired by flowers, plants, animals, figures, and even abstract images. When creating his works, he arranged his cut-outs into energetic and colorful compositions that gradually grew in scale the more he continued to work. This style of artistic creation allowed Matisse to transcend the boundaries associated with traditional easel painting, as it gave him complete freedom to create art in whatever way he wanted to.

One of his notable cut-outs works that displayed his compositional style is his 1953 artwork titled The Sheaf. Matisse cut out a variety of colorful fronds that were thought to mimic a vivid fireworks display, which he then pasted onto a white background. This work, along with his other cut-out works, demonstrated some of Matisse’s most expressive creations from his career, as he was able to directly translate his intense emotions into pieces of paper simply by rearranging and pasting them in different compositions. Within his later artworks, Matisse was able to explore spatial ambiguity through his simple interpretation of forms and shapes. Additionally, Matisse explored the illusion of depth within art through the colorful and lively artworks he created, as the intense hues of the paper he used managed to somewhat avoid coming across as simply two-dimensional.

Pablo Picasso

Said to be one of the two original pioneers of the Art Collage styles, Pablo Picasso began to experiment with this technique around 1912. Inspired by the works created by Georges Braque, Picasso commenced an intense phase of collage-making, where he was said to have created almost a hundred collages in a short period. His early collage compositions made use of artificial wood-grain paper, text, and pieces of cloth, instruments, and other objects.

Picasso created his collages with extreme precision to the point where he was likened to a doctor dissecting a cadaver. An example of one of the first Cubist collages made, as well as one of Picasso’s most notable collages, is Still Life with Chair Caning, created in 1912. Within this

work, Picasso depicted various views of a café table holding different items, such as a napkin, a knife, a piece of fruit, and a wine glass.

What makes this work so interesting is that instead of painting a chair, Picasso struck down a piece of oilcloth that was printed with the pattern of the chair caning. Additionally, he used a length of rope to frame the canvas. Both elements were utilized for their suggestive nature, as the cloth implied a physical chair, while the rope was a humorous take on the usually carved edge of a table. By including the letters "Jou" at the top of his work, Picasso managed to seamlessly incorporate both wordplay and visual elements into his work. In doing so, his collages forced viewers to examine their own perceptions of what constituted an artwork, as well as the relationship that existed between formal art and common objects. Within his later works, Picasso mastered the style of collage as his pieces famously mixed high and low culture, which had a notable impact on the subsequent development of art within the 20th century.

Georges Braque

Creating Collage artwork at the same time as Picasso, Georges Braque is considered to be the other original pioneer of Collage Art. Within his seminal works, he combined pieces of fake wood wallpaper into his Cubist depictions of objects. After buying a roll of wood-grain wallpaper that he found in a shop window, Braque began to cut and paste this paper into his various drawings. It was this technique that he shared with Picasso, which prompted him to begin experimenting with collage alongside Braque. Braque's most influential example of collage art is his 1912 artwork titled Fruit Dish and Glass. Within this work, he stuck down pieces of the faux-wood wallpaper he found. In doing so, Braque created intersecting areas of collage elements and drawing within his work, which successfully called into question the formal ideas of perspective and space within art. Despite combining two seemingly juxtaposing elements, Braque's work still suggested pieces of a tabletop and door.

Within Braque's collage work, he explored the perception of space, which is what his Cubist works and the movement as a whole emphasized. While his addition of glued-on bits of wallpaper emphasized a shallower space to investigate the idea of space, this collage element allowed a greater exploration of the feeling of shapes and how they related to one another. Thus, the artistic methods Braque's demonstrated in his collages became fundamental within the growth and expansion of the collage technique as a whole.

Hans Arp

Another influential artist within the Collage Art movement was Hans Arp. His collages were essentially Dadaist in nature, as he was profoundly affected by the insanity and trauma of war. In the aftermath of the First World War, Dada artists felt that traditional social systems and the focus they placed on reason were responsible for the war, and because of this, they sought to create art that was free from all rational reason and deliberate tactics. Thus, the collages that Arp created embodied this way of thinking. One of Arp's most notable collage works, created in Zurich between 1916 and 1917, was Untitled (Collage with Squares Arranged according to the Law of Chance). This abstract collage was made up of a drawing that Arp had previously been working on but later disregarded. He then tore the pieces of blue and white paper into squares of various sizes, which he let fall to the floor. Once the paper had landed in arbitrary places, Arp pasted each scrap where it was to create a work that rested upon the random chance of gravity.

Through leaving the creation of this collage completely up to chance, Arp adhered to the new anti-art style that was established which avoided the traditional ideas of artistic talent. Arp's untitled collage was resolutely devoid of any further essence, as it simply consisted of torn scraps of paper that did not express any story or picture. However, it can be argued that Arp did not fully abandon control within this work, as the grid-like arrangement of his collage points to a form of structure that was subtly incorporated into the work.

Kurt Schwitters

A significant contribution to the development of Collage Art was made by Kurt Schwitters, who began working on his influential collages in 1918. These works were made from paper and were constructed from rubbish that Schwitters had found on the street. His aim within his collage art was to create works that were able to embrace all different types and styles of art.

Existing as another Dada artist, Schwitters produced collages and assemblages under the title of "Merz", which was a concept he formulated. This concept included works that combined all possible materials for purely artistic reasons, as he argued that common and found objects such as wood and plasterboard were equivalent to paint and other formal artistic elements. Thus, one of Schwitters' most well-known works, created in 1921, included a variety of elements and was titled Merz Picture 32A, The Cherry Pie.

Within this multilayered artwork, Schwitters created this collage from different pieces of debris and objects that he had collected on the streets of his hometown in Germany. Schwitters' method of collection differed vastly from the actual creation of this work, as he purposely chose a spot and meticulously glued and nailed down each item to a painted board. Areas of light and dark were created through the cut-outs, fabrics, and candy wrappers that were used, as the combination of these materials helped create a sense of pictorial depth.

When considering Merz Picture 32A, the chaotic nature of the different elements used by Schwitters helped evoke the idea of a bulletin board full of notes and cards. The inclusion of the child's flashcard with the cherry helped blur the boundary that existed between ordinary objects and painting, in addition to adding to the transparent title of the work. Thus, Schwitters managed to create a collage that was completely disorganized and confusing, which subscribed to the Dada notions of the time.

Hannah Höch

An influential female artist who experimented within the Collage Art movement was Hannah Höch, who created some of the most iconic works from the collage period. Höch started to create collages as a young girl and brought her child-like techniques of sticking the wrong head on the wrong body into her works as an adult. Within her works, Höch investigated gender roles and politics, as she created a commentary that challenged the way society was structured and viewed itself.

Her most well-known work was created in 1919 and was titled Cut with the Dada Kitchen Knife through the Last Weimar Beer-Belly Cultural Epoch in Germany. Hooch's work was very politically charged, as she repositioned images and text from the mass media to criticize the shortcomings of the Weimar German Government in the aftermath of the First World War.

Within her artwork, a seamless fusion is demonstrated between Hoch's ideas and techniques, as she made use of newspaper cut-outs to call into question the sexist and racist rules that supported Weimar Germany at the time. Hoch's work shows an image of Weimar society with its chief establishment and anti-establishment figures in and amongst industrialized disorder. This work was later exhibited at Berlin's First International Dada Fair in 1920 and was a great success due to its transparency.

Hoch created these photomontages for the remainder of her career, as she believed that there was no true limit on the types of materials that could be used to make up a collage. Through pioneering a form of art that made use of fashion magazine cut-outs, illustrated journals, and photography, Höch demonstrated that art could be made up from the ordinary chaos of modern life. Her work challenged racism and the place of women in 20th century society, which later influenced contemporary artists such as Cindy Sherman.

Collage Art in Other Forms

The development of Collage Art allowed the techniques that were created and refined to cross the boundaries of visual arts into other artistic spheres. Some of the most well-known areas, amongst many others, where elements of collage have been incorporated include architecture, music, and film.

The Legacy of Collage Art

Due to the many techniques and styles that made up the Collage Art movement, it is still easy to wonder: what is a collage in its entirety? Thus, it was said that collages painting and artworks were predominantly used to address a variety of issues, due to the technique's ability for vast social commentary. Often within collage, artists would leave hints within their artworks that alluded to social and political concerns, as collage gave artists the chance to comment on issues through the use of familiar objects and images.

The legacy of Art Collage can be seen through the many young artists that have continued to work in this medium and have produced artworks. Collage Art had the ability to tell the story of each different artistic generation through the commentary it creates, which allows for truly fascinating works to be created. Within the contemporary area, collage has been viewed as the base of the digital experience due to its vast experimentation with layering and interjecting of different mediums to make up one work.

Tips for Making Your Own Collage

Have you ever wondered what is a collage and if anyone can make one? While this type of art creation may seem daunting at first due to its chaotic and disorganized nature, the art of collage

is entirely possible for anyone to experiment with. However, before constructing your own collage, here are two tips to consider when starting out with this cut-and-paste style.

Collect and Create Your Own Source Material

When making your own collage, it will be beneficial to start developing a library of different collage materials for you to choose from. In doing so, you will be able to peruse through what you already have when starting a new collage before having to go out to buy new items. Some old items that can be kept to utilize within collages at a later stage include old books, photographs, clothing, and recycled paper. Additionally, you can also choose to create your own unique source materials when working on your collage. This can be done by painting pieces of paper and then cutting them up into any shape you want.

Organize Your Composition Prior to Gluing It Down

Before you permanently attach your materials to your backing, it would be wise to take some time out to plan your composition. Collage differs from two-dimensional mediums as allows you to arrange your elements in any way that you want to within your artwork. Take advantage of this medium's flexibility by experimenting with different compositions before committing to the final look.

If you are a beginner to this medium, it is suggested to focus on one or two of the basic elements at first so as not to be overwhelmed. These elements include line, color, form, shape, or texture. If you find that your composition has too many elements, try restricting the number of materials you are working with until you are satisfied with the outcome.

End Note

- Rothamel Susan Pickering, The Art of Paper Collage, Publisher: sterling publication: 30 June 2000.
- Mandy Pattullo Textile Collage: using collage techniques in textile art**,** Published: October2016, Publisher: Pavilion, Language: English, Author: Mandy
- Mowinski Melanie, Collage Your Life: Techniques, Prompts, and Inspiration for Creative Self-Expression and Visual Storytelling, Publisher: Storey Publishing, LLC, Published:21 June 2022 Author: Melanie Mowinski
- Brommer G, Collage Techniques: A Guide for Artists and Illustrators Paperback, Publisher: Watson-Guptill, Publications Inc., U.S., Publication date: 1 August 1994.
- Evans Stout Roxanne, Storytelling with Collage: Techniques for Layering, Color and Texture Paperback, Publisher: North Light Books, Publication date: 10 March 2016.
- Leland Nita, New Creative Collage Techniques: How to Make Original Art Using Paper, Color and Texture Hardcover-spiral, Publisher: North Light Books, Publication date: 21 October 2011.

CHAPTER-3

A brief description of Collage Making Technique

A collage is a form of visual arts in which visual elements are combined to create a new image that conveys a message or idea. Collage comes from the French word "collér*,"* which means "to glue," often the primary means of combining images in collage art. Collagers can draw these images from newspaper clippings or print advertisements, or cull them from different materials, like photographs, fabric, wood, and even ephemera. Collages can apply the images to the surface of another work of art, such as a canvas, to create a new single image. There are several different subgenres of collage, including photomontage, fabric collage, and decoupage, each of which offers a variation of its basic form. Modern technology has also led to the rise of digital collage art or Decollage created by computer and photo-editing software programs.

Collage is an art form that involves combining various materials, such as paper, photography, fabric and other objects, to create a new combination. There are many techniques to create collage and the following are some of the most common:

Cut and paste: This is the most basic collage technique, where the artist cut out images or shapes from different material and then pastes them onto a surface, such as a piece of paper or Canvas.

Layering: layering involves stacking different material on top of each other to create material on top of each other to create depth and dimension in the artwork. This can be achieved by using different types of Paper, fabrics, or other materials.

Decoupage: Decoupage is a technique that involves cutting out images for shapes from paper or fabric and then adheres them on to a surface with glue or other adhesive. This technique is often used to create decorative objects or furniture.

Photomontage: Photomontage involves cutting and pasting used to create surreal or abstract images.

Digital collage: with the achievements of Technology, digital collage has become increasingly popular. This technique involves digital software's to combine different images and create a new composition.

Found object collage: Found object collage involved using everyday object such as buttons, feathers, or old jewelers, and incorporating them into the artwork. This technique is often used to create mixed-media pieces.

Paper mosaic: Paper mosaic involves cutting out small pieces of paper and then assembling them into a larger image or design. This technique can be used to create intricate and colorful designs.

Paper for Collage Making

While collaging, select the paper that will give the greatest diversity does the greatest creativity benefit. Whenever possible, choose acid free or pH neutral papers. Most magazine photographs and tissue papers are not suitable because they are not considered lightfast and will fade quickly.

Consider increasing all paper in acrylic medium with UV protections. This will help in keeping the colors' less than perfect paper from those of archival quality. Consider each piece of paper for each piece of art. Every piece of paper is so different that it almost speaks to you on how it will be used in a particular collage. The voice may be a Whisper or a shout. Therefore, it is not at all unusual to have a piece of paper for several years before it finds its way into the right piece of artwork.

Japanese decorated papers: Mostly Skill Screened, these are beautiful to look at, but can be limited by their very natural and design.

Oriental paper: This luscious Paper has seen come for a variety of eastern countries, but are categorized Oriental and are at same time referred to as rise or Mulberry paper. Rise or Mulberries are seldom, if even, the components of the paper available today. Oriental paper comes in dozens of textures and colors'. The same Oriental paper has a sizing consequently they may absorb paint and Adhesives quickly.

Hand decorated paper: Any type of paper can be decorated, and then used in collage. Many methods of decorating such as paste paper making, Stamping and more, will be covered in this book. Use acid fee plane paper for decorating.

Handmade paper: gorgeous handmade papers can be easily made an art or purchased from other paper Makers. Paper making is considered Professional in their own rights. Handmade papers come in thousands of patterns, weights, and textures. Sizing may make a difference and adhesive and absorption.

Exotic paper like surfaces: This huge category Mein includes surfaces such as papyrus, bark, metal foil. The surface does not take adhesives as well as paper, but can be used successfully with a bit of perseverance. Generally, this means several coating, or strong bond adhesives applied to both surface and ground.

Marble papers: These resplendent papers add a unique and fresh look to a contemporary project. Whether handmade, machine made, or printed, they add textures and colorful movement to any collage. The process of marbling paper is an art form unto itself and can be quite easily learned through book or classes. As a collagist, it is a technique worth typing at least once.

Lace papers: Please delicate papers come in a variety of patterns and are useful in softening harsh colors in lines. They help to integrate in entries collage and are a beautiful ascent. Since these papers are very thin and they are likely to disappear if too much adhesive medium is used.

Magazine photographs: Often seen as a specific object or subject, Magazines photographs can also be viewed or colors paper or textures. It is best to use them in isolation from other paper and apply UV resistance /protection to the surface to achieve light fastness.

Newspapers: These are wonderful to use a black and white texture, or for the words. Though newspapers are made of poor quality paper, it may be just what you want. But remember to use plenty of medium.

Ground and supports for collage

For lightweight artwork that will be framed and under glasses, used rag watercolors boards and papers, Aur mat broad. For heavier work that will be framed, use cardboard, plywood or stretched Canvas. It is important to avoid chipboard for any artwork. It is considered Acid which will discolor and deteriorate fine artwork.

Corrugated cardboard is a fabulous texture surface, and it may become essential for use. Certain mediums will help to isolate acid from leaching into archival papers. The working mat is the picture framing mat used to work out the composition of a collage, a much needed tool that tends to get overlooked. However, it is as important as any paintbrush, paint, or paper. Acquire

these through are local frame shops no matter the size, even if they are Damaged. Four strips of mat or foam core broad cut about 3 inches wide can be substituted for a working mat.
Mats are used to block confusing or extraneous edges and to help find the balance of shapes, Color, and form of a composition. Use them frequently while working at a collage.

Collage making with reference to Paper

Starting point

The starting point of making a collage is a Determine what is collage is used for. What will be displayed in the collage: the user Lifestyle, the context of interaction or similar products Second, it is important to determine how the collage will be used: if the collage instrumental in the design project has a main to generate for example criteria, or will the collage be used to communicate or design vision.

Expected outcome

The outcome of making a collage is a visualization of an aspect of the problem context, example the life style of user's context of interaction or the product category. The collage could also be the visualization of the design vision. Also criteria can be derived from the collage that serves the design process.

Possible procedure

Dimension which magazine and all imaginary will produce the most suitable material. Certain magazine or a focused can be certain target group/ lifestyle makes advantage of them. Intuitively gather as much raw imagery as possible group together the imaginary the concerns the target group, environment, handling, action, products, color, material and so on. At the same time, make a selection according To usable and less usable images, but do not throw anything away. For each collage decide the Orientation of the background.

Try by means of small sketches to set down the structures of the Composition, paying attention to the creation of line and axis. Describe the consequences and state whether they are desirable in relation to our vision/pictures. Think which consequences the treatment of the imagery (clipping, cutting, and tearing) will have for the overall picture. A decision to framework/ background will be of significance to the overall picture. Examine which imagery

will be placed in the foreground or in the background. Consider the size of the imagery and the relationship with the underground.

Identify which consequences play a role in merging (integrating) on separating the available pictures. Make a provisional composition of the collage with the meaning at your disposal Taste the collage once the picture meets your expectations and contain most of the characters and they are identifiable. If this is not the case, try to identify which part or part evoke the conflicting picture: Imaginary (target group, products, etc.), quantity of Material, orientation, Relationship, structure of the composition, for ground/ background, treatment of material separation/ integration Of Material or type of color/ shapes.

White on white paper collage

White on white paper collage is a technique that involves creating a 3D paper collage using white paper. There are some resources and techniques which is used for creating white on white paper collage. A little bit thicker paper is required in most cases like a cardstock or heavier to create a 3D paper collage using white paper. While separating the subject from the background, shading can be done in white areas from text and type without ever painting any white paper at all. This technique can be used to separate the subject from the background in collage painting.

White pencil uses a white pencil to color in true white areas to make them stand out. If blank areas is left as it is and just let the paper show through, they won't pop out of the page as much. Black and white tissue paper can be used to take your collage to the next level. White on white paper collage is a technique that involves creating a 3D paper collage using white paper. Techniques for creating white on white paper collage include using white paper, white tissue paper, separating the subject from the background, using a white pencil, and using black and white tissue paper. Resources for learning more about white on white paper collage include and information on collage painting and textile collage.

Collage making with reference to Textile

Textile collage is a technique of creating art by combining different pieces of fabric, often using scraps and oddments, to create a unique and personal piece. The possibilities of

textile collage are endless, and artists can experiment with different materials, patterns, and textures to create captivating pieces. The pieces of fabric can be manipulated and cut to different sizes, and then mixed up in a basket to create a composition. The fabric pieces can be held in place using sewing, gluing, machine stitching, or hand stitching. Textile collage is a versatile technique that allows artists to explore textile art and develop their artistic voice. There are different types of textile collage techniques, such as embroidery, layering, overlays, and appliqué. Some artists describe textile collage as "painting with fabric". Felt is a popular material for textile collage because it is easy to manipulate and cut, and it comes in many colors. Charity shops are also a good source of interesting materials that can inspire artists to create successful textile collages.

Materials

Textile collage is a versatile technique that allows artists to use a variety of materials to create unique and personal pieces. Some of the commonly used materials in textile collage include: Scraps and oddments of fabrics, Felt, Yarn, Thread, Wire fabric, Paper, Glue, Sewing machine, Sewing needle, Scissors, etc.

Artists can experiment with different materials, patterns, and textures to create captivating pieces. Interesting materials that inspire are the key to creating a successful textile collage. Charity shops are a good source of materials for textile collage. Once the materials are sourced, they can be unpicked, overdue, cut, or torn into different sizes and mixed up in a basket to create a composition. The pieces of fabric can be held in place using sewing, gluing, machine stitching, or hand stitching.

How do different types of fabrics affect the outcome of a textile collage?

Different types of fabrics can affect the outcome of a textile collage in various ways, including the texture, color, and pattern of the fabric. The type of fabric used can also affect the physical properties of the textile, such as bursting strength and durability. In textile collage, artists can use a variety of fabrics, including scraps and oddments of fabrics, felt, and remnants of NUNO fabrics. Mandy Pattullo, a fabric collage artist, recommends using interesting materials that inspire to create a successful textile collage. Marcia recommends working with felt because it is easy to manipulate and cut, and it comes in many colors.

The choice of fabric can also affect the overall aesthetic quality of the textile collage. Bold and colorful prints can be easier to work with in fabric collage than flat colors like calicos and solids.

The use of different fabrics can create a unique and personal piece that tells a story. The type of fabric used in textile collage can affect the texture, color, pattern, physical properties, and overall aesthetic quality of the piece. Artists can experiment with different fabrics to create unique and captivating pieces.

How can the use of different patterns in fabric collage affect the overall composition?

The use of different patterns in fabric collage can affect the overall composition in various ways Here are some ways that different patterns can affect the composition:

Repetition: Patterns that have regular repetition can create a strong pattern in the composition

Contrast: Using patterns with contrasting colors or designs can create visual interest and make certain elements stand out.

Harmony: Patterns that have a similar color palette or design can create a harmonious composition.

Movement: Patterns that have diagonal or curved lines can create a sense of movement in the composition.

Texture: Patterns that have different textures can add depth and dimension to the composition

In textile collage, artists can experiment with different patterns to create unique and captivating pieces. Marcia recommends getting comfortable with playing with composition, pattern, and color. Deborah Boschert enjoys the opportunity to explore how patterns and textures dance together in the collage process. In summary, the use of different patterns in fabric collage can affect the overall composition in various ways, including repetition, contrast, harmony, movement, and texture. Artists can experiment with different patterns to create unique and captivating pieces.

What are some common patterns used in fabric collage?

There are many common patterns used in fabric collage, including: Floral patterns, Geometric patterns, Stripes, Polka dots, Animal prints, Plaid, Paisley, Abstract designs,

These patterns can be used in various ways to create unique and captivating fabric collages. For example, floral patterns can be used to create a nature-inspired collage, while geometric patterns can be used to create a modern and abstract collage. Laura Heine is a popular designer of fabric collage patterns, including patterns for Cora the common Owl Collage and Eat Cake Collage Quilt.

Mandy Pattullo, a fabric collage artist, recommends using interesting materials that inspire to create a successful textile collage. In summary, there are many common patterns used in fabric collage, including floral, geometric, stripes, polka dots, animal prints, plaid, paisley, and abstract designs. These patterns can be used in various ways to create unique and captivating fabric collages.

Hunting and gathering

Hunting and gathering materials is an essential part of fabric collage. Here are some tips and ideas for finding materials: Use scraps and oddments of fabrics: Fabric collage is a great way to use up scraps of fabric that would otherwise go to waste.

Look for interesting materials: Mandy Pattullo, a fabric collage artist, believes that having interesting materials that inspire is the key to creating a successful textile collage. She suggests looking to charity shops for old things that can be repurposed.

Collect themed fabrics: If you are creating a collage with a specific theme, such as birds or flowers, you can collect fabrics with those motifs.

Experiment with different textures: Fabric collage is a great way to experiment with different textures of fabric, such as silk, wool, and cotton.

Use a variety of colors and patterns: Using a variety of colors and patterns can create a unique and interesting composition. In terms of tools and materials, the basics for fabric collage are simple: some fabric, some glue, and a pair of scissors. However, having the right tools and materials can make the process simpler and more enjoyable. Susan Carlson, a fabric collage artist, has created a Fabric Collage Toolkit that includes items such as fusible web, a rotary cutter, and a self-healing cutting mat.

Quilts

Quilts can be made using textile collage techniques, which involve layering small pieces of fabric to create a design in an artistic fashion. Here are some tips and ideas for creating a textile collage quilt:

Choose a design: Decide on a design for your quilt, such as a nature-inspired scene or an abstract pattern.

Gather materials: Collect a variety of fabrics in different colors, patterns, and textures to use in your quilt.

Create a foundation: Choose a foundation fabric to use as the base for your quilt. This can be a solid color or a patterned fabric.

Cut and arrange fabric: Cut small pieces of fabric and arrange them on the foundation fabric to create your design. You can use a variety of techniques, such as fusing or sewing, to attach the fabric pieces to the foundation fabric.

Add details: Once you have the basic design in place, you can add details such as embroidery, beading, or appliqué to enhance the quilt.

Quilt the layers together: Once the design is complete, you can quilt the layers of fabric together to create a finished quilt. Laura Heine is a popular designer of fabric collage patterns, including patterns for quilts such as Mini Pin Cushion. Mandy Pattullo, a fabric collage artist, shows how to use scraps and oddments of fabrics to create something unique and personal in her book "Textile Collage: Using Collage Techniques in Textile Art".

Turkey red

Turkey red is a color that was widely used to dye cotton in the 18th and 19th century. It was made using the root of the Rubbia plant, through a long and laborious process. Turkey red originated in India or Turkey and was brought to Europe in the 1740s. In France, it was known as rouge d'Andrinople. Turkey red cotton was often dyed in the yarn and then woven into red fabric The color is durable, but the process caused the yarns to wear. Quilts in America and Britain were often made with Turkey red printed fabric. Turkey red is a color that was widely used to dye cotton in the 18th and 19th century. It was made using the root of the Rubbia plant, through a long and laborious process. Turkey red cotton was often dyed in the yarn and then woven into red fabric, and quilts in America and Britain were often made with Turkey red printed fabric.

Curtain Fabrics and Linings

Curtain fabrics and linings are important components of window treatments. Here are some resources for finding drapery lining fabric:

Walmart: Walmart offers a selection of drapery lining fabric in their Shop Fabric by Usage section.

Decorative Fabrics Direct: Decorative Fabrics Direct offers a variety of drapery linings, blackout linings, and interlinings for specific drapery and curtain needs

Joann: Joann offers a collection of curtain liners, including insulating liners and blackout liners. Textile collage techniques can be used to create unique and creative window treatments using curtain fabrics and linings. Fabric collage is a method of quilting that gives every sewer the ability to express personal creativity

Laura Heine is a popular designer of fabric collage patterns, including patterns for quilts and wall hangings. Tsugihagi, a textile collage made with remnants of NUNO fabrics, is a unique combination of embroidery and collage techniques that can be used as a window covering or for other interior purposes. Curtain fabrics and linings are important components of window treatments, and resources for finding drapery lining fabric include Walmart, Decorative Fabrics Direct, and Joann. Textile collage techniques can be used to create unique and creative window treatments using curtain fabrics and linings.

Printed fabrics

Printed fabrics can be used in textile collage to create unique and creative designs. Printed textile design is one of the three major disciplines of textile design, which uses various inks and dyes to imprint aesthetic, often repeating patterns, motifs, and styles onto the fabric or cloth. Mandy Pattullo, a fabric collage artist, shows how to use scraps and oddments of fabrics to create something unique and personal in her book "Textile Collage: Using Collage Techniques in Textile Art". Fabric collage is a method of quilting that gives every sewer the ability to express personal creativity. Susan Carlson, another fabric collage artist, describes fabric collage as painting with fabric. Printed fabrics can be used in textile collage to create unique and creative designs. Printed textile design is one of the three major disciplines of textile design. Fabric collage is a method of quilting that gives every sewer the ability to express personal creativity.

Mandy Pattullo and Susan Carlson are both fabric collage artists who have written about their techniques and experiences.

Silks

Silk is a luxurious and versatile fabric that can be used in textile collage to add texture and interest to the design. Here are some resources and techniques for incorporating silk into textile collage.

Fabric collage the La Creative Mama Fabric collage suggests using silk to add texture and interest to the design. In "Textile Collage: Using Collage Techniques in Textile Art," Mandy Pattullo shows how to use scraps and oddments of fabrics, including silk, to create something unique and personal, while also being economical. Embroidery is a technique that involves decorating fabric using a needle and thread. Silk can be used as a base fabric for embroidery, or as a thread for embroidery on other fabrics. Tsugihagi is a delicate combination of embroidery and collage techniques made with remnants of NUNO fabrics, including silk, that are laid out to cover the surface of a base fabric.

Textile designers use various inks and dyes to imprint aesthetic, often repeating patterns, motifs, and styles onto silk and other fabrics. Silk is a luxurious and versatile fabric that can be used in textile collage to add texture and interest to the design. Techniques for incorporating silk into textile collage include using it as a base fabric for embroidery, using it as a thread for embroidery on other fabrics, and using it as a fabric in collage. Resources for learning more about incorporating silk into textile collage include books, and information on textile design.

End Note

- Rothamel Susan Pickering, The Art of Paper Collage, Publisher: sterling publication: 30 June 2000.
- Mandy Pattullo Textile Collage: using collage techniques in textile art**,** Published: October2016, Publisher: Pavilion, Language: English, Author: Mandy
- Mowinski Melanie, Collage Your Life: Techniques, Prompts, and Inspiration for Creative Self-Expression and Visual Storytelling, Publisher: Storey Publishing, LLC, Published:21 June 2022 Author: Melanie Mowinski
- Brommer G, Collage Techniques: A Guide for Artists and Illustrators Paperback, Publisher: Watson-Guptill, Publications Inc., U.S., Publication date: 1 August 1994.
- Evans Stout Roxanne, Storytelling with Collage: Techniques for Layering, Color and Texture Paperback, Publisher: North Light Books, Publication date: 10 March 2016.
- Leland Nita, New Creative Collage Techniques: How to Make Original Art Using Paper, Color and Texture Hardcover-spiral, Publisher: North Light Books, Publication date: 21 October 2011.
- Elizegi Rebeka, Collage by Women: 50 Essential Contemporary Artists Hardcover – Illustrated, Blanca Ortiga (Introduction), Publisher: Promopress, Publication date:May 28, 2019.

CHAPTER-4

Contribution of Collage artist towards collage making

Collage artists have made significant contributions to the art of collage making. Here are some ways in which they have impacted the medium:

Innovation: Collage artists have been at the forefront of experimenting with different materials and techniques to create unique and innovative works of art.

Social commentary: Collage artwork has been used as an influential means of social commentary, as its ability to incorporate mass-produced images within their works made the historical and political contexts of the work inseparable from one another.

Continuation of the medium: Many young artists continue to work with collage, keeping the legacy of the medium alive and producing new artworks.

Redefined the medium: Contemporary collage artists have challenged and dismantled narrow-minded notions about collage, showing how powerful, inspiring, and relevant the art of collage still is today

Expanded the definition of collage: Collage artists have expanded the definition of collage to include other media such as painting and drawing and contain three-dimensional elements.

Collage artists have played a significant role in the history and evolution of collage art, and their contributions have helped shape the medium into what it is today.

Contribution of Mohinder Singh Tuli in Collage making

It is a 'Dreamland' created with different type of torn pape rsheets, torn haphazardly, but aesthetically composed papers to create a new world. Each bit is in its most appropriate place. Every bit has a great contribution in the whole creation of collage work in which the creator attempted to a deeper meaning too.

The keen spectator on its very first sight can travel in to the depth of the creation. The need is to observe it deeply, in silence, in peace and contemplation as we are in deep meditation,

one with God. No outer disturbances, no unwanted influences should be there. Then one can derive the real essence of the manuscript, the inborn meaning of it.

The most amazing fact about the creation is that these are created by managing through the papers, clippings that too of waste but still these don't appear so.

In the present work the artist has brought the material out of waste like cardboards (derived from cartons of T.V., Fridges, Washing machine boxes,) etc are mainly utilized for the background in the entire collage painting beside the other material collected from the waste magazine's news prints, posters, invitation- greeting cards and the computer printout sheets including carbon. A special attraction has been added by him to his work by utilizing the silver/ golden paper from the various packages never the-less to mention here surprisingly, artist has never used a pencil for drawings or sketching and has not added even the paint, colour etc. rather he had torn the paper randomly but carefully and perfectly placed to a meaningful form then he placed it on the surface with his imagination he analysed it to give the final shape to his work.

As a college student way back in 1963, he would select the graphic prints which were discarded by the other classmates who were very choosy about using fresh material. This discarded material was collected and stored with a view to utilize it later on gradually when the store room was over flown with material and stink with turpine oil, his mother advised him to use it as he had planned for it.

Ultimately he had spread it in the rear courtyard with some ideas, as due to financial constraints he could afford a better back material to flash his ideas. Finally an empty tea box from father's shop became the first background to display long cherished desire to splash his inner self with a little experience. His mother was always there to inspire him in his work, though not having any idea about the art.

Gradually, he bought a 'Tarpal' from a 'Katarina' and to start with his desired imagination work on it. Later on a few of his works were displayed secretly in the classroom by him to get the assessment of his work. To his amazement he found that everybody including Professors, Teacher's and Principal Mr. Sushi Sarkar and the Class In charge Shri Subnormal Chaterjee were surprised and were full of praise for the unknown artistic creation. The Class In charge encouraged him to make series of collages. He was overwhelmed with the appreciation. His teachers and students were the medium to who could reflect on the practical work on artist's imagination. It was the different type of papers pieces having attractive multiple hues which

when put up together, the creations achieved success when the artist bagged many awards from various Academies.

The Artist further explored another technique of Art for which initially experiments were done during 1973, work was known as carbon drawings basically emphasis was to be given to (Tantrik Motifs) and to elaborate a small point given to enlarge meaning with different type of monochrome shades and division. The form & composition all together depicted in variable manner and meaning. Both the collage and carbon drawings were acknowledged and admired by the eminent art critics' likes of Dr. B. N. Goswami, Dr. Mulakh Raj Anand and other art lovers. The shapes, forms were used in the carbon drawings with a different temperament and taste.

After retirement, again after passing more than two decades, though the artist mind was lost much earlier, emerged with energetic view to find out all old references and turned up resulting a new world in the art realm and started making collages work with spirited zeal and eventually various actions of creativity started. Nevertheless, to do collage paintings but also open another chapter of the collage, divested to the new technique 3-D (Three Dimensions). In the instant show the artist has come with new design of work as collage pieces of the paper used on the bodies of discarded items such as stool, settee and earthen pots which were lying isolated at home. The creation made over these objects are not only attractive, but full of sense and sensibility to project art in different manner to the modern era so as to relish and appreciate the need of modern decoration field.

Contribution of Artist Ravinder Sharma in collage making

The name of Dr. Ravinder Kumar Sharma is famous among the major current Indian painters of the 20th century. He is considered one of the eminent artists of Chandigarh; he has achieved perfection in his work. Mr. Ravinder Kumar Sharma is an excellent painter and on the basis of his talent and quality, he is very famous in the art world. His fans and other people fondly address him as Sharma. He has been widely respected as an ideal artist of the society. He has spent his life in portraying Lord Shiva and even now he is making continuous efforts in this work. His works and his subjects are the result of deep contemplation especially of Lord Shiva. He is a religious person who believes in spirituality. Undaunted by the noise of modern times, he is a true artist in his thoughts, words and deeds.

TECHNIQUE

The method or method of doing any work is called technique. In the field of art, technique is considered to be the new process used by the artist. By reaching a higher level, technique would mean those systematic experiences, birth, interest, and efficiency. . Thus we can say that the technique is a complex method and it is difficult for a layman to understand unless he sees the painter in action and the quality of an artist is based on the breadth of experience.

Every artist has a different specialty of his own, for many artists it is a gift from God. Many artists are influenced by someone's inspiration as the artist's experience increases. Its base keeps increasing on its own art and technique. They get to learn something from many workshops and exhibitions, they get to see new techniques, and they give the same message to their art lovers and the new artist generation. In the same way an artist also expresses his feelings in art through his art. Not bound by style. Mr. Ravinder Sharma Working Independently likes it He says that "many times the joy creates so many ripples inside a person, and then whatever comes in hand becomes the medium. In his paintings, the shapes along with the basic elements of combination have been presented minutely. It is necessary to study some elements of his art to know his technique.

At first he started making collages by tearing magazines which became his specialty which people appreciated a lot. Not having much money to buy colors because they made pictures by cutting old magazines, which are now engaged in the museum. Because they say that "there is no compulsion, you should use what is in front of you, and it becomes your specialty." Then he used Fevicol, applied it in his paintings. Sharma has done a lot more work than acrylic color in his paintings. He likes to use different types of inventions, instruments, textures in all kinds of paintings. They show their painting through the medium and when the painting is ready, no one can say that it is the magic of the fingers. Sometimes, they make paintings on wooden paper and do the framing. The series of mountains are removed from fevicol and acrylic collar only by using cardboard. He also uses oil color, water color in his paintings. He has also made many sketches and has also done pen work. Blue color is more prominent in their colors. Pictures of mountains, vases lying in the house have been made with charcoal in such a way that no one can say that it is not color but coal.

Colors in the collage paintings of Shri Ravindra Kumar Sharma Color have an important place in human life as well as in painting. Everything in the world has some color or the other. Color is the essence of human life. Just as words are needed for poetry, rhythm for music and rhyme for poetry, in the same way the picture also seems dull without colors. The effect of color is observable in modern painting. Color has a natural relation with life. Human life is visible through colors only. The colors of the earth, sky and sun make the human mind green. Colors are an important element in painting. Two things are clearly necessary in the use of colors. Painters own mental state and technical side towards colors. Mr. Ravinder Kumar Sharma is a modern artist.

Ravinder Sharma is an artist who has mastered the collage technique. His painting titled “Agony of the Girl” was selected for the National Exhibition of Lalit Kala Akademi. Ravinder Sharma is a teacher who has kindled creative fire in the hearts of budding artists and designers. He is a skilled regulatory affairs specialist for medical devices and has made Med-Tech accessible. Although he is skilled in various fields, he has a passion for art. Through his work, he showcases his expertise in the collage technique.

The search results do not provide specific information about the materials that Ravinder Sharma uses in his collage-making technique. However, he is known for his expertise in this technique and has produced many works using it, including his painting “Agony of the Girl" which was selected for the National Exhibition of Lalit Kala Akademi. In addition to collage, he has also used waste x-ray films as a medium for painting nature and portraits of Lord Shiva on them.

What techniques does Ravinder Sharma use to create collages?

There is limited information available Ravinder Sharma's collage-making techniques. However, he is known for his expertise in the collage technique and has produced many works using it, including his painting “Agony of the Girl", which was selected for the National Exhibition of Lalit Kala Akademi. Furthermore, he has used waste x-ray films as a medium for painting nature and portraits of Lord Shiva on them. Based on this information, it can be inferred that Ravinder Sharma uses a variety of materials to create his collages, including but not limited to magazine cutouts, x-ray films, and other found objects. He might also use different techniques to assemble

these materials, including layering, cutting, and gluing, among others. However, there is no specific information available about his techniques.

How long does it typically take Ravinder Sharma to complete a collage?

There is no specific information available about how long it typically takes Ravinder Sharma to complete a collage. The time required to create a collage can vary depending on several factors, such as the size and complexity of the artwork, the materials used, and the artist's experience and style. It can take anywhere from a few hours to several days or even weeks to complete a single collage, depending on these factors. However, there are no specific details available about Ravinder Sharma's collage-making process and how long it takes him to complete a piece of artwork.

What themes or subjects does Ravinder Sharma often explore in his collages?

There is no specific information available about the themes or subjects Ravinder Sharma often explores in his collages. However, he has produced many works using the collage technique, including his painting “Agony of the Girl", which was selected for the National Exhibition of Lalit Kala Akademi. Additionally, he has used waste x-ray films as a medium for painting nature and portraits of Lord Shiva on them. Based on this information, it can be inferred that Ravinder Sharma's collages might explore a variety of themes and subjects, including but not limited to nature, portraits, and perhaps social issues. However, there is no specific information available about the themes and subjects of his collages.

How does Ravinder Sharma choose the subject matter for his collages?

There is no specific information available about how Ravinder Sharma chooses the subject matter for his collages. However, based on the available information, it can be inferred that he might draw inspiration from a variety of sources, such as nature, social issues, found objects, and perhaps his personal experiences and interests.

In an interview, Ravinder Sharma mentioned that his art teacher in the sixth grade inspired him to pursue art, and his teacher's love for art and appreciation of his sketches gave him the strength to foresee a career in art. Additionally, he has used waste x-ray films as a medium for painting nature and portraits of Lord Shiva on the. Furthermore, he has conducted collage-making workshops with students, which suggests that he might be interested in exploring

themes that are relevant to younger audience. Overall, it can be inferred that Ravinder Sharma's subject matter for his collages might be diverse and could draw inspiration from various sources.

Has Ravinder Sharma ever displayed his collages in a solo exhibition?

There is no specific information available about whether Ravinder Sharma has ever displayed his collages in a solo exhibition. However, there are some events and workshops that he has participated in, which suggest that he might have exhibited his works in group shows or workshops. For instance, he conducted a collage-making workshop for the children of Snehalya, which was organized by the Chandigarh Lalit Kala Akademi. Additionally, he has participated in an exhibition of artists with special abilities at Gandhi Bhawan, PU. However, there is no specific information available about whether he has ever had a solo exhibition of his collages.

Where and when did Ravinder Sharma's solo exhibition featuring collages take place?

There is no specific information available about Ravinder Sharma's solo exhibition featuring collages. Although, he has conducted a collage-making workshop for the children of Snehalya in Chandigarh at the Open Hand Art Studios, Le-Corbusier Center in 2018, and has participated in group exhibitions such as the 7-day exhibition by artists with special abilities at Gandhi Bhawan, PU in 2021. However, there is no specific information available about Ravinder Sharma's solo exhibition featuring collages.

Chapter-5

Conclusion

From the provided search results, we can conclude that creating collages can be a form of personal expression for artists, and it can be used to convey a variety of themes and messages. Collage-making can also be used as a tool for learning and assessment in higher education, as it requires the use of critical thinking skills and creativity. Successful collage essays and personal statements often require a thoughtful and creative approach, much like the process of creating a collage. They should be engaging, well-written, and provide insight into the student's background, interests, and personality. In addition, communication is a key various aspects of life, including crises, healthcare and research. Effective communication requires brevity, clarity, empathy, and regular updates. Overall, collages can be a unique and meaningful way for artists to express themselves, while effective communication is essential in various fields.

Collage art is a form of artistic expression that involves combining different material and images to create a new visual composition. This art form has been around for centuries and has been used by artists in various medium, including painting, sculpture, and photography. Whether using traditional material like paper and glue or exploring digital methods, artists have used collage to push the boundaries of what is considered art and make powerful statement about the world around them.

Collage has been used to make political and social commentary, to explore personal experience and emotional, and to challenge traditional nations of beauty and aesthetics for dada to contemporary artist toady, collage has been a tool for subversion and experimentation.

Collage art has experienced resurgence in popularity, with many artists creating stunning work that incorporated a wide range of material and techniques. From traditional paper and glue, collage to digital collage created using computer software, the possibilities for this art form are endless.

One of the most exciting aspects of collage art is the way it allows artists to experiment with different material and techniques. For example, a collage artist might combine photographs, magazine clipping, fabric a one-of-a-kind piece.

In my opinion, in collage making, there are several techniques and approaches that can be used to create interesting and unique works of art.

Auto-collage this technique involves recording your experiences through collage for a week. Choose a consistent size to work within and use only the materials that you have available. Tearing and pasting simple techniques like tearing up images, pasting images over one another, and applying colored surfaces with either straight edges or organically ripped edges can be used to create abstract collages. Usually, abstract collages also contain sections where drawing or painting is applied. Using tissue paper tissue paper can be used to create beautiful collage paper. In this lesson, the artist shows how to use white tissue paper to make great collage paper. Textile collage involves using scraps and oddments of fabrics to create something unique and personal. In "Using Collage Techniques in Textile Art," Mandy Pattullo shows how to use scraps and oddments of fabrics to create something unique and personal, while also being economical. Collage quilts are made using small; overlapping scraps of fabric adhered to a foundation fabric. There are no rigid cutting instructions, and there are no precise fabric requirements. This technique can be used to create unique and interesting works of art.

There are several techniques and approaches that can be used in collage making to create interesting and unique works of art. These techniques include auto-collage, mix media, tearing and pasting, using tissue paper, textile collage, and collage quilting.

Bibliography

Books

- Freeland Cynthia, Art Theory: A Very Short Introduction, Published:13 February 2003, Publisher: OUP, Language: English, Author: Cynthia Freeland.
- Smith Terry, What Is Contemporary Art? Publisher: University of Chicago Press, Publisher year 2012, Author: Terry Smith,
- Janson H. W., Title: History of Art, Author: H. W. Janson, Anthony, Publisher year 29 June 2017 Publisher : Publikat Verlags und Handels, Language : English
- Freeland Cynthia, But Is It Art? An Introduction to Art Theory, Published:7 February 2002, Publisher: OUP Oxford, Language: English, Author: Cynthia Freeland
- Rothamel Susan Pickering, The Art of Paper Collage, Publisher: sterling publication: 30 June 2000.
- Mandy Pattullo Textile Collage: using collage techniques in textile art**,** Published: October2016, Publisher: Pavilion, Language: English, Author: Mandy
- Mowinski Melanie, Collage Your Life: Techniques, Prompts, and Inspiration for Creative Self-Expression and Visual Storytelling, Publisher: Storey Publishing, LLC, Published:21 June 2022 Author: Melanie Mowinski
- Brommer G, Collage Techniques: A Guide for Artists and Illustrators Paperback, Publisher: Watson-Guptill, Publications Inc., U.S., Publication date: 1 August 1994.
- Evans Stout Roxanne, Storytelling with Collage: Techniques for Layering, Color and Texture Paperback, Publisher: North Light Books, Publication date: 10 March 2016.
- Leland Nita, New Creative Collage Techniques: How to Make Original Art Using Paper, Color and Texture Hardcover-spiral, Publisher: North Light Books, Publication date: 21 October 2011.
- Elizegi Rebeka, Collage by Women: 50 Essential Contemporary Artists Hardcover – Illustrated, Blanca Ortiga (Introduction), Publisher: Promopress, Publication date:May 28, 2019.
- James Kale, Cut & Collage: A Treasury of Bizarre and Beautiful Images for Collage and Mixed Media, Publication date: 29 March 2020, Publisher: North Light Books.

Website

- https://www.tate.org.uk/art/art-terms/c/collage#:~:text=Collage%20describes%20both%20the%20technique,down%20onto%20a%20supporting%20surface
- https://arl.human.cornell.edu/PAGES_Delft/Collage_deeper.pdf
- https://www.masterclass.com/articles/what-is-a-collage
- https://www.theartstory.org/definition/collage/
- https://blog.artweb.com/how-to/art-collage-techniques/
- https://www.clothpaperscissors.com/blog/technique-tuesdays-10-tips-for-collage/
- https://artincontext.org/collage-art/
- https://www.google.com/search?q=contribution+of+collage+artists&rlz=1C1UEAD_enIN1049IN1049&oq=contribution+of+collage+artisy&aqs=chrome.1.69i57j33i10i160.30038j0j15&sourceid=chrome&ie=UTF-8
- https://www.riseart.com/guide/2371/a-guide-to-collage
- https://www.britannica.com/art/visual-artshttps://philosophynow.org/issues/108/What_is_Art_and_or_What_is_Beauty
- https://edu.gcfglobal.org/en/creativity/what-is-art/1/
- https://www.thoughtco.com/what-is-the-definition-of-art-182707
- https://www.smashingmagazine.com/2010/07/what-do-we-really-mean-by-art/
- https://www.masterclass.com/articles/what-is-a-collage
- https://www.tate.org.uk/art/art-terms/c/collage
- https://study.com/academy/lesson/what-is-collage-definition-famous-artists-examples.html
- https://www.collinsdictionary.com/dictionary/english/collage

YouTube Videos

- https://www.youtube.com/watch?v=pI5_BUkIp3M
- https://www.youtube.com/watch?v=ppBdIj2pEUc

List of images

1. Mahinder Singh Tillu Artwork – Untitled
2. Mahinder Singh Tillu Artwork – Untitled
3. Mahinder Singh Tillu Artwork – Untitled
4. Mahinder Singh Tillu Artwork – Untitled
5. Mahinder Singh Tillu Artwork – Untitled
6. Mahinder Singh Tillu Artwork – Untitled
7. Ravinder Sharma –Untitled
8. Ravinder Sharma –Untitled
9. Ravinder Sharma –Untitled
10. Ravinder Sharma –Untitled
11. Ravinder Sharma –Untitled
12. Ravinder Sharma –Untitled
13. Ravinder Sharma –Untitled
14. Ravinder Sharma –Untitled
15. Ravinder Sharma –Untitled
16. Ravinder Sharma –Untitled
17. Ravinder Sharma –Untitled
18. Ravinder Sharma –Untitled
19. Ravinder Sharma –Untitled
20. Decollage
21. Papier Coller
22. Montage
23. Photomontage
24. Neo-Dada

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

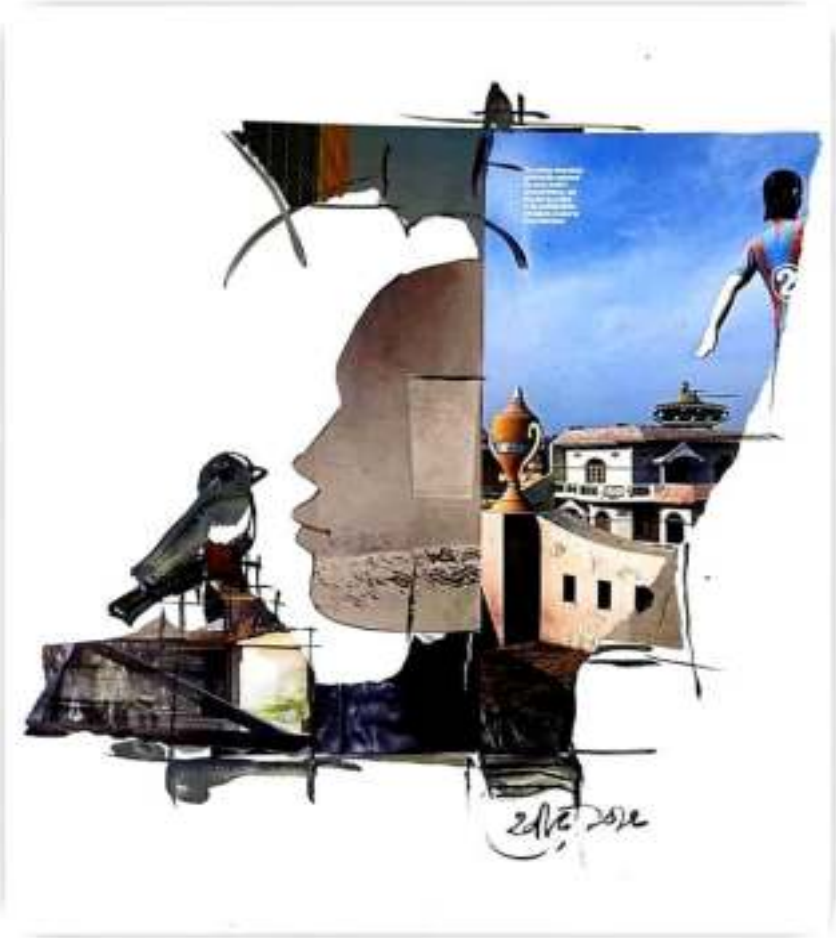

19

20

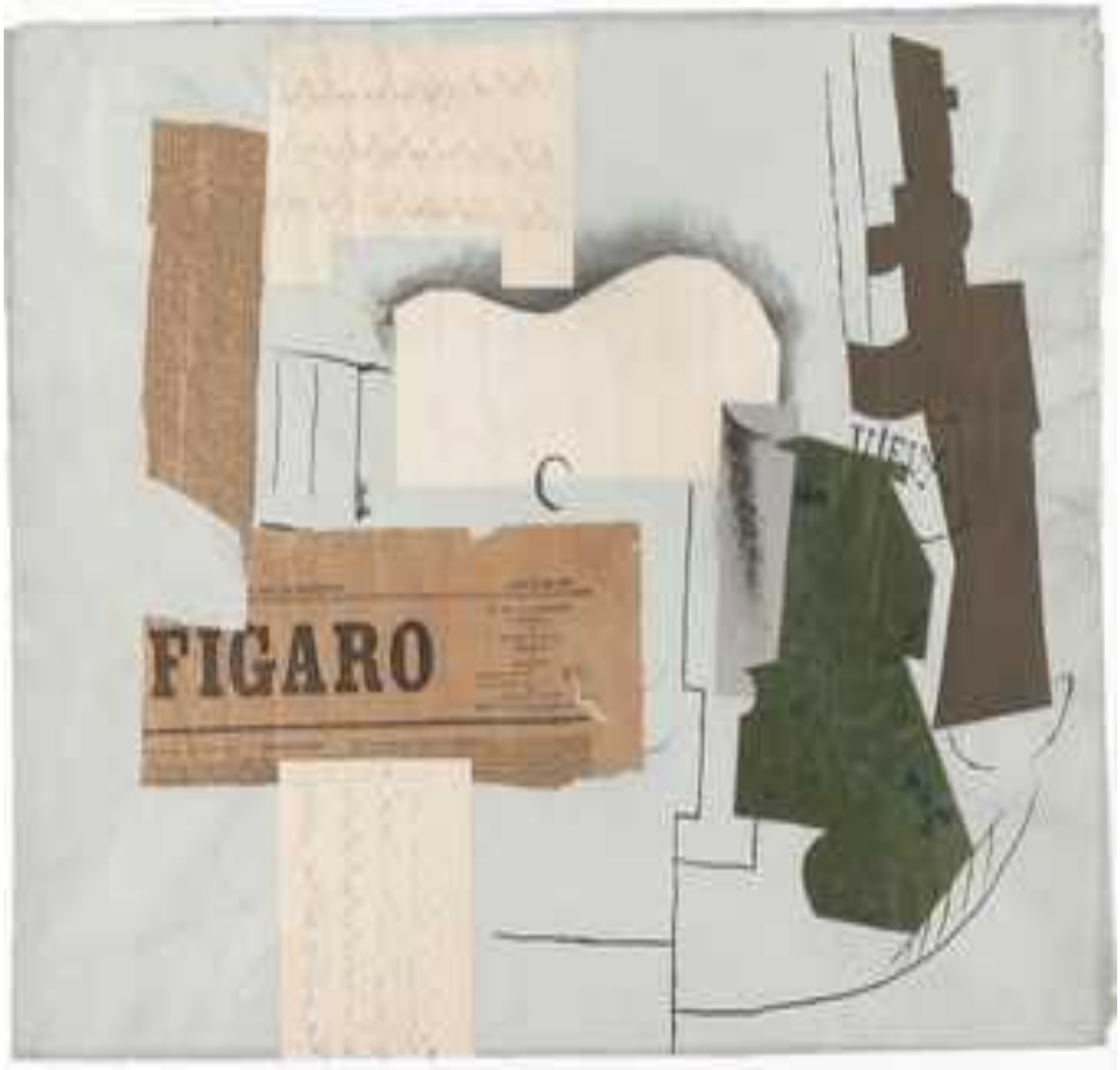

21

22

23

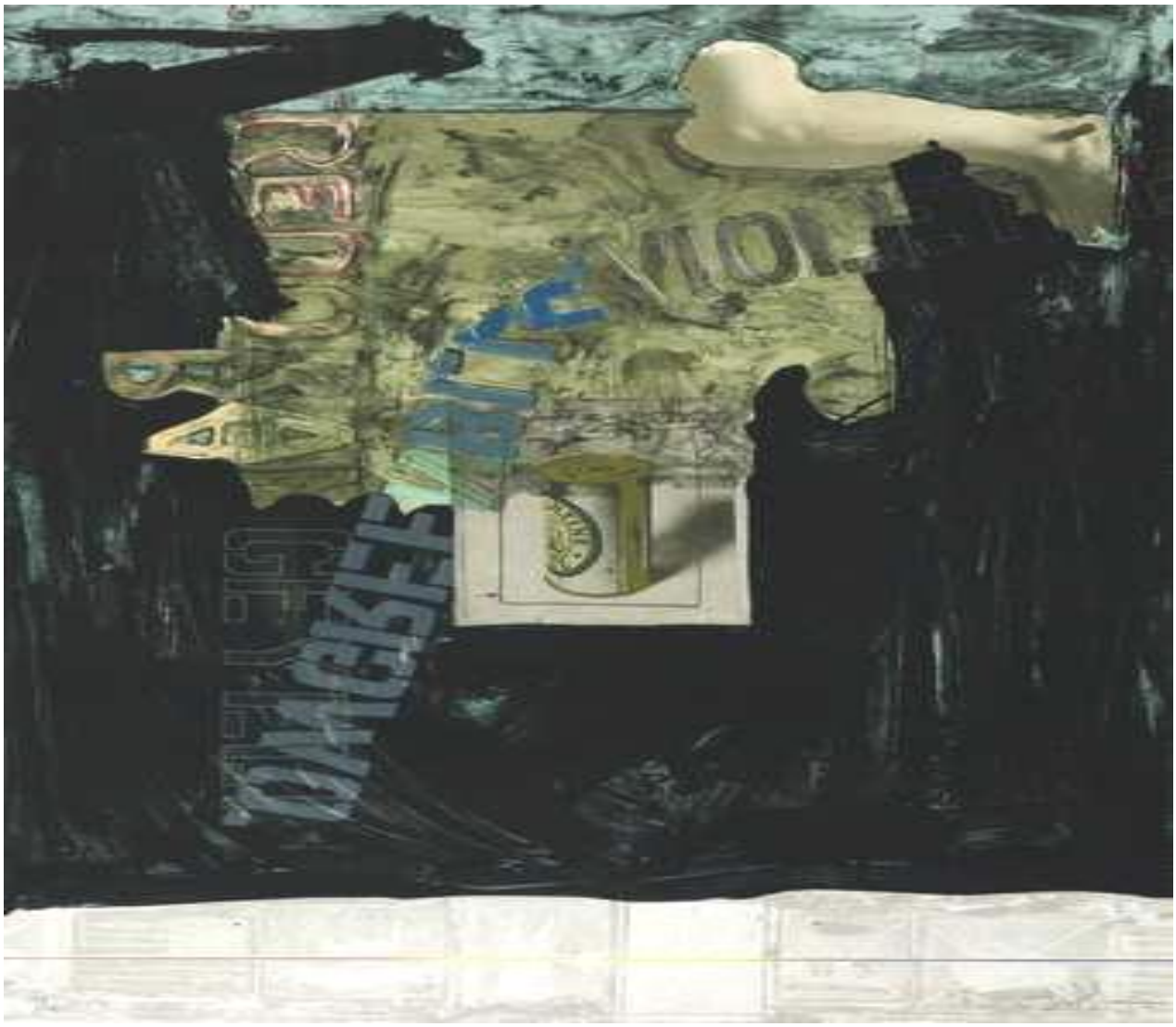

24